Resource: बाइबल कोश (टिंडेल)

License Information

बाइबल कोश (टिंडेल) (Hindi) is based on: Tyndale Open Bible Dictionary, Tyndale House Publishers, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

बाइबल कोश (टिंडेल)

अ

अंकशास्त्र, अंकुश, अंग, अंगरखा, अंगरखा, अँगरखा, अंगुल (माप), अंगू (ऐश), अंजीर, अंजीर का पेड़, अंतकालीन समय, अंतड़ियाँ, अंतड़ियों के रोग, अंतरनियम काल, अंतिओकस पंचम, अंतिओकस सप्तम, अंतिओखिस, अंतिगोनुस, अंतिम न्याय, अंतियोख चतुर्थ, अंधकार, अंधापन, अकजीब, अकबोर, अकबोर, अकसा, अकान, अकाबा की खाड़ी, अकाल, अकीम, अक्कद, अक्काद, अक्कादी लोग, अक्कूब, अक्कोस, अक्रबत्तेने, अक्रबा, अक्रब्बीम, अक्रोपोलीस, अकिला, अक्शाफ, अक्षम्य पाप, अक्षम्य पाप, अक्षरबद्ध काव्य, अक्षाप, अक्साह, अक्हो, अक्को, अखइकुस, अखज़ीब, अखमथा, अख़मीरी रोटी, अख़मीरी रोटी का पर्व, अखरोट, अखाया, अखीम, अगबुस, अगर, अगर (एलवा), अगर के वृक्ष, अगाग, अगागी, अगापे, अगोरा, अग्नि वेदी (चूल्हा), अग्निसर्प, अग्र-दूत, अग्रिप्पा, अजगर, अजगर का कुआँ, अजगर का सोता, अजगाद, अजज्याह, अजनबी, अजनोत्ताबोर, अजबूक, अज़राएल, अजरेल, अज़रैल, अज़र्या, अजर्याह, अजर्याह की प्रार्थना, अजर्याह की प्रार्थना, अज़ाएल (असाएल), अजाज, अजाजेल, अजीएल, अज़ीज़ा, अजूबा, अज़ूर, अजेका, अजोर, अज्जान, अज़्ज़ाह, अज्जूर, अज्मावेत (व्यक्ति), अज्मावेत (स्थान), अज़्रीएल, अज़्रीकाम, अटकल (भविष्य कथन), अटारी, अड्डूस, अतलै, अतल्याह, अताक, अतायाह, अतारा, अतारोत, अति पवित्रस्थान, अति प्राचीन, अत्तलिया, अत्तै, अत्रोतदार, अत्रोतबेत्योआब, अत्रौत-शोपान, अथारिम, अथाह कुण्ड, अथाह कुण्ड|, अथेनोबियस, अथ्थारातेस, अथ्थारियस, अदन, अदन की वाटिका, अदनह, अदना, अदमा, अदमाता, अदमीन, अदलै, अदल्या, अदादा, अदामा, अदामी, अदामीनेकेब, अदायाह, अदार (महीना), अदास, अदीएल, अदीतैम, अदीदा, अदीना, अदीनो, अदुएल, अदुम्मीम, अदुल्लाम, अदुल्लामवासी, अदोनाई, अदोनिय्याह, अदोनीकाम, अदोनीराम, अदोनीसेदेक, अदोनीसेदेक, अदोराम, अदोरैम, अद्दान, अद्दार (व्यक्ति), अद्दार (स्थान), अद्दी, अद्दोन, अद्रमुत्तियुम, अद्रम्मेलेक, अद्रिया, अद्रीएल, अधमूए पेड़, अधर्म, अधर्म का भेद, अधर्मी, अधर्मी पुरुष, अधर्मी पुरुष, पाप का पुरुष, अधिपति, अधिपति, अधिपति (सात्राप), अधिवक्ता, अधोलोक, अध्यक्ष, अनंतकाल, अनन्त जीवन, अनन्त जीवन, अनन्त दंड, अनन्त दण्ड, अनन्तकाल का जीवन, अनन्याह (व्यक्ति), अनन्याह (स्थान), अनम्मेलेक, अना, अनाएल, अनाक, अनाकवंशी, अनाकियों, अनाचार, अनाज, अनाज की भेंट, अनात, अनातोत (व्यक्ति), अनातोत (स्थान), अनातोती, अनाथ, अनानी, अनानीएल, अनाब, अनामी, अनामवंशी, अनायाह, अनार, अनाहरत, अनियास, अनीआम, अनुरूप, अनुरूपता, अनुशासन की नियमावली, अनेमनी, अन्तकालिक ग्रन्थ, अन्ताकियाई, अन्तिपत्रिस, अन्तिपातेर, अन्तिपास, अन्तिम दिन, अन्तिम दिन, अन्तिम भोज, अन्तिम संस्कार की प्रथाएं, अन्तिम समय, अन्तिलबानोन, अन्तोतिय्याह, अन्कालिक ग्रन्थ, अन्द्रुनीकुस, अन्न भण्डार, अन्नन, अन्नबलि, अन्निउथ, अन्नुनुस, अन्यजाति, अन्यजाती, अपराध, अपल्लोनियस, अपल्लोफ़ानेस, अपवाद, अपवित्र करना, अपामे, अपिल्लेस, अपीक, अपीह, अपुल्लयोन, अपुल्लोनिया, अपुल्लोस, अपेक, अपेका, अपोक्रिफा, अप्पिया मार्ग, अप्पियुस का चौक, अप्पैम, अप्रमाणिक पत्र, अप्रमाणिक सुसमाचार, अप्रा, अफफिया, अफूस, अफैरेमा, अबगता, अबद्दोन, अबशालोम, अबाना, अबारीम, अबारीम नामक डीहों, अबारीम, डीहों, अबिय्याम, अबिय्याह, अबिय्याह, अबिलेने, अबी, अबीअल्बोन, अबीआसाप, अबीएजेर, अबीएजेरी, अबीएल, अबीगैल, अबीगैल, अबीत, अबीतल, अबीतूब, अबीदा, अबीदान, अबीनादाब, अबीनोअम, अबीब या आबीब, अबीमाएल, अबीमेलेक, अबीराम, अबीशग, अबीशू, अबीशूर, अबीशै, अबीहू, अबीहूद, अबीहूद, अबीहैल, अबूबुस, अबेदनगो, अब्दा, अब्दी, अब्दीएल, अब्देल, अब्दोन (व्यक्ति), अब्दोन (स्थान), अब्नेर, अब्बा, अब्बीम (स्थान), अब्राम, अब्राहम, अब्रोन, अब्रोना, अब्रोना, अभियोग, अभिलेखागार, अभिशापात्मक भजन, अभिषिक्त (एक व.), अभिषिक्त (बहु व.), अभिषेक करना, अभिषेक का पवित्र तेल, अभ्येलेरशर, अमरना पट्टियाँ, अमर्याह, अमशै, अमसी, अमस्याह, अमस्याह, अमाद, अमाना, अमाम, अमालेक, अमालेकी, अमालेकियों का पर्वत, अमालेकियों के पहाड़ी देश, अमाव, अमासा, अमासै, अमित्तै, अमोन नगरी, अमोन नगरी, अमोरियों का पर्वत, अम्नोन, अम्पलियास, अम्पलियातुस, अम्फिपुलिस, अम्बर, अम्माह, अम्मिदी, अम्मिनादीब, अम्मी, अम्मीएल, अम्मीजाबाद, अम्मीनादाब, अम्मीनादाब, अम्मीशद्दै, अम्मीहूद, अम्मोन, अम्मोनियों, अम्मोनियों का रब्बाह, अम्रापेल, अम्राम, अम्रामियों, अय्या, अय्या, अय्या, अय्यात, अय्यालोन, अय्यूब (व्यक्ति), अय्यूब की पुस्तक, अरखिप्पुस, अरखिलाउस, अरतिमिस, अरनी, अरब, अरब के लोग, अरबत्ता, अरबेला, अरमसोबा, अरम्नहरैम, अरम्माका, अरा, अराजकता, का जल, अराटस, अराद (व्यक्ति), अराद (स्थान), अरादस, अरान, अराब, अराबा, अराबा का ताल, अराबा का ताल, अराबा की नदी, अराबावासी, अराबी, अराम (व्यक्ति), अराम (स्थान), अराम-गशूर, अरामी, अरामी, अरारात, अरितास, अरिमतियाह, अरिमतियाह के यूसुफ, अरियुपगुस, अरियुपगुस का सभासद, अरिस्तर्खुस, अरिस्तुबुलुस, अरीएल (व्यक्ति), अरीएल (स्थान), अरीदाता, अरीदै, अरीसै, अरुब्बोत, अरूमा, अरेली, अरेलियों, अरोएर, अरोएरी, अरोद, अरोदियों, अरोद, अरोदी, अरोदवासी, अरौना, अर्की, अर्गोब (व्यक्ति), अर्गोब (स्थान), अर्घ, अर्घ, अर्तक्षत्र, अर्द, अर्दी, अर्दोन, अर्नान, अर्नोन, अर्पक्षद, अर्पाद, अर्बा, अर्मोन वृक्ष, अर्मोनी, अर्याराथेस, अर्ये, अर्योक, अर्वद, अर्वदी, अर्सा, अर्सासेस, अल-तशहेत, अलकिमस, अलामोत, अलाम्मेल्लेक, अलेक्जेंड्रा, अलेक्ज़ेन्ड्रिनस पाण्डुलिपि, अलेमा, अल्फा और ओमेगा, अल्मोदाद, अल्मोन, अल्मोनदिबलातैम, अल्यान, अल्लोन (व्यक्ति), अल्लोन (स्थान), अल्लोनबक्कूत, अल्वा, अवरन, अव्वा, अव्विम

(व्यक्ति), अव्वियों और अव्वी, अव्वी लोग, अशकलोन, अशदोथ-पिसगा, अशबे, अशबेल, अशबेलियों, अशरेला, अशहूर, अशीमा, अशुद्ध आत्माएँ, अशुद्ध, अशुद्धता, अशूरी, अशेरा, अश्कनज, अश्कलोन, अश्कलोन के लोग, अश्तरते, अश्तारोत , अश्तारोती, अश्तारोत्कनम, अश्तारोथ, अश्तोरेत, अश्दोद, अश्दोदियों, अश्दोदी, अश्ना, अश्पनज, अश्वात, अश्शूर, अश्शूर (स्थान), अश्शूर, अश्शूरी, अश्शूरनासिरपाल, अश्शूरबनीपाल, अश्शूरी, अश्शूरी लोग, असरेल, असल्याह, असल्याह, असहस्त्राब्दीवाद, असायाह, असारामेल, असाहेल, असिबियास, असीएल, असुंक्रितुस, असुप्पिम, असुर, अस्त्याजेस, अस्पाता, अस्फार, अस्मादेव, अस्मोन, अस्नीएल,अस्नीएली, अस्वान, अस्सीर, अस्सुरबनिपाल, अस्सुस, अहजै, अहज्याह, अहबान, अहमता, अहर्हेल, अहलाब, अहलै, अहवा, अहसई, अहसबै, अहाब, अहिअन, अहियाह, अहिय्याह, अही, अहीआम, अहीएजेर, अहीओर, अहीकाम, अहीतूब, अहीतोपेल, अहीनादाब, अहीनोअम, अहीमन, अहीमास, अहीमेलेक, अहीमोत, अहीरा, अहीराम, अहीरामवंशी, अहीलूद, अहीशहर, अहीशार, अहीसामाक, अहीहूद, अहुज्जत, अहुज्जाम, अहूमै, अह्हह, अहेर, अहोला, अहोलीबा, अहोह, अहोही, अहोह वंशी, अह्यो

अंकशास्त्र

यह यहूदी शिक्षकों द्वारा पुराने नियम की व्याख्या के लिए उपयोग की जाने वाली रब्बियों की एक विधि थी। इसमें शब्दों का विश्लेषण उनके अक्षरों के सांख्यिक मान के आधार पर या अक्षरों को किसी विशिष्ट प्रणाली के अनुसार पुनः व्यवस्थित करके किया जाता था। उदाहरण के लिए, कुछ रब्बियों ने तर्क दिया है कि एलीएजेर (उत् 15:2) अब्राहम के सभी दासों का प्रतिनिधित्व करता था क्योंकि एलीएजेर के नाम का मान 318 है, जो अब्राहम के दासों की संख्या थी (उत् 14:14)। एक और उदाहरण यिर्मयाह यिर्म 25:26 और 51:41 में "बाबेल" नाम की व्युत्पत्ति है, जहाँ बाबेल के लिए इब्रानी शब्द के अन्तिम अक्षर को उसी शब्द के पहले अक्षर में बदल दिया गया।

छद्मग्रन्थीय बरनबास के पत्री में, अब्राहम के 318 दासों (उत् 14:14) को यीशु की क्रूस पर मृत्यु का प्रतीक माना जाता है। यह व्याख्या यूनानी अक्षर *ताउ*, या "त," पर आधारित है, जिसका सांख्यिक मान 300 है और जो क्रूस के आकार का होता है, और 18, जो यूनानी में यीशु शब्द के पहले दो अक्षरों के अनुरूप है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पशु की संख्या 666 बताई गई है (प्रका 13:18)। बाइबिल के प्रतीकवाद में, अंक सात को पूर्णता का प्रतीक माना जाता है, और तीन सात पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस प्रकार, 666 को इस पूर्णता से कम माना जाता है।

अंकुश

नुकीली छड़ी, जो कभी-कभी धातु की नोक से युक्त होती थी, विशेषकर हल जोतते समय बैलों को हाँकने या मार्गदर्शन करने के लिए किया जाता था।

अंग

केजेवी में उत्पत्ति 4:21, अय्यूब 21:12, 30:31, और भजन संहिता 150:4 में पाइप वाद्य का गलत अनुवाद हुआ हैं। *देखें* संगीत वाद्ययंत्र (उगाब)।

अंगरखा

बाहरी वस्त्रों का उल्लेख करने वाले कई शब्दों का अनुवाद। *देखें*वस्त्र।

अंगरखा

देखें कपड़े।

अँगरखा

विभिन्न परिधानों से संबंधित कई शब्दों का अनुवाद। *देखें* वस्त्र।

अंगुल (माप)

अंगुल (माप)

रेखीय माप की एक इकाई जो एक अंगुल की चौड़ाई के बराबर होती है (यिर्म 52:21)। *देखें*वजन और माप।

अंगू (ऐश)

अंगू (ऐश) के पेड़ (जीनस *फ्रैक्सिनस*) दुनिया के कई हिस्सों में उगते हैं, जिनमें मध्य पूर्व के कुछ क्षेत्र भी शामिल हैं। कुसुमित या मन्ना ऐश (*फ्रैक्सिनस ऑर्नस*) एक ऐसा ही पेड़ है। यह 4.6 से 15.2 मीटर (15 से 50 फीट) लंबा होता है और

एक मीठा रस पैदा करता है जिसे "मन्ना" के रूप में जाना जाता है।

कुछ बाइबल विद्वानों का मानना है कि केजेवी में यशायाह 44:14 में वर्णित "ऐश" पेड़ अलेप्पो देवदार को संदर्भित करता है। हालाँकि असली ऐश के पेड़ नहीं हैं, लेकिन कुछ अन्य रेगिस्तानी पौधे जैसे कि काँटेदार अल्हाजी (*अल्हागी मौरोरम*) और मन्ना तामरिस्क (*टैमेरिक्स मैनिफ़ेरा*) मीठे पदार्थ पैदा करते हैं जो बाइबल के "मन्ना" से जुड़े हो सकते हैं।

*यह भी देखें*कांटेदार अल्हाजी, झाऊ।

अंजीर, अंजीर का पेड़

भूमध्यसागरीय क्षेत्र में स्वाभाविक रूप से उगने वाले कई पेड़ या झाड़ियाँ हैं। यह एक फल उत्पन्न करता है जिसे खाया जा सकता है। सामान्य अंजीर (*फिकस कैरिका*) बाइबल में लगभग 60 बार उल्लेखित है, जिससे यह बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण पौधों में से एक बन जाता है। पहला उल्लेख "अंजीर के पत्ते" उत्पत्ति 3:7 में है।

अधिकांश विद्वानों का मानना हैं कि अंजीर का पेड़ मूल रूप से दक्षिण-पश्चिमी एशिया और सीरिया से आया था। प्रारंभिक समय में, लोगों ने मिस्र, इस्राएल और आसपास के क्षेत्रों में अंजीर को व्यापक रूप से उगाया। इन स्थानों में यह लोगों द्वारा खाए जाने वाले मुख्य खाद्य पदार्थों में से एक था। 1 शमूएल 25:18 में, अबीगैल ने दाऊद को एक भेंट भेजी जिसमें 200 अंजीर की टिकियाँ शामिल थीं।

अंजीर के पेड़ में एक विशेष प्रकार का फल होता है जिसे साइकॉनियम कहा जाता है, जो वास्तव में एक बहुत बड़ा और मांसल आधार होता है जो फूलों को धारण करता है। एक विशेष ततैया अंजीर का परागण करती है। इस ततैया के बिना, पेड़ फल नहीं दे सकता। लोगों ने यह तब खोजा जब उन्होंने पहली बार अंजीर के पेड़ को संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में लाया।

अंजीर का पेड़ अपने पहले फल की कलियाँ अपने पत्तों से पहले उत्पन्न करता है। कलियाँ फरवरी में दिखाई देती हैं, और पत्ते अप्रैल या मई में बढ़ते हैं। जब पत्ते पूरी तरह से निकल आते हैं, तो फल पक जाना चाहिए (मत्ती 21:19)।

जब प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों को उनके पापों के लिए चेतावनी दी, तो वे अक्सर यह धमकी दी कि दाखलता और अंजीर की फसलें नष्ट हो जाएंगी। और जब उन्होंने महान आशीषों का वचन दिया, तो कहा कि दाखलता और अंजीर की फसलें फिर से बढ़ेंगी (यिर्म 8:13; होश 2:12; योए 1:7, 12; मीक 4:4; जक 3:10)।

अंतकालीन समय

एक यूनानी शब्द से लिया गया शब्द जिसका अर्थ "प्रकाशन" है और इसका उपयोग एक विचार और साहित्य के एक रूप को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जहाँ दोनों भविष्य के न्याय (अंत समय विज्ञान) से संयोजित हैं।

"अंतकालीन समय" नामित साहित्य में ऐसी रचनाएँ शामिल हैं जो या तो लेखकों द्वारा प्राप्त ईश्वरीय प्रकाशन हैं या होने का दावा करती हैं। प्रकाशन आमतौर पर दर्शन के रूप में प्राप्त होते थे। उन्हें विस्तार से सुनाया गया और एक व्याख्या के साथ दिया गया। दानिय्येल का दूसरा भाग और सम्पूर्ण प्रकाशितवाक्य (अध्याय 7–12) ऐसे दर्शनों से भरा है। हालाँकि पुराने नियम के भविष्यसूचक साहित्य में भी प्रकाशन के दर्शन अक्सर हुए (उदाहरण के लिए, यश 6; आम 7–9; जक 1–6), वे विशेष रूप से अंतकालीन समय के साहित्य में प्रमुख थे और इस तरह के लेखन के बुनियादी साहित्यिक रूप और संरचना को निर्धारित करते थे। कभी-कभी (जैसा कि दानिय्येल में) प्रकाशन का सन्देश अंत के समय को देखने वाले के द्वारा एक सपने के माध्यम से प्राप्त किया गया था। दर्शन के दूसरे रूप में (जैसा कि प्रकाशितवाक्य में), अंतसमय को देखने वाला स्वर्गीय दुनिया में उठा लिया गया जहाँ उसने वह बातें सुनी और देखी जिनको उसे मनुष्यजाति में संचारित करना था (पुष्टि करें पौलुस के अनुभव से, 2 कुरि 12:1–4)। प्रायः, अंतसमय को देखने वाला उसे प्राप्त हुए दर्शनों का अर्थ समझने में असमर्थ रहता था। ऐसे मामलों में एक “व्याख्या करनेवाला स्वर्गदूत” दर्शन का अर्थ स्पष्ट किया (दानि 8:15–26; 9:20–27; 10:18–12:4; प्रका 7:13–17; 17:7–18)।

बाइबिल में युगांतशास्त्रीय विचार के दो प्राथमिक तौर-तरीके पाए जाते हैं, दोनों ही इस विश्वास पर केंद्रित हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को बचाने और उन पर अत्याचार करने वालों को दंडित करने के लिए निकट भविष्य में कार्य करेंगे। भविष्यवाणी युगांतशास्त्र में, पुराने नियम में प्रमुख रूप, परमेश्वर से अपेक्षा की जाती है कि वह मनुष्य और प्रकृति को उस परिपूर्ण स्थिति में बहाल करने के लिए इतिहास के भीतर कार्य करे जो मनुष्य के पतन से पहले मौजूद थी। दूसरी ओर, अंतकालीन युगांतशास्त्र, परमेश्वर से अपेक्षा करता है कि वह दुनिया को स्वर्ग में बहाल करने से पहले पुरानी अपूर्ण व्यवस्था को नष्ट कर दे।

इस्राएल में, अंतकालीन युगांतशास्त्र विदेशी प्रभुत्व के अधीन स्पष्ट रूप से विकशित हुई। छठी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत से, भविष्यसूचक युगांतशास्त्र में गिरावट शुरू हो गई और अंतकालीन युगांतशास्त्र तेजी से लोकप्रिय हो गई। दानिय्येल की पुस्तक, जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखी गई थी,अंतकालीन साहित्य का सबसे प्रारम्भिक उदाहरण है। मलाकी की भविष्यसूचक पुस्तक, जो पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान लिखी गई थी, अन्तिम इस्रएली भविष्यसूचक

अंतकालीन समय

पुस्तक थी। उसके बाद, मसीही धर्म के उदय तक इस्राएल में भविष्यसूचक आवाज़ शांत हो गई। दानिय्येल को छोड़कर, बाकी सभी यहूदी अंतकालीन सम्बन्धी साहित्य तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी की शुरुआत तक लिखे गए थे।

अंतकालीन सम्बन्धी साहित्य में, परमेश्वर और शैतान के बीच शत्रुता पर बहुत ज़ोर दिया गया था। सभी लोगों, जातियों और अलौकिक प्राणियों (स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं) को परमेश्वर या शैतान के सहयोगी के रूप में देखा जाता था। हालाँकि शैतान को हमेशा से ही परमेश्वर और मानवता का विरोधी माना जाता रहा है (उत 3:1–19; अय्यू 1:6–12; 2:1–8), लेकिन जब तक इस्राएल परमेश्वर की वाचा के नियम के प्रति वफ़ादार रहा, तब तक उसकी शक्ति पर लगाम लगी रही। जब इस्राएल ने विदेशी शत्रुओं द्वारा अधीनता के लम्बे राष्ट्रीय दुःस्वप्न का अनुभव करना शुरू किया, तो शैतान के दुनिया पर अस्थायी प्रभुत्व की वास्तविकता को बहुत ज़ोर से सामने लाया गया। हालाँकि अंतकालीन लेखकों ने अपने इतिहास में एक या दूसरे युग के दौरान इस्राएल पर हावी होने वाले विशेष जातियों से निपटा, उन जातियों को शैतान के सेवकों के रूप में देखा गया, जिनका परमेश्वर (और परमेश्वर के लोगों) के प्रति विरोध अनिवार्य रूप से उनके पतन का कारण बनेगा।

अंतकालीन विचार इस विश्वास से प्रभावित था कि किसी भी समय परिस्थितियाँ कितनी भी खराब क्यों न हों, परमेश्वर और उनके लोग अंततः अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। अंतकालीन नियतिवाद एक घातक विश्वास नहीं था कि सब कुछ एक तरह की नासमझ आवश्यकता से होता है; इसके बजाय, यह एक संप्रभु परमेश्वर में आशा से चिपका रहा, जो अपने लोगों को सभी लौकिक और आत्मिक शत्रुओं पर अंतिम विजय का अनुभव कराएँगे। कई अन्त्कालिक इस्राएल (या मसीही कलीसिया) के भविष्य के ऐतिहासिक अनुभव की भविष्यवाणियां शामिल थीं, जो परमेश्वर और उनके लोगों की अन्तिम और निर्णायक जीत में परिणत हुईं। उदाहरण के लिए, दानिय्येल द्वारा व्याख्या किए गए नबूकदनेस्सर के सपने में, विभिन्न सामग्रियों से निर्मित एक विशाल छवि के विभिन्न हिस्सों के प्रतीकवाद के तहत विदेशी साम्राज्यों की एक श्रृंखला को संदर्भित किया गया था; उस छवि को परमेश्वर के राज्य द्वारा नष्ट कर दिया गया था, जो एक पहाड़ से बिना हाथों के काटे गए पत्थर का प्रतीक था (दानि 2:31–45)।

अंतकालीन युगांतशास्त्र और भविष्यसूचक युगांतशास्त्र के बीच एक बड़ा अंतर यह था कि अंतकालीन समय के विषय ने लगभग हमेशा परमेश्वर की अन्तिम, निर्णायक जीत से पहले एक ब्रह्मांडीय तबाही की परिकल्पना की थी। कुछ अंतकालीन दृश्यों में, जैसे कि दानिय्येल की पुस्तक, परमेश्वर से इतिहास के पाठ्यक्रम में निर्णायक रूप से हस्तक्षेप करने, बुराई को दबाने और परमेश्वर के राज्य का परिचय देने की उम्मीद की गई थी। अन्य में, जैसे कि यूहन्ना का प्रकाशन, परमेश्वर पूरी तरह से नया बनाने से पहले पुरानी दुनिया को नष्ट कर देंगे (प्रका 21:1; पुष्टि करें 2 पत 3:10)। सामान्य दृष्टिकोण यह था कि चीजें बेहतर होने से पहले बहुत खराब हो जाएंगी। इस्राएली स्वतंत्रता के स्वर्ण युग (10वीं से 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व) के दौरान, भविष्य की तबाही की धारणा पर स्पष्ट रूप से अधिक जोर नहीं दिया गया था। हालाँकि, 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश के बाद, अंतसमय को देखनेवालों ने सोचा कि यहूदियों की समस्याओं को केवल मनुष्यों और जातियों के मामलों में परमेश्वर के निर्णायक और चरम हस्तक्षेप से ही उलटा जा सकता है।

द्वैतवाद और निराशावाद दोनों पर आधारित एक आम अंतकालीन धारणा दो "युगों" की अवधारणा थी। "यह युग", जो वर्तमान और बुरा है, शैतान और उसके गुलामों द्वारा हावी था, लेकिन "आने वाला युग" परमेश्वर के राज्य का आशीर्वाद लाएगा। युगांत सम्बन्धी घटनाओं का एक समूह पुराने युग को समाप्त करने और नए युग का उद्घाटन करने का काम करेगा। जब पौलुस ने "इस संसार के ईश्वर" (2 कुरि 4:4) की बात की, तो वह वास्तव में "इस युग" पर शैतान के प्रभुत्व का उल्लेख कर रहा था।

अंत्कालिकता की एक और विशेषता यह थी कि इसमें परमेश्वर द्वारा वर्तमान बुरे दिनों को छोटा करने और परमेश्वर के राज्य को जल्दी से लाने की तीव्र इच्छा की लगातार अभिव्यक्ति थी। जैसे दानिय्येल पूछ सकता था, "इन चमत्कारों के अंत तक कितना समय लगेगा?" (दानि 12:6, आरएसवि), वैसे ही यूहन्ना पुकार सकता था, "आओ, प्रभु यीशु!" (प्रका 22:20)। परमेश्वर के शीघ्र हस्तक्षेप और विजय की इच्छा ने पूरी तरह से प्रतिकूल परिस्थितियों में आशा बनाए रखना सम्भव बनाया और परमेश्वर के लोगों को आने वाले राज्य के योग्य तरीके से अपना जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया (2 पत 3:11–13; प्रका 21:5–8)।

दानिय्येल की पुस्तक पवित्रशास्त्र के पुराने नियम कैनन में एकमात्र अंत्कालिक पुस्तक है, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नए नियम कैनन के भीतर एकमात्र अंत्कालिक पुस्तक है। हालाँकि, कई गैर-धर्मग्रंथीय यहूदी और मसीही अन्त्कालिक पुस्तक सर्वनाश से बच गए हैं। यहूदी अन्त्कालिक पुस्तकें तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत और दूसरी शताब्दी ईस्वी की शुरुआत के बीच लिखी गयी थी; मौजूदा मसीही अन्त्कालिक पुस्तक, दूसरी से चौथी शताब्दी ईस्वी तक के हैं। इसके अलावा, अंतकालीन साहित्य की औपचारिक श्रेणी के बाहर कई अंतकालीन साहित्यिक पैटर्न और संरचनाएँ पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, यीशु का जैतून पहाड़ी का उपदेश (मर 13; मत्ती 24; लूका 21), अक्सर बाइबिल के विद्वानों द्वारा एक छोटा अंत्कालिक पुस्तक कहा जाता है। सामान्य तौर पर, किसी साहित्यिक रचना को “एक अंत्कालिक पुस्तक” माना जाने के लिए नीचे बताई गई ज़्यादातर विशेषताएँ मौजूद होनी चाहिए।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य को छोड़ कर, ज़्यादातर अन्य सभी अंत्कालिक पुस्तक छद्मनामी हैं, यानी, वे झूठे नाम से लिखे गए थे। यह विशेषता एक ऐसी स्थायी विशेषता है कि अंतकालीन साहित्य को आम तौर पर "स्यूडेपिग्राफा" ("झूठे लेखन") के रूप में संदर्भित किया जाता है। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी तक कई अज्ञात लेखकों द्वारा लिखी गई एक मिश्रित अंत्कालिक पुस्तक (1 हनोक) का दावा था कि इसे आदम के प्रारंभिक वंशज हनोक ने लिखा था (उत 5:21–24)। अन्य यहूदी अंत्कालिक पुस्तकों को पुराने नियम के आदम और हव्वा, मूसा, यशायाह, बारूक, सुलैमान और एज्रा जैसे महत्वपूर्ण पात्रों से जोड़ा गया था। चूँकि सभी अंत्कालिक पुस्तकें पुराने नियम कैनन के बंद होने के बाद लिखे गए थे, इसलिए उनके वास्तविक लेखकों ने शायद सोचा कि उनके पुस्तकों के अनुकूल स्वागत के लिए कुछ महत्वपूर्ण पुराने नियम व्यक्तित्व के साथ पहचान आवश्यक थी। प्राम्भिक मसीही अंतकालिक पुस्तकों में अक्सर पतरस, पौलुस और थोमा जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम होते थे।

अभी-अभी बताई गई प्रत्येक पुस्तक पर चर्चा के लिए अपोक्रिफा भी देखें।

अंतड़ियाँ

अंतड़ियाँ

आंतों का हिस्सा। यह शब्द रूपक रूप से केजेवी में उस स्थान को दर्शाने के लिए उपयोग किया गया था जहाँ दया, करुणा और कोमलता महसूस की जाती हैं (देखें फिल 1:8; 2:1–2)।

अंतड़ियों के रोग

37 बार (केजेवी) धर्मशास्त्र में यह शब्द आया है, लेकिन केवल एक बार एक रोग के सम्बन्ध में (2 इति 21:15–19) आया है। बुरा राजा यहोराम को अंतड़ियों की एक असाध्य पुरानी रोग से दण्डित किया गया, जिसके कारण दो साल बाद उनकी अत्यन्त पीड़ित होकर मृत्यु हो गई। यह रोग उनके अंतड़ियों के बाहर निकलने का कारण बना (वचन 19)। ये लक्षण या तो अंतड़ियों की सूजन की बीमारी या बृहदान्त्र या मलाशय के कर्करोग के कारण हो सकते थे।

नए नियम में दर्ज एकमात्र घातक अंतड़ियों का रोग भी एक राजा को हुई थी (प्रेरि 12:21–23)। इतिहासकार जोसेफस ने दर्ज किया है कि राजा हेरोदेस, 54 वर्ष की आयु में, अपने पेट में अधिक दर्द बढ़ने से दुःखी थे, जो पाँच दिन बाद उनकी मृत्यु तक जारी रहा। एक तीव्र अंतड़ियों में अवरोध, संभवतः गोलकृमि संक्रमण के कारण, इन लक्षणों के लिए जिम्मेदार हो सकता है। रोग के दौरान गोलकृमि निकाले जा सकते थे, या मृत त्वचा पर कीड़े देखे जा सकते थे, जिसके परिणामस्वरूप लूका द्वारा यह अवलोकन किया गया कि हेरोदेस "कीड़े पड़ गए और वह मर गया।"

यह भी देखें रोग; औषधि और चिकित्सा प्रथा।

अंतरनियम काल

पुराने नियम के अन्त और नए नियम की शुरुआत के बीच का समय। इस अवधि में यहूदियों के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ शामिल हैं, जो 1 और 2 मक्काबी की पुस्तकों में दर्ज हैं।

देखें मक्काबियों की पहली और दूसरी पुस्तक।

अंतिओकस पंचम

अंतिओकस पंचम

अंतिओकस पंचम को अंतिओकस यूपातोर भी कहा जाता था, जिसका अर्थ है "एक कुलीन पिता का।" वह 173 से 162 ईसा पूर्व तक जीवित रहे। वह अंतिओकस चतुर्थ के पुत्र थे। अंतिओकस पंचम 163 से 162 ईसा पूर्व तक सीरिया के राजा रहे।

163 ईसा पूर्व में, यरूशलेम पर हमला हो रहा था और यह शत्रु बलों से घिरा हुआ था। इसलिए, अंतिओकस पंचम अपने सलाहकार लीसियस के साथ यरूशलेम गए, जो उनके स्थान पर शासन कर रहे थे क्योंकि अंतिओकस पंचम अभी भी एक बालक थे। वे शहर पर हमले को समाप्त करने में सहायता के लिए यरूशलेम गए। अंततः अंतिओकस पंचम ने यहूदा मक्काबी के साथ शांति कर ली, जो सीरियाई शासन के खिलाफ लड़ रहे एक यहूदी अगुवा थे।

इसके बाद, अंतिओकस पंचम अन्ताकिया लौट आए, जो सीरिया की राजधानी शहर था। वहाँ, उनके चचेरे भाई देमेत्रियस प्रथम ने, जो राजा बनना चाहते थे, उन्हें धोखा दिया। 162 ईसा पूर्व में, युवा राजा अंतिओकस पंचम और उनके संरक्षक लीसियस, दोनों की हत्या कर दी गई।

अंतिओकस सप्तम

अंतिओकस सप्तम

अंतिओकस सप्तम, जिन्हें अंतिओकस सिडेट्स के नाम से भी जाना जाता है, 139/138 से 129 ईसा पूर्व तक सीरिया के राजा रहे। उनका जन्म लगभग 159 ई.पू. में हुआ था और 129 ईसा पूर्व में उनका निधन हो गया। वह देमेत्रियस प्रथम के पुत्र और देमेत्रियस द्वितीय के भाई थे। जब देमेत्रियस द्वितीय को बंदी बना लिया गया, तो अंतिओकस सप्तम अपने भाई की रानी क्लियोपेट्रा थिया के तीसरे पति बन गए। उन्होंने 139 ईसा पूर्व में सिंहासन पर नियंत्रण करने वाले ट्राइफो को हटा दिया।

अंतिओकस सप्तम 138 से 134 तक यहूदियों के साथ युद्ध में थे। उन्होंने यरूशलेम के एक हिस्से को नष्ट कर दिया और जॉन हिर्केनस को अपने शासन के अधीन कर लिया। वे पारथी युद्ध में लड़ते हुए मारे गए।

अंतिओखिस

अंतिओखिस

सीरिया के राजा अंतिओकस एपिफेनस की एक रखैल (2 मक्का 4:30) थी। तरसुस और मल्लोस शहर अंतिओखिस को एक उपहार के रूप में दिए गए थे। उनके निवासियों ने विरोध में विद्रोह किया।

अंतिगोनुस

अंतिगोनुस

पुराने नियम और नए नियम के बीच की अवधि में तीन यूनानी राजाओं और दो हस्मोनी (यहूदी) राजाओं के नाम।

1. अंतिगोनुस प्रथम, जिन्हें साइक्लोप्स भी कहा जाता है। साइक्लोप्स का अर्थ है "एक आँख वाला," जो यूनानी में *मोनोफथालमस* है। अंतिगोनुस का जन्म 382 ई.पू. में हुआ था। उन्होंने सिकंदर महान के अधीन सेवा की और 333 ई.पू. में फ्रूगिया के प्रांतीय राज्यपाल बने। सिकंदर की मृत्यु के बाद 323 ई.पू. में उनका साम्राज्य विभाजित हो गया। सिकंदर के चार प्रमुख सेनापतियों ने अलग-अलग क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया (तुलना करें दानि 8:8; 11:3–4):

- कैसैण्डर ने मकिदुनिया पर शासन किया।
- लिसीमाखस ने थ्रेस और एशिया के उपद्वीप पर शासन किया।
- सिल्यूकस ने सीरिया पर शासन किया।
- टॉलेमी ने मिस्र पर शासन किया था।

अंतिगोनुस ने पूरे सिकंदर साम्राज्य को फिर से एकजुट करने की कोशिश की, परन्तु अन्य सेनापति भी वही करना चाहते थे। अंतिगोनुस एक कुशल सैन्य रणनीतिकार थे और उन्होंने बहुत सारा क्षेत्र प्राप्त किया, जिसमें कैसैण्डर की विरासत का बड़ा हिस्सा और साइप्रस द्वीप शामिल था। अंतिगोनुस 80 वर्ष की आयु तक जीवित रहे। वह अंतिगोनिड वंश के संस्थापक थे, जिसमें अगले दो अंतिगोनुसों (अंतिगोनुस द्वितीय और अंतिगोनुस तृतीय) शामिल थे।

2. अंतिगोनुस द्वितीय, जिन्हें गोनातस के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म 319 ई.पू. में हुआ था। वह देमेत्रियस प्रथम पोलियोरसेट्स ("नगरों का घेराव करने वाला" या "नगरों का विजेता") के पुत्र और अंतिगोनुस प्रथम के पोते थे। उनकी प्रमुख उपलब्धि सेल्युसीड शासक अंतिओकस प्रथम को सीरिया से खदेड़ना था। इससे उनके अपने मकिदुनिया (उत्तरी यूनान) पर शासन के लिए किसी भी खतरे का अंत हो गया। इस अंतिगोनुस ने भी 80 वर्ष की आयु तक जीवन व्यतीत किया।

3. अंतिगोनुस तृतीय, 263 ई.पू. में देमेत्रियस फेयर के पुत्र थे। वह अंतिगोनुस द्वितीय के आधे भतीजे थे। उन्होंने अंतिगोनिड राजवंश को बनाए रखा और यूनान को यूनानिक संघ (224 ई.पू.) के माध्यम से एकजुट रखा, ताकि इसके एकीकृत भागों को विघटित करने के विभिन्न प्रयासों को रोका जा सके।

4. अंतिगोनुस, यूहन्ना हिर्केनस के पुत्र थे। उनका जन्म 135 ई.पू. में हुआ था और 104 ई.पू. में उनका निधन हो गया। उनके दादा शमौन थे और उनके परदादा मत्तित्याह थे। इसलिए, वह प्रसिद्ध यहूदी सैन्य अगुवा, यहूदा मक्काबी के पोते थे। जब अंतिगोनुस सत्ता में आए, तब हस्मोनी परिवार उतना शक्तिशाली नहीं था जितना पहले हुआ करता था। वंश ने जल्दी ही अपनी शक्ति खो दी। हस्मोनी परिवार ने आपसी झगड़ों और अविश्वास के कारण अपनी शक्ति खो दी।

5. अंतिगोनुस द्वितीय मत्तित्याह, अंतिगोनुस (#4) का भतीजा और अरिस्तुबुलस द्वितीय के पुत्र थे। वह अंतिम हस्मोनी राजा थे। इस अंतिगोनुस ने अपने जीवन का एक अच्छा समय रोम में जूलियस कैसर को यह समझाते हुए बिताया कि उन्हें (अन्तिगोनुस) अंतिपोतर द्वितीय के बजाय यहूदिया पर शासन करना चाहिए। 44 ई.पू. में कैसर की हत्या के बाद, अंतिगोनुस पूर्व की ओर बढ़े और 40 ई.पू. में यरूशलेम में अपना शासन स्थापित किया।

हालाँकि, यह शासन अस्थिर था और अधिक समय तक नहीं टिक सका। पराजित राजा हेरोदेस ने अंततः अन्तिगोनुस द्वारा जीते गए क्षेत्रों को वापस लेने के लिए पर्याप्त रोमी समर्थन जुटाया और तीन साल बाद नए रोमन सम्राट मार्क एंटनी ने अन्तिगोनुस का सिर कलम कर दिया।

*यह भी देखें*हस्मोनियन।

अंतिम न्याय

इतिहास के अंत में वह समय जब परमेश्वर सभी मानवजाति के कार्यों का न्याय करेंगे। प्रभु के दिन के विषय में अपने प्रचार में, पुराने नियम के विभिन्न भविष्यद्वक्ताओं ने उस समय की भविष्यवाणी की जब परमेश्वर सभी दुष्ट राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध करेंगे और सिय्योन के अनन्त नगर में अपना शासन स्थापित करेंगे (यशा 4:2; 11:10; यिर्म 50:3–32; योए 2:1–3; 3:9–16; आमो 5:18–20; 9:11; सप 1:7–18)। नए नियम के लेखक इस विषय को जारी रखते हैं, इसे यीशु के वचनों और कार्यों के प्रकाश में पुनः व्यक्त करते हैं। यीशु को परमेश्वर ने जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए नियुक्त किया है (प्रेरि 10:42; 17:31)। विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों को मसीह के न्यायासन के सामने उपस्थित होना होगा, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके जीवन के अनुसार अच्छा या बुरा प्राप्त हो सके (2 कुरि 5:10; पुष्टि करें रोम 14:10)।

परमेश्वर के न्याय का केंद्र बिंदु मानव व्यवहार है। जो लोग वाचा के प्रति वफादार हैं, वे समृद्ध होंगे, लेकिन जो लोग विश्वासघात करते हैं, वे नष्ट हो जाएंगे। भविष्यद्वक्ता हबक्कूक धर्मी व्यक्ति की पहचान एक विश्वासयोग्य के रूप में करता है (हब 2:4)। नए नियम के लेखक कहते हैं कि किसी का न्याय इस आधार पर किया जाएगा कि उसके कर्म परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं या नहीं (2 कुरि 5:10; प्रका 20:12)। हालांकि, नए नियम में यह भी कहा गया है कि कोई भी परमेश्वर के पूर्ण मानकों को पूरा नहीं कर पाया है। सभी ने पाप किया है इसलिए दंड के योग्य हैं (रोम 3:9, 23)। न्याय के समय तय किया जाने वाला मुद्दा किसी का अपराध नहीं है, बल्कि यह है कि किसी को दोषमुक्त किया गया है या नहीं। नए नियम में इस दोषमुक्ति को न्यायी ठहराना और मेल-मिलाप कहा गया है (3:21–28; 5:1–21)। दोषमुक्ति का साधन मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान है, क्योंकि यीशु के धार्मिकता के कार्य से सभी लोगों के लिए दोषमुक्ति और जीवन होता है (5:18)। जो मसीह पर विश्वास करता है, वह दोषी नहीं ठहराया जाता (यूह 3:16–18) और न्याय के दिन में आत्मविश्वास के साथ प्रवेश कर सकता है (1 यूह 4:17)। उसका नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखा है (प्रका 21:27)। अविश्वासी को न्याय के दिन का सामना बिना किसी सहायता के करना होगा। उसका न्याय पुस्तकों में लिखे अनुसार किया जाएगा; अर्थात, उसने जो किया है उसके अनुसार (20:11–12)।

*यह भी देखें*प्रभु का दिन; युगांतशास्त्र; न्याय; न्याय आसन; अंतिम दिन; परमेश्वर का क्रोध।

अंतियोख चतुर्थ

एक यूनानीकृत राजा, जिन्हें एपिफेनस कहा जाता था, जिसका अर्थ है "प्रतापी" या "देवता का प्रकट रूप"। वह सेल्यूसीड वंश के आठवें शासक थे। सेल्यूसीड शासकों ने सीरिया और उसके आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। वह लगभग 215 से 164 ईसा पूर्व तक जीवित रहे। वह अंतिओकस तृतीय महान के छोटे पुत्र थे।

प्रारंभिक जीवन तथा सत्ता की प्राप्ति

189 ईसा पूर्व में, अंतिओकस चतुर्थ मैग्नेशिया की लड़ाई के बाद रोम में बंदी बनाए गए थे। वहीं पर उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। बाद में, उन्होंने अपने भाई सेल्यूकस चतुर्थ की हत्या के बाद अन्ताकिया में सीरियाई सिंहासन प्राप्त किया। उन्होंने 175 से 164 ईसा पूर्व तक शासन किया।

बाइबल के संदर्भ में अंतिओकस एपिफेनस सभी सेल्यूसीड शासकों में सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं। उन्हें इतिहास के सबसे निर्दयी और अत्याचारी शासकों में से एक के रूप में जाना जाता है। अंतिओकस चतुर्थ यूनानी देवता ज्यूस में गहरी आस्था रखते थे। उन्होंने अपने समस्त राज्य को यूनानीकृत संस्कृति, विधिशास्त्र और धर्म से एकजुट करने का प्रयास किया। इसी कारण उनका यहूदा में यहूदियों से घोर टकराव हुआ।

यहूदियों के साथ विवाद

अपने शासनकाल की शुरुआत में, अंतिओकस चतुर्थ ने यहूदियों के महायाजकों की नियुक्ति में हस्तक्षेप करना आरंभ कर दिया। 171 से 168 ईसा पूर्व तक, उन्होंने मिस्र के खिलाफ युद्ध किया। उन्होंने टॉलेमी VI और टॉलेमी VII को हराया। इसके बाद उन्होंने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया। उन्होंने यहूदी धर्म पर कठोर उत्पीड़न के साथ प्रतिबंध लगाए। उन्होंने मन्दिर को लूटा। उन्होंने होमबलि की वेदी के ऊपर ज़्यूस की वेदी बनाकर यूनानी देवताओं की उपासना स्थापित करने की कोशिश की (1 मक्का 1:10–62; 2 मक्का 4:7–42)। यही वेदी संभवतः दानिय्येल 11:31 में उल्लेखित "घृणित वस्तु" कही गई है। दानिय्येल की पुस्तक में अंतिओकस चतुर्थ एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। वह शायद 7:8; 8:9–14, 23–25 का "छोटा सा सींग" है और "परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा" (7:25)।

अंतिओकस के आदेश से, यहूदी धर्म को मृत्यु दण्ड के साथ अवैध घोषित कर दिया गया। यहूदियों को अन्यजाति त्योहारों में भाग लेने के लिए मजबूर किया गया। 167 ईसा पूर्व में यहूदियों के याजक मत्तित्याह के नेतृत्व में खुला विद्रोह शुरू

हो गया। यह तब हुआ जब राजा का एक प्रतिनिधि यरूशलेम के पास स्थित एक गांव मोदीन में आज्ञाकारिता लागू कर रहा था। मत्तित्याह ने प्रतिनिधि को मार डाला और फिर आसपास की पहाड़ियों में भाग गए। मत्तित्याह के कई अनुयायी मारे गए। हालाँकि, हसीदीम नामक समर्पित यहूदियों का एक समूह उनके साथ शामिल हो गया। साथ में, उन्होंने गुप्त स्थानों से अचानक आक्रमण कर राजा की सेना के खिलाफ लड़ाई शुरू की।

मक्काबी विद्रोह और अंतिओकस चतुर्थ का पतन

166 ईसा पूर्व में मत्तित्याह की मृत्यु के बाद, उनके पुत्र यहूदा मक्काबी ने युद्ध को आगे बढ़ाया। वह सीरियाई सेनापति पर विजयी हुए। पार्थिया और आर्मेनिया में गंभीर विद्रोहों के कारण अंतिओकस व्यक्तिगत रूप से यहूदी विद्रोह के दमन का नेतृत्व करने में असमर्थ थे। उन्होंने यह कार्य अपने प्रतिनिधि लीसियास को सौंपा और आदेश दिया कि यहूदियों को नष्ट कर दिया जाए, दास बना दिया जाए और भूमि को उजाड़ दिया जाए, किन्तु यह योजना असफल रही।

इम्माऊस में यहूदा ने गोर्जियस को पराजित किया। सीरियाई सेनाएँ यहूदिया से भाग निकली। फिर लीसियास ने व्यक्तिगत रूप से मक्काबियों के खिलाफ एक बड़ी सेना का नेतृत्व किया। लीसियास को बेतसूर में बुरी तरह हार का सामना करना पड़ा। 164 ईसा पूर्व में, यहूदा ने मंदिर का पुनर्निर्माण और शुद्धिकरण किया और दैनिक बलिदानों को पुनः आरंभ किया। 160 ईसा पूर्व तक, अंतिओकस चतुर्थ की शक्ति का हर निशान यरूशलेम से मिटा दिया गया था।

अंतिओकस एपिफेनस को उग्र, अप्रत्याशित और पागलपन की हद तक जल्दबाज माना जाता था। अंतिओकस दो कारणों से और अधिक पागल हो गया:

1. यहूदा मक्काबी सफल रहे।
2. अंतिओकस यहूदियों के विद्रोह को कुचलने में असमर्थ रहे।

इन घटनाओं के बाद, उन्होंने अपनी सेना को फारस भेज दिया। कहा जाता है कि वह पागल होकर फारस में मर गए।

अंधकार

प्रकाश या उजयाला की अनुपस्थिति को अंधकार कहते हैं। हालांकि बाइबिल में शायद ही कभी वास्तविक अंधकार का उल्लेख किया गया हो, "अंधकार" का अनुवाद किए गए कई शब्दों का उपयोग आलंकारिक या रूपक अर्थ में किया गया है।

जब परमेश्वर ने दुनिया बनाई, तब तक कोई प्रकाश नहीं था जब तक कि उन्होंने प्रकाश को प्रकट होने की आज्ञा नहीं दी। फिर उन्होंने उजयाले और उसके विपरीत, अंधकार, जिसे उन्होंने रात कहा, के बीच अंतर किया (उत्त 1:2, 4–5, 18)। वास्तविक अंधकार का उल्लेख मिस्र पर परमेश्वर द्वारा डाली गई विपत्तियों के वर्णन में भी किया गया है; नौवां विपत्ति एक तीव्र अंधकार था जिसे "महसूस" किया जा सकता था (निर्ग 10:21–23)। वह अंधकार तीन दिनों तक रहा और चयनात्मक था; जहां भी मिस्री थे, वहां अंधेरा था, लेकिन जहां इस्राएली थे, वहां प्रकाश था। इस्राएली मिस्र से एक बादल के साथ निकले जो उन्हें उनके शत्रु से अलग करता था, यह बदल इस्राएलियों को प्रकाश देता था लेकिन मिस्रियों के लिए अंधकार उत्पन्न करता था (निर्ग 14:20)। बाइबिल बताती है कि चोर या व्यभिचारी अपने बुरे काम अंधेरे या रात में करते हैं (अय्यू 24:16–17)।

नए नियम में "अंधकार" का दो बार शाब्दिक अर्थ में उपयोग किया गया है। यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने पर, दोपहर से तीन बजे तक तीन घंटे की अवधि के लिए, कोई उजयाला नहीं था (मत्ती 27:45; मर 15:33; लूका 23:44)। दूसरा संदर्भ मसीह के दूसरे आगमन का है, जब "सूर्य अंधियारा हो जाएगा, और चाँद का प्रकाश जाता रहेगा" (मत्ती 24:29)।

कई बाइबिल खंडों में परमेश्वर के चारों ओर अंधकार का उल्लेख है, जो स्पष्ट रूप से प्रकाश की अनुपस्थिति के शाब्दिक अर्थ से एक गहरे अर्थ की ओर बढ़ रहा है। परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा से एक घने, काले बादल (निर्ग 20:21; व्य. वि. 4:11) या अंधकार में से बात की (व्य. वि. 5:23)। अंधकार को परमेश्वर के चारों ओर एक मंडप या चोगा के रूप में चित्रित किया गया है (2 शमू 22:12; भज 18:11; 97:2)। परमेश्वर प्रकाश और अंधकार के लिए एक सीमा निर्धारित करते हैं (अय्यू 26:10), अंधकार लाते हैं (भज 104:20; 105:28), और प्रकाश और अंधकार बनाते हैं (यशा 45:7)। परमेश्वर घोर अंधकार में निवास करते हैं (1 रा 8:12; 2 इति 6:1), और घोर अंधकार उनके पैरों तले है (2 शमू 22:10; भज 18:9)।

अंधकार का अधिकांश आलंकारिक संदर्भ काव्यात्मक पाठों में किया गया है, जैसे अय्यूब, भजन संहिता और यशायाह। आम तौर पर, ऐसा अंधकार परमेश्वर की इच्छा के बारे में अज्ञानता को दर्शाता है। परमेश्वर का ज्ञान "प्रकाश" है; इसलिए, ऐसे ज्ञान की कमी "अंधकार" है (अय्यू 12:24–25; मत्ती 4:16; यूह 1:5; 8:12; 12:35, 46; 1 यूह 1:5; 2:8–9, 11)।

अय्यूब ने अंधकार को शून्यता के बराबर बताया (अय्यू 3:4–6)। अन्य संदर्भों में अंधकार मृत्यु का प्रतीक है, छायाओं और उदासी की भूमि, मृतकों का निवास स्थान जो दिन के प्रकाश से दूर है (अय्यू 10:21–22; 15:24; 17:12–13; 18:18; सभो 6:4; 11:8)।

अंधकार अक्सर संकट और चिंता, या दुष्टों द्वारा अनुभव किए गए भ्रम और विनाश का प्रतीक है (उत 15:12; अय्यू 5:14;

12:25; 15:22, 30; 19:8; 22:11; भज 35:6; 107:10, 14; सभो 5:17; यशा 5:30)। नैतिक पतन को कभी-कभी अंधकार के रूप में वर्णित किया गया है (नीति 2:13; 4:19; यशा 5:20; 60:2)। नए नियम में अंधकार आम तौर पर नैतिक पतन और आत्मिक अज्ञानता का रूपक है (मत्ती 4:16; 6:23; लूका 1:79; 11:35; 22:53; रोमि 2:19; कुलु 1:13)।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का एक प्रमुख विषय प्रभु का दिन था, जिसे अक्सर अंधकार से जोड़ा जाता था (यहेज 32:8; योए 2:2, 31; आमो 5:18, 20; सप 1:15)। नया नियम भी मसीह के दूसरे आगमन के संबंध में न्याय के साथ अंधकार को जोड़ता है (मत्ती 8:12; 22:13; 25:30; 2 पत 2:17; यहू 1:6, 13)। जो लोग परमेश्वर को जानने आते हैं उन्हें अंधकार से बाहर आने के लिए कहा जाता है (यशा 9:2; 29:18; 42:7); अंधकार परमेश्वर से छिपने की जगह नहीं हो सकता (अय्यू 34:22; भज 139:11–12; यशा 29:15)।

यह भी देखें प्रकाश।

अंधापन

देखने की क्षमता की कमी की स्थिति। प्राचीन पश्चिमी एशिया में शारीरिक अंधापन आम था और यह आधुनिक चिकित्सा के लाभों से वंचित गरीब और जनजातीय लोगों में आज भी प्रचलित है।

बाइबल में अंधेपन के चिकित्सीय कारणों का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन व्यक्तिगत सफाई की कमी और अस्वच्छ जीवन परिस्थितियाँ निश्चित रूप से इसके कारण हो सकते थे।नवजात शिशु विशेष रूप से संवेदनशील होते थे। जन्म से अंधापन (यूह 9:1–3) संभवतः आँखों की सूजन थी। जन्म प्रक्रिया में माँ से कीटाणु शिशु की आँखों में पहुँच जाते थे, जहाँ वे बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पाते थे। तीन दिनों के भीतर जलन, मवाद और आँखों में सूजन दिखने लगती थी। ऐसे मामलों में, आदिम उपचार कुछ स्थायी या पूर्ण क्षति को रोक नहीं सकता था। आधुनिक चिकित्सा अभ्यास सभी नवजात शिशुओं का एंटीसेप्टिक आईड्रॉप्स से इलाज करता है; लेकिन ऐसा उपचार गरीबों के लिए हमेशा उपलब्ध नहीं होता, या आज मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में इसे अस्वीकार कर दिया जाता है। शिशुओं और छोटे बच्चों को संक्रामक नेत्रशोथ से भी खतरा होता है। मक्खियों द्वारा फैलने वाली यह बीमारी भारी पपड़ी, ढीली पलकें, पलकें गिरना, और अंततः कॉर्निया का धुंधलापन पैदा करती है, जो अक्सर पूर्ण अंधापन की ओर ले जाती है। दुनिया के कुछ हिस्सों में आज भी (अंधविश्वास के कारण) एक माँ अपने बच्चे के चेहरे पर मक्खियों को बैठने देती है, भले ही वह शिशु को अपनी गोद में लिए हो। वयस्कों में अंधापन बीमारियों जैसे मलेरिया के दुष्प्रभाव, रेगिस्तान में रेत के तूफानों और सूरज की चमक के लम्बे समय तक सम्पर्क, दुर्घटनाओं, सजा (जैसे शिमशोन के साथ, न्या 16:21), या बुढ़ापे (उत 27:1; 1 शमू 4:15; 1 रा 14:4) के कारण हो सकता है।

पुराने नियम ने अंधों के लिए विशेष ध्यान देने की मांग की (लैव्य 19:14) और अंधे व्यक्ति को गुमराह करने के लिए सजा लगाई (व्य.वि. 27:18)। एक अंधे व्यक्ति को, जिसे दोषपूर्ण माना जाता था, याजक के रूप में सेवा करने की अनुमति नहीं थी (लैव्य 21:18)।

यीशु की चंगाई सेवा ने भविष्यवाणी की पूर्ति में अंधों को दृष्टि दी (लूका 4:18)। दृष्टि बहाल करने की उनकी क्षमता यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को दिए गए प्रमाणों में से एक थी कि यीशु मसीहा थे (मत्ती 11:5)। यीशु ने गलील में दो अंधे पुरुषों को चंगा किया (9:27–30), बैतसैदा में एक अंधे व्यक्ति को (मर 8:22–26), यरूशलेम में जन्म से अंधे व्यक्ति को (यूह 9), और यरीहो में एक अंधे भिखारी बरतिमाई और उसके मित्र को चंगा किया (मर 10:46–52; पुष्टि करें मत्ती 20:30–34; लूका 18:35–43)। कभी-कभी यीशु ने तत्काल बहाली का आदेश दिया (मत्ती 10:52)। अन्य अवसरों पर उन्होंने मिट्टी और पानी (यूह 9:6–11) या अपनी थूक (मर 8:23) जैसे "साधनों" का उपयोग किया। प्रेरित पौलुस अपने परिवर्तन के समय अंधे हो गए थे और हनन्याह की उपस्थिति में एक चमत्कारी इलाज प्राप्त किया (प्रेरि 9:1–9, 18)। बाद में पौलुस ने साइप्रस द्वीप पर अपनी सेवा का विरोध करने के लिए एक जादूगर एलिमास को अस्थायी अंधेपन से पीड़ित किया (13:11)।

यह भी देखें चिकित्सा और चिकित्सा अभ्यास; रोग।

अकजीब

अकजीब

1. यहूदा में एक शहर (यहो 15:44)। भविष्यद्वक्ता मीका ने इसे अन्य शहरों के साथ सूचीबद्ध किया था जो सामरिया के साथ नष्ट हो जाएंगे (मीका 1:14)। यह संभवतः वही शहर था जो कजीब (उत 38:5) और कोजेबा (1 इति 4:22) के नाम से जाना जाता था।

2. आशेर में एक नगर (यहो 19:29)। यह उन सात नगरों में से एक था, जिनसे आशेर कनानी निवासियों को हटाने में असफल रहे (न्या 1:31)। कजीबव (आधुनिक एज़-ज़िब) में हाल ही में की गई पुरातात्विक खुदाई से पता चलता है कि लोग इस नगर में नौवीं से तीसरी शताब्दी ई.पू. तक रहते थे।

अकबोर

1. एदोम के राजा बाल्हानान का पिता, जिन्होंने इस्राएल के राज्य की स्थापना से पहले शासन किया था (उत 36:38–39; 1 इति 1:49)।
2. मीकायाह का पुत्र, जो यहूदा के दक्षिणी राज्य के राजा योशिय्याह के दरबार में एक दरबारी (राजा के दरबार में काम करने वाला साथी) था। योशिय्याह ने अकबोर को हुल्दा नबिया से नव-प्राप्त व्यवस्था की पुस्तक के बारे में पूछने के लिए भेजा (2 रा 22:12–14)। अकबोर को मीकायाह का पुत्र अब्दोन भी कहा जाता है (2 इति 34:20)। वह एलनातान का पिता था (यिर्म 26:22; 36:12)।

अकबोर

अकबोर का एक अन्य वर्तनी रूप।

*देखें*अकबोर।

अकसा

कालेब की बेटी (1 इति 2:49)। कालेब के भतीजे ओत्नीएल ने अकसा से विवाह करने के लिए अपने चाचा की विनती को स्वीकार किया और किर्यत्सेपेर को कब्जा कर लिया। अकसा ने ओत्नीएल को अपने पिता, कालेब से एक खेत मांगने के लिए प्रेरित किया। अकसा ने कालेब से दो जल के स्रोत भी मांगे, जो मरूभूमि में जीवन के लिए आवश्यक थे (यहो 15:16–19; न्या 1:12–15)।

अकान

उत्पत्ति 36:27 में एसेर का पुत्र याकान का वैकल्पिक नाम।

*देखें*याकान।

अकाबा की खाड़ी

लाल समुद्र की पूर्वी शाखा, जो सऊदी अरब और सीनै प्रायद्वीप को अलग करती है। लाल समुद्र की दो उत्तरी खाड़ियाँ हैं। खाड़ी की चौड़ाई 19 से 27 किलोमीटर (12 से 17 मील) तक होती है और इसकी लंबाई 161 किलोमीटर (100 मील) है। एलत या एलोत का बंदरगाह शहर अकाबा की खाड़ी के उत्तरी छोर पर स्थित है। यह इस्राएलियों के 40 वर्षों के जंगल में भटकने के विवरण में उल्लेखित है (व्य.वि. 2:8)। अपने एस्योनगेबेर के बंदरगाह से, राजा सुलैमान ने अकाबा की खाड़ी से ओपीर तक जहाज भेजे थे (1 रा 9:26–28)।

अकाल

लम्बे समय तक और अत्यधिक भोजन की कमी। अकाल, अन्य आपदाओं (जैसे युद्ध और बीमारी) के साथ, हमेशा मानव अनुभव का हिस्सा रहा है। कभी-कभी सही समय पर पर्याप्त वर्षा होती थी, लेकिन कभी-कभी वर्षा बहुत जल्दी, देर से या अपर्याप्त होती थी (लैव्य 26:19; आमो 4:7–8)। प्राचीन पश्चिम एशिया के इब्रानी और अन्य लोग अकाल को परमेश्वर के न्याय के रूप में देखते थे। चूंकि परमेश्वर सृष्टिकर्ता और पालनकर्ता हैं, उनके पास प्रकृति की दुनिया पर अधिकार है। वह अपनी सृष्टि को अपनी इच्छा के अनुसार उपयोग कर सकते हैं; जब अकाल पड़ता था तो यह कोई दुर्घटना नहीं थी। चाहे अकाल वर्षा की कमी, ओलावृष्टि, या किसी अन्य घटना के कारण हुआ हो, परमेश्वर ही इसके कारक थे।

प्राचीन दुनिया में अकाल का सबसे प्रचलित कारण वर्षा की कमी थी। ऐसे अकाल अब्राहम (उत 12:10) और इसहाक (26:1) के समय में हुए थे। यूसुफ मिस्र में अकाल को दूर करने के प्रति बहुत चिंतित थे। (अध्याय 41–47)। नील नदी आमतौर पर मिस्रियों को उनकी फसलों के लिए पर्याप्त पानी प्रदान करती थी; ऊपरी क्षेत्रों से पर्याप्त जल की आपूर्ति प्राप्त करने में विफलता का मतलब मिस्र के लिए अकाल था।

वर्षा की कमी के अलावा, अकाल अन्य कारणों से भी हो सकता था, जैसे ओलावृष्टि और गरज के साथ बारिश (निर्ग 9:28; 1 शमू 12:17)। टिड्डियों और अन्य कीटों द्वारा फसलों पर आक्रमण कभी-कभी अकाल का कारण बनता था (निर्ग 10:15; आमो 4:9)। विदेशी सेनाओं के आक्रमण से भी अकाल पड़ता था (व्य.वि. 28:53; 2 रा 6:25; 25:3; विल 4:9–10)। बीमारी अक्सर अकाल के साथ आती थी (1 रा 8:37; यिर्म 14:12; 21:9)।

अकाल ने नाओमी और रूत के जीवन में बदलाव लाया (रूत 1:1)। परमेश्वर ने अकाल की स्थिति में युसूफ को एक शक्तिशाली पद दिया। अकाल ने राजा दाऊद (2 शमू 21:1),

एलिय्याह (1 रा 17), एलीशा (2 रा 4:38; 6:25), और सिदकिय्याह (25:2–3) के जीवन को भी प्रभावित किया।

अकाल का उपयोग परमेश्वर द्वारा चेतावनी देने (1 रा 17:1), सुधारने (2 शमू 21:1), और अपने लोगों या मूर्तिपूजकों को दण्डित करने के लिए किया गया था (यिर्म 14:12, 15)। यीशु और प्रकाशितवाक्य पुस्तक के लेखक द्वारा भविष्यद्वानी किए गए अकाल न्याय के संकेत थे (मर 13:8; प्रका 18:8)।

अकीम

जरूब्बाबेल के वंशज अखीम की एक वैकल्पिक वर्तनी है।

देखें अखीम।

अक्कद

तीन शहरों में से एक (बाबेल, एरेख और अक्कद) जो हिद्देकेल और फ़रात नदियों के बीच स्थित हैं।

कहा जाता है कि इसकी स्थापना निम्रोद द्वारा की गई थी (उत 10:10)। "अक्कादी" (अक्कद से) वह भाषा है जो मेसोपोटामिया में सरगोन के दिनों से (लगभग 2360 ई. पू.) अश्शूरी और बाबेली काल तक बोली जाती थी।

अक्काद

अक्काद

प्राचीन मेसोपोटामिया नगर अक्कद की एक वैकल्पिक वर्तनी।

देखें अक्कद।

अक्कादी लोग

अक्कादी लोग

अक्कादी, प्राचीन लोग थे जिन्होंने मध्य पूर्व में सबसे पहले बड़े साम्राज्यों में से एक का निर्माण किया था। उन्होंने सुमेरी लोगों की भूमि पर अधिकार कर लिया था और प्रारंभिक सभ्यताओं के विकास पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा।

देखिए सुमेरी लोग।

अक्कूब

1. एल्योएनै के सात पुत्रों में से एक और दाऊद का एक दूर का वंशज (1 इति 3:24)।
2. लेवियों के द्वारपालों का एक पूर्वज, जो जरूब्बाबेल के साथ बेबीलोन की बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटा (एज्रा 2:42; नहे 7:45)। यह नाम उसके दो वंशजों (#3 और #6 नीचे) का भी था।
3. बेबीलोन में बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटने वाले पहले लेवीय द्वारपालों के परिवारों का मुखिया (1 इति 9:17)।
4. मन्दिर सहायकों के एक दल का पूर्वज, जो बेबीलोन में बंधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटा (एज्रा 2:45)।
5. एज्रा का सहायक जिसने लोगों को व्यवस्था से पढ़े गए अंशों को समझाया (नहे 8:7)।
6. एज्रा और नहेम्याह के समय में यरूशलेम में निवास करने वाले लेवीय द्वारपालों के परिवार का मुखिया (नहे 11:19; 12:25–26)। वह सम्भवतः ऊपर #5 के समान हैं।

अक्कोस

अक्कोस

यह नाम हक्कोस का एक रूप है, जिसका उल्लेख 1 मक्काबियों 8:17 में हुआ है।

देखिए हक्कोस।

अक्रबत्तेने

अक्रबत्तेने

वह स्थान जहाँ यहूदा मक्काबी ने "एसाव के पुत्रों" के गढ़ों को नष्ट कर दिया, जो यहूदियों के लिए परेशानी उत्पन्न कर रहे थे (1 मक्का 5:3; 2 मक्का 10:14–23)। वाक्यांश "इदुमैया के अक्रबत्तेने में" संभवतः अक्रबा के पास एक उत्तरी एदोमी क्षेत्र को संदर्भित करता है (यूदी 7:18)। यह संभवतः नेगेव मरूभूमि का क्षेत्र नहीं था जैसा कि लोग पहले मानते थे।

अक्रबा

अक्रबा

अक्रबा वह स्थान था, जहाँ होलोफर्नेस की सेना में शामिल कुछ एदोमी और अम्मोनी सैनिक बेथूलिया की घेराबंदी के समय तैनात थे (यूदी 7:18)। अक्रबा संभवतः शेकेम से लगभग 10 मील (16 किलोमीटर) दक्षिण-पूर्व में स्थित था। यह आधुनिक समय का नाब्लस है।

अक्रब्बीम

मृत सागर के दक्षिण-पश्चिमी छोर और सीन के जंगल के बीच दक्षिणी फ़िलिस्तीन में एक पहाड़ी दर्रा या ढलान। माउंट अक्रब्बीम का दर्रा यहूदा के गौत्र को कनान पर विजय प्राप्त करने के बाद दी गई भूमि की दक्षिणी सीमा का हिस्सा था (गिन 34:4; यहो 15:3; न्या 1:36)। पुराने और नए नियम के बीच के समय में, यहूदा मकाबी ने इस दर्रे पर इडुमेन्स के खिलाफ एक महत्वपूर्ण युद्ध जीता था (1 मकाबीज 5:3)।

इसे स्कोर्पियन के नाम से भी जाना जाता है।

अक्रोपोलीस

एक शब्द जो यूनानी *अक्रोस* (जिसका अर्थ "सबसे ऊँचा") और *पोलीस* (जिसका अर्थ "शहर") को मिलाकर बनाता है। प्राचीन यूनान में, गढ़ एक मजबूत, संरक्षित स्थान था। इसे आमतौर पर एक पहाड़ी पर बनाया जाता था और यह शरण का स्थान होता था। पहाड़ी के आधार के चारों ओर का क्षेत्र कई बार एक शहर में विकसित हो जाता था।

एथेंस (यूनान की राजधानी) का गढ़ में पार्थेनन नामक एक प्रसिद्ध इमारत थी। पार्थेनन एक मन्दिर था जो एथेना का सम्मान करने के लिए बनाया गया था, जिन्हें प्राचीन यूनानी ज्ञान की देवी माना जाता था। लोगों ने इस मन्दिर को 500 ईसा पूर्व (2,500 से अधिक वर्ष पहले) बनाया था। पार्थेनन को डोरिक शैली (एक प्रकार की यूनानी भवन बनावट) में बनाया गया था। कई लोग इसे प्राचीन यूनानी भवन कौशल का सबसे अच्छा उदाहरण मानते हैं।

प्रेरि 17:34 में उल्लेख है कि पौलुस ने अरियुपगुस में प्रचार किया, जिसका अर्थ है "एरेस की पहाड़ी," जो एथेंस के गढ़ के उत्तर-पश्चिम में एक नीची पहाड़ी है। जब पौलुस ने वहाँ प्रचार किया, तो उन्होंने एथेंस नगर परिषद के एक सदस्य को यीशु का अनुयायी बनाया।

अक्विला

प्रिस्किल्ला के पति (प्रेरि 18:2, 18, 26; रोम 16:3; 1 कुरि 16:19; 2 तीमु 4:19)। *देखें* प्रिस्किल्ला और अक्विला।

अक्शाफ

अक्शाफ

अक्षाप का एक अन्य रूप है, जो कनानी राजनगर का नाम था।

देखें अक्षाप।

अक्षम्य पाप

देखें अक्षम्य पाप।

अक्षम्य पाप

यीशु मसीह के माध्यम से प्रदर्शित किए गए पवित्र आत्मा के कार्य का श्रेय शैतान को देना। यह पाप पवित्र आत्मा के खिलाफ़ ईशनिंदा है।

अक्षम्य पाप को उसके संदर्भ से परिभाषित किया जाना चाहिए, जो मत्ती 12:31–32 और मरकुस 3:28–30 में पाया जाता है। इन वचन भागों में, यीशु ने अभी-अभी एक अंधे और गूंगे व्यक्ति से दुष्टात्मा को निकाला था। परमेश्वर की शक्ति का अविवादास्पद प्रमाण अभी-अभी हुआ था। लेकिन फरीसियों ने, हठीले अविश्वास के साथ, परमेश्वर की शक्ति के इस प्रदर्शन का श्रेय शैतान को दिया (मत्ती 12:24)। पवित्रशास्त्र के कई वचनों से पता चलता है कि कई यहूदियों ने इसी तरह की भ्रामक राय व्यक्त की थी, कि यीशु शैतान की शक्ति से चमत्कार कर रहे थे (मत्ती 9:34; लूका 11:14–20; यूह 7:20; 8:48, 52; 10:20)। यहूदियों का एक समूह, जिनमें ज्यादातर फरीसी थे, यीशु मसीह के माध्यम से प्रदर्शित किए गए पवित्र आत्मा के कार्य का श्रेय शैतान को देने के दोषी थे। उन्होंने अक्षम्य पाप किया जब उन्होंने कहा कि यीशु के कार्य, जो पवित्र आत्मा की शक्ति से किए गए थे, वे शैतान से उत्पन्न हुए थे। सरल शब्दों में, उन्होंने साहसपूर्वक यीशु के कार्य को शैतान से आने वाला बताकर गंभीर पाप किया था। दिलचस्प बात यह है कि कई यहूदियों ने यीशु की मृत्यु के बाद भी इस झूठे चित्रण को जारी रखा। उन्होंने इस बात से इनकार नहीं किया कि यीशु ने चमत्कार किए थे; उन्होंने कहा कि यीशु ने शैतान की शक्ति से चमत्कार किए।

क्या अक्षम्य पाप नहीं है?

परमेश्वर के विरुद्ध इस्राएल का विद्रोह अक्षम्य पाप नहीं है, भले ही इस विद्रोह के परिणामस्वरूप हज़ारों लोगों का अनन्त न्याय हुआ और परमेश्वर की आशीष अस्थायी रूप से समाप्त हो गई। यूहन्ना द्वारा उल्लिखित "पाप जिसका फल मृत्यु है" (1 यूह 5:16–17) यह अक्षम्य पाप नहीं है। एक व्यक्ति जिसके पास छुटकारा और पाप की क्षमा है (इफि 1:7), वर्तमान और भविष्य के पापों के लिए शुद्धिकरण है (1 यूहन्ना 1:7), और अनन्त जीवन (यूहन्ना 3:16) है, उसके लिए अक्षम्य पाप करना असंभव होगा। लेकिन जो लोग "पाप जिसका फल मृत्यु है" करते हैं वे सभी मसीही हैं। 1 यूहन्ना 5:16 यह कहता है कि जो व्यक्ति "पाप जिसका फल मृत्यु है" करता है, वह मसीह में "भाई" है।

अक्षम्य पाप प्रभु यीशु को अस्वीकार करना नहीं है, जब तक कि अस्वीकार करने वाला अपने अविश्वास में मर न जाए। ऐसा पाप अनंत काल तक क्षमा नहीं किया जाएगा, लेकिन यह वही पाप नहीं है जिसकी यीशु ने इस वचन में निंदा की थी: "जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग में और न ही आनेवाले युग में क्षमा किया जाएगा" (मत्ती 12:32)। अनेक वचन भाग इस चेतावनी को दोहराते हैं कि उद्धारकर्ता में अविश्वास का परिणाम अनन्त मृत्यु है (यूह 3:18, 36; 1 यूह 5:12; प्रका 20:15; 21:8), लेकिन ये पवित्रशास्त्र के वचन सीधे तौर पर अक्षम्य पाप के बारे में नहीं बोलते हैं। यीशु ने जोर देकर कहा कि एक व्यक्ति उस पर अविश्वास करनेवाला हो सकता है, यहाँ तक कि उनके खिलाफ बोलने वाला भी हो सकता है, फिर भी वह अक्षम्य पाप का दोषी नहीं होगा।

*यह भी देखें*धर्मीकरण, धर्मी होना; पाप जिसका फल मृत्यु है।

अक्षरबद्ध काव्य

एक काव्यात्मक शैली जिसमें प्रत्येक पंक्ति या पद्यांश का पहला अक्षर वर्णमाला, एक शब्द या एक आदर्श वाक्य को दर्शाता है। इब्रानी लेखकों ने अक्सर एक वर्णानुक्रमिक अक्षरबद्ध भजन का उपयोग एक काव्यात्मक या स्मरणीय शैली के रूप में किया (देखें भज 9; 10; 25; 34; 37; 111; 112; 119; 145; नीति 31:10–31; विला 1–4; नहू 1)।

अक्षाप

यहोशू के समय में यह एक कनानी राज शहर था। इसका राजा, हासोर के राजा याबीन के साथ इस्राएल के विरुद्ध मेरोम की लड़ाई में एक गठबंधन में शामिल हुआ (यहो 11:1)। इस्राएल की जीत के बाद, अक्षाप का राजा उन 31 कनानी राजाओं में से एक था जिन्हें यहोशू ने पराजित किया था (यहो 12:20)। यह परमेश्वर के उस वादे को पूरा करता है जिसमें राजाओं को इस्राएल के हाथ में देने की बात कही गई थी (व्य.वि. 7:24)। कनान की भूमि को विभाजित करते समय अक्षाप का शहर आशेर के गोत्र को दिया गया था (यहो 19:25)।

अक्साह

कालेब की बेटी अकसा का एक वैकल्पिक वर्तनी (1 इति 2:49)। *देखें*अकसा।

अक्हो, अक्को

प्राचीन कनानी समय से एक प्रमुख फ़िलिस्तीनी बन्दरगाह शहर। पुराने नियम में उल्लेख है कि आशेर के गोत्र ने इस्राएल के कनान पर विजय के समय अक्को में रहने वाले लोगों को बाहर निकालने में निष्प्रफल रहे (न्यायियों 1:31)।

अक्को का उल्लेख बार-बार मध्य और नए राज्य मिस्र के मूलग्रंथों और अश्शूरी अभिलेखों में मिलता है। जब दाऊद राजा थे, तब अक्को संभवतः इस्राएल के अधीन में था, और यह उन 20 नगरों में से एक था जिन्हें सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को दिया था (1 रा 9:11–14)। बाद में, मकिदुनिया के सिकन्दर महान ने अक्को पर कब्ज़ा कर लिया। अंततः इसे दृढ़ किया गया और इसका नाम बदलकर पतुलिमयिस रखा गया (प्रेरि 21:7)।

अखइकुस

अखइकुस

कुरिन्थुस का प्रारंभिक मसीही विश्वासी। जब पौलुस 1 कुरिन्थियों की पत्री को लिखा था अखइकुस, स्तिफनास, और फूरतूनातुस पौलुस से इफिसुस में मिलने गए थे (1 कुरिन्थियों 16:17)। अखइकुस और उनके मित्र संभवतः पौलुस के लिए कुरिन्थ की कलीसिया से पत्र लाए और पौलुस के उत्तर को साथ लेकर लौटे (1 कुरिन्थियों 7:1)।

अखज़ीब

अखज़ीब

अक्ज़ीब का केजेवी रूप।

*देखें*अक्ज़ीब।

अखमथा

अखमथा

एज्रा 6:2 में एक फारसी नगर अहमता का केजेवी रूप।

देखें अहमता।

अख़मीरी रोटी

एक रोटी जो बिना ख़मीर (ख़मीर) के बनाई जाती है। पुराने समय में, रोटी बनाने वाले पहले से तैयार आटे के टुकड़े का इस्तेमाल करते थे। इसमें किण्वित होता था और एक विशेष अम्लीयता विकसित होती थी। यही वह ख़मीर था जो रोटी को फूलने में मदद करता था।

परमेश्वर के निर्देश से, यहूदियों के फसह के लिए रोटी अख़मीरी होनी चाहिए। यह अधिकांश अन्य धार्मिक अनुष्ठानों पर भी लागू होता है (निर्ग 12:15–20; 23:15)। लोग केवल कुछ परिस्थितियों में आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए ख़मीर रोटी का उपयोग कर सकते थे (लैव्य 7:13; 23:17)। ऐसा इसलिए था क्योंकि ख़मीर दुष्ट का प्रतीक है; किण्वन का अर्थ क्षय था।

नए नियम में ख़मीर का उल्लेख नकारात्मक रूप से किया गया है, सिवाय यीशु की परमेश्वर के राज्य पर शिक्षा के (मत्ती 13:33)।

- यीशु ने फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से सावधान रहने को कहा (मत्ती 16:6)
- पौलुस ने विश्वासियों से आग्रह किया कि वे हानिकारक बातों से सावधान रहें। वे आटे में ख़मीर की तरह फैल सकते हैं (1 कुरि 5:6–8)।

यह भी देखें रोटी; भोजन और भोजन की तैयारी; ख़मीर I

अख़मीरी रोटी का पर्व

देखें इस्राएल के पर्व और उत्सव।

अखरोट

अखरोट एक प्रकार का पेड़ है जो गोल, चिपचिपा फल उत्पन्न करता है जिसके अंदर खाने योग्य नट्स होता है। श्रेष्ठगीत 6:11 में उल्लेखित "नट्स" संभवतः फारसी या सामान्य अखरोट (जुग्लान्स रेगिया) को संदर्भित करते हैं।माना जाता है कि यह पेड़ मूल रूप से उत्तरी फारस से आया है, लेकिन यह उत्तरी भारत के कई हिस्सों में, पूर्व में चीन तक, और पश्चिम में फारस तक जंगली रूप से उगता है।

राजा सुलैमान के समय में, अखरोट के पेड़ अपने फलों के लिए पूरे पूर्व में व्यापक रूप से उगाए जाते थे। बाइबल में उल्लिखित सुलैमान का "अखरोट का बगीचा" संभवतः एताम में उनके विशाल बगीचों का हिस्सा था, जो यरूशलेम से 9.7 किलोमीटर (6 मील) की दूरी पर स्थित था।

अखाया

यह नाम नए नियम के काल में यूनानी प्रायद्वीप के थिस्सलुनीके के दक्षिणी भाग को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया गया था।

देखें यूनान, यूनानी।

अखीम

जरुब्बाबेल के वंशज। उन्हें नए नियम में यीशु के पूर्वजों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है (मत्ती 1:14)।

देखिए यीशु मसीह की वंशावली।

अगबुस

नए नियम के समय के एक भविष्यद्वक्ता। उन्होंने प्रेरितों के काम में लिखे दो भविष्यद्वाणियाँ कीं। उन्होंने सही भविष्यद्वाणी की कि एक भयंकर अकाल पड़ेगा, जो तब हुआ जब क्लौदियुस रोम के सम्राट थे (प्रेरि 11:27–28)। उन्होंने यह भी भविष्यद्वाणी की कि यदि पौलुस यरूशलेम गए तो यहूदी उन्हें अन्यजातियों के हवाले कर देंगे (प्रेरि 21:10–11)।

अगर

एक प्रकार की सुगन्धित अगर (निर्ग 30:23; श्रे.गी. 4:14; यहेज 27:19)।

देखिए पौधे।

अगर (एलवा)

अगर (एलवा)

अगर (एलवा) एक पौधा है जो मुख्यतः अफ्रीका में पाया जाता है और दिखने में कुमुदिनी (लिली) के समान होता है। अगर

(एलवा) की कुछ प्रजातियाँ औषधि और रेशा, दोनों प्रदान करती है। बाइबल में, अगर का उल्लेख अन्य सुगंधित पौधों जैसे गन्धरस, लोबान और बल्सान के साथ किया गया है (देखें भज 45:8; नीति 7:17; श्रेष्ठ 4:14; यूह 19:39)।

अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि इन पदों में दो अलग-अलग पौधों का उल्लेख करते हैं:

- पुराने नियम में, अगर (एलवा) संभवतः ईगलवूड (*अक्विलैरिया अगलोचा*) को संदर्भित करता है। यह वृक्ष उत्तर भारत, मलाया और इण्डोचाइना क्षेत्रों में पाया जाता है। यह 36.6 मीटर (120 फीट) तक ऊँचा और तने की परिधि लगभग 3.7 मीटर (12 फीट) हो सकती है। इसकी लकड़ी जब सड़ने लगती है तो एक प्रबल सुगंध उत्पन्न होती है, जिससे यह इत्र, धूप और सुगंधित धुएँ के लिए उपयोगी बन जाती है। प्राचीन काल में, लोग सुगंधित धुएँ से स्थानों को भरने के लिए सुगंधित लकड़ियों को जलाते थे।
- नए नियम में (यूह 19:39), एलवा संभवतः असली अगर (एलवा) (*एलो सकोत्रिना*) को संदर्भित करता है। मिस्रवासियों ने इसके कड़वे रस का उपयोग शवों के संरक्षण की प्रक्रिया में किया। शव संरक्षण एक प्रक्रिया है जो मृत शरीरों को संरक्षित करती है। हालाँकि असली अगर (एलवा) की गंध बहुत सुखद नहीं होती, लोग कभी-कभी इसे घोड़ों के लिए एक औषधि के रूप में उपयोग करते थे।

अगर के वृक्ष

अगर के वृक्ष

गिनती 24:6. में "अगर" के लिए केजेवी का अनुवाद।

*देखें*पौधे (अगर)।

अगाग

1. एक अमालेकी राजा का नाम। यह अमालेकी राजा के लिए एक सामान्य उपाधि हो सकती है, जैसे मिस्री "फ़िरौन।" बिलाम ने भविष्यवाणी की थी कि इस्राएल का राजा अगाग से भी महान होगा और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा।(गिन 24:7)।
2. दूसरे अमालेकी राजा का नाम। परमेश्वर ने शमूएल से कहा कि राजा शाऊल को सभी अमालेकियों को नष्ट करने के लिए भेजें, अंतिम भेड़ तक। शाऊल ने उन्हें हरा दिया लेकिन अगाग को बचा लिया, साथ ही अमालेकियों की सबसे अच्छी भेड़ और बैल को भी। शमूएल ने फिर अगाग को मार डाला और शाऊल से कहा कि उनकी अवज्ञा का मतलब है कि वह अब इस्राएल के राजा नहीं रह सकते (1 शमू 15)।

अगागी

अगागी

यह शब्द हामान के लिए उपयोग किया गया था, जो फारसी राजा क्षयर्ष के दरबार में "सभी यहूदियों का शत्रु" कहलाता है (एस्त 3:1; 9:24)। अगागी एक अमालेकी राजा थे और शाऊल के शत्रु थे।

अगापे

नए नियम के यूनानी शब्द का अंग्रेजी लिप्यंतरण है, जिसका अर्थ है "प्रेम" या "प्रेम भोज"।

*देखिए*प्रेम।

अगोरा

अगोरा प्राचीन यूनानी नगरों में एक खुला सार्वजनिक स्थान था। यह राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों के लिए बाज़ार और केंद्र के रूप में कार्य करता था।

*देखें*बाजार, विपणन स्थल।

अग्नि वेदी (चूल्हा)

अग्नि वेदी (चूल्हा)

*देखें*घर और आवास।

अग्निसर्प

अग्निसर्प

यशायाह 11:8; 14:29; और 59:5 में क्रमशः सर्प, नाग और करैत का के.जे.वी. अनुवाद। *देखें*पशु (साँप)।

अग्र-दूत

एक पहरेदार जो सेना से पहले भेजा जाता है, या एक सूचना देनेवाला जो किसी उच्च अधिकारी के आने की घोषणा करने के लिए आगे जाता है। यह शब्द उस पुरुष का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है जो यूसुफ के आगे दौड़ा जब वे मिस्र के अधिकारी थे (उत 41:43), और कनान की भूमि में समय पहली पक्की दाखों का उल्लेख करने के लिए (गिन 13:20)। अप्रमाणिक ग्रन्थ में, में कहा गया है कि इस्राएली सेना के अग्र-दूत के रूप में ततैयों को भेजा गया था, जो कनान के लोगों पर न्याय लाने वाले थे (सुलै 12:8)।

हालाँकि यूहन्ना बपतिस्मादाता को सामान्यत: यीशु मसीह का अग्र-दूत माना जाता है, परन्तु बाइबल में उनके सन्दर्भ में यह शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। यह शब्द केवल एक बार नए नियम में आता है, जहाँ मसीह स्वयं को हमारे अगुए के रूप में वर्णित करते हैं (इब्रा 6:20)। पुरानी वाचा के अन्तर्गत, लोग कभी भी महायाजक के साथ मन्दिर के सबसे पवित्र स्थान में नहीं जाते थे। इब्रानियों की पुस्तक, नई वाचा पर चर्चा करते हुए, यीशु को एक महायाजक के रूप में वर्णित करती है, जिन्होंने स्वर्ग—पवित्र स्थान—में उन लोगों से पहले प्रवेश किया है जो उन पर विश्वास करते हैं (पुष्टि करें 2:17–3:2; 5:1–9)।

अग्रिप्पा

हेरोदियोन परिवार की वंशावली से यहूदिया के दो रोमी शासकों के नाम।

*देखें*हेरोदेस, हेरोदियोन परिवार।

अजगर

बाइबल में "अजगर" शब्द कई बड़े और डरावने भूमि या समुद्री जीवों को सन्दर्भित करता है। लेकिन इसका मतलब यूरोपीय लोककथाओं के आग उगलने वाले, पंखों वाले सर्प जैसे जीवों से नहीं है।

केजेवी अनुवादकों ने इस शब्द को दो इब्रानी शब्दों का अनुवाद करने के लिए चुना। ये शब्द अक्सर आधुनिक संस्करणों में अधिक सटीक रूप से अनुवादित होते हैं। एक शब्द मरूभूमि के पशुओं को सन्दर्भित करता है। अधिकांश विद्वान सहमत हैं कि इसका अर्थ "सियार" है, जैसा कि एनआईवी में है (भज 44:19; यशा 13:22; यिर्म 9:11; मला 1:3)। *देखें*सियार।

अन्य इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद "अजगर" के रूप में किया गया है, उसे परिभाषित करना कठिन है। इसका उपयोग अक्सर सर्पों के सन्दर्भ में किया जाता था (निर्ग 7:9–12; व्य.वि. 32:33; भज 91:13)। इसे रिवाईज़्ड स्टैण्डर्ड संस्करण में "समुद्री अजगर" के रूप में भी अनुवादित किया गया है (उत 1:21; अय्यू 7:12; भज 148:7)। हम नहीं जानते कि समुद्री अजगर क्या होते थे।

रिवाईज़्ड स्टैण्डर्ड संस्करण में कुछ अंशों का अनुवाद "अजगर" के रूप में किया गया है। इनमें से दो में (भज 74:13; यशा 27:1), सन्दर्भ एक समुद्री अजगर को इंगित करता है। अन्य तीन में "अजगर" का सन्दर्भ एक मगरमच्छ से प्रतीत होता है (यशा 51:9; यहेज 29:3; 32:2)। यह निर्गमन के समय मिस्री फ़िरौन के लिए एक प्रतीकात्मक सन्दर्भ हो सकता है। यिर्मयाह 51:34 में "मगरमच्छ" (अंग्रेजी राक्षस) का सन्दर्भ भी एक मगरमच्छ जैसे खाने वाले जीव से हो सकता है। *देखें*मगरमच्छ।

बाबेली लोककथाओं में राक्षस और अजगर को ईश्वर मार्दुक के साथ युद्ध करते हुए दिखाए गया है, जो दुष्टता का प्रतीक है। इसी प्रकार, पवित्रशास्त्र में "अजगर" शब्द, विशेष रूप से भविष्यवाणी की पुस्तकों में, इसी अर्थ को दर्शाता है। प्रकाशितवाक्य में यह विशेष रूप से परमेश्वर के सबसे बड़े शत्रु शैतान को दर्शाता है (प्रका 12:3–17; 13:2, 4, 11; 16:13; 20:2)।

अजगर का कुआँ

*देखें*सियार का कुआँ।

अजगर का सोता

अजगर का सोता

तराई के फाटक और कूड़ा फाटक के बीच यरूशलेम की दीवार के अज्ञात स्थान पर, नहेम्याह द्वारा शहरपनाह के रात के निरीक्षण के दौरान दौरा किया गया (नहे 2:13)। इसे ड्रैगन का सोता या अजगर का सोता भी कहा जाता है।

अजगाद

1. एक दल के पूर्वज जो बेबीलोन में बँधुआई के बाद जरुब्बाबेल के साथ यहूदा लौट आए थे (एज्रा 2:12; नहे 7:17)।
2. एक राजनीतिक अगुवा जिन्होंने बेबीलोन की बँधुआई के बाद नहेम्याह तथा अन्य लोगों के साथ मिलकर एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए (नहे 10:15)।

अजज्याह

1. एक मन्दिर संगीतकार जो एक लेवी था। उसने वीणा बजाई जब राजा दाऊद वाचा के सन्दूक को यरूशलेम लाएं (1 इति 15:21)।
2. होशे के पिता। होशे राजा दाऊद के शासनकाल के दौरान एप्रैम के गोत्र का प्रमुख था (1 इति 27:20)।
3. एक मन्दिर प्रशासक जो एक लेवी था। उसे यहूदा के राजा हिजकिय्याह द्वारा मन्दि में संग्रहीत भेंटों का प्रबंधन करने में सहायता के लिए नियुक्त किया गया था (2 इति 31:13)।

अजनबी

*देखिए*विदेशी।

अजनोत्ताबोर

अजनोत्ताबोर

नफ्ताली के गोत्र की भूमि की दक्षिण-पश्चिम सीमा पर स्थित एक स्थान (यहो 19:34)। इसे "ताबोर की चोटियाँ (या ढलानें)" के रूप में अनुवाद किया गया है।

अजबूक

अजबूक

नहेम्याह के पिता, जो बेतसूर के आधे जिले के हाकिम थे (नहे 3:16)। अजबूक के पुत्र ने, अधिक प्रसिद्ध अधिपति नहेम्याह (नहे 10:1) को यरूशलेम की शहरपनाह के पुनर्निर्माण में सहायता प्रदान की।

अज़राएल

नहेम्याह 12:36 में अजरेल का केजेवी रूप। *देखें* अजरेल #6।

अजरेल

1. बिन्यामीन के गोत्र से एक योद्धा, जो राजा शाऊल के खिलाफ संघर्ष में दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुए। अजरेल, दाऊद के तीरंदाजों और गोफन चलाने वालों में से एक था, जो अपने दाएँ और बाएँ दोनों हाथों से निशाना साध सकता था (1 इति 12:2, 6)।
2. एक लेवी जिसे दाऊद द्वारा निवासस्थान के संगीत के प्रबन्धन के लिए चुना गया था (1 इति 25:18, उसे "उज्जीएल" भी कहा जाता है)।
3. दान के गोत्र का एक प्रधान, जिसे दाऊद ने जनगणना के दौरान एक गोत्र के अगुवे के रूप में चुना था (1 इति 27:22)।
4. बिन्नूई के परिवार का एक इस्राएली जिसने एज्रा के आदेश का पालन किया और बेबीलोन में बँधुआई के बाद अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दे दिया (एज्रा 10:41)।
5. अमशै का पिता। अमशै इम्मेर के परिवार का एक याजक था, जो बेबीलोन की बँधुआई के बाद यरूशलेम में निवास करता था (नहे 11:13)।
6. एक याजक जिसने बेबीलोन में बँधुआई के बाद यरूशलेम की दीवार के समर्पण पर तुरही बजाई (नहे 12:36)।

अज़रैल

अजरेल का केजेवी रूप। *देखें*अजरेल #1–5।

अज़र्या

अज़र्या

नाम या संभवतः छद्म नाम, जो स्वर्गदूत रफ़ाएल ने तब इस्तेमाल किया जब वे टोबिट के पुत्र टोबियास के साथ मादियों की यात्रा पर गए (टोबि 5:4, 13; 12:15)। टोबिट एक कहानी है जो बाइबल के कुछ संस्करणों में पाई जाती है, लेकिन सभी मसीही इसे अपने पवित्र शास्त्र का हिस्सा नहीं मानते।

अजर्याह

यह यहूदियों के बीच एक बहुत ही सामान्य नाम है। यह नाम याजकों के पारिवारिक इतिहास में कई बार आता है, जिससे यह जानना कठिन हो जाता है कि किस अजर्याह की चर्चा हो रही है। निम्नलिखित उनमें] से एक सम्भावित सूची है:

1. सादोक के पुत्र या पोता। अधिकांश अनुवादों के अनुसार, अजर्याह सुलैमान के शासनकाल के दौरान महायाजक थे (1 रा 4:2)। वैकल्पिक रूप से उनकी स्थिति एक विशेष सलाहकार या शाही तिथिपत्र के संरक्षक की हो सकती थी।
2. राजा सुलैमान के दरबार में एक उच्च अधिकारी नातान का पुत्र। वह 12 क्षेत्रीय प्रशासकों का प्रधान अधिकारी था (1 रा 4:5)।
3. यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र(2 रा 14:21; 15:1–7)। उसे उज्जियाह के नाम से भी जाना जाता था। *देखें*उज्जियाह #1।
4. यहूदा के वंशज एतान का पुत्र (1 इति 2:8)।
5. यहूदा के एक अन्य वंशज येहू का पुत्र (1 इति 2:38)।
6. अहीमास के पुत्र और सादोक के पोता (1 इति 6:9)। यदि अजर्याह #1 एक महायाजक थे, तो यह अजर्याह वही व्यक्ति हो सकता है।
7. योहानान का पुत्र और अमर्याह का पिता (1 इति 6:10–11)। यह वही अजर्याह है जिनका उल्लेख एज्रा 7:3 और 2 एसड्रास 1:2 में किया गया है। उसके पूर्वज (जिसे उसका "पिता" कहा जाता है) मरायोत था। 1 इतिहास 6:10 में सुलैमान के मन्दिर के बारे में दी गई टिप्पणी आमतौर पर 9 पद के अजर्याह से सम्बन्धित है (देखें #6)। यह भी सम्भव है कि यह अजर्याह उज्जियाह के शासनकाल के दौरान सुलैमान द्वारा निर्मित मन्दिर में सेवा करता था। इसका मतलब है कि वह नीचे दिए गए #17 के समान अजर्याह है।
8. हिल्किय्याह का पुत्र और सरायाह का पिता (1 इति 6:13–14; एज्रा 7:1; 2 एसड्रास 1:1)। यह अजर्याह सम्भवतः #10 या #11 के समान हो सकता है।
9. गायक हेमान के पूर्वज सपन्याह का पुत्र। हेमान ने राजा दाऊद द्वारा स्थापित आराधना अनुष्ठान में गाया था (1 इति 6:36)।
10. हिल्किय्याह का पुत्र या वंशज, वह उन पहले याजकों में से एक था जो बँधुआई के बाद यरूशलेम में बसे (1 इति 9:11; "सरायाह," नहे 11:11)।
11. राजा आसा के दिनों में यहूदा के एक भविष्यद्वक्ता ओदेद का पुत्र। उसने आसा को उसके शासन के 15वें वर्ष में अत्यन्त आवश्यक सुधार शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया (2 इति 15:1–15)।
12. यहूदा के राजा यहोशापात का पुत्र। अपने चार भाइयों के साथ, उसे यहोराम द्वारा राजनीतिक कारणों से मार दिया गया, जो सिंहासन का उत्तराधिकारी था (2 इति 21:1–4)।
13. राजा यहोशापात का एक और पुत्र, जिनका नाम उसके भाई #12 के समान था। अपने चार भाइयों के साथ, उसे यहोराम द्वारा राजनीतिक कारणों से मार दिया गया, जो सिंहासन का उत्तराधिकारी था (2 इति 21:1–4)।

14. यहूदा के राजा अहज्याह का एक अन्य नाम (2 इति 22:6)। *देखें*अहज्याह #2।
15. यहूदा के सेनापतियों में से एक यहोराम का पुत्र। इस अजर्याह ने यहोयादा याजक के साथ एक विद्रोह में भाग लिया। योआश को विद्रोह के बाद राजा बनाया गया, और रानी अतल्याह को मृत्युदंड दिया गया (2 इति 23:1)।
16. यहोयादा के साथ अतल्याह के खिलाफ गठबंधन में पाँच सेनापतियों में से एक ओबेद का पुत्र (2 इति 23:1)।
17. राजा उज्जियाह के शासनकाल के दौरान यरूशलेम में महायाजक (2 इति 26:16–21)। उन्होंने उज्जियाह के अहंकारी प्रयास का विरोध किया जब उसने वेदी पर धूप जलाने की कोशिश की। सम्भवतः यह वही व्यक्ति है जो #7 में उल्लेखित है।
18. एप्रैम के गोत्र के एक प्रधान योहानान का पुत्र। अजर्याह और गोत्र के अन्य प्रधानों ने भविष्यद्वक्ता ओबेद के साथ मिलकर इस्राएल के राजा पेकह द्वारा यहूदी बन्दियों की गिरफ्तारी का विरोध किया और उनकी रिहाई की माँग की (2 इति 28:12)।
19. कहात का वंशज और योएल नामक लेवी का पिता। योएल ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह द्वारा आदेशित मन्दिर की सफाई में भाग लिया (2 इति 29:12)।
20. यहलेल का पुत्र। यह अजर्याह, जो मेरारी का वंशज था, हिजकिय्याह द्वारा कि गई मन्दिर की शुद्धि में भी सहभागी हुआ (2 इति 29:12)।
21. सादोक का वंशज और हिजकिय्याह राजा के शासनकाल में यरूशलेम का महायाजक (2 इति 31:10, 13)। उन्होंने हिजकिय्याह के महान धार्मिक सुधारों में भाग लिया।
22. यरूशलेम के एक निवासी मासेयाह का पुत्र जिसने नहेम्याह द्वारा किए गए दीवार के पुनर्निर्माण में भाग लिया (नहे 3:23)।
23. एक प्रधान जो बाबेली बँधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ यहूदा लौट आया (नहे 7:7; "सरायाह," एज्रा 2:2)।
24. एक लेवीय सहायक जिसने एज्रा द्वारा पढ़े गए व्यवस्था के अंशों को लोगों को समझाया (नहे 8:7)।
25. वह याजक जिसने नहेम्याह और अन्य लोगों के साथ एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की वाचा पर हस्ताक्षर किए (नहे 10:2)।
26. यरूशलेम की पुनर्निर्मित दीवार के समर्पण में एक सहभागी (नहे 12:33)।
27. होशायाह के पुत्र याजन्याह के नाम का एक वैकल्पिक रूप जो यिर्मयाह 42:1 और 43:2 में मिलता है। *देखें*याजन्याह #1।
28. तीन यहूदी जवानों में से एक, जिसे दानिय्येल के साथ बन्दी बनाकर ले जाया गया था, और जिसका नाम बेबीलोन में अबेदनगो रखा गया (दानि 1:6–7, 11, 19; 2:17)। *देखें*शद्रक, मेशक, और अबेदनगो।

अजर्याह की प्रार्थना

बाइबल के कुछ संस्करणों में पाई जाने वाली एक प्रार्थना। यह दानिय्येल के एक मित्र अजर्याह द्वारा कही गई प्रार्थना थी, जब वह आग की भट्टी में थे।

*देखिए*दानिय्येल की अतिरिक्त जानकारी।

अजर्याह की प्रार्थना

*देखें*दानिय्येल में अतिरिक्त सामग्री।

अज़ाएल (असाएल)

एज़ोरा का पुत्र। उन्होंने बेबीलोन में बँधुआई के बाद एज्रा की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दे दिया (1 एस 9:34)। अज़ाएल को एज्रा 10:40–42 की सूची में शामिल नहीं किया गया है।

अजाज

अजाज

रूबेन के गोत्र से शेमा का पुत्र और बेला का पिता (1 इति 5:8)।

अजाजेल

यह एक इब्री शब्द है जिसकी उत्पत्ति और अर्थ अस्पष्ट हैं। यह लैव्यव्यवस्था 16:8, 10, 26 में प्रकट होता है। चूंकि बाइबल या अन्य स्रोतों में इसके बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, विद्वानों ने कम से कम चार व्याख्याएँ सुझाई हैं:

1. बलि का बकरा: कुछ लोग अजाजेल को उस बलि के बकरे से जोड़ते हैं जो प्रायश्चित के दिन की रस्मों में उपयोग किया जाता था। हालांकि, यह व्याख्या सम्भव नहीं है क्योंकि पद 10 और 26 में कहा गया है कि बकरा अजाजेल के पास भेजा गया था, न कि अजाजेल के रूप में।
2. एक स्थान जहाँ बकरा भेजा जाता था: कई यहूदी विद्वान मानते हैं कि अजाजेल एक स्थान है जहाँ बकरा भेजा जाता था, सम्भवतः एक ऊँची चट्टान से जहाँ से बकरे को फेंका जाता था। अन्य सुझाव देते हैं कि इसका अर्थ "मरूभूमि स्थान" है।
3. सारांश "स्थान" या अस्तित्व की स्थिति: कुछ लोग मानते हैं कि अजाजेल एक इब्री शब्द से आता है जिसका अर्थ है "प्रस्थान" या "हटाना," और इस प्रकार इसे "पूर्ण हटाना," "पूरी तरह से भेजना," या "एकान्त" के रूप में व्याख्या करते हैं। उस बकरे को "बलि का बकरा बनाकर जंगल में भेजा जाता है" लैव्यव्यवस्था 16:10 में, इसे "कुछ नहीं होने के लिए भेजना" या "पूरी तरह से हटाना" के रूप में व्याख्या किया जा सकता है। यह पापों के हटाने का संकेत देता है: वे "कुछ भी नहीं" बन जाते हैं, क्योंकि वे पूरी तरह से हटा दिए जाते हैं। बकरे को भेजना तब एक प्रतीकात्मक और अनुष्ठानिक कार्य होगा जिसके माध्यम से परमेश्वर किसी के पिछले पापों को हटा देते हैं।
4. एक प्राणी का व्यक्तिगत नाम, जो सम्भवतः एक दुष्टात्मा है, जिसे बलि का बकरा भेजा जाता था: कई आधुनिक विद्वान मानते हैं कि अजाजेल एक प्राणी है, सम्भवतः एक दुष्टात्मा, जिसे बलि का बकरा भेजा जाता था। हनोक की गैर-प्रमाणिक (noncanonical) पुस्तक अजाजेल को गिरे हुए स्वर्गदूतों के एक अगुवे के रूप में वर्णित करती है जो मनुष्यों को गुमराह करता है। यह व्याख्या सुझाव देती है कि एक बकरा प्रभु को अर्पित किया जाता है, और दूसरा एक दुष्ट प्राणी को, सम्भवतः शैतान।

अजीएल

अजीएल

याजीएल के लिए एक वैकल्पिक नाम, जो एक लेवीय संगीतकार है, जो 1 इतिहास 15:20 में उल्लेखित है। *देखें* याजीएल।

अज़ीज़ा

जत्तू के वंशज। उन्होंने एज्रा की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दे दिया (एज्रा 10:27)।

अजूबा

अजूबा

1. शिल्ही की बेटी और यहूदा के राजा यहोशापात की माता (1 रा 22:42; 2 इति 20:31)।
2. कालेब की पहली पत्नी और उसके तीन पुत्रों की माता (1 इति 2:18–19)।

अज़ूर

यिर्मयाह 28:1 और यहेजकेल 11:1 अज्जूर का एक अन्य रूप। *देखें* अज्जूर #2 और #3।

अजेका

कृषि मैदान जिसका नाम शेफेला है, में स्थित एक नगर। यह कम से कम कनान (प्रतिज्ञा की भूमि) के विजय के समय से अस्तित्व में था, क्योंकि यहोशू ने एमोरी राजाओं के गठबंधन को अजेका तक खदेड़ा था (यहो 10:10, 22)। यह दाऊद और गोलियत की लड़ाई की कहानी में भी उल्लेखित है (1 शमू 17:1)। पुरातात्विक खुदाई से पता चला है कि अजेका को भूमिगत शरण कक्षों की प्रणाली के साथ भारी सुरक्षा प्रदान की गई थी (2 इति 11:9, 11)। नबूकदनेस्सर के यरूशलेम पर आक्रमण के समय अजेका, लाकीश और यरूशलेम को यहूदा के दक्षिणी राज्य के शेष बचे हुए किलेबंद नगरों में गिना गया था (यिर्म 34:7)। बाबेल में बँधुआई से लौटने वाले कुछ लोग अजेका में बस गए थे (नहे 11:30)। आज इसे टेल ज़कारियेह के नाम से जाना जाता है।

अजोर

जरुब्बाबेल के वंशज और यीशु के पूर्वज (मत्ती 1:1, 13–14)।

*देखिए*यीशु मसीह की वंशावली।

अज्जान

पलतीएल के पिता और इस्साकार के गोत्र के एक सदस्य। पलतीएल को वादा किए गए देश को विभाजित करने में एलीआज़ार और यहोशू की मदद करने के लिए चुना गया था (गिन 34:26).

अज़्ज़ाह

गाज़ा के पलिश्ती शहर का किंग जेम्स संस्करण प्रस्तुति (व्य.वि. 2:23; 1 रा 4:24; और यिर्म 25:20)।

*देखिए*गाज़ा।

अज्जूर

1. एक राजनीतिक अगुवा जिन्होंने बाबेल की बँधुआई के बाद नहेम्याह तथा अन्य लोगों के साथ मिलकर एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए (नहे 10:17)।
2. झूठे भविष्यद्वक्ता हनन्याह के पिता (यिर्म 28:1)।
3. याजन्याह के पिता, यरूशलेम के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे, जिन्हें यहेजकेल ने एक दर्शन में देखा था (यहे 11:1)।

अज्मावेत (व्यक्ति)

1. दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक योद्धा, जिसे "तीस" के नाम से जाना जाता था। उसका गृहनगर बहूरीम था (2 शमू 23:31; 1 इति 11:33)।
2. यहोअद्दा का पुत्र। वह योनातान के माध्यम से राजा शाऊल का वंशज था (1 इति 8:36; तुलना करें 1 इति 9:42)।
3. यजीएल और पेलेत का पिता, जो बिन्यामीन के गोत्र से था (1 इति 12:3)। वह ऊपर #1 के समान हो सकता है।
4. अदीएल का पुत्र। राजा दाऊद ने उसे राज भण्डारों का अधिकारी नियुक्त किया (1 इति 27:25)।

अज्मावेत (स्थान)

अनातोत के पास एक नगर है।

नगर के बयालीस व्यक्ति बाबेल की बन्धुआई से जरूब्बाबेल के साथ लौटे (एज्रा 2:24)। इसे नहेम्याह 7:28 में "बेतजमावत" कहा गया है। बाद में, अज्मावेत ने यरूशलेम की पुनर्निर्मित शहरपनाह के समर्पण समारोह में सहायता के लिए गायकों को दिया (नहे 12:29)। यह आधुनिक काल का हिज़मे है, जो यरूशलेम के उत्तर में आठ किलोमीटर (पाँच मील) की दूरी पर स्थित है।

अज्रीएल

अज्रीएल

1. मनश्शे के आधे गोत्र के परिवार का मुख्य पुरुष, जो यरदन के पूर्व में रहते थे। अश्शूर के राजा ने अज्रीएल और अन्य को बन्दी बना लिया (1 इति 5:23–26)।
2. यरेमोत का पिता। यरेमोत राजा दाऊद के शासनकाल के दौरान नप्ताली के गोत्र में एक प्रमुख था (1 इति 27:19)।

3. राजा यहोयाकीम के शासनकाल के दौरान सरायाह का पिता, राजा ने सरायाह को यिर्मयाह और बारूक को गिरफ्तार करने के लिए भेजा क्योंकि उन्होंने इस्राएल और यहूदा के दुष्ट कामों के खिलाफ भविष्यवाणी की थी (यिर्म 36:26)।

अग्रीकाम

अग्रीकाम

1. नार्याह के तीन पुत्रों में से एक। जरूब्बाबेल के माध्यम से दाऊद का वंशज (1 इति 3:23)।
2. आशेर के छह पुत्रों में से एक। शाऊल का वंशज (1 इति 8:38; 9:44)।
3. शमायाह का एक पूर्वज, एक लेवी, जो बाबेल की बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटा (1 इति 9:14; नहे 11:15)।
4. यहूदा के राजा आहाज के अधीन एक राजभवन प्रधान। उसे जिक्री द्वारा मारा गया था (2 इति 28:7)। वह ऊपर #2 के समान हो सकता है।

अटकल (भविष्य कथन)

अलौकिक तरीकों से छिपी जानकारी जानने या भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने की प्रथा। इसमें शकुन पढ़ना, सपनों की व्याख्या करना या आत्माओं से परामर्श करने जैसी विधियाँ शामिल होती हैं।

देखें जादू।

अटारी

अटारी

यहूदी या यूनानी घर का दूसरी मन्जिल का कमरा; अक्सर एक मीनार की तरह, यहूदी घर की सपाट छत पर गोपनीयता, गर्म मौसम के दौरान आराम, या मेहमानों के मनोरंजन के लिए बनाया जाता था। कुछ मौकों पर यहाँ बड़ी सभाओं को भी समायोजित किया जा सकता था।एक घटना यह भी थी जब कमरा तीसरी मंजिल पर था (प्रेरि 20:8) । यूतुखुस, खिड़की में बैठा, सो गया और तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा (पद 9–10) । यह भी उसी प्रकार की दुर्घटना हो सकती है जो अहज्याह की घातक चोट का कारण बनी जब वह अपनी अटारी की जालीदार खिड़की से गिर गया (2 रा 1:2)।

एलिय्याह ने सारफत की विधवा के मृत पुत्र को उस अटारी में ले जाकर जीवित किया जहाँ वह ठहरा हुआ था (1 रा 17:19–23)। दाऊद, अबशालोम की मृत्यु का शोक मनाने के लिए गोपनीयता के लिए ऊपर की अटारी में गया (2 शमू 18:33)। यहूदा के राजाओं ने आहाज की अटारी की छत पर अजीब वेदियाँ बनाईं, जिन्हें योशिय्याह ने अपने सुधार कार्य के हिस्से के रूप में उसे गिरा दिया (2 रा 23:12)।

यीशु ने अपने चेलों के साथ ऊपरी अटारी में फसह का भोजन किया (मर 14:15; लूका 22:12)। इन कमरों के आकार का प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि, यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, चेले उस अटारी में गए जहाँ वे सभी पहले ठहरे हुए थे। त्रौआस में बैठक में भाग लेने वाली मण्डली भी छोटी नहीं थी (प्रेरि 20:8)। दोरकास को मरने के बाद एक अटारी पर रखा गया था; बाद में, पतरस को उसी अटारी में ले जाया गया ताकि वह उसके पुनर्जीवन के लिए प्रार्थना कर सके (प्रेरि 9:36–41) ।

यह भी देखें वास्तुकला; घर और निवास।

अड्डूस

सुलैमान के सेवकों में से एक। उनके वंशज जरूब्बाबेल के साथ बंधुआई से यरूशलेम लौटे थे (1 एस 5:24)। उनका नाम एज्रा या नहेम्याह में उल्लेखित नहीं है।

अतलै

अतलै

बेबै के वंशज। उन्होंने एज्रा के आज्ञा का पालन किया और बेबीलोन की बँधुआई के बाद अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दे दिया (एज्रा 10:28)।

अतल्याह

1. यहूदा के राजा यहोराम की पत्नी, और इस्राएल के राजा अहाब और उसकी पत्नी ईजेबेल की बेटी, अतल्याह यहूदा की एकमात्र रानी थी। उसने 841–835 ई.पू. तक शासन किया (2 रा 11; 2 इति 22–23)।
अपनी माँ ईजेबेल की तरह, अतल्याह ने एक कनानी देवता बाल की उपासना की। उसने अपने पति को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। अतल्याह का यहोराम पर गहरा प्रभाव था। उसके निधन के बाद, उसका पुत्र अहज्याह राजा बना (2 रा 8:25–27; 2 इति 22:1)। अपने पिता की तरह, अहज्याह पर भी अतल्याह का प्रभाव था और उसने "यहोवा की दृष्टि में बुरा" किया (2 रा 8:27)।
क्योंकि इस्राएल और यहूदा के राजा परमेश्वर की अवज्ञा कर रहे थे, उन्होंने येहू को इस्राएल का सच्चा राजा चुना (2 रा 9:2–3)। येहू ने इस्राएल के राजा योराम को मार डाला (2 रा 9:24), और यहूदा के राजा अहज्याह को भी मार डाला (2 रा 9:27; 2 इति 22:9)।
अपने बेटे की मृत्यु के बाद, अतल्याह ने यहूदा का सिंहासन ले लिया। उसने शाही परिवार के सभी पुरुषों को मारने का प्रयास किया (2 रा 11:1; 2 इति 22:10)। परन्तु यहोशेबा, जो योराम की बेटी और याजक यहोयादा की पत्नी थी, उसने अहज्याह के बेटे योआश को बचा लिया। उसने उसे अतल्याह से छुपा दिया (2 रा 11:2–3; 2 इति 22:11–12)।
छह साल बाद, यहोयादा ने "हियाव बाँधकर" और युवा राजकुमार योआश को लोगों के सामने प्रकट करने का निर्णय लिया। उसने यरूशलेम में लाए गए कुछ भाड़े के सैनिकों के साथ एक समझौता किया: "लेवियों को और इस्राएल के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों को इकट्ठा करके यरूशलेम को ले आए" (2 इति 23:1–3)। एक गुप्त समारोह में मन्दिर में, योआश को राजा का ताज पहनाया गया।
अतल्याह ने लोगों को जश्न मनाते और तुरही बजाते सुना, तो वह अपने कपड़े फाड़कर चिल्लाने लगी, "राजद्रोह!" और जो हो रहा था उसे रोकने की कोशिश की। उसे तुरन्त

मन्दिर परिसर से बाहर ले जाया गया और मृत्युदंड दिया गया (2 रा 11:13–16; 2 इति 23:12–15)।
*देखें*इस्राएल का इतिहास; राजा की पहली और दूसरी पुस्तक।

2. बिन्यामीन के गोत्र से यहोराम के पुत्रों में से एक (1 इति 8:26)।
3. यशायाह के पिता, जिन्होंने एलाम के पुत्रों का नेतृत्व किया, जो एज्रा के साथ बाबेल से लौट रहे थे (एज्रा 8:7)।

अताक

एक नगर जहाँ दाऊद ने अमालेकियों पर विजय के बाद अपनी लूट का हिस्सा भेजा था (1 शमू 30:30)। यह सम्भवतः दक्षिणी यहूदा में सिकलग के पास था।

अतायाह

यहूदा के गोत्र से उज्जियाह के पुत्र। उन्होंने बेबीलोन की बँधुआई के बाद यरूशलेम में निवास किया (नहे 11:4)।

अतारा

अतारा

ओनाम की माता और यरहमेल की दूसरी पत्नी (1 इति 2:26)।

अतारोत

1. यरदन के पूर्व पहाड़ी क्षेत्र में एक नगर। अतारोत को गाद के गोत्र द्वारा पुनर्निर्मित किया गया (गिन 32:3, 33–36)। इसका उल्लेख प्रसिद्ध मोआबी पत्थर में राजा मेशा द्वारा किया गया था, जिसने कहा कि वह अतारोत से "दाऊद की वेदी" वापस लाया। यह अतारोत सम्भवत: आधुनिक खिरबेत अत्तारुस है।
2. एप्रैम की गोत्रीय भूमि की दक्षिणी सीमा पर एक नगर (यहो 16:2), सम्भवत: अत्रोतदार के समान है (यहो 16:5; 18:13)।
3. एप्रैम की गोत्रीय भूमि की उत्तरपूर्वी सीमा पर यरदन तराई में एक नगर है (यहो 16:7)।
4. बेतलेहेम के निकट यहूदा का एक नगर जो सल्मा के पुत्र योआब के परिवार का है (1 इति 2:54)।

अति पवित्रस्थान

अति पवित्रस्थान

वाचा के सन्दूक को रखने के लिए तम्बू और मन्दिर की कोठरी। सन्दूक एक सोने से मढ़ा हुआ लकड़ी का सन्दूक था जिसमें महत्वपूर्ण पवित्र वस्तुएं रखी जाती थीं, जिनमें दस आज्ञाओं वाली पत्थर की पट्टिकाएं शामिल थीं (निर्ग 25:10–22)।

यह कमरा इस्राएली आराधना में अति पवित्र स्थान था। केवल महायाजक ही इसमें प्रवेश कर सकते थे, और वह भी केवल वर्ष में एक बार, प्रायश्चित के दिन (लैव्य 16)। प्रवेश करने से पहले, महायाजक को विशेष शुद्धिकरण अनुष्ठान करने होते थे।

मन्दिर में, अति पवित्रस्थान को भवन के बाकी हिस्से से एक मोटे परदे द्वारा अलग किया गया था। यह परदा यीशु की मृत्यु के समय ऊपर से नीचे तक फट गया (मत्ती 27:51)।

कमरे को "परमपवित्र स्थान" भी कहा जाता था, जिसका अर्थ है "सबसे पवित्र स्थान।"

देखें मिलापवाला तम्बू; मन्दिर।

अति प्राचीन

वह नाम जिसका उपयोग दानिय्येल ने परमेश्वर को एक न्यायी के रूप में वर्णन करने के लिए किया है (दानि 7:9, 13, 22)। *देखें*परमेश्वर के नाम।

अत्तलिया

एशिया माइनर (एशिया का उपद्वीप) में एक भूमध्यसागरीय बन्दरगाह।

प्रेरित पौलुस और बरनबास, पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के अन्त में अत्तलिया से अन्ताकिया के लिए जहाज से लौटे (प्रेरि 14:25)। इस नगर की स्थापना अत्तालुस द्वितीय फिलडेल्फस ने की थी, जो 159 से 138 ईसा पूर्व तक पिरगमुन प्रान्त के राजा थे। पिरगमुन को 79 ईसा पूर्व में रोम

ने ले लिया और यह 43 ईस्वी में एक प्रान्त बन गया। पौलुस के समय में, अत्तलिया पंफूलिया प्रान्त का हिस्सा था।

हालांकि आज इसका बन्दरगाह उथला है, फिर भी यह एक महत्वपूर्ण तुर्की बन्दरगाह (अंताल्या) है।

अत्तै

अत्तै

1. शेशान की बेटी और उसके मिस्री दास यर्हा का पुत्र। अत्तै यहूदा के गोत्र से थे (1 इति 2:35–36)।
2. गाद के गोत्र का एक योद्धा जो राजा शाऊल के खिलाफ संघर्ष में दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुआ (1 इति 12:11)।
3. यहूदा के राजा रहबाम और माका का पुत्र। वह सुलैमान का पोता था (2 इति 11:20)।

अत्रोतदार

अत्रोतदार

एप्रैम और बिन्यामीन के गोत्रों की भूमि की सीमा पर स्थित एक नगर (यहो 16:5; 18:13)। यह यरूशलेम से लगभग सात मील (या 11 किलोमीटर) उत्तर में था।

अत्रोतबेत्योआब

अत्रोतबेत्योआब

यहूदा में बैतलहम के पास एक नगर (1 इति 2:54)।

इब्री शब्द '*अतारोत* का अर्थ "मुकुट" होता है। इसलिए, कुछ विद्वानों का मानना है कि यह वाक्यांश सल्मा के वंशजों को योआब के कुल के प्रमुखों के रूप में सन्दर्भित कर सकता है।

अत्रौत-शोपान

यरदन पूर्व में गाद की गोत्रीय भूमि में एक शहर (गिन 32:35)। कुछ अनुवादों में गलती से अत्रोत-शोपान को दो शहरों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

अथारिम

वह स्थान जहाँ इस्राएलियों ने कनान में प्रवेश करने का प्रयास किया और अराद के राजा द्वारा अथारिम में उन पर हमला किया गया (गिन 21:1)। नाम का अर्थ "पथ" है और माना जाता है कि यह तामार या हसासोन्तामार के पास स्थित है, जो मृत सागर के दक्षिण में कई मील दूर है। पाठ की एक सम्भावित व्याख्या इसे तामार के समान बनाती है। किंग जेम्स संस्करण तारगम (पुराने नियम का अरामी अनुवाद) और वल्गेट (बाइबल का लातिनी अनुवाद) का अनुसरण करता है और इसे "जासूस" के रूप में अनुवादित करता है।

अथाह कुण्ड

बाइबल में मृतकों और दुष्ट शक्तियों के निवास स्थान को दर्शाने के लिए प्रयुक्त वाक्यांश। इब्रानी शब्द (शाब्दिक रूप से "गहरा") को बाइबल के कई संस्करणों में "अथाह कुण्ड" के रूप में अनुवादित किया गया है। प्राचीन संसार में, यह अवधारणा किसी भी ऐसी गहराई को संदर्भित करती थी जो अगम्य हो—उदाहरण के लिए, कुएं या फव्वारे। यह पुराने नियम में आदिम समुद्र (उत 1:2) या महासागर की गहराई (भज 33:7; 77:16) का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया है। निकट पश्चिमी संस्कृतियों में, इस शब्द का उपयोग स्वर्ग के महान मेहराब के विपरीत को दर्शाने के लिए किया जाता था; इसलिए, यह कब्र के लिए रूपक के रूप में उपयोग किया जाने लगा, जो अधोलोक का पर्याय है (भज 71:20)। मध्यवर्ती काल में, यह दुष्ट आत्माओं के निवास स्थान के लिए उपयोग किया जाने लगा (जुबलीज 5:6; 1 हनोक 10:4, 11)।

नए नियम में, इस शब्द का उपयोग इन दोनों रूपकों में किया गया है। दुष्टात्माओं ने प्रार्थना की कि उन्हें "अथाह गड्ढे" में न फेंका जाए (लूका 8:31), जिसे कई लोग बाद में "बन्दीगृह" (2 पत 2:4; यहू 1:6) के संदर्भों से जोड़ते हैं। ऐसे बन्दीगृह का सटीक अर्थ परिभाषित करना कठिन है; ऊपर दिए गए अंशों और 1 पतरस 3:19 और 4:6 के अध्ययन से पता चलता है कि अथाह कुण्ड शायद अधोलोक का पर्याय नहीं है। अधिक संभावना है कि यह एक ऐसी जगह को संदर्भित करता है जहां दुष्ट आत्माओं को बंद किया जाता है। दूसरी ओर, रोमियों 10:7 इस शब्द का उपयोग कब्र के लिए करता है, जिसमें उसमें अवतरण की तुलना स्वर्ग में आरोहण से की जाती है। पौलुस ने वहां व्यवस्थाविवरण 30:12–13 को स्वतंत्र रूप से अनुकूलित किया।

इस शब्द का प्रमुख उपयोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में होता है। वहाँ "अथाह कुण्ड" बिच्छू जैसे टिड्डियों का निवास स्थान है (प्रका 9:1–11); अधोलोक के राजकुमार का, जिसका नाम "अबद्दोन" या "विनाश" है (9:11); और "पशु" या मसीह विरोधी का (11:7; 17:8)। यह वह स्थान भी है जहाँ शैतान को 1,000 वर्षों के लिए बंद किया जाता है (20:1, 3)।

प्रकाशितवाक्य में "अथाह कुण्ड" की अवधारणा के अध्ययन में कई विशेषताओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सबसे पहले, यह परमेश्वर के पूर्ण नियंत्रण में है। स्वर्गदूत को "अथाह कुण्ड की कुँजी" दी गई थी ताकि वह इसे खोल सके (9:1); पशु "अथाह कुण्ड निकलकर विनाश में पड़ेगा" (17:8)। शैतान पकड़ा गया, बाँधा गया, फेंका गया, और उसमें बंद कर दिया गया है (20:2–3)। दूसरा, शुरुआत से ही यह अनन्त विनाश के लिए है। जब इसे खोला गया, "कुण्ड में से बड़ी भट्टी के समान धुआँ उठा" (9:2)। यद्यपि अथाह कुण्ड यातना का स्थान नहीं है (अर्थात, 20:10–15 में "आग की झील"), यह अंत के बाद अनन्त दण्ड से बदल दिया जाएगा (पुष्टि करें 17:8)। अंत में, यह स्वर्ग की विपरीत छवि है, और इससे दुष्टता फूटती है। यह प्रकाशितवाक्य में पूरे रूपक और चित्र के साथ मेल खाता है जिसमें अजगर (12:9) और पशु परमेश्वर के लिए आरक्षित शक्ति और महिमा की नकल करने का प्रयास करते हैं। जैसे स्वर्ग उन सभी चीज़ों का स्रोत है जो सार्थक हैं, वैसे ही अथाह कुण्ड उन सभी चीज़ों का स्रोत है जो बुरी हैं। *देखें*की पुस्तक, प्रकाशितवाक्य।

अथाह कुण्ड|

अथाह कुण्ड

एक गहरा गड्ढा जिसका कोई तल नहीं है और जिसे मापा नहीं जा सकता, जिसे अधोलोक भी कहा जाता है।

*देखें*अथाह कुण्ड।

अथेनोबियस

अथेनोबियस

सीरिया के राजा अन्तिओकस सप्तम के एक मित्र थे (1 मक्का 15:28–36)। जब अन्तिओकस ने दोर के नगर पर हमला किया, तो महायाजक सिमोन मक्काबी ने अन्तिओकस की सहायता करने का प्रयास किया और उन्हें 2,000 सैनिक, सोना और चाँदी और सैन्य उपकरण भेजे। लेकिन अन्तिओकस ने इन उपहारों को अस्वीकार कर दिया और सिमोन के साथ सभी समझौतों को तोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने यरूशलेम में अथेनोबियस नामक एक व्यक्ति को भेजा। अथेनोबियस ने सिमोन को यह सन्देश दिया कि या तो वह अन्तिओकस को कुछ महत्वपूर्ण गढ़ों का नियंत्रण सौंप दे, या बहुत अधिक धनराशि का भुगतान करे। यदि सिमोन इनमें से कोई भी विकल्प नहीं चुनेंगे, तो अन्तिओकस ने हमला करने की धमकी दी। सिमोन ने अन्तिओकस की माँग का केवल दसवाँ हिस्सा देने की पेशकश की। अथेनोबियस इस पर बहुत गुस्से में अन्तिओकस के पास वापस गया। परिणामस्वरूप, अन्तिओकस ने अपने सेनापति सेंडेबियस को यहूदिया पर हमला करने के लिए भेजा (1 मक्का 15:38–41)।

अथ्थारातेस

अथ्थारातेस

फारसी शब्द जिसका अर्थ है "अधिपति" (नहे 8:9)। "अथ्थारातेस" तिर्शाता शीर्षक की एक अलग वर्तनी है। अपोक्रिफा में, इसे एक उचित नाम के रूप में लिखा गया है (1 एस 9:49)। (अपोक्रिफा प्राचीन ग्रंथों का एक सेट है जो इब्रानी बाइबल में शामिल नहीं है, लेकिन इससे कुछ मसीही समूहों द्वारा स्वीकार किया गया है।)

*देखिए*तिर्शाता।

अथ्थारियस

अथ्थारियस

फारसी शीर्षक की एक यूनानी वर्तनी तिर्शाता, जिसका अर्थ है "अधिपति" (1 एस 5:40; तुलना करें एज्रा 2:63)।

अदन

1. वह स्थान जहाँ आदम और हव्वा तब तक रहे जब तक उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया और उन्हें वहाँ से निकाल दिया गया (उत्पत्ति 2:8, 15; 3:23–24)। *देखें*अदन की वाटिका।

2. यहेजकेल 27:23 में बेतएदेन का वैकल्पिक रूप। *देखें* बेतएदेन।

अदन की वाटिका

यह स्थान अदन के पूर्व में था (उत् 2:8) और मेसोपोटामिया के हिद्देकेल-फरात क्षेत्र में, जिसे पुराने नियम में 14 बार सन्दर्भित किया गया है। उत्पत्ति 2:8–10 में दी गई जानकारी संकेत करती है कि यह शिनार के मैदान के क्षेत्र में था, और अदन को सींचने के लिए बहने वाली एक नदी से चार "नदियाँ" या शाखाएँ बनीं। ये नदी हिद्देकेल और फरात थे (जो दोनों परिचित आधुनिक नदियाँ हैं) और दो नदियाँ जो लुप्त हो गईं—पीशोन और गीहोन। बाद वाली नदियाँ सबसे अधिक सम्भावना है कि प्राकृतिक जल नाला था, जिन्हें बाद में सिंचाई नहर के रूप में उपयोग किया गया, क्योंकि कीलाक्षर लिपि में

"नदी" और "सिंचाई नहर" के लिए कोई अलग शब्द नहीं है। यदि पीशोन और गीहोन वास्तव में सिंचाई नहर थीं, तो उत्पत्ति आदम के समय के मनुष्य को एक वास्तविक भौगोलिक क्षेत्र में रखता है और अदन को एक मिथक मानने की धारणा को खारिज करता है। यदि उपरोक्त पहचान सही है, तो कूश प्राचीन कासाइटों के देश को सन्दर्भित करता था, जबकि हवीला अरब को इंगित कर सकता था।

अदन मानव की परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति निष्ठा की परीक्षा का स्थान था, और अनाज्ञाकारीता के कारण वाटिका को खो दिया। यह नए स्वर्गलोक के रूप में पुनः प्राप्त होगा (प्रका 22:14)।

यह भी देखें आदम (व्यक्ति); हव्वा; मनुष्य का पतन; भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष; जीवन का वृक्ष।

अदनह

अदनह

1. सिकलग में दाऊद की सेना में शामिल होने के लिए शाऊल को छोड़ने वाला मनश्शे के गोत्र का एक मुखिया (1 इति 12:20)।
2. यहूदा के राजा यहोशापात के अधीन एक प्रधान था (2 इति 17:14)।

अदना

अदना

1. बेबीलोन में बँधुआई के बाद अपनी अन्यजाति पत्नी को तलाक देने के लिए एज्रा के आदेश का पालन करने वाले पहत्मोआब के एक वंशज (एज्रा 10:30)।
2. एक याजक जो महायाजक योयाकीम के अधीन सेवा करते थे। वह जरूब्बाबेल के साथ बेबीलोन की बँधुआई के बाद यरूशलेम लौट आए (नहे 12:15)।

अदमा

सदोम, गमोरा और सबोयीम से संबंधित एक नगर (उत 10:19; 14:2, 8)। यह संभवतः सदोम और गमोरा के प्रति परमेश्वर के न्याय में नष्ट हो गया था (व्य.वि. 29:23; यह उत 19:28–29 में उल्लेखित नहीं है)। मृत सागर के पूर्व और दक्षिण क्षेत्र के हाल के सर्वेक्षण में कांस्य युग (लगभग 3300 से 2000 ई.पू.) की पाँच नगरियों का पता चला है, जो संभवतः उत्पत्ति में उल्लेखित "मैदान की नगरियाँ" हैं। प्रत्येक नगर एक नदी की घाटी के पास स्थित था, जो मृत सागर के चारों ओर के मैदान में बहती थी।

अदमाता

अदमाता

राजा क्षयर्ष के सात सलाहकारों में से एक (एस्त 1:14)। राजा के सलाहकारों ने सुझाव दिया कि वह रानी वश्ती को राज्य से निकाल दे, क्योंकि उन्होंने राजा के दाखमधु की गोष्ठी में बुलावे को अस्वीकार कर दिया था।

अदमीन

लूका के विवरण में यीशु के पूर्वजों में से एक का उल्लेख किया गया है (लूका 3:33)।

देखिए यीशु मसीह की वंशावली।

अदलै

अदलै

शापात के पिता जो इस्राएल के राजा दाऊद के मवेशियों की देखभाल करता था (1 इति 27:29)।

अदल्या

अदल्या

हामान के दस पुत्रों में से पाँचवाँ पुत्र। जब यहूदियों को नष्ट करने की हामान की साज़िश विफल हो गई, तब उनके सभी बेटों को उनके साथ मार डाला गया (एस्त 9:8)।

अदादा

अदादा

उन 30 नगरों में से एक, जो कनान देश के विभाजन के समय यहूदा के गोत्र को दिए गए थे। यह नेगेव में स्थित था, जो दक्षिणी मरूभूमि क्षेत्र है (यहो 15:22)। सेप्टुआजेंट (पुराने नियम का एक प्राचीन यूनानी अनुवाद) में, नाम कभी-कभी

अराराह, या 1 शमूएल 30:28 में “अरोएर” के रूप में लिखा जाता है। यह आधुनिक खिरबेत आर’आरह हो सकता है, जो बेर्शेबा के 12 मील (19 किलोमीटर) दक्षिण में स्थित है।

अदामा

उन 19 दृढ़ नगरों में से एक, जो नप्ताली गोत्र के अधिकार में थे (यहो 19:36)। यह आधुनिक कर्न हत्तिन हो सकता है।

अदामी, अदामीनेकेब

अदामी, अदामीनेकेब

नप्ताली की दक्षिणी सीमा के पास स्थित एक नगर का नाम (यहो 19:33)। इसे आमतौर पर आधुनिक खिरबेत एद-दमियेह के रूप में पहचाना जाता है।

अदायाह

1. योशिय्याह के नाना। योशिय्याह की माता यदीदा, अदायाह की पुत्री थीं (2 रा 22:1)।
2. एतान का पुत्र, गेर्शोन कुल के लेवियों में से एक और भजनकार आसाप का पूर्वज (1 इति 6:41–42)। कभी-कभी उसे 1 इतिहास 6:21 के इद्दो के साथ पहचाना जाता है। *देखें*इद्दो #2.
3. शिमी का पुत्र, बिन्यामीन के गोत्र का एक कनिष्ठ सदस्य (1 इति 8:21).
4. यरोहाम का पुत्र, एक याजक जो बेबीलोन में बंधुआई के बाद यरूशलेम लौटे (1 इति 9:12; नहे 11:12).
5. मासेयाह के पिता। मासेयाह यहोयादा याजक के अधीन एक शतपति था (2 इति 23:1).
6. बानी का बेटा, जिसने एज्रा की सलाह मानी कि बेबीलोन में बँधुआई के बाद अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दे दें (एज्रा 10:29).
7. एक अलग बानी का पुत्र, जिसने एज्रा की सलाह मानी और अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दे दिया (एज्रा 10:39).
8. योयारीब का पुत्र, जो पेरेस का वंशज था और मासेयाह का पूर्वज था (नहे 11:5)।

अदार (महीना)

अदार (महीना)

अदार यहूदी कैलंडर में से एक महीना है। यह नाम बेबीलोन की प्राचीन भाषा से आया है (एज्रा 6:15)। हमारे आधुनिक कैलंडर के अनुसार, यह आमतौर पर फरवरी और मार्च के कुछ हिस्सों में आता है।

*देखें*प्राचीन और आधुनिक कैलंडर।

अदास

अदास

1. मक्काबी विद्रोह के दौरान उल्लेखित एक नगर। अदास में, यहूदा मक्काबी ने 161 ई.पू. में निकानोर के अधीन सीरियाई सेना को पराजित किया। इस विजय को प्रतिवर्ष अदार की 13 तारीख को मनाया जाता था (1 मक्का 7:40, 45, 49)। आधुनिक स्थल संभवतः खिरबेत अदास है, जो बेथोरोन से 7 मील (11 किलोमीटर) दूर है।
2. यहूदा लौटने वाले बाबेली निर्वासितों के एक दल के अगुवा थे, जो अपनी यहूदियों की वंशावली साबित नहीं कर सके (1 एस 5:36)। यही नाम, अद्दोन के रूप में लिखा गया है, जो बाबेली साम्राज्य में एक अज्ञात स्थान को संदर्भित कर सकता है (नहे 7:61)।

अदीएल

1. शिमोन के गोत्र से एक प्रधान, जिसने शिमोनियों के एक दल का नेतृत्व किया, जो अपनी भेड़ों के लिए भूमि खोजने के उद्देश्य से गदोर के प्रवेश द्वार पर गए (1 इति 4:36–39)।
2. मासै का एक पूर्वज, एक इस्राएली याजक जो बँधुआई के बाद पहले फिलिस्तीन लौटने वालों में से था (1 इति 9:12).

3. अज्मावेत का पूर्वज। अज्मावेत राजा दाऊद के भण्डारों का अधिकारी था (1 इति 27:25)।

अदीतैम

अदीतैम

यहूदा के निचले इलाकों में स्थित एक नगर (यहो 15:36)।

अदीदा

अदीदा

एक नगर जिसे शमौन मक्काबी द्वारा सुदृढ़ किया गया था (1 मक्का 12:38; 13:13)। अदीदा दक्षिणी यहूदिया की तलहटी में स्थित था, जो लुद्दा से चार मील (6.4 किलोमीटर) पूर्व में था, महासागर के तटीय मैदानों और केंद्रीय पहाड़ियों के बीच। अदीदा संभवतः वही स्थान है जिसे हादीद कहा जाता है (नहे 11:34)।

अदीना

अदीना

शीजा के पुत्र और दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक योद्धा, जिन्हें "तीस" के रूप में जाना जाता था (1 इति 11:42)।

अदीनो

अदीनो

सम्भवतः योशेब्यश्शेबेत का एक और नाम, जो दाऊद के मुख्य तीन सैन्य सरदारों में से एक था (2 शमू 23:8)। उसे याशोबाम भी कहा जाता था (1 इति 11:11)।

*देखें*याशोबाम #1।

अदुएल

टोबीत के परदादा का उल्लेख केवल तोबित 1:1 में किया गया है।

अदुम्मीम

एक घाटी जो पहाड़ी देश से यरदन की तराई में फैली हुई है और यह यहूदा की उत्तरी सीमा का हिस्सा थी (यहो 15:7)। यह स्थान बिन्यामीन की दक्षिणी सीमा पर गलीलोत का स्थान निर्धारित करने में भी सहायता करता है (यहो 18:17)। यरूशलेम से यरीहो जाने वाली सड़क इस पहाड़ की तराई से होकर गुज़रती थी।

एक कलीसियाई पिता, जेरोम मानते थे कि यही वह स्थान था जहाँ यीशु की अच्छे सामरी की घटना घटित हुई (लूका 10:30–37)। आधुनिक अरबी नाम, जिसका अर्थ है "लहू का चढ़ाव"। इब्रानी नाम अदुम्मीम, जिसका अर्थ है "लाल चट्टानें," सम्भवतः चट्टानों के प्राकृतिक रंग से आता है, न कि उन यात्रियों की दशा से जो वहाँ लूटे गए थे।

अदुल्लाम, अदुल्लामवासी

अदुल्लाम, अदुल्लामवासी

लाकीश और हेब्रोन के बीच एक पुराना कनानी शहर। यह पास के एक गुफा क्षेत्र का नाम भी है।

बाइबल में इस शहर का पहला उल्लेख "अदुल्लामी" शब्द में है (अदुल्लाम का निवासी)। इसका उपयोग यहूदा के मित्र हीरा का वर्णन करने के लिए किया गया है। जब यहूदा ने अपने भाई यूसुफ को गुलामी में बेचने में मदद की, तब यहूदा घर छोड़कर अदुल्लाम में हीरा के साथ रहने लगा (उत 38:1, 12, 20)।

अदुल्लाम यहूदा के गोत्रीय क्षेत्र के निम्नभूमि में था (यहो 15:35)। यहोशू ने इसे 31 अन्य कनानी शाही नगरों के साथ जीत लिया था (यहो 12:15)। राजा रहूबियाम ने इसे 15 अन्य नगरों के साथ सुदृढ़ किया (2 इति 11:7)। बाबेल की बन्धुआई से निर्वासितों की वापसी के बाद, यहूदा के लोग फिर से अदुल्लाम में रहने लगे (नहे 11:30)।

अदुल्लाम के पास की एक गुफा दाऊद के जीवन में कई बार महत्वपूर्ण रही। जब वे राजा शाऊल से भागे, तो उन्होंने उसमें छिपकर शरण ली (1 शमू 22:1)। उन्होंने इसे पलिश्तियों के विरुद्ध अपने युद्ध में एक अड्डे के रूप में भी उपयोग किया (2 शमू 23:13–17; 1 इति 11:15–19)। दाऊद ने भजन 57 और 142 अदुल्लाम की गुफा में रहते हुए लिखे। अदुल्लाम आधुनिक समय में तेल एश-शेख मादखुर है।

अदोनाई

अदोनाई

परमेश्वर का नाम आमतौर पर "प्रभु" के रूप में अनुवादित किया जाता है। यह दर्शाता है कि परमेश्वर आदर, ऐश्वर्य और सामर्थ के योग्य है।

*देखिए*परमेश्वर के नाम।

अदोनिय्याह

1. दाऊद का चौथा पुत्र। हग्गीत ने हेब्रोन में उसे जन्म दिया (2 शमू 3:4)। अपने तीन बड़े भाइयों (अम्नोन, किलाब, और अबशालोम) की मृत्यु के बाद, अदोनिय्याह दाऊद के बाद राजा बनने के लिए अगला था। पहला राजाओं के अनुसार, दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा से वादा किया था कि उसका पुत्र सुलैमान अगला राजा होगा (1 रा 1:17)। जब दाऊद मृत्यु के निकट थे, अदोनिय्याह ने राजा बनने की तैयारी शुरू कर दी (1 रा 1:1–10)। इससे पहले कि यह हो पाता, दाऊद ने सुलैमान को अगला राजा नामित किया (1 रा 1:11–40)। अदोनिय्याह ने पहले सुलैमान से बचने की कोशिश की (1 रा 1:41–53), लेकिन अन्ततः उसने राजा सुलैमान से अबीशग से विवाह करने की अनुमति मांगी। अबीशग वह महिला थीं जो दाऊद के अन्तिम दिनों में उनकी देखभाल कर रही थीं। प्राचीन पश्चिमी एशिया में, एक मृत राजा की रखैल को अपनाना सिंहासन का दावा करने के समान था। इससे सुलैमान क्रोधित हो गए और उन्होंने अदोनिय्याह को मारने का आदेश दिया (1 रा 2:13–25)।
2. यहूदा के राजा यहोशापात द्वारा लोगों को प्रभु की व्यवस्था सिखाने के लिए भेजे गए लेवियों में से एक (2 इति 17:8)।
3. एक राजनीतिक अगुवा जिसने बाबुल में बँधुआई के बाद नहेम्याह और अन्य लोगों के साथ एज्रा के के वादे पर हस्ताक्षर किए वह परमेश्वर के प्रति वफादार रहेगा (नहे 10:16)।

अदोनीकाम

अदोनीकाम

एक परिवार के मुखिया, जिनके वंशज जरूब्बाबेल के साथ बाबेली बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटे (एज्रा 2:13; नहे 7:18)। एज्रा बताते हैं कि अदोनीकाम के परिवार के 666 सदस्य लौटे, लेकिन नहेम्याह बताते हैं कि संख्या 667 है (जो 1 एस 5:14 के साथ मेल खाती है)। यह शायद एक लिपिकीय भिन्नता है।

अदोनीराम

दाऊद, सुलैमान, और रहबाम के शासनकाल के दौरान इस्राएल में एक महत्वपूर्ण अधिकारी (1 रा 4:6; 5:14)। अदोनीराम को यह भी कहा जाता है:

- "अदोराम", सम्भवतः उसके नाम का संक्षिप्त रूप (2 शमू 20:24; 1 रा 12:18)
- हदोराम (2 इति 10:18)

जब सुलैमान का मन्दिर बन रहा था, तब अदोनीराम 30,000 मजदूरों का प्रभारी था (1 रा 5:13–14)। दाऊद ने दास श्रम की एक प्रणाली बनाई थी, जिसे सुलैमान ने न केवल मन्दिर के निर्माण के लिए बल्कि कई अन्य परियोजनाओं के लिए भी जारी रखा।

जब रहबाम राजा बने, तो लोगों ने कार्यभार को कम करने की मांग की। इसके बजाय, रहबाम ने उनके कार्यभार को बढ़ाने का निर्णय लिया (1 रा 12:1–15)। जब अदोनीराम राजा के आदेश को लागू करने गया, तो विद्रोह में लोगों ने उसे पत्थरों से मारकर मृत्यु के घाट उतार दिया (1 रा 12:16–19)।

अदोनीसेदेक

अदोनीसेदेक

बेजेक के कनानी राजा का शीर्षक, जो उत्तरी फिलिस्तीन में एक नगर है। यहोशू की मृत्यु के बाद, यहूदा और शिमोन के गोत्रों ने अदोनीसेदेक को पराजित किया और उसके हाथ के और पैर के अंगूठे काट दिए। अदोनीसेदेक ने भी कई राजाओं के साथ ऐसा ही किया था जिन्हें उसने पकड़ा था। उसने स्वीकार किया कि उसके साथ जो हुआ वह परमेश्वर से उचित दण्ड था (न्या 1:5–7)।

अदोनीसेदेक

अदोनीसेदेक

यरूशलेम का अमोरी राजा, जब इस्राएली प्रतिज्ञा किए हुए देश को जीत रहे थे (यहो 10:1–5)। जब अमोरियों और इस्राएलियों के बीच गिबोन पर अधिकार के लिए युद्ध हुआ, तो यहोशू ने सूर्य के स्थिर रहने के लिए प्रार्थना की (यहो 10:6–15)। इस्राएलियों ने निर्णायक विजय प्राप्त की। अदोनीसेदेक और चार अन्य शत्रु राजा एक गुफा में छिपे हुए पाए गए। यहोशू ने उन्हें मार डाला (यहो 10:16–27)।

यह भी देखें भूमि पर विजय और आवंटन.

अदोराम

अदोनीराम की एक वैकल्पिक वर्तनी (2 शमू 20:24 और 1 रा 12:18)।

देखिए अदोनीराम।

अदोरैम

यहूदा के दक्षिणी राज्य में एक नगर, जिसे राजा रहबाम ने मजबूत किया था (2 इति 11:9)। अदोरैम और मारेशा के दो नगर बाद में मिलकर इदूमिया बन गए। 1 मक्काबियों 13:20 में इसे अदोरा कहा गया है। यह आधुनिक समय का दूरा है, जो हेब्रोन के दक्षिण में स्थित है।

अद्दान

अद्दान

फारस का एक नगर था। कुछ यहूदी लोग, जिन्हें बाबेल में बँधुआई के दौरान अपने देश से दूर रहने के लिए मजबूर किया गया था, वे एज्रा के साथ अद्दान से यरूशलेम वापस आए (एज्रा 2:59)। इसका नाम शायद एक बाबेली देवता अद्दू के नाम पर रखा गया था। इस नगर से आए हुए कुछ निर्वासित अपने यहूदी वंश को साबित नहीं कर सके क्योंकि उनके परिवार की वंशावली खो गई थी। इसे अद्दोन भी लिखा जाता है (नहे 7:61)।

अद्दार (व्यक्ति)

अर्द का एक अन्य नाम, जो बिन्यामीन के वंशजों में से एक था, जो 1 इतिहास 8:3 में उल्लिखित है। *देखें* अर्द, अर्दी।

अद्दार (स्थान)

यहूदा की दक्षिण-पश्चिम सीमा पर एक नगर, कादेशबर्ने के उत्तर-पश्चिम में स्थित था (यहो 15:3)। इस नगर को हेस्रोन और अद्दार के साथ हसरद्दार कहा जाता था (गिन 34:4)।

अद्दी

1. उन पूर्वजों में से एक जिन्होंने एज्रा की सलाह मानी और बाबेल में बँधुआई के बाद अपनी गैर-यहूदी पत्नियों को तलाक दे दिया (1 एसड्रास 9:31)। एज्रा 10:30 में अद्दी के स्थान पर पहत्मोआब का उल्लेख है।
2. यीशु के एक पूर्वज, जिनका उल्लेख लूका में यीशु की वंशावली के विवरण में किया गया है (लूका 3:28)।
   देखिए यीशु मसीह की वंशावली।

अद्दोन

अद्दोन

बेबीलोनिया में एक स्थान, अद्दान का एक अन्य रूप (नहे 7:61)।

देखिए अद्दान।

अद्रमुत्तियुम

यह एशिया माइनर (अनातोलिया उपद्वीप) का एक प्राचीन बन्दरगाह शहर हैं। जब पौलुस कैदी के रूप में रोम की यात्रा कर रहे थे, तो वे अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर सवार हुए (प्रेरि 27:2)। अद्रमुत्तियुम आज के तुर्की शहर एड्रेमित है। इस क्षेत्र में पाए गए सिक्के संकेत देते हैं कि अद्रमुत्तियुम कैस्टर और पोलक्स (अन्यजातीय देवता, ज्यूस के जुड़वे पुत्र) की पूजा का केन्द्र हो सकता था।

अद्रम्मेलेक

1. अद्रम्मेलेक अश्शूर के राजा सन्हेरीब का पुत्र था। अद्रम्मेलेक और उसके भाई शरेसेर ने नीनवे में निस्रोख के मन्दिर में अपने पिता की हत्या कर दी (2 रा 19:37; यशा 37:38)। गैर-बाइबलीय ग्रंथ 'बेबीलोनियन क्रॉनिकल्स' भी इस हत्या का उल्लेख करता है, परन्तु पुत्रों के नाम नहीं बताता।
   *यह भी देखें*सन्हेरीब।
2. सीरिया के सेफर्वैम के लोगों के द्वारा पूजे जाने वाले एक देवता। अश्शूरियों ने सेफर्वैम के लोगों को सामरिया में पुनः बसाया। सेफर्वैम के लोग अद्रम्मेलेक को बच्चों की बलि चढ़ाते थे (2 रा 17:31)।
   *यह भी देखें*मेसोपोटामिया; सीरिया, सीरियाई।

अद्रिया

अद्रिया समुद्र इटली, ग्रीस, अल्बानिया, मोंटेनेग्रो, और क्रोएशिया के बीच भूमध्य सागर की एक शाखा है। प्रेरित पौलुस ने अद्रिया समुद्र में 14 दिनों तक एक भयंकर तूफान का सामना किया (प्रेरि 27:27)। अन्य प्राचीन मूलग्रंथ भी अद्रिया समुद्र की हिंसकता के बारे में बात करते हैं। यहूदी इतिहासकार जोसेफस 64 ईस्वी में अद्रिया में जहाज़ दुर्घटना में फँस गए थे, और यूनानी कवि होमर ने अपनी रचनाओं में इन भयंकर तूफानों के बारे में बात की थी।

अद्रीएल

अद्रीएल

बर्जिल्लै का पुत्र, जिसे शाऊल ने अपनी पुत्री मेरब को विवाह में दिया। शाऊल ने यह तब किया जब वह पहले से दाऊद को वादा की गई थी (1 शमू 18:19)। बाद में, राजा दाऊद ने अद्रिएल के पाँच पुत्रों को गिबोनियों को सौंप दिया। गिबोनियों ने शाऊल के परिवार के विरुद्ध दंडस्वरूप इन पुत्रों की हत्या कर दी (2 शमू 21:1–9)।

अधमूए पेड़

अधमूए पेड़

सदाबहार झाड़ी का प्रकार; यिर्मयाह 17:6 और 48:6 में झाड़ी या झाड़ी के लिए केजेवी का गलत अनुवाद। *देखें*पौधे (अधमूए)।

अधर्म

अधर्म एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग बाइबल में गम्भीर गलत कार्यों या पापों का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

*देखें*पाप।

अधर्म का भेद

अधर्म का भेद

प्रेरित पौलुस द्वारा उपयोग किया गया वाक्यांश अधर्म की शक्ति या बल का वर्णन करता हैं जिससे भय उत्पन्न होता है। यह अभिव्यक्ति केवल 2 थिस्सलुनीकियों 2:7 में पाई जाती है और इसे इसके संदर्भ के प्रकाश में देखा जाना चाहिए।

स्पष्ट रूप से, थिस्सलुनीके की कलीसिया के कुछ सदस्य इस बात से आश्वस्त थे कि मसीह का दूसरा आगमन हो चुका हैं (2 थिस्स 2:1–2)। इस विश्वास का मुकाबला करने के लिए पौलुस कुछ घटनाओं का वर्णन करते है जो मसीह के पहुँचने से पहले घटित होनी चाहिए। ये घटनाएँ "अधर्म के पुरुष" के आगमन के इर्द-गिर्द केंद्रित है, एक दुष्ट व्यक्ति जो यरूशलेम के मन्दिर में बैठता है और स्वयं को परमेश्वर घोषित करता है (पद 3–4)। यद्यपि अधर्म के पुरुष को वर्तमान में रोका जा रहा है, लेकिन जो बुराई वो करेगा, वो पहले से ही कार्य कर रही है (पद 6)। पौलुस इस बुराई को "अधर्म का रहस्य" कहते हैं।

अधर्म के पुरुष की पहचान, रोकने वाले की पहचान, और अधर्म का रहस्य क्या है इस पर बहुत चर्चा हुई है। जो सुझाव दिए गए है, उनमें से निम्नलिखित तीन प्रमुख है:

1. अधर्म का रहस्य रोमी साम्राज्य की तानाशाही है, और अधर्म का पुरुष एक भविष्य का रोमी सम्राट है जिसे वर्तमान रोमी शासक द्वारा शक्ति से रोका जा रहा है। इस स्थिति के समर्थन में कहा जा सकता है कि पौलुस के समय के यहूदियों के प्रकाशन ग्रन्थ रोम को दुष्टता की पराकाष्ठा मानते थे। इसके अलावा, 2 थिस्सलुनीकियों के लेखन से लगभग 10 साल पहले, रोमी सम्राट कैलीगुला ने अपनी मूर्ति को यरूशलेम मंदिर में स्थापित और पूजित करने का आदेश दिया था (जोसेफस की *अंटिक्वीटीस में* 18.8.2–6; *वॉर* 2.10.1–5)।

2. अधर्म का रहस्य यहूदी धर्म है, और अधर्म का पुरुष महायाजक है जो प्रेरिताई प्रचार से रोका जाता है। हालांकि, यह संदेहास्पद है कि पौलुस ने यहूदी धर्म को इस दृष्टिकोण से देखा होगा (तुलना करें रोम 9:1–5)।

3. विभाजनात्मक (डिस्पेन्सेशनल) धर्मशास्त्र, अधर्म के रहस्य को बुराई के पूर्ण रूप में पहचानता है जो अंततः ख्रीस्त विरोधी (विधर्मी) के रूप में पूरा होता है और जो वर्तमान में पवित्र आत्मा द्वारा रोका जाता है। ऐसे संदर्भ में, पवित्र आत्मा के "मार्ग से हटाए जाने" के लिए एक शास्त्रीय आधार स्थापित करना कठिन है (2 थिस्स 2:7)।

यह भी देखें ख्रीस्त विरोधी;लोकान्त विज्ञान; मसीह का दूसरा आगमन; थिस्सलुनीकियों के नाम पहला पत्र; थिस्सलुनीकियों के नाम दूसरा पत्र।

अधर्मी

अधर्मी

पौलुस ने मसीह विरोधी के लिए इस नाम का प्रयोग किया (2 थिस्स 2:8–9)। *देखें* मसीह विरोधी।

अधर्मी पुरुष

लतानी भाषा से प्राप्त पाठ (मूल भाषा मे टेक्स्टस रिसेप्टस) जो 2 थिस्सलुनीकियों 2:3 में पाया जाता है। सही पाठ है "अधर्म का पुरुष," जो पौलुस द्वारा मसीह विरोधी के लिए उपयोग की गई अभिव्यक्ति है। *देखें* मसीह विरोधी।

अधर्मी पुरुष, पाप का पुरुष

अधर्मी पुरुष, पाप का पुरुष

2 थिस्सलुनीकियों 2:3 में मसीह विरोधी के लिए प्रेरित पौलुस द्वारा प्रयोग की गई अभिव्यक्ति। *देखें* मसीह विरोधी; अधर्म का रहस्य।

अधिपति

अधिपति

1. वरिष्ठ पद का हाकिम जिसका अधिकार सामान्यतः किसी राजा द्वारा प्रदान किया जाता है (1 रा 22:47; यिर्म 51:28)। *देखें* राज्यपाल।

2. के जे वी अनुवाद में "*हाकिम*" एक अधिकारी हैं जिसे रोमी राज्यसभा द्वारा प्रान्तों पर ठहरा दिया गया था, जैसे कि प्रेरितों के काम 13:7–12; 18:12; और 19:38 में उल्लेखित हैं।

यह भी देखें हाकिम।

अधिपति

अधिपति

इस खण्ड में परमेश्वर को दिए गए शाही शीर्षक का अनुवाद करने के लिए 1 तीमुथियुस में केजेवी और एएसवी में प्रयुक्त एक शब्द है। अधिकांश हालिया संस्करण "सम्प्रभु" या "शासक" शब्दों का उपयोग करते हैं।

अधिपति (सात्राप)

अधिपति (सात्राप)

एक राज्यपाल, जो राजा के क्षेत्र के भीतर कई प्रांतों पर कानूनी अधिकार रखता था। यह अधिकारी नागरिक और सैन्य मामलों में राजा का प्रतिनिधित्व करता था। वह राजा को पूरे साम्राज्य पर अधिकार में रखता था। सात्राप बाबेली और फ़ारसी साम्राज्यों के उच्च पदस्थ अधिकारियों में सूचीबद्ध किए गए थे (एज्रा 8:36; एस्ते 3:12; 9:3; दानि 6:1–7)।

अधिवक्ता

यूनानी शब्द *पैराक्लेटोस* का अनुवाद। यह यूहन्ना के सुसमाचार में पवित्र आत्मा का वर्णन करता है, साथ ही 1 यूहन्ना 2:1 में यीशु का भी।

देखिए परमेश्वर का आत्मा; पैराक्लीट।

अधोलोक

अधोलोक

यूनानी पौराणिक कथाओं में, हैड्स पाताल के देवता थे, जो ज़ीउस के भाई थे। हैड्स को प्लूटो भी कहा जाता था। उन्होंने पर्सेफनी का अपहरण किया जिससे शीत ऋतु का कारण बना। उनके राज्य को भी अधोलोक कहा जाता था (और इसे नरक भी कहा जाता था)। अधोलोक वह अंधकारमय भूमि थी जहां मृतक रहते थे।

ओडीसियस उस क्षेत्र में प्रवेश किए और घर वापस जाने के निर्देश प्राप्त करने के लिए भूतों को लहू पिलाए (होमर की *ओडिसी* 4.834)। मूल रूप से यूनानियों ने अधोलोक को केवल कब्र के रूप में सोचा। यह सभी मृतकों, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, के लिए एक अंधकारमय, भूत जैसी अवस्था का प्रतिनिधित्व करता था। धीरे-धीरे यूनानी और रोमी अधोलोक को एक पुरस्कार और दंड के स्थान के रूप में देखने लगे। अधोलोक एक संगठित और संरक्षित क्षेत्र बन गया जहाँ अच्छे लोग स्वर्ग-जैसे क्षेत्र (एलीसियन फील्ड्स) में पुरस्कृत होते थे। बुरे लोगों को भी दंडित किया जाता था (इसका वर्णन रोमन कवि वर्जिल ने 70–19 ईसा पूर्व में किया था)।

"अधोलोक" यहूदियों के लिए महत्वपूर्ण हो गया क्योंकि यह शब्द इब्रानी नाम "शिओल" का यूनानी में अनुवाद करने के लिए उपयोग किया गया था। यह यूनानी नए नियम, सेप्टुअजिंट के अनुवादकों द्वारा उपयोग किए गए इब्रानी शब्द के लिए एक बहुत ही उपयुक्त अनुवाद था। दोनों शब्द शारीरिक कब्र या मृत्यु को दर्शा सकते हैं (उत्पत्ति 37:35; नीतिवचन 5:5; 7:27)। दोनों शब्द एक अंधेरे पाताल का उल्लेख करते थे जहाँ अस्तित्व अंधकारमय जैसा था (अय्यूब 10:21–22; 38:17; यशायाह 14:9)।

शिओल को महासागर के नीचे और सलाखों और द्वारों के साथ वर्णित किया गया है (अय्यूब 26:5–6; 17:16; योना 2:2–3)। सभी लोग वहां जाते हैं चाहे वे अच्छे हों या बुरे (भजन संहिता 89:48)। प्रारंभिक साहित्य में शिओल/अधोलोक से छुटकारा पाने की कोई आशा नहीं है।

सी. एस. लुईस ने इस अवधारणा को द *सिल्वर चेयर:* में अच्छी तरह से वर्णित किया है: "बहुत से लोग डूब जाते हैं, और कुछ ही धूप वाली भूमि पर लौटते हैं।" बेशक, ये सभी विवरण काव्यात्मक साहित्य में हैं। यह कहना कठिन है कि इब्रानी या यूनानी अपने अधोलोक/शिओल के विवरण को कितनी शाब्दिकता से लेते थे। उन्होंने शायद यूनानी कविता की पुरानी चित्र-भाषा का उपयोग एक अवधारणा का वर्णन करने के लिए किया हो जिसके लिए गद्य शब्द अपर्याप्त थे।

यहूदी और यूनानी दोनों ही फारसी साहित्यिक प्रभावों के संपर्क में आए। जब यहूदी लोग बंधुआई से लौटे, तो लेखक अपने पुस्तकों को (उदाहरण के लिए, मलाकी, दानिय्येल, और कुछ भजन) फारसी प्रभाव के संदर्भ में लिख रहे थे।

यूनानियों का फारसी साहित्य से संपर्क कुछ बाद में हुआ (उन्होंने 520 से 479 ई.पू. तक फारसियों से युद्ध किया और 334 से 330 ई.पू. तक उन्हें जीत लिया)।

चाहे यह फारसी प्रभाव के कारण हो या नहीं, इस अवधि के दौरान मृत्यु के बाद प्रतिफल और दण्ड का विचार विकसित हुआ। शिओल/अधोलोक एक छाया भूमि से बदलकर यूनानियों (और रोमी) और यहूदियों के लिए प्रतिफल और दण्ड के एक विभेदित स्थान में बदल गया।

जोसेफस ने दर्ज किया है कि फरीसी मृत्यु के समय प्रतिफल और दण्ड में विश्वास करते थे (एंटीक्विटिस 18.1.3)। एक समान विचार 1 हनोक 22 में प्रकट होता है। यहूदी साहित्य में इन मामलों में, अधोलोक मृतकों के एक स्थान को इंगित करता है, जिसमें दो या अधिक खंड होते हैं।

अन्य यहूदी साहित्य में, अधोलोक दुष्टों के लिए यातना का स्थान है। धर्मी स्वर्ग में प्रवेश करते हैं (सुलैमान के भजन 14; सुलैमान की ज्ञान 2:1; 3:1)। इस प्रकार, नए नियम काल की शुरुआत तक, अधोलोक के तीन अर्थ हैं:

1. मृत्यु
2. सभी मृतकों का स्थान, और
3. केवल दुष्ट मृतकों का स्थान।

सन्दर्भ यह निर्धारित करता है कि किसी लेखक का किसी दिए गए गद्यांश में क्या अर्थ है।

ये सभी अर्थ नए नियम में प्रकट होते हैं। मत्ती 11:23 और लूका 10:15 में, यीशु कफरनहूम के अधोलोक में उतरने की बात करते हैं (न्यू लिविंग ट्रांसलेशन विथ मार्जिन नोट्स)। सबसे अधिक संभावना है कि उनका मतलब है कि शहर "मारा जाएगा" या नष्ट हो जाएगा। इस सन्दर्भ में "अधोलोक" का अर्थ "मृत्यु" है, जैसे "स्वर्ग" का अर्थ "महिमा" है।

प्रकाशितवाक्य 6:8 भी इसका उदाहरण प्रस्तुत करता है: मृत्यु एक घोड़े पर आती है, और अधोलोक (मृत्यु का प्रतीक) उसके पीछे आता है। अधोलोक का व्यक्तित्व शायद पुराने नियम से आता है, जहां अधोलोक/शिओल को एक अजगर के रूप में देखा जाता है जो लोगों को निगल जाता है (नीतिवचन 1:12; 27:20; 30:16; यशायाह 5:14; 28:15, 18; हबक्कूक 2:5)।

मत्ती 16:18 में अधोलोक का उपयोग अधिक कठिन है। कलीसिया एक चट्टान पर बनाई जाएगी और अधोलोक के फाटक इसके खिलाफ प्रबल नहीं होंगे। यहाँ मृतकों का स्थान (फाटकों और बेंड़ों से युक्त) मृत्यु का प्रतीक है। वास्तव में मसीहियों को मार दिया जा सकता है, लेकिन मृत्यु (अधोलोक के फाटक) उन्हें मसीह की तुलना में अधिक नहीं रोक पाएगी। वह जो अधोलोक से बाहर निकले, अपने लोगों को भी बाहर लाएंगे।

यह प्रेरितों के काम 2:27 (जिसमें भजन संहिता 16:10 का उल्लेख है) का भी अर्थ है। मसीह मृत नहीं रहे और उनका जीवन अधोलोक में नहीं रहा। दाऊद के विपरीत, वे मृतकों में से जी उठे। इन दोनों मामलों में अधोलोक केवल मृत्यु का प्रतीक हो सकता है। या इसका मतलब हो सकता है कि मसीह और मसीही वास्तव में मृतकों के स्थान अधोलोक में गए थे। शायद पहला ही अभिप्रेत है। जो भी मामला हो, चूंकि मसीह जी उठे, उन्होंने मृत्यु और अधोलोक पर विजय प्राप्त

की है। वे प्रकाशितवाक्य 1:18 में दोनों की कुँजियाँ (नियंत्रण) रखने वाले के रूप में प्रकट होते हैं।

नए नियम की दो गद्यांश मृतकों के अस्तित्व के स्थान के रूप में अधोलोक का उल्लेख करते हैं: प्रकाशितवाक्य 20:13–14 और लूका 16:23। प्रकाशितवाक्य 20 में अधोलोक को खाली कर दिया जाता है (या तो सभी मृतकों से या दुष्ट मृतकों से, यह किसी के युगांतशास्त्र पर निर्भर करता है), जिससे पुनरुत्थान पूरा हो जाता है। जब दुष्टों का न्याय किया जाता है और उन्हें आग की झील (नरक) में फेंक दिया जाता है, तो अधोलोक को भी उसमें फेंक दिया जाता है। लूका 16:23, हालांकि, स्पष्ट रूप से अधोलोक को दुष्ट मृतकों के स्थान के रूप में सन्दर्भित करता है। वहाँ धनी को एक ज्वाला में पीड़ा दी जाती है, जबकि गरीब पुरुष, लाज़र, स्वर्ग (अब्राहम की गोद) में जाता है।

अधोलोक, तब, नए नियम में तीन चीजों का मतलब है, जैसे यह यहूदी साहित्य में था:

1. मृत्यु और इसकी शक्ति सबसे अधिक बार उपयोग किया जाने वाला अर्थ है, विशेष रूप से रूपक उपयोगों में।
2. इसका मतलब आम तौर पर मृतकों का स्थान भी होता है, जब एक लेखक सभी मृतकों को एक साथ रखना चाहता है।
3. इसका अर्थ है, अन्ततः वह स्थान जहाँ दुष्ट मृतकों को अन्तिम न्याय से पहले पीड़ा दी जाती है। यह इसका सबसे संकीर्ण अर्थ है, जो नए नियम में केवल एक बार आता है (लूका 16:23)। बाइबल इस पीड़ा पर अधिक ध्यान नहीं देती। डांटे का चित्र '*द इन्फर्नो* में बाइबल की तुलना में बाद की अटकलों और यूनानी-रोमी धारणाओं पर आधारित है

*यह भी देखें*मृत स्थान; गेहन्ना; नरक; शिओल।

अध्यक्ष

एक सेवक जो अपने स्वामी के पुत्र के साथ रहने, उसकी रक्षा करने और कभी-कभी अनुशासन में रखने के लिए जिम्मेदार होता था जब तक कि बालक पूर्ण परिपक्वता तक नहीं पहुँच जाता। अध्यक्ष उनके नैतिक आचरण और सामान्य व्यवहार की निगरानी करते थे। उनके अनुशासन के तरीके शारीरिक दण्ड से लेकर अपमानित करने तक भिन्न होते थे। पौलुस ने मूसा की व्यवस्था को मसीह की ओर ले जाने के लिए "स्कूल शिक्षक" (किंग्स जेम्स संस्करण), "अध्यक्ष" (रिवाईस्ड स्टैण्डर्ड संस्करण), या "अध्यापक" (न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल) के रूप में माना (गला 3:24–25)। व्यवस्था की ओर लौटना बचपन की ओर लौटने का प्रतिनिधित्व करता था।

अनंतकाल

समय की अवधि जिसे मापा नहीं जा सकता।

पुराने नियम में हमारे अंग्रेजी शब्द "एटर्निटी (अनंतकाल) के अनुरूप कोई एकल शब्द नहीं है। यह अवधारणा "पीढ़ी से पीढ़ी तक" और "युगानयुग तक" जैसी अभिव्यक्तियों से उत्पन्न होती है। परमेश्वर को इतिहास के सृष्टिकर्ता और नियंत्रक के रूप में समझने से उसके अनंत जीवनकाल की समझ विकसित हुई। इस प्रकार, परमेश्वर को "सनातन" विशेषण से निर्दिष्ट किया गया है (तुलना करें उत 21:33; यशा 26:4; 40:28)। इब्रियों ने बस यह समझा कि परमेश्वर अतीत का भी परमेश्वर है और वह हमेशा रहेगा—मानवों के विपरीत, जिनके पृथ्वी पर दिन सीमित हैं।

नए नियम ने ये अवधारणाएँ यहूदी मत और पुराने नियम से लीं। यूनानी में वही मूल शब्द समय के युगों और परमेश्वर की अनंतता का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, रोम 16:26 में उपयोग किया गया शब्द "सनातन" यूनानी मूल से अंग्रेजी में "ईऑन" के रूप में किया गया है। जो परमेश्वर युगों या ईऑनों पर शासन करता है, वह स्वयं सनातन है जो इस युग द्वारा बंधे हुए मानव जीवन में निरंतरता और स्थिरता लाता है। समय के अंत की स्पष्ट समझ, जो नए नियम के प्रकाशन द्वारा प्रदान की गई, पुराने नियम की सजीव सृष्टि की समझ में जोड़कर, एक अनंत परमेश्वर की अवधारणा को रेखांकित और स्पष्ट करती है। परमेश्वर का पूर्व-अस्तित्व और पश्च-अस्तित्व उनके अनंत अस्तित्व को व्यक्त करने का एक और तरीका है।

नया नियम नियमित रूप से मसीह में परमेश्वर के प्रकाशन के कालक्रमिक अनुक्रमों के बारे में उसी तरह से बात करता है जैसे पुराने नियम ने इस्राएल के लिए परमेश्वर के आत्म-प्रकाशन के बारे में बात की थी। "युग" के साथ पूर्वसर्गों का नए नियम का उपयोग विशेष रूप से शिक्षाप्रद है: उदाहरण के लिए (शाब्दिक रूप से अनुवादित) "युग से बाहर" (यूह 9:32), "युग से" (लूका 1:70; प्रेरि 3:21), "युग में" (यूह 1:13), "युगों में" (यूह 4:14)। पहले दो वाक्यांश वर्तमान क्षण से पहले की अनिश्चित समयावधि को दर्शाते हैं और अंतिम दो भविष्य की अनिश्चित समयावधि की ओर इशारा करते हैं (अक्सर "सदाकाल" के रूप में अनुवादित)।

बाइबल का अनंतता का सिद्धांत उस समय की अन्य संस्कृतियों के सिद्धांतों के विपरीत है, जो अक्सर चक्रीय रूप में सोचती थी। विशेष रूप से यूनानी दुनिया समय को एक वृत्त के रूपक में सोचती थी—घटनाओं का बार-बार होने वाला क्रम। उद्धार उस दुष्चक्र से बाहर निकलने के लिए था, इस प्रकार समय से मुक्त होकर कालातीतता या समयहीनता का

अनुभव करना। बाइबल का सिद्धांत समय को एक रेखा के रूप में चित्रित करता है जिसका आरंभ और अंत, अनंत परमेश्वर द्वारा सुनिश्चित किया गया है। इस प्रकार बाइबल के दृष्टिकोण में, उद्धार एक निर्दिष्ट क्रम में नहीं हो सकता; यह केवल व्यक्ति के अनुभव में होता है और अनंत परमेश्वर द्वारा निर्देशित ऐतिहासिक परिपूर्णता की ओर बढ़ता है।

यूनानी और बाइबल के समय को देखने के तरीकों के बीच का अंतर अनंत काल की सटीक प्रकृति के प्रश्न को उठाता है। क्या इसे केवल असीमित समय के रूप में समझा जाना चाहिए या वर्तमान समय के विपरीत, इसे कालातीतता या समयहीनता के रूप में देखा जाना चाहिए? बाइबल का दृष्टिकोण यह प्रतीत होता है कि अनंत काल कालातीतता या समयहीनता नहीं है और वर्तमान समय के विपरीत नहीं खड़ा है, क्योंकि वर्तमान समय और अनंत काल में बुनियादी गुण साझा होते हैं।

नया नियम (यहूदी मत का अनुसरण करते हुए) समय को "इस वर्तमान युग" और "आने वाला युग" या "युग जो आने वाला है" में विभाजित करने के लिए "युग" या "काल" का उपयोग करता है। यह अंतर केवल समय और कालातीतता के बीच नहीं है, क्योंकि "आने वाला युग" भविष्य है और इसका एक विशिष्ट और पहचाने जाने योग्य चरित्र है। "आने वाले युग" की शुरुआत की बाइबल की तस्वीर को व्यापक विवरण के साथ नाटकीय रूप से चित्रित किया गया है। नया युग केवल प्रारंभिक चरण की आदिम और भोली मासूमियत की पुनर्स्थापना नहीं है, बल्कि उनके उद्देश्यों के अनुसार एक परिपूर्णता है जो है और जो था और जो आने वाला है (प्रका 1:4)। इस प्रकार, इसे नई सृष्टि के रूप में नामित किया गया है।

नया नियम स्पष्ट रूप से सिखाता है कि "आने वाला युग" अब मसीह के जीवन और सेवकाई में शुरू हो गया है, हालांकि दोनों युगों में एक निश्चित अधिव्यापन (overlap) है। "पहली फसल," "बयाने में आत्मा को" और "अंतिम दिन" जैसे शब्दों की आवृत्ति इस समझ को दर्शाती है (उदाहरण के लिए इब्रा 6:5: "आनेवाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं")। विश्वासी मसीह के उद्धार के कार्य के माध्यम से वर्तमान में आयातित भविष्य के युग की आशीषों का आनंद लेते हैं।

फिर, अनंतकाल की अवधारणा समय के विपरीत और विरोध में समयहीनता के रूप में नहीं खड़ी होती है। अनंतकाल समय का असीमित और बेहिसाब स्थान है, जिसकी शुरुआत मसीह में परमेश्वर के राज्य की शुरुआत से होती है और असीमित भविष्य में फैलती है। समय ("वर्तमान बुरे संसार," गलातियों 1:4) और अनंतकाल दोनों परमेश्वर द्वारा शासित हैं, संपूर्ण समय के परमेश्वर के रूप में, जो दोनों को विषय और अर्थ देते हैं।

*यह भी देखें*युग; परमेश्वर का अस्तित्व और गुण।

अनन्त जीवन

अनन्त जीवन

पवित्र शास्त्र में वर्णित अस्तित्व का प्रकार, जो या तो कालातीतता या अमरत्व द्वारा चिन्हित होता है। उस प्रकार का जीवन जिसका श्रेय परमेश्वर को दिया जाता है और विश्वासियों को वितरित किया जाता है। बाइबिल के लेखकों ने समझा कि एक जीवित परमेश्वर हैं, जो दुनिया की रचना से पहले से मौजूद थे और जो समय के अन्त में भी मौजूद रहेंगे। उन लोगों के लिए परमेश्वर का उपहार जो उसके प्रति आज्ञाकारी और जिम्मेदार हैं, "अनन्त जीवन" या ऐसे ही कुछ पर्यायवाची के रूप में नामित किया गया है। यूहन्ना का सुसमाचार अनन्त जीवन के बारे में सबसे सर्वोत्तम जानकारी प्रस्तुत करता है।

वाक्यांश "अनन्त जीवन" पुराने नियम के यूनानी संस्करण में केवल एक बार आता है (दानि 12:2, जिसका मूल अर्थ 'युग का जीवन' है, जो मृतकों में से पुनरुत्थान के बाद के युग के जीवन को दर्शाता है)। हालाँकि, पुराने नियम में 'जीवन' का प्राथमिक अर्थ पृथ्वी पर अस्तित्व में भलाई की गुणवत्ता है।

अन्तर-नियम काल के दौरान, रब्बियों ने "इस युग" और "आने वाले युग" के बीच एक स्पष्ट अन्तर किया। उन्होंने यह बल दिया कि नए युग में जीवन का सिद्धांत वर्तमान युग से गुणात्मक भिन्नता रखता है, केवल मात्रात्मक भिन्नता नहीं।

यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "अनन्त" किया गया है, वह "युग" या "काल" शब्द से लिया गया है। यहूदी धर्म के सन्दर्भ में नया नियम को रखना, जिसमें जीवित परमेश्वर की अवधारणा और "आने वाले युग" का वादा है, विशेषण "अनन्त" के अर्थ को गहराई और रंग देता है। यीशु मसीह का आगमन परमेश्वर के अन्तिम प्रकाशन के रूप में भविष्य के मसीही युग के जीवन की गुणों को वर्तमान वास्तविकता में सुलभ बनाता है।

एक मनुष्य यीशु के पास आया और अनन्त जीवन प्राप्त करने के निर्देश मांगे (मर 10:17)। वह स्पष्ट रूप से आने वाले युग में पुनरुत्थान के बारे में सोच रहा था। यीशु ने उन्हीं शब्दों में उत्तर दिया (पद 30).

उस मनुष्य को अपने उत्तर में, यीशु ने अनन्त जीवन की प्राप्ति को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पाने के समान बताया। (मर 10:23–25) परमेश्वर का राज्य केवल एक भविष्य की घटना नहीं है बल्कि यह पहले से ही यीशु के जीवन, सेवा और शिक्षाओं में उद्घाटित हो चुका है। परमेश्वर का राज्य जीवन का एक उपहार है जो एक अनुयायी के वर्तमान युग में रहते हुए उपलब्ध है। यीशु के कई दृष्टांत इस बिंदु पर जोर देते हैं (जैसे, मत्ती 13 में)। पहाड़ी उपदेश में धन्य वचन (5:3–12) वर्तमान आशीषों की अवधारणा को मजबूत करते हैं जिसमें उद्धार, क्षमा, और धार्मिकता शामिल हैं। इसलिए, अनन्त जीवन उन लोगों के लिए एक वर्तमान आशीष है जो परमेश्वर के राज्य के प्रति समर्पित होते हैं और वर्तमान युग के अन्त से पहले इस नए उद्धार युग की आशीष का आनन्द लेते हैं।

अनन्त जीवन पर सबसे विस्तृत चर्चा युहन्ना के सुसमाचार में पाई जाति है। युहन्ना का उद्देश्य इस अवधारणा के महत्वपूर्ण महत्व को उजागर करता है: "लेकिन ये इसलिए लिखे गए हैं ताकि आप विश्वास करें कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके आप उसके नाम में जीवन प्राप्त कर सकें" (यूह 20:31)। अनन्त जीवन का सबसे प्रारम्भिक युहन्ना का सन्दर्भ यूह 3:15 में पाया जाता है।

यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से आने वाले युग की यहूदी अपेक्षा को इसके प्रत्याशित आशीषों के साथ बांटा (जैसे, यूह 3:36; 4:14; 5:29, 39; 6:27; 12:25)। अनन्त जीवन को मसीही युग के विशेष उपहारों द्वारा परिभाषित किया जाता है जब यह समाप्ति पर पहुंचता है। लाजर का पुनरुत्थान (अध्याय 11) उन लोगों के लिए उपलब्ध भविष्य के जीवन को दर्शाने वाला एक जीवित घटना थी जो मसीह पर विश्वास करते हैं। मार्था ने, अपने भाई के वास्तविक पुनरुत्थान से पहले, यह विश्वास व्यक्त किया कि लाज़र को अन्तिम दिन उठाया जाएगा (पद 24)। यीशु ने उत्तर दिया कि वह पुनरुत्थान और जीवन है, और जो कोई उन पर विश्वास करते हैं वे कभी नहीं मरेंगे, भले ही वे शारीरिक रूप से मर जाएं (पद 25–26)।

हालांकि, यूहन्ना के सुसमाचार का मुख्य ध्यान भविष्य की प्रत्याशा पर नहीं बल्कि उस भविष्य के जीवन के वर्तमान अनुभव पर है। आने वाले युग का जीवन मसीह में पहले से ही एक विश्वासी के लिए उपलब्ध है। यीशु ने अपने मिशन को परिभाषित करने के लिए जिन रूपकों का उपयोग किया है, वे वर्तमान नए जीवन पर जोर देते हैं: जीवन का जल जो अनन्त जीवन के लिए एक झरने के रूप में उभरता है (यूह 4:10–14); जीवन की रोटी जो दुनिया की आत्मिक भूख को संतुष्ट करती है (6:35–40); जगत की ज्योति जो अपने अनुयायियों को जीवन की रोशनी में ले जाती है (8:12); अच्छा चरवाहा जो बहुतायत का जीवन लाता है (10:10); जीवन देने वाला जो मरे हुओं को जिलाता है (11:25); मार्ग, सत्य और जीवन (14:6); और सच्ची दाखलता जो उसमें बने रहने वालों को बनाए रखती है। (15:5)

यीशु ने बहुत ध्यानपूर्वक यह ध्यान किया कि उनके मिशन की उपलब्धि उनके अपने स्वभाव और क्षमता में नहीं बल्कि पिता के द्वारा थी जिन्होंने उन्हें भेजा था। यीशु का पिता के प्रति समर्पण फिर से इस तथ्य को उजागर करता है कि जीवन परमेश्वर का उपहार है। जो लोग परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हैं, वे उस जीवन के प्राप्तकर्ता हैं जो केवल परमेश्वर देता है अर्थात अनन्त जीवन। इसलिए, सभी विश्वासियों के लिए पुनरुत्थान का वादा परमेश्वर के उपहार का स्वाभाविक परिणाम है (यूहन्ना 5:26–29)। यह लाज़र के पुनरुत्थान में स्पष्ट किया गया है और मसीह के पुनरुत्थान में "पहले फल" के रूप में आश्वस्त है। (पौलुस की शब्दावली में, आई.आर.वि. 1 कुरि15:23)।

यीशु ने सच्चे परमेश्वर को जानने के साथ अनन्त जीवन की अवधारणा को जोड़कर इसमें और सामग्री जोड़ी (यूह 17:3)। यूनानी विचार में, ज्ञान का तात्पर्य या तो ध्यान या रहस्यमय उन्माद के परिणाम से था। पुराने नियम में, हालांकि, ज्ञान का मतलब अनुभव, सम्बन्ध, संगति और चिंता था। (पुष्टि करें, यिर्म 31:34)। घनिष्ठ सम्बन्ध के रूप में ज्ञान के इस अर्थ को पुरुष और महिला के बीच यौन सम्बन्धों को नामित करने के लिए क्रिया रूप के उपयोग से रेखांकित किया जाता है (पुष्टि करे, उत 4:1)। यीशु ने कहा, "मैं अच्छा चरवाहा हूँ; मैं अपनी भेड़ो को जानता हूँ और मेरी भेड़े मुझे जानती हैं, जैसे पिता मुझे जानते हैं और मैं पिता को जानता हूँ" (यूह 10:14–15, आई.आर.वि.)। पिता और पुत्र का घनिष्ठ और आपस में सम्बन्ध, पुत्र और उसके चेलों के सम्बन्ध का आदर्श है। शिक्षा या मन के हेरफेर से यह ज्ञान नहीं आता बल्कि पुत्र के माध्यम से प्रकट होता है (1:18; पुष्टि करें 14:7)।

अनन्त जीवन की अवधारणा के प्राथमिक तत्वों का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण स्पष्ट रूप से दिखाता है कि यह केवल एक अंतहीन या अनन्त जीवन नहीं है। हालांकि अनन्त जीवन की कोई अन्तिम सीमाएँ नहीं हैं, बाइबल का मुख्य जोर जीवन की गुणवत्ता पर है, विशेष रूप से इसके ईश्वरीय तत्वों पर। अनन्त जीवन आने वाले युग के गुणों को वर्तमान में एक विश्वासयोग्य परमेश्वर के मसीह में प्रकट होने के माध्यम से लाता है, और यह परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध का ज्ञान लाता है।

*यह भी देखें*जीवन; नई सृष्टि, नया प्राणी; नया जन्म।

अनन्त जीवन

*देखें*अनन्त जीवन।

अनन्त दंड

*देखें*नरक।

अनन्त दण्ड

अनन्त दण्ड

*देखें*नरक।

अनन्तकाल का जीवन

देखें अनन्त जीवन।

अनन्याह (व्यक्ति)

अजर्याह के दादा। अजर्याह उन तीन व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने बेबीलोन की बँधुआई के बाद अपने घरों के पास यरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत की थी (नहे 3:23)।

अनन्याह (स्थान)

बेबीलोन की बँधुआई के बाद बिन्यामीन के क्षेत्र का एक नगर (नहे 11:32)। यह संभवतः नए नियम का बैतनिय्याह बन गया होगा। "बैतनिय्याह" बैत-अनन्याह का संक्षिप्त रूप है।

अनम्मेलेक

अद्रम्मेलेक से सम्बन्धित एक देवता। सपर्वैम के लोग उसकी उपासना किया करते थे। 722 ई. पू. के बाद, असीरियों ने सपर्वैम के लोगों को सामरिया में स्थानांतरित कर दिया।

अनम्मेलेक, मेसोपोटामिया के एक देवता अनू-मलेक के नाम का इब्रानी रूपांतरण है। इस नाम का अर्थ है "अनू राजा है"। अनू अश्शूर के प्रधान देवता का नाम था, जो आकाश का देवता था।

समरिया में रहने वाले सपर्वैमी लोग *अनु-मेलेक* की उपासना के भाग के रूप में बालकों की बलि चढ़ाते थे (2 रा 17:31)। अनु के पंथ में बच्चों को जलाने की यह प्रथा सम्भवतः सपर्वैम से लाई गई थी, या फिर यह कुछ नया था, जो तब विकसित हुआ जब सपर्वैमी लोग कनान आए।।

यह भी देखें मेसोपोटामिया; सीरिया, सीरियाई।

अना

1. हिब्बी जाति के सिबोन का पुत्र और ओहोलीबामा का पिता। ओहोलीबामा एसाव की पत्नियों में से एक थीं (उत 36:2, 18)।
2. सेईर होरी का चौथा पुत्र। अना होरियों में एक प्रमुख था जिसकी एक पुत्री भी थी जिसका नाम ओहोलीबामा था (उत 36:20, 25; 1 इति 1:38, 41)।
3. सिबोन का पुत्र जिसे जंगल में गर्म झरने मिले (उत 36:24)। यह सिबोन ऊपर के #2 का भाई था। *देखें* सिबोन।

अनाएल

अनाएल

टोबित के भाई थे (तोबी 1:21–22)। अश्शूर के राजा सन्हेरीब की मृत्यु 681 ई.पू. में हुई। इसके बाद, अनाएल के पुत्र अहिकार को अश्शूरी राजा एसर्हद्दोन ने नीनवे में एक उच्च कचहरी पद पर नियुक्त किया।

अनाक, अनाकवंशी, अनाकियों

अनाक, अनाकवंशी, अनाकियों

अनाक प्राचीन कनान में रहने वाले बहुत ऊँचे लोगों के एक समूह के पूर्वज थे, जिन्हें दानव कहा जाता था।

जब इस्राएली पहली बार कनान पहुंचे, तो अनाकवंशी हेब्रोन में अच्छी तरह से स्थापित थे। मूसा द्वारा कनान में भेजे गए 12 जासूसों में से दस अनाकवंशी के आकार से भयभीत हो गए थे (गिन 13:17–22; 31)। उनके भय ने कादेशबर्ने में एक विद्रोह को जन्म दिया (गिन 14:39–45; व्य.वि. 1:19–46)। इसने और 38 वर्षों तक भटकने को जन्म दिया। जब इस्राएली अंततः कनान में प्रवेश करने के लिए तैयार हुए, परमेश्वर ने प्रसिद्ध अनाक दानवों के खिलाफ अपनी सहायता का वादा किया (व्य.वि. 9:1–3)।

दो जासूस जो अनाकवंशी से नहीं डरते थे, वे दोनों उनकी हार में शामिल थे। यहोशू ने हेब्रोन, दबीर, अनाब और यहूदा के सभी क्षेत्रों में रहने वाले अनाकवंशियों को पराजित किया (यहो 11:21–23)। जो बच गए थे, वे केवल पलिश्ती शहरों गाज़ा, गत और अश्दोद में ही रह गए। दूसरे भेदी कालेब, हेब्रोन में अनाकवंशी प्रमुख शेशै, अहीमन और तल्मै की हार के लिए ज़िम्मेदार थे। कालेब के भतीजे ओत्नीएल दबीर के नायक थे (यहो 15:14–17)।

हेब्रोन को पहले किर्यतअर्बा कहा जाता था, जो अनाक के पिता अर्बा के नाम पर था। वह अनाकवंशी का एक महान नायक थे (यहो 14:15; 21:11)। यह तथ्य कि अनाकवंशी गाज़ा, गत और अश्दोद की पलिश्ती नगरों में जीवित रहे, इस संभावना की ओर इशारा करता है कि गत का गोलियत इन दानवों का वंशज हो सकता है (1 शमू 17:4–7)।

यह भी देखें दानव।

अनाचार

निकट संबंधियों के बीच यौन संबंध।

लैव्यव्यवस्था 18 में अनाचार को दृढ़ता से निषिद्ध किया गया है। लैव्यव्यवस्था 20 में तो यहाँ तक कहा गया है कि कुछ

प्रकार के अनाचार को मृत्यु द्वारा दंडित किया जाना चाहिए। बाइबल अनाचार को एक बहुत गंभीर अपराध मानती है, इसे अपमानजनक और विकृत कहती है।

बाइबल में अनाचार के उदाहरण दिखाते हैं कि यह बुरे चरित्र से आता है:

- लूत की बेटियों ने अपने पिता को नशे में धुत कर दिया और उनके साथ सो गईं। दोनों गर्भवती हो गईं (उत्पत्ति 19:30–38)।
- अम्नोन ने अपनी सौतेली बहन तामार के साथ छल किया और जबरदस्ती की (2 शमूएल 13:1–22)।
- पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया में हो रहे अनाचार की कड़ी आलोचना की (1 कुरिन्थियों 5:1–5), यह दिखाते हुए कि यह नए नियम के समय में भी गलत था।

लहू के संबंध, या रक्त संबंध, अवैध यौन संपर्क का एक कारण है। यह, उदाहरण के लिए, भाइयों और बहनों, माता-पिता और बच्चों, दादा-दादी और पोते-पोतियों, साथ ही कुछ चाची, चाचा, भतीजी और भतीजों पर लागू होता है। लैव्यव्यवस्था 18 विवाह द्वारा संबंधियों (संबंध) और कुछ चाची और चाचाओं के साथ यौन संबंध को भी मना करता है। प्राचीन इस्राएल में, एक अपवाद था: एक पुरुष अपने मृत भाई की विधवा स्त्री से विवाह कर सकता था यदि उसका कोई पुत्र न हो (व्यवस्थाविवरण 25:5–10)।

हालांकि रक्त संबंधियों के बीच अनाचार से बचने के लिए आनुवंशिक कारण हैं, मुख्य समस्या यह है कि यह परिवारों को चोट पहुँचाता है। चूँकि पृथ्वी पर पर्मेस्श्वर के कार्य के केंद्र में परिवार हैं, इसलिए वह अनाचार का बहुत कठोरता से न्याय करता है। जब उनके सदस्यों के बीच यौन दुराचार होता है, तो परिवार जीवित नहीं रह सकते।

अनाज

*देखें*कृषि; पौधे (जौ; बाजरा; डिन्कल गेहूँ; गेहूँ)।

अनाज की भेंट

आर.एस.वी. में "अनाज की भेंट" का अर्थ है, परमेश्वर को दी जाने वाली कई प्रकार की भेंटों में से एक जो समर्पण और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। *देखें*भेंट और बलिदान।

अनात

अनात

1. इस्राएल के एक न्यायी शमगर के माता-पिता में से एक (न्या 3:31; 5:6)। चूंकि नाम अनात स्त्रीलिंग है, यह सम्भावना है कि अनात शमगर की माता थी।
2. उर्वरता (प्रजनन एवं समृद्धि) की कनानी देवी। *देखें*कनानी देवता और धर्म।

अनातोत (व्यक्ति)

1. बिन्यामीन के गोत्र से बेकेर का पुत्र (1 इति 7:8)।
2. एक राजनीतिक अगुआ, जिसने बाबेल की बँधुआई के बाद नहेम्याह और अन्य लोगों के साथ मिलकर एज़्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य वाचा पर हस्ताक्षर किया (नहे 10:19)।

अनातोत (स्थान), अनातोती

अनातोत (स्थान), अनातोती

बिन्यामीन के क्षेत्र में स्थित एक नगर, जिसे रहने के लिए लेवियों को दिया गया था (यहो 21:18; 1 इति 6:60)। सम्भवतः कनानी लोगों ने इसका नाम अपनी देवी अनात के नाम पर रखा, या ऐसा हो सकता है कि बाद में इस्राएलियों ने इसे बिन्यामीन के एक वंशज के नाम पर रखा हो (1 इति 7:8)।

नगर सम्भवतः आधुनिक अनाता के पास रस एल-कर्रूबेह में स्थित था, जो यरूशलेम के उत्तर में 4.8 किलोमीटर (तीन मील) की दूरी पर है। इसके निवासी कभी-कभी अनातोती या अनातोतवासी कहलाते थे (2 शमू 23:27; 1 इति 27:12)।

दाऊद के सैन्य आगुओं में से एक, अबीएजेर, अनातोत से था (1 इति 11:28,)। सैनिक येहू (1 इति 12:3) और याजक एब्यातार (1 रा 2:26) भी अनातोत से था।

यह भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह (यिर्म 1:1) का गृहनगर भी था। इसके कुछ निवासी उनका उग्र विरोध करते थे (यिर्म 11:21, 23)। बाबेल के हाथों यहूदा के पतन से ठीक पहले, यिर्मयाह ने अनातोत में एक खेत खरीदा था ताकि यह दर्शाया जा सके कि इस्राएल अपनी भूमि में पुनः स्थापित होगा (यिर्म 32:7–

9)। वर्षों बाद, अनातोत के 128 पुरुष बँधुआई से लौटे। उन्होंने नगर को पुनः बसाया (नहे 11:32)।

अनाथ

अनाथ शब्द एक इब्रानी मूल से आया है जिसका अर्थ है "अकेला होना" या "विधवा होना," जिसे अक्सर "पिता रहित" के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह विचार किसी भी व्यक्ति का वर्णन करता है जो इस्राएल के वाचा समाज में कानूनी स्थिति के बिना है, जो असुरक्षित या जरूरतमंद है, और जो विशेष रूप से उत्पीड़न के लिए उजागर है। यह उस व्यक्ति की भी बात करता है जो एक या दोनों सांसारिक माता-पिता से वंचित है (पुष्टि करें विला 5:3).

चूंकि परमेश्वर का अनाथों के प्रति विशेष ध्यान है (निर्ग 22:22–24; व्य.वि. 10:18; भज 10:14, 18; 27:10; 68:5; 146:9; यशा 1:17; होश 14:3), पुराने नियम की व्यवस्था ने उनके लिए विशेष प्रावधान किए, उनके उत्तराधिकार के अधिकारों की रक्षा करके (गिन 27:7–11; व्य.वि. 24:17; नीति 23:10), उनके खेतों और अंगूर के बागों में बालियां चुनने की स्वतंत्रता सुनिश्चित करके (व्य.वि. 24:19–21), उन्हें महान वार्षिक पर्वों में सहभागिता की अनुमति देकर (16:11, 14), और हर तीन साल में एक बार दशमांश फसल का हिस्सा उन्हें आवन्टित करके (14:29; 26:12)। जो लोग उन्हें उत्पीड़ित करते हैं, उनके लिए कड़े दण्ड की आज्ञा है (व्य.वि. 24:17; 27:19; मला 3:5)।

हालांकि इस्राएल के अनाथों को कभी-कभी दोस्तों और रिश्तेदारों से सहायता मिलती थी (अय्यू 29:12; 31:17), व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने की विफलता स्पष्ट थी, जैसा कि लेखकों के आरोपों से प्रकट होता है (अय्यू 6:27; 22:9; 24:3, 9; भज 94:6; यशा 1:23; 10:2; यिर्म 5:28; यहेज 22:7)। परिणामस्वरूप, भविष्यद्वक्ता अनाथों के पक्ष में अपील करने से कभी नहीं थकते थे (यिर्म 7:6; 22:3; जक 7:10)।

यह शब्द नए नियम में केवल दो बार उपयोग किया गया है—एक बार सामान्य अर्थ में उन लोगों का वर्णन करने के लिए जो "निर्जन" या "सांत्वनाहीन" हैं (यूह 14:18), और एक बार विशेष अर्थ में "पितृहीन" का वर्णन करने के लिए (याकू 1:27)। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता की आत्मा में, याकूब घोषित करते हैं कि सच्चा धर्म अनाथों की देखभाल में शामिल है।

अनानी

अनानी

एल्योएनै के सात पुत्रों में से एक। वह दाऊद का वंशज है (1 इति 3:24)।

अनानीएल

अनानीएल

तोबीत 1:1 में टोबीत के दादा का नाम उल्लेखित है।

अनाब

हेब्रोन के पहाड़ी देश में एक नगर था जहाँ पहले विशालकाय योद्धा रहते थे। यहोशू द्वारा दानवों को समाप्त करने के बाद, अनाब को यहूदा के गोत्र को आवंटित किया गया (यहो 11:21; 15:50)। आज, अनाब को खिरबेत 'अनाब अल-कबीराह के नाम से जाना जाता है।

अनामी, अनामवंशी

एक अज्ञात समूह के लोग, संभवतः मिस्रियों से संबंधित। उनका उल्लेख प्रारंभिक राष्ट्रों के बाइबल अभिलेखों में किया गया है (उत 10:13; 1 इति 1:11)।

अनायाह

1. एज्रा के एक याजक और सहायक, जो लोगों को एज्रा द्वारा पढ़ी गई व्यवस्था के अंश समझाते थे (नहे 8:4)।
2. एक राजनीतिक अगुवा जिन्होंने बेबीलोन की बँधुआई के बाद नहेम्याह तथा अन्य लोगों के साथ मिलकर एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किया (नहे 10:22)। वह संभवतः ऊपर #1 के समान व्यक्ति हो सकते हैं।

अनार

अनार आमतौर पर एक छोटा, झाड़ी जैसा पेड़ होता है, लेकिन कभी-कभी यह एक बड़ी, शाखाओं वाली झाड़ी या छोटा पेड़ बन सकता है, जो 6.1 से 9.1 मीटर (20 से 30

फीट) की ऊँचाई तक पहुँच सकता है। इसकी शाखाओं में अक्सर कांटे होते हैं। शोभायमान घण्टी जैसे फूल आमतौर पर चमकीले लाल होते हैं, हालांकि कभी-कभी ये पीले या सफेद भी हो सकते हैं।

गोल फल आकार में सन्तरे या मध्यम आकार के सेब के समान होता है। इसके बाहरी हिस्से पर पकी अवस्था में चमकीली लाल या पीली कठोर त्वचा होती है। फल के शीर्ष पर सूखे फूल के हिस्से होते हैं जो एक मुकुट के समान दिखते हैं। फल के अन्दर गहरे लाल रंग का रसदार गूदा होता है जिसमें कई लाल बीज जड़े होते हैं।

अनार के फूलों ने सम्भवतः निर्गमन 28:33–34 और 39:24–26 में उल्लिखित सुनहरी घण्टियों के लिए एक मिसाल के रूप में कार्य किया, और 1 राजाओं 6:32 में वर्णित खुले फूलों के लिए भी। फल के ऊपर का सीधा भाग राजाओं के मुकुटों के लिए एक नमूने के रूप में कार्य करता था।

अनार मूल रूप से एशिया से आता है, लेकिन इसे बहुत प्राचीन समय से उगाया जा रहा है। अब यह फिलिस्तीन के क्षेत्र में, मिस्र में, और महासागर के किनारों पर काफी आम है। इसे मिस्र के उत्तम फलों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है (गिन 20:5)। इसे कनान की भूमि के वादे के आशीर्वादों में से एक के रूप में भी सूचीबद्ध किया गया है (व्य.वि 8:8)।

अनाहरत

अनाहरत

यिज्रेल के तराई में एक नगर। जब यहोशू द्वारा भूमि का विभाजन किया गया, तब इसे इस्साकार के गोत्र को दिया गया था (यहो 19:19)।

अनियास

101 पुत्रों के परिवार के पूर्वज। वह जरूब्बाबेल के साथ बेबीलोन से चले गए थे, जैसा कि 1 एसड्रास 5:16 में वर्णित है। अन्य बाइबल की किताबों में इस परिवार का उल्लेख नहीं मिलता है (एज्रा 2:16–20; नहे 7:21–25)।

अनीआम

अनीआम

इस्राएल की बारह गोत्रों में से एक नप्ताली के गोत्र से शमीदा का पुत्र। उसका नाम 1 इतिहास 7:19 में सूचीबद्ध है।

अनुरूप, अनुरूपता

विश्वासियों को यीशु की छवि में ढालने की आत्मिक प्रक्रिया। पौलुस इस बारे में रोमियों 8:28–30 में बताते हैं:

और हम जानते हैं कि सब बातों में परमेश्वर उनके भले के लिए कार्य करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं, जिन्हें उनके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है। क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहले से जान लिया, उन्हें उन्होंने अपने पुत्र के स्वरूप में होने के लिए पहले से ठहराया भी है, ताकि वह बहुत से भाइयों में पहलौठे ठहरे। और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी।

चूँकि यह परमेश्वर की इच्छा और योजना है कि उनके बहुत से पुत्र और पुत्रियाँ हों, प्रत्येक विश्वासी को आदर्श, यीशु के अनुरूप होना चाहिए। ध्यान दें कि रोमियों 8:29–30 में "ठहराया हुआ," "बुलाया हुआ," "धर्मी ठहराया हुआ," और विशेष रूप से "महिमान्वित" शब्द भूतकाल में हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर, अपनी अनन्त दृष्टिकोण से, इस प्रक्रिया को पहले ही पूरा हुआ देखते हैं। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, विश्वासी पहले ही महिमान्वित हो चुके हैं क्योंकि वह उन्हें अपने पुत्र के समान देखते हैं। परन्तु फिर भी, समय की वास्तविकता में, उन्हें परमेश्वर के पुत्र की छवि के अनुरूप होने की प्रक्रिया से गुजरना होगा। परमेश्वर उन लोगों के जीवन में सभी चीजों को साथ काम कर रहे हैं जो उन्हें प्रेम करते हैं और उनके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं। उनका लक्ष्य प्रत्येक पुत्र और पुत्री को अपने प्रिय पुत्र की छवि के अनुरूप बनाना है।

जब कोई रोमियों 8 का अध्याय पढ़ता है, तो यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर जिन "चीजों" का उपयोग मसीहियों को ढालने के लिए करते हैं, उनमें विभिन्न प्रकार के कष्ट शामिल होते हैं। यीशु मसीह की छवि के अनुरूप होने के लिए उनकी मृत्यु के अनुरूप होना आवश्यक है (देखें फिलि 3:10)। जबकि परिवर्तन में हमारे मौलिक संविधान में आंतरिक, जीवन-प्रदान परिवर्तन शामिल करता है, अनुरूपता बाहरी दबाव को शामिल करती है जो मसीह की छवि को उनके बच्चों में काम करती है। यदि उन्हें उनके जैसा बनना है, तो उन्हें दोनों की आवश्यकता है। पौलुस के अनुसार, यीशु को जानना उनके पुनरुत्थान की सामर्थ्य और उनके कष्टों की संगति दोनों को जानना था। कोई भी कष्ट सहना पसंद नहीं करता; कोई भी अय्यूब नहीं बनना चाहता। परन्तु अय्यूब ने समझदारी दिखाई जब उन्होंने कहा, “जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूँगा” (अय्यूब 23:10)। कष्ट विश्वासी में ऐसा तत्व उत्पन्न करता है जो उनके पास स्वाभाविक रूप से नहीं होता। परमेश्वर अपने पुत्र की छवि के अनुरूप बनाने के लिए कष्टों का उपयोग करते हैं।

प्रभु यीशु ने अपने अनुयायियों को ऐसा कष्ट सहने का उदाहरण दिया जिसे टाला नहीं जा सकता। यह वही मार्ग है जिसे उद्धार के अग्रदूत ने अपनाया। पिता ने उन्हें कष्टों के माध्यम से पूर्ण किया (इब्रा 2:10)—अर्थात, वह मनुष्य के रूप में हमारे अगुवा और यहाँ तक कि हमारे दयालु महायाजक बनने के लिए पूरी तरह योग्य बनाए गए क्योंकि उन्होंने हमारे लिए कष्ट सहा। मसीहियों को यह उम्मीद करनी चाहिए कि वे कम से कम कुछ हद तक उन चीजों का सामना करें जिनका यीशु ने सामना किया। बेशक, इसका यह मतलब नहीं है कि कोई भी विश्वासी क्रूस पर छुटकारे के लिए उनके अद्वितीय कष्ट को दोहरा सकता है। पतरस कहते हैं कि "मसीह भी तुम्हारे लिये दुःख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्ह पर चलो" (1 पत 2:21)। यूनानी शब्द "उदाहरण" के पीछे *(हुपोग्रामा)* सामान्य यूनानी उपयोग में पता लगाने की पट्टी को दर्शाता है जिसमें पूरा यूनानी वर्णमाला होता था। छात्र इसका उपयोग वर्णमाला का पता लगाने के लिए करते थे। उन्हें प्रत्येक अक्षर, अल्फा से ओमेगा (शुरू से आखिर) तक, सीखना पड़ता था। यीशु का जीवन, कष्ट का जीवन, बिल्कुल ऐसा ही पता लगाने की पटिया है। जो लोग यीशु का अनुसरण करना सीखते हैं, वे वही होंगे जो जानते हैं कि कष्ट सहना क्या होता है, क्योंकि कष्ट वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर हमें यीशु की छवि में ढालते हैं।

*यह भी देखें*परिवर्तन।

अनुशासन की नियमावली

कुमरान में रहने वाले एस्सीन समुदाय के आचरण और समाजीक नियमों की एक पुस्तक। एस्सीन यहूदियों का एक विशेष समूह था जो अन्य लोगों से अलग रहते थे और कठोर नियमों का पालन करते थे। *देखें* मृत सागर कुण्डलपत्र; एस्सीन।

अनेमनी

एक पौधा है जो बटरकप (रैननकुलेसी) परिवार से संबंधित है, इसके फूल कटोरी के आकार के होते हैं और आमतौर पर सफेद, गुलाबी, लाल या बैंगनी रंग में पाए जाते हैं। *देखें*पौधे (सोसन)।

अन्तकालिक ग्रन्थ

अन्तकालिक ग्रन्थ

एक शब्द जिसका अर्थ है "प्रकाशन" या "प्रकटीकरण"। एक अन्तकालिक, एक प्रकार की लेखनी है जो छिपी हुई बातों को प्रकट करती है। बाइबल में दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें दो अन्तकालिक ग्रन्थ हैं। *देखें* दानिय्येल की अन्तकालीन पुस्तक; प्रकाशितवाक्य की पुस्तक।

अन्ताकियाई

अन्ताकियाई

पुराने और नए नियमों के बीच के समय के यहूदी, जिन्होंने बड़े पैमाने पर अपने यहूदी धर्म को यूनानी विचारों और प्रथाओं के लिए छोड़ दिया था। सीरियाई राजा अंतिओकस एपिफेनस ने दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान शासन किया। उनके शासनकाल के दौरान, फिलिस्तीन को एक गहन "यूनानीकरण" कार्यक्रम के अधीन किया गया, जो दूसरों को हर तरह से "यूनानी" बनने के लिए प्रोत्साहित करता था। यरूशलेम में कई लोग यूनानी जीवन के तरीकों को अपनाने के लिए दबाव का सामना कर रहे थे। यह दबाव सामाजिक और आर्थिक, दोनों स्रोतों से आया। परिणामस्वरूप, इन लोगों में से कई ने अपनी यहूदी धार्मिक परंपराओं को छोड़ दिया या अनदेखा कर दिया। उन्होंने ऐसा यूनानी संस्कृति के साथ जितना संभव हो सके मेल खाने के लिए किया।

जेसन ने अपने भाई ओनियास को हटाने के लिए रिश्वत देकर महायाजक का पद प्राप्त किया। जेसन ने राजा अंतिओकस एपिफेनस के साथ मिलकर काम किया। उनका उद्देश्य यरूशलेम के लोगों को यूनानी विचारों और जीवन शैली को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था। जेसन ने शिक्षा और शारीरिक प्रशिक्षण के लिए एक स्थान बनाया जिसे जिम्नेजियम कहा गया। उन्होंने यहूदियों की परम्पराओं के विरुद्ध नई प्रथाओं को भी प्रस्तुत किया।

कई यहूदियों ने जेसन के प्रोत्साहन के कारण अपने तरीके बदल दिए। उन्होंने अपने पूर्वजों के विश्वास को छोड़ दिया। यहाँ तक कि याजकों ने भी अपनी सामान्य धार्मिक कर्तव्यों का पालन करना बंद कर दिया। इसके बजाय, वे उन नई गतिविधियों में शामिल हो गए जो जेसन और उसके समर्थकों ने पेश की। ये गतिविधियाँ यूनानी जीवन के तरीकों पर अधिक केंद्रित थी। 2 मक्काबियों 4:15 में, यह कहा गया है कि ये लोग "यूनानी प्रतिष्ठा के रूपों को सर्वोच्च मूल्य दे रहे थे।" 2 मक्काबियों 4:9 में, यहूदियों के इस दल को "अन्ताकिया के नागरिक" कहा गया था। अन्ताकिया सीरिया की राजधानी शहर था।

*देखें*मक्काबी युग; हस्मोनियन।

अन्तिपत्रिस

एक शहर जो कैसरिया के दक्षिण में लगभग 41.8 किलोमीटर (26 मील) की दूरी पर हैं। इसे हेरोदेस महान ने 9 ईसा पूर्व में अपने पिता, आंतिपातर के सम्मान में पुनर्निर्मित किया था। हेरोदेस के पुनर्निर्माण से पहले, इस शहर को अपेक के नाम से जाना जाता था। जब पौलुस एक रोमी कैदी था, तो वह यरूशलेम से कैसरिया जाते समय अन्तिपत्रिस से होकर गया (प्रेरि 23:31)। अन्तिपत्रिस एक रोमी सैन्य पुनः प्रसारण केन्द्र था। यह यहूदिया और सामरिया के बीच की सीमा को भी चिह्नित करता था।

यह भी देखें अपेक।

अन्तिपातेर

अन्तिपातेर

1. महायाजक योनातान द्वारा स्पार्तावासियों और रोमियों के पास नूमेनियस के साथ भेजे गए एक सद्भावना राजदूत थे (1 मक्का 12:16; 14:22)।
2. महान हेरोदेस के पिता। *देखें* हेरोदेस, हेरोदी का परिवार।

अन्तिपास

अन्तिपास

1. पिरगमुन में कलीसिया के एक प्रारंभिक शहीद (प्रका 2:13)।
2. हेरोदेस महान के पुत्र। *देखें* हेरोदेस, हेरोदी परिवार।

अन्तिम दिन

बाइबल में दुनिया के अन्तिम काल का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया एक कथन, जैसा कि हम जानते हैं। पुराने नियम में, अन्तिम दिनों को उस समय के रूप में देखा जाता है जब मसीह की प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी (देखें यशा 2:2; मीक 4:1)। नए नियम के, लेखक मानते थे कि वे पहले से ही अन्तिम दिनों में जी रहे हैं, जिसे वे सुसमाचार का युग मानते हैं। उदाहरण के लिए, पतरस समझाते थे कि पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाएँ योए 2:28 की भविष्यद्वाणी को पूरा करती हैं: "अन्तिम दिनों में, परमेश्वर कहते हैं, मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगें, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपनी आत्मा उण्डेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।" (प्रेरि 2:17–18)। इब्रानियों कि पत्री के लेखक कहते है, "पूर्व युग में परमेश्वर ने पूर्वजों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की। परन्तु इन अन्तिम दिनों में उन्होंने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बात की है" (इब्रा 1:1–2)।

अन्तिम दिन बड़ी आशीष का समय है। अब दुनिया उद्धार के लाभों तक स्वतंत्र रूप से पहुंच सकती है। ये यीशु मसीह के पूर्ण जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, और महिमा से आते हैं। अब, अविश्वासी पश्चाताप कर सकते है और परमेश्वर की ओर मुड़ सकते है। विश्वासियों को सुसमाचार को पूरे विश्व में फैलाना चाहिए।

वाक्यांश "अन्तिम दिन" यह सुझाव देता है कि यह अवधि कुछ समय तक चलेगी। इस समझ की पुष्टि इस तथ्य से होती है कि यह अन्तिम युग पहले से ही कई शताब्दियों से जारी है। हालांकि, अनन्त काल के दृष्टिकोण से, यह एक संक्षिप्त अवधि है। हर पीढ़ी में, इस अन्तिम युग का अन्त हमेशा जल्द ही आता हुआ देखा जाता है, इतना कि यूहन्ना इसे "अन्तिम घड़ी" कहकर सन्दर्भित करते हैं। प्रारंभिक कलीसिया के भीतर भी मसीह-विरोधियों (जो मसीह के विरोधी हैं) की उपस्थिति इसका संकेत है। यूहन्ना कहते हैं, "यह अन्तिम घड़ी है; और जैसा कि आपने सुना है कि मसीह-विरोधी आ रहा है, वैसे ही अब कई मसीह-विरोधी प्रकट हो गए हैं। इसी से हम जानते हैं कि यह अन्तिम समय है" (1 यूहन्ना 2:18)। इन अन्तिम दिनों का अन्त हमेशा निकट है, और यह निश्चित रूप से एक दिन आएगा। यही कारण है कि मसीह हमें सतर्क रहने का आग्रह करते हैं। हम उनके महिमामय वापसी के दिन या घंटे को नहीं जानते। यह इन अन्तिम दिनों का अन्त होगा (मत्ती 24:44; 25:13)।

प्रेरित पौलुस मसीहियों को याद दिलाते हैं। अन्तिम दिन, "वह दिन," जब उनके जीवन प्रकट होंगे। जो उन्होंने किया है वह प्रकट होगा। यह मसीह में उनकी उद्धार की सुरक्षा को प्रभावित नहीं करता। इसके बजाय, यह निर्धारित करता है कि वे मसीह के आगमन पर सम्मान के साथ मिलेंगे या लज्जा के साथ (देखें 1 यूह 2:28)। पौलुस लिखते हैं, "हर एक का काम प्रगट हो जाएगा, क्योंकि वह दिन उसे प्रकाश में लाएगा। यह आग के साथ प्रकट होगा, वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा" (1 कुरि 3:13–15)।

अन्तिम दिनों का अन्त होगा। फिर, मसीह का राज्य आरम्भ होगा। परमेश्वर सबमें सब कुछ होंगे (1 कुरि 15:28; फिलि 3:20–21)। अन्तिम दिन भी विजय और पुनरुत्थान का दिन है। मसीह ने वादा किया है कि वे उन सभी को जी उठाएंगे जो उन पर विश्वास करते हैं (यूह 6:39–44, 54)। मसीह की

वापसी पर प्रकट होने वाली महिमा की तुलना में अन्तिम दिन रात्रि के समान हैं, इसलिए इन अन्तिम दिनों का अन्त परमेश्वर के अनन्त दिन की शुरुआत भी होगी (देखें रोम 13:11–12)। यह जानना कि हम अन्तिम दिनों में हैं और अन्तिम दिन निकट आ रहा है, इस बात पर बहुत प्रभाव डालता है कि हम आज अपना जीवन कैसे जीते हैं (देखें 2 पत 3:11–14)।

सारांश में, ये अन्तिम दिन हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के दिन हैं। जो हमें उस अन्तिम दिन के लिए तैयार करते हैं। वह अविश्वासियों का अन्तिम न्याय होगा। विश्वासियों के लिए, वह अनंत महिमा की शुरुआत होगी। मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों के लिए, ये आनंद और आशीष के दिन हैं। लेकिन हम अभी भी पूर्ण छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ये कलीसिया के लिए परीक्षा और कष्ट के दिन हैं, लेकिन परमेश्वर ने हमारे मनों में अपनी आत्मा द्वारा आश्वासन दिया है। यह आत्मा आने वाले बड़े भोज के स्वाद का संकेत है। यह एक अग्रिम भुगतान है जो भविष्य में पूर्ण भुगतान का वादा करता है (रोम 8:23; 2 कुरि 1:22; 5:5; इफि 1:14)। इस बीच, हम प्रेरित पौलुस के साथ आश्वस्त हो सकते हैं कि इन अन्तिम दिनों के कष्ट उस महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं जो हम पर प्रकट होगी (रोम 8:18)। ये दिन भी जिम्मेदारी और अवसर का समय हैं। मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वे पूरे विश्व में सुसमाचार का प्रचार करें (मत्ती 28:19–20; प्रेरि 1:8), और परमेश्वर हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देते हैं (प्रेरि 17:30)।

यह भी देखें प्रभु का दिन; मसीह का दूसरा आगमन।

अन्तिम दिन

देखिए अन्तिम दिन।

अन्तिम भोज

देखिए प्रभु का भोज।

अन्तिम संस्कार की प्रथाएं

मानव जीवन के मरणासन्न और मृत्यु से जुड़े प्रथाएँ और अनुष्ठान। अन्तिम संस्कारों का अभ्यास सभी सामाजिक समूहों द्वारा उनकी शुरुआत से ही किया गया है।

अधिकांश मानवविज्ञानी मानते हैं कि अन्तिम संस्कार की प्रथाएं जीवित लोगों के लिए कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक कार्यों को पूरा करती हैं। हालांकि, किसी भी संस्कृति के लिए इन रीति-रिवाजों का सामान्य अर्थ लम्बे समय से विवाद का विषय रहा है। एक ओर, कुछ व्यवहार वैज्ञानिक मानते हैं कि अन्तिम संस्कार की रस्में शोक संतप्त लोगों के लिए मृत्यु से उत्पन्न अचानक चिंता को कम करती हैं। दूसरी ओर, कुछ लोग मानते हैं कि मृत्यु रीति-रिवाजों का उद्देश्य चिंता को दूर करना नहीं है बल्कि धार्मिक श्रद्धा या समूह एकता की भावनाओं को बढ़ावा देना है। विभिन्न स्तरों पर ये दोनों कारक शायद अधिकांश अन्तिम संस्कार अनुष्ठानों के पीछे होते हैं। अन्तिम संस्कार के रीति-रिवाज प्रतिभागियों को याद दिलाते हैं कि मृत्यु को गंभीरता से लेना चाहिए, जबकि साथ ही वे मृत्यु की एक सांत्वनादायक व्याख्या प्रदान करते हैं।

विश्वास की प्रणाली ने गहराई से अन्तिम संस्कार की प्रथाओं को प्रभावित किया है। अमरत्व की एक अवधारणा अधिक सामान्य रूप से मानी जाने वाली मान्यताओं में से एक है। सबसे पुराने ज्ञात मानव कब्रों में उपकरणों, आभूषणों और यहाँ तक कि भोजन जैसी कलाकृतियों की खोज इस व्यापक विश्वास का प्रमाण हो सकती है कि मनुष्य मृत्यु के बाद किसी न किसी रूप में अस्तित्व में रहते हैं। यह माना जाता था कि उचित अन्तिम संस्कार अनुष्ठान मृतकों को उनके अन्तिम निवास स्थान तक पहुँचने में सहायता करते हैं, जिसमें आमतौर पर विभिन्न खतरों से भरी यात्रा शामिल होती थी, जैसे कि पौराणिक नदियों को पार करना या चौड़े खड्डों को पार करना। अनुष्ठानों ने जीवित लोगों को यह भी आश्वासन दिया कि मृतकों की आत्माएं उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाएंगी।

शव का क्रियाकर्म

शव के क्रियाकर्म का एक सामान्य रूप जमीन में दफनाना (समाधि) रहा है। यह प्रथा इस विश्वास के कारण उभरी हो सकती है कि मृतकों का निवास स्थान जमीन के नीचे स्थित है। अक्सर कब्र को अधोलोक का प्रवेश द्वार माना जाता है, हालांकि कुछ समूह मृतकों के निवास को आकाश में मानते थे। कई लोगों द्वारा भूमि के ऊपर क्रियाकर्म भी किया गया है। कुछ समुदाय शव को एक रैक पर रखते हैं ताकि पक्षी या अन्य जानवर उसे खा सकें। कुछ समूहों को शव खाने के लिए जाना जाता है, यह मानते हुए कि मृतक के अच्छे गुणों को ग्रहण किया जा सकता है। कई एशियाई समाजों ने पारम्परिक रूप से दाह संस्कार, या शव को जलाने का अभ्यास किया है। अतीत में, यह असामान्य नहीं था कि एक मृत व्यक्ति की पत्नी और उसका दास खुद को जलती चिता पर झोंक देते थे। पश्चिम में दाह संस्कार लोकप्रिय हो रहा है और कब्र स्थलों के लिए भूमि की बढ़ती कमी के कारण यह और अधिक व्यापक रूप से प्रचलित हो सकता है।

लगभग हर समाज शरीर के क्रियाकर्म के दौरान विशेष शोक प्रथाओं का पालन करता है। इनमें विशेष कपड़े पहनना, भावनात्मक रोना, एकांतवास, और भोजन का त्याग शामिल हैं। अधिकांश समाज इस अनुभव को एक समारोह द्वारा चिह्नित करते हैं जिसमें शुद्धिकरण अनुष्ठान और मृतक के दोस्तों और रिश्तेदारों द्वारा विशेष भोजन साझा करना शामिल हो सकता है। लगभग हर सांस्कृतिक समूह में, स्थिति प्रतीक अन्तिम संस्कार की प्रथाओं और अनुष्ठानों में शामिल

हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि मृतक व्यक्ति उच्च सामाजिक स्थिति के होते हैं, तो अन्तिम संस्कार की रस्में अधिक विस्तृत होतीं।

अन्तिम संस्कार की प्रथाएं और बाइबिल

हालांकि बाइबिल दफन प्रक्रियाओं की एक विस्तृत तस्वीर प्रदान नहीं करती है, यह इब्रानी लोगों की सामान्य दफन प्रथाओं का संकेत देती है और मृत्यु से सम्बंधित कुछ बिखरी हुई निषेधाज्ञाएं शामिल हैं। मृत शरीर को जमीन में या गुफा में रखना मृतकों का क्रियाकर्म करने का मुख्य तरीका था। सबसे बुरी अपमानजनक बातों में से एक था बिना दफनाए रह जाना या पशुओं का आहार बन जाना (व्य. वि. 28:26; 1 रा 11:15)। यदि संभव हो, तो मृतक को मृत्यु के दिन दफनाया जाना चाहिए (व्य. वि. 21:23)। हालांकि शव को संरक्षित नहीं किया जाता था, शव को विशेष दफन कपड़ों में तैयार किया जाता था और विभिन्न इत्रों से छिड़का जाता था (मर 15:46; यूह 11:44) ।

बाइबिल के समय में अन्तिम संस्कार के दौरान तीव्र रोना होता था। यह शोक केवल स्वाभाविक दुःख से उत्पन्न नहीं हुआ था बल्कि यह अन्तिम संस्कार की रस्म का हिस्सा था (मत्ती 11:17) । प्राचीन इस्राएल में, भुगतान किए गए शोककर्ताओं के समूह उभरे जो अनुष्ठान संकेत पर विलाप करते थे। अधिकांश अन्तिम संस्कार सेवा इन पेशेवर शोककर्ताओं पर केंद्रित थी जिन्होंने भजन गाए और मृतकों के लिए विस्तृत शोकगीत प्रस्तुत किए (2 इति 35:25; यिर्म 9:17–22)। शोक पर जोर इब्रानी मानव जीवन और स्वास्थ्य की सराहना से उत्पन्न हुआ, जिसे परमेश्वर के सबसे बड़े उपहारों में से एक माना जाता था (भज 91:16), और मानव प्रकृति के एक दृष्टिकोण से भी जो शरीरधारी अस्तित्व की पुष्टि करता था (16:9–11)। यह मान्यता शायद इस कारण बनी कि पुराने नियम में अमरता का एक सम्पूर्ण सिद्धांत विकसित नहीं हुआ, हालांकि यह संकेत देता है कि मृतक शियोल के "छायादार अस्तित्व" में भाग लेते हैं और किसी दिन पुनर्जीवित होंगे (अय्यू 14:13; यहेज 37)।

प्रारम्भिक मसीही कलीसिया ने सजीव अस्तित्व में यहूदी विश्वास की पुष्टि की लेकिन मृत्यु के बाद अस्तित्व में विश्वास को उजागर किया। यूनानी द्वैतवादियों के विपरीत, जिन्होंने केवल आत्मा की अमरता का दावा किया, लेखकों ने, पुराने नियम का अनुसरण करते हुए, एक ऐसे अनन्त जीवन में विश्वास पर जोर दिया जिसमें न केवल आत्मा बल्कि शरीर भी शामिल था। यह दृष्टिकोण शारीरिक पुनरुत्थान में विश्वास का केंद्र बन गया, जिसने मसीही अन्तिम संस्कार प्रथाओं को समर्थन दिया। लगभग हर प्रथा पुनरुत्थान और अनन्त जीवन में विश्वास का प्रतीक थी। इस प्रकार, विलाप पर जोर देने के बजाय भजन के आनंदमय गायन का मार्ग प्रशस्त हुआ। शरीर को धोया गया, इत्र और मसालों से अभिषेक किया गया, सन के कपड़े में लपेटा गया, और मोमबत्तियों से घेरा गया, जो सभी अनन्त जीवन का प्रतिनिधित्व करते थे। मित्र और रिश्तेदार आमतौर पर मृतक के घर पर जागरण करते थे, और पुनरुत्थान और अनन्त जीवन से सम्बंधित वचन के भाग पढ़े जाते थे। जब भी सम्भव हो, प्रभु भोज का पालन किया गया, जो मसीह के बलिदान का प्रतीक था। कलीसिया या कब्रिस्तान में, एक शोक भाषण दिया गया था ताकि मृतकों की प्रशंसा की जा सके और जीवितों को सांत्वना दी जा सके। इनमें से कई प्रथाओं का पालन आज भी मसीही करते हैं।

यह भी देखें दफन, दफन की प्रथाएं; शोक.

अन्तिम समय

देखिए अन्तिम दिन।

अन्तिलबानोन

एक पर्वत श्रृंखला जो दक्षिण में हेर्मोन पर्वत से उत्तर-उत्तरपूर्व की ओर फैली हुई है (यहूदीत 1:7)। यह इसके पश्चिम में लबानोन श्रृंखला के समानांतर चलती है। यरदन के लिए अधिकांश पानी इन दो पर्वत श्रृंखलाओं से बहकर आता है। पुराने नियम में, इस श्रृंखला को सिर्योन (व्य.वि. 3:9; 4:48; भजन 29:6) या सनीर (1 इति 5:23; श्रेष्ठ 4:8; यहेज 27:5) के नाम से जाना जाता था।

अन्तोतिय्याह

अन्तोतिय्याह

एक बिन्यामिनी और शाशक का पुत्र। उसका नाम 1 इतिहास 8:24 में सूचीबद्ध है।

अन्तकालिक ग्रन्थ

लेखों का एक समूह जो अधिकांश यहूदी या मसीही बाइबल में शामिल नहीं है, जो अंतकालीन हैं (वे छिपी हुई बातों या अंत समय से संबंधित भविष्य की घटनाओं को प्रकट करते हैं)। ये लेख बाइबल पात्रों द्वारा लिखे जाने का दावा करते हैं। *देखें* अप्रमाणिक (अंतकालीन अप्रमाणित)।

अन्द्रुनीकुस

1. सेल्यूकिड राजा अन्ताकियुस एपिफेन्स के बाद दूसरा आधिकारी। इस अन्द्रुनीकुस ने यहूदियों को ओनियास, महायाजक की हत्या करके क्रोधित कर दिया। फिर अन्ताकियुस ने अन्द्रुनीकुस को मृत्यु दण्ड देने का निर्देश दिया (2 मक्काबियों 4:31–38)।
2. अन्ताकियुस एपिफेन्स द्वारा यरूशलेम को नष्ट करने के बाद गिरिज्जीम के प्रभारी अधिकारी (2 मक्काबियों 5:21–23)।
3. अन्द्रुनीकुस मसीही है जिसे प्रेरित पौलुस ने रोमियों को लिखे अपने पत्र में अभिवादन किया (16:7)। उनका कहीं और उल्लेख नहीं है। पौलुस ने अन्द्रुनीकुस को अपना कुटुम्बी कहा। इस शब्द का अर्थ साथी देशवासी, यहूदी, पौलुस के अपने कुल के सदस्य, या अन्य रिश्तेदार हो सकता है। अन्द्रुनीकुस भी मसीह के लिए साथी कैदी रहा होगा। वे शायद पौलुस के साथ उसी बन्दीगृह में भी रहे हों (2 कुरिन्थियों 6:4–5; 11:23)। पौलुस ने उन्हें प्रेरितों में महत्वपूर्ण बताया और उन्हें सम्मानपूर्वक "वरिष्ठ" मसीही के रूप में मान्यता दी।

अन्न भण्डार

एक अन्न भण्डार एक इमारत है जहाँ फसल के बाद अनाज को रखा जाता है। किसान अपनी काटी गई फसलों को मौसम, कीटों और जानवरों से बचाने के लिए अन्न भण्डारों का उपयोग करते हैं। बाइबल के समय में, अन्न भण्डार भोजन की सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण थीं। ये लोगों को अच्छे फसल के समय से अतिरिक्त अनाज को सूखे या अकाल के समय में उपयोग के लिए संग्रहित करने की अनुमति देते थे।

देखें कृषि।

अन्नन

पाँच पुत्रों के पिता जिन्होंने अपनी विदेशी पत्नियों को एज्रा के निर्देश के अनुसार तलाक दे दिया था (1 एस 9:32)। उन्हें हारीम भी कहा जाता है (एज्रा 10:31)।

अन्नबलि

अन्नबलि

अनाज या महीन आटे की एक भेंट। इसे "अन्नबलि" (एन.एल.टी, एन.आय.वी), "अनाज की भेंट" (आर.एस.वी.) और "मांस की भेंट" (के.जे.वी.) के रूप में भी अनुवादित किया गया है। *देखें*भेंट और बलिदान।

अन्निउथ

1 एसड्रास 9:48 में बानी के लिए एक और नाम पाया जाता है। *देखें*बानी #10।

अन्नुनुस

उन व्यक्तियों में से एक थे, जिन्हें परमेश्वर ने यरूशलेम में याजकों की सेवा के लिए एज्रा की प्रार्थना के उत्तर में भेजा था (1 एस 8:48)। अन्नुनुस संभवतः यशायाह के भाइयों में से एक थे (एज्रा 8:19)।

अन्यजाति

बाइबल और मसीही परम्परा में, एक अन्यजाति वह व्यक्ति होता है जो इस्राएल के परमेश्वर या मसीही शिक्षाओं का पालन नहीं करता है। यह शब्द लैटिन *पेगेनूस* से आया है, जिसका अर्थ है ग्रामीण क्षेत्र का व्यक्ति। प्राचीन समय में, ग्रामीण क्षेत्रों के लोग अक्सर अपने पुराने धार्मिक प्रथाओं को नगरों के लोगों की तुलना में अधिक समय तक बनाए रखते थे।

अन्यजाति आमतौर पर कई देवताओं में विश्वास करते हैं, जबकि मसीही लोग और यहूदी एक परमेश्वर में विश्वास करते हैं। वे प्रकृति की आराधना कर सकते हैं या मसीहत के प्रसार से पहले की परम्पराओं का पालन कर सकते हैं। पुराने नियम में, अन्यजातियों को अक्सर "गैर-यहूदी" कहा जाता है।

पुराने नियम में अन्यजाति

पुराने नियम में, परमेश्वर अक्सर इस्राएलियों को अन्यजातियों की प्रथाओं से दूर रहने की चेतावनी देते हैं:

- व्यवस्थाविवरण 12:31 इस्राएलियों से कहता है कि वे परमेश्वर की आराधना उसी प्रकार न करें जैसे अन्यजाति अपने देवताओं की आराधना करते हैं।
- निर्गमन 23:24 में, परमेश्वर इस्राएलियों से कहते हैं कि वे अन्यजाति लोगों की मूर्तियों को नष्ट करें।
- 1 राजाओं 18 में एलिय्याह की कहानी इस्राएल के परमेश्वर और अन्यजातियों के देवता बाल के बीच एक प्रतियोगिता को दर्शाती है।
- इस्राएल के कई राजा अन्यजातियों की आराधना की अनुमति देने के लिए आलोचना का सामना करते हैं (उदाहरण के लिए, राजा सुलैमान 1 रा 11:4–8 में)।

भविष्यवक्ताओं ने अक्सर इस्राएल पर अन्यजाति धर्मों के प्रभाव के खिलाफ बोला। उन्होंने अन्यजाति प्रथाओं को एकमात्र सच्चे परमेश्वर की आराधना के लिए खतरा माना।

नए नियम में अन्यजाति

नए नियम में, प्रारम्भिक मसीही लोगों ने मूर्तिपूजा का नए तरीकों से सामना किया:

- यीशु मत्ती 6:7–8 में गैर-यहूदियों के बारे में बात करते हुए अपने अनुयायियों से कहते हैं कि वे उनके समान प्रार्थना न करें।
- प्रेरित पौलुस अक्सर मूर्तिपूजकों को उपदेश देते थे। प्रेरितों के काम 17:16–34 में, वे एथेंस में दार्शनिकों से मसीही परमेश्वर के बारे में चर्चा करते हैं।
- पौलुस के पत्र, जैसे 1 कुरिन्थियों, उन नए मसीही लोगों को सलाह देते हैं जो पहले गैर-यहूदी प्रथाओं का पालन करते थे।
- प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अन्यजातियों की संस्कृति और आराधना के साथ समझौता करने के खिलाफ चेतावनी देती है (उदाहरण के लिए, प्रका 2:14)।

प्रारम्भिक कलीसिया को यह समझना था कि मूर्तिपूजकों के बीच कैसे रहना है और मसीही विश्वास में अन्यजातियों का स्वागत कैसे करना है।

आज, "अन्यजाति" का अर्थ विभिन्न चीजें हो सकती है। यह उन आधुनिक लोगों को सन्दर्भित कर सकता है जो प्राचीन प्रकृति-आधारित धर्मों का पालन करते हैं, या सामान्य रूप से उन लोगों को जो प्रमुख विश्व धर्मों का हिस्सा नहीं हैं।

देखिए गैर-यहूदी।

अन्यजाती

वे जातियां या लोग जो यहूदियों में शामिल नहीं हैं। इब्री में, इन लोगों को *गॉयिम* (जिसका अर्थ है "जातियां") कहा जाता है। यूनानी में, उन्हें *एथनोई* (जिसका अर्थ है "लोग") कहा जाता है। पुराने नियम में सभी लोगों को दो समूहों में विभाजित करता है: यहूदी लोग (जिन्हें परमेश्वर ने अपने विशेष लोग के रूप में चुना) और सभी अन्य जातियां।

नए नियम सिखाता है कि परमेश्वर यहूदी और अन्यजातियों दोनों को उद्धार प्रदान करते हैं। दो महत्वपूर्ण प्रेरित, पतरस और पौलुस, पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अन्यजाती लोगों के साथ यीशु के बारे में सुसमाचार साझा किया। पौलुस ने अपनी सेवकाई के दौरान यहूदी और अन्यजाती विश्वासियों को एक दल के रूप में कलीसिया में एक साथ लाने के लिए कार्य किया।

देखें जातियां; प्रेरित पौलुस।

अपराध

देखें पाप।

अपल्लोनियस

अपल्लोनियस

प्राचीन यहूदियों के ग्रंथों में मक्काबी विद्रोह के बारे में संभवतः चार अलग-अलग पुरुषों के नामों का उल्लेख है।

1. तरसुस के अपल्लोनियस, मनेस्थेस के पुत्र (2 मक्का 3:5–7; 4:4)। यूनानी इतिहासकार पॉलीबियस उन्हें कोलेसिरिया और फीनीके के राज्यपाल के रूप में पहचानते हैं। उन्होंने सेल्यूकस चतुर्थ के अधीन सेवा की। जब अंतिओकस चतुर्थ ने शासन करना शुरू किया, तो वे मीलेतुस में सेवानिवृत्त हो गए। अपल्लोनियस ने मिस्र में राजदूत के रूप में सेवा करते समय अपनी कूटनीति कौशल का उपयोग किया (2 मक्का 4:21)। उनके पुत्र का नाम भी अपल्लोनियस था (नीचे #4)। उनके पुत्र ने देमेत्रियस द्वितीय के अधीन राज्यपाल के रूप में सेवा की।
2. अपल्लोनियस, माइसियनों का एक निर्दयी कप्तान था जिसे अंतिओकस चतुर्थ ने सभी वयस्क यहूदी पुरुषों को मारने के लिए भेजा था (1 मक्का 1:29; 2 मक्का 5:24)। उसे यहूदा मक्काबी द्वारा मारा गया (1 मक्का 3:10–12)।
3. अपल्लोनियस, गन्नैयस का पुत्र था। वह एक राज्यपाल था जिसने अन्य स्थानीय अगुओं के साथ यहूदियों को परेशान करना जारी रखा (2 मक्का 12:2)।
4. मनेस्थेस का पोता अपल्लोनियस, 147 ई.पू. में कोलेसिरिया के राज्यपाल के रूप में सेवा करने लगे। उसके पिता ने भी यह भूमिका निभाई थी। उसे देमेत्रियस द्वितीय द्वारा नियुक्त किया गया था। इस अपल्लोनियस ने योनातान मक्काबी के खिलाफ सेनाओं का नेतृत्व किया। योनातान अपल्लोनियस से अधिक तेज़ी से आगे बढ़े और उसकी सेना को पराजित कर दिया। अपल्लोनियस भाग गया (1 मक्का 10:69–85)।

*यह भी देखें*मक्काबी काल।

अपल्लोफ़ानेस

अपल्लोफ़ानेस

पुराने नियम और नए नियम के बीच की अवधि के दौरान एक सीरियाई योद्धा थे। यहूदा मक्काबी की सेना ने अपल्लोफ़ानेस को गज़ारा नामक एक गढ़ में मार डाला (2 मक्का 10:37)। अपल्लोफ़ानेस की मृत्यु एक महत्वपूर्ण युद्ध के बाद हुई। इस युद्ध में, यहूदियों की सेना ने विजय के लिए प्रभु पर भरोसा किया। हालाँकि, सीरियाई हिंसक और अनियंत्रित क्रोध से लड़े (2 मक्का 10:24–31)।

अपवाद

झूठे आरोप या इलज़ाम जो किसी अन्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा को बदनाम करते हैं; जब परमेश्वर की ओर निर्देशित किए जाते हैं, तो ऐसे आरोपों को ईश्वर-निन्दा माना जाता है। *देखें*ईश्वर-निन्दा।

अपवित्र करना

नैतिक या आनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध करना। *देखें*शुद्धता और अशुद्धता से सम्बन्धित नियम।

अपामे

फारस के दारा प्रथम की एक रखैल थी। उन्हें 1 एसद्रास 4:29 में दारा के दाहिने हाथ पर बैठा हुआ बताया गया है।

अपिल्लेस

अपिल्लेस

रोमी मसीही जिसे प्रेरित पौलुस से विशेष अभिवादन प्राप्त हुआ। पौलुस ने अपिल्लेस की प्रशंसा की क्योंकि वह "मसीह में खरा निकला" हैं (रोमियों 16:10)।

अपीक

अपीक

न्यायियों 1:31 में अपेक का एक अन्य रूप। *देखें*अपेक #3।

अपीह

अपीह

राजा शाऊल का एक पूर्वज। वह बिन्यामीन के गोत्र का सदस्य है। उसका नाम 1 शमूएल 9:1 में आता है।

अपुल्लयोन

"अथाह गड्ढा" (दण्ड का एक बहुत गहरा, अंधेरा स्थान) का एक दूत। अपुल्लयोन को अबद्दोन भी कहा जाता है (प्रका 9:11)। *देखें* अबद्दोन।

अपुल्लोनिया

एक शहर जो पूर्वी मकिदुनिया में इग्नासियन मार्ग पर स्थित है। पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में अपुल्लोनिया से गुजरे (प्रेरि 17:1)। वे फिलिप्पी से थिस्सलुनीके की ओर पश्चिम की यात्रा कर रहे थे, जो लगभग 90 मील (145 किलोमीटर) की यात्रा थी। अपुल्लोनिया को सामान्यत: आधुनिक पोलिना के नाम से पहचाना जाता है।

अपुल्लोस

अपुल्लोस एक मसीही यहूदी थे जो प्रेरित पौलुस की मिशनरी यात्राओं के समय एक कुशल प्रचारक थे। उनका जन्म सिकन्दरिया (मिस्र) में हुआ था। अपुल्लोस के बारे में मुख्य पवित्रशास्त्र भाग प्रेरि 18:24–19:1 है।

अपुल्लोस की प्रारम्भिक सेवकाई

सिकन्दरिया से अपुल्लोस एशिया के उपद्वीप में इफिसुस गए। अपुल्लोस अपने विश्वास के प्रति बहुत उत्साही थे। वे अच्छी तरह से शिक्षित थे और संस्कृति के बारे में बहुत कुछ जानते थे। उन्होंने पुराने नियम के वचनों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया था। वे परमेश्वर का मार्ग जानते थे और इफिसुस के आराधनालय में साहसपूर्वक और खुले तौर पर बोलते थे। अपुल्लोस यीशु के बारे में जानते थे और उनके बारे में सही तरीके से सिखाते थे। परन्तु, अपुल्लोस केवल वही जानते थे जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु के बारे में कहा था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले एक ऐसे व्यक्ति थे जो यीशु से पहले आए थे ताकि लोगों को उनके आगमन के लिए तैयार कर सकें।

अपुल्लोस प्रिस्किल्ला और अक्विला से सीखते हैं

प्रिस्किल्ला और अक्विला पौलुस के मित्र और भूतपूर्व सहयोगी थे। उन्होंने इफिसुस में अपुल्लोस को बोलते हुए सुना। उन्होंने जाना कि जो यीशु के साथ हुआ था उसके विषय में अपुल्लोस ने नहीं सुना था। उन्होंने उसे अलग से निजी तौर पर ले जाकर उसे परमेश्वर का मार्ग और स्पष्ट रूप से समझाया।

अपुल्लोस को यूहन्ना के बपतिस्मा और यूहन्ना के सन्देश की महत्ता के बारे में विश्वास हो गया था कि यीशु मसीह (परमेश्वर के चुने हुए अगुआ) हैं। अपुल्लोस को मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने या उद्धार में पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में जानकारी नहीं थी। मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाने का अर्थ, यीशु में विश्वास करके परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में आना है। उद्धार में पवित्र आत्मा का कार्य यह है कि परमेश्वर का आत्मा लोगों को यीशु के अनुयायी बनने में सहायता करता है। प्रिस्किल्ला और अक्विला ने अपुल्लोस को यह बात सीखने में मदद की।

अपुल्लोस की यूनान में सेवा

इस निर्देश के तुरन्त बाद, अपुल्लोस इफिसुस से यूनान के रोमी प्रान्त अखाया के लिए निकले। वे इफिसुस के मसीहियों से पत्र लेकर गए। इन पत्रों में अखाया के शिष्यों से अपुल्लोस को एक मसीही भाई के रूप में स्वागत करने का आग्रह किया गया था। उन्होंने पहुँचने पर, यहूदियों के साथ दृढ़तापूर्वक और सार्वजनिक रूप से तर्क किया। उन्होंने पुराने नियम के वचनों में अपने ज्ञान का उपयोग करके यह सिद्ध किया कि यीशु ही मसीहा थे।

पौलुस ने कुरिन्थुस में अपुल्लोस के कार्य को मूल्यवान माना। पौलुस ने अपुल्लोस को उस व्यक्ति के रूप में वर्णित किया जिसने उस बीज को सींचा जिसे पौलुस ने कलीसिया के संस्थापक के रूप में बोया था (1 कुरि 3:5–11)। 1 कुरिन्थियों से यह भी स्पष्ट है कि कुरिन्थुस की कलीसिया को विभाजित करने वाले समूहों में से एक समूह अपुल्लोस के चारों ओर केन्द्रित था। परन्तु, अपुल्लोस इसके लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं थे (1 कुरि 1:12; 3:1–4)। पौलुस को अपुल्लोस को यह समझाने में कठिनाई हुई कि उन्हें कुरिन्थुस को लौटना चाहिए। यह इसलिए हो सकता है क्योंकि अपुल्लोस उस छोटे समूह की निरन्तरता को प्रोत्साहित नहीं करना चाहते थे (1 कुरि 16:12)।

अपेक

1. कनानी नगर जो यरदन नदी के पश्चिम में स्थित था और जिसे इस्राएल ने जीत लिया था (यहो 12:18) और बाद में यह एप्रैम की सीमा में शामिल किया गया। यह यर्कोन नदी के स्रोत के पास शारोन के मैदान में स्थित था। अपेक को बाद में पलिश्तियों ने जीत लिया था (1 शमू 4:1; 29:1)। रोमी काल में हेरोदेस महान ने इस नगर को फिर से बनाया और इसका नाम अन्तिपत्रिस रखा, जिसका उल्लेख प्रेरि 23:31 में मिलता है। इसका आधुनिक नाम रस एल-'ऐन है।

यह भी देखें अन्तिपत्रिस।

2. फीनीके (आधुनिक लबानोन) में स्थान जो यहोशू के अभियानों के बाद अजेय रहा (यहो 13:4)। यह अपेक संभवतः बायब्लोस के पूर्व में इब्राहीम नदी के स्रोत के पास स्थित था।

3. आशेर के गोत्र को जीते गए नगरों के वितरण में दिया गया नगर (यहो 19:30)। आशेर के गोत्र ने मूर्तिपूजक निवासियों को बाहर निकालने में विफल रहे (न्या 1:31, जहां इसे "अपीक" लिखा गया है)। अपेक अक्को के मैदान पर स्थित था, वर्तमान में यह तल कुर्दनेह के स्थान पर है, जो न'माइन नामक नदी के स्रोत के पास है।

4. यरदन नदी के पूर्व में स्थित शहर, जो दमिश्क और यिज्रेल की तराई के बीच मुख्य राजमार्ग पर है। सीरिया के राजा बेन्हदद, जिन्हें इस्राएल के राजा अहाब ने हरा दिया था, अपेक में पीछे हट गए, जहां एक गिरती हुई दीवार ने उनकी बाकी सेना को मार दिया (1 रा 20:26, 30)। एक सदी बाद एलीशा ने इस्राएल के राजा यहोआश को भविष्यद्वाणी की कि वे उसी शहर में अराम के लोगों का अन्त करेंगे (2 रा 13:17)।

अपेका

अपेका

कनान के पहाड़ी देश में एक नगर। यहोशू ने प्रतिज्ञा किए गए देश पर विजय प्राप्त करने के बाद इसे यहूदा के गोत्र को दिया था (यहो 15:53)।

अपोक्रिफा

पुस्तकों को धर्मशास्त्र के कैनन से बाहर रखा गया है।

पूर्वावलोकन

- परिचय
- अपोक्रिफ़ल सुसमाचार
- अपोक्रिफ़ल कृतियाँ
- अपोक्रिफ़ल पत्रियाँ
- प्रकाशनात्मक अपोक्रिफा
- अपोक्रिफ़ल लेखों के विशिष्ट शीर्षक

परिचय

पुराने और नए नियम के लेखन ने कुछ अतिरिक्त रचनाओं को अपनी ओर आकर्षित किया, जो पुस्तकों, पुस्तकों के अंशों, पत्रों, "सुसमाचारों," प्रकाशन ग्रन्थ, आदि के रूप में थीं। इनमें से अधिकांश लेखकों ने गुमनाम रूप से लिखा, लेकिन कुछ ने अपने लेखन को लोगों के सामने परिचित पुराने नियम के किसी पात्र या मसीही कलीसिया के किसी सदस्य के नाम से प्रस्तुत किया। इनमें से कई रचनाएँ यहूदी साहित्य के महान संग्रह का एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण हिस्सा थीं जो पुराने और नए नियम के बीच की अवधि के दौरान उभरी थीं। इनमें से अधिकतर साहित्य धार्मिक और राजनीतिक हलचल का परिणाम था, क्योंकि यहूदी अपने विश्वास और अपने अस्तित्व को खतरे में महसूस कर रहे थे, पहले युनानवादी संस्कृति के मूर्तिपूजक प्रभावों से और फिर रोमी सेनाओं के अत्याचार से।

अधिकांश अपोक्रिफल पुस्तकें भी स्यूडेपिग्राफा हैं — अर्थात्, ये ऐसी पुस्तकें हैं जिन्हें एक अज्ञात लेखक को समर्पित किया गया है। दूसरे शब्दों में, इन लेखनों की मुख्य विशेषता यह थी कि लेखक ने अपने को एक बाइबल के व्यक्ति (हनोक, अब्राहम, मूसा, सुलैमान, बरतुल्मै, थोमा आदि) के रूप में प्रस्तुत किया था, या यह दावा किया गया कि पुस्तक में निहित प्रकाशन मूल रूप से किसी बाइबल के पात्र (आदम और हव्वा, यशायाह) को दिया गया था। सामान्यतः, स्यूडेपिग्राफा में प्रकाशनात्मक विषयों में विशेष रुचि दिखाई देती है: संसार की रचना, इस्राएल और जातियों का भविष्य, परमेश्वर और उसके स्वर्गदूतों की महिमा, मसीही राज्य, और मृत्यु के बाद का जीवन। कई स्यूडेपिग्राफा यहूदी लेख हैं जिन्हें यहूदी या मसीही समुदायों द्वारा कभी स्वीकार नहीं किया गया। ये लगभग अपोक्रिफा के समय (लगभग 200 ई.पू.–110 ई.) के आसपास लिखे गए थे, परन्तु स्यूडेपिग्राफा की विषय-वस्तु के कारण इन्हें केवल कुछ विशेष समूहों ने ही मान्यता दी। चूँकि इन पुस्तकों में से कुछ के विषय बाइबल के शास्त्रों के अनुरूप थे, इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ समुदायों में उनकी प्रामाणिकता और प्रेरणा को यहूदियों और बाद में मसीहीयों द्वारा आदर दिया गया।

उस समय की अन्य धार्मिक रचनाओं ने कभी शास्त्र होने का दावा नहीं किया। ऐसी रचनाओं ने यहूदी धर्म और प्रारंभिक मसीही धर्म की परिचित परंपराओं को संरक्षित रखा, यद्यपि कभी-कभी उन्हें कथाओं और गैर-ऐतिहासिक विवरणों द्वारा समृद्ध या अलंकृत किया गया। चूँकि उस समय किसी भी प्रकार की बहुत कम पुस्तकें प्रचलन में थीं, पलिश्तिन के लोग जो भी साहित्यिक सामग्री उनके पास आती, उसे पढ़ने की प्रवृत्ति रखते थे। यद्यपि तोराह, या मूसा की व्यवस्था, यहूदियों के लिए सदैव धार्मिक रूढ़िवाद का मानक मानी जाती थी, फिर भी उत्पीड़न के बीच सहनशीलता की कथाएँ या परमेश्वर की प्रजा के शत्रुओं को उनके उचित प्रतिफल मिलने के वर्णन, मूर्तिपूजक समाज के दबावों के अधीन लोगों के लिए आकर्षण का कारण थे।

उसी तरह, यद्यपि सुसमाचार और पत्रियाँ—पुराने नियम के साथ—मसीहियों के लिए मूल शास्त्रों की अनुमोदित सूची में शामिल थीं, मसीह के प्रारंभिक अनुयायियों का ध्यान आकर्षित करने वाले अनेक अतिरिक्त विवरण भी थे। ये रचनाएँ अक्सर यीशु और उसके अनुयायियों की कथित गतिविधियों, शहादत, प्रकाशनों, और आत्मिक शिक्षाओं से संबंधित होती थीं। कुछ रचनाओं में एसी सामग्री होती थी जो न केवल गैर-ऐतिहासिक बल्कि विचित्र भी थी, जबकि अन्यों में मसीह और प्रेरितों की शिक्षाओं की भावना को किसी हद तक प्रतिबिंबित किया गया था। प्रारंभिक मसीहियों के लिए,

अपोक्रिफा

जैसे कि यहूदियों के लिए भी, शास्त्र लेखन के एक औपचारिक कैनन की स्थापना शायद आंशिक रूप से उस आवश्यकता से प्रेरित था कि प्रकाशित सत्य के अभिलेख को अन्य धार्मिक परंपराओं के लिखित रूपों और वास्तविक विधर्म से अलग किया जाए।

जो रचनाएँ पुराने और नए नियम की सूची में स्वीकृति प्राप्त करने में असफल रहीं, उन्हें कुछ प्रारंभिक मसीही विद्वानों के लेखों में "अपोक्रिफा" शब्द से वर्णित किया गया। ग्रीक शब्द का अर्थ है "गुप्त बातें," और पुस्तकों पर लागू होने पर यह उन कार्यों का वर्णन करता है जिन्हें धार्मिक अधिकारियों ने सामान्य पाठकों से छिपा कर रखना चाहा। इसका कारण यह था कि ऐसी पुस्तकें गुप्त या रहस्यमय ज्ञान को समेटे मानी जाती थीं, जो केवल दीक्षित लोगों के लिए अर्थपूर्ण होती थीं और इसलिए साधारण पाठक के लिए अनुपयुक्त मानी जाती थीं। लेकिन "अपोक्रिफा" शब्द का प्रयोग उन कार्यों के लिए भी किया गया जो छिपाने योग्य माने जाते थे। ऐसी रचनाओं में ऐसे सिद्धांत या झूठी शिक्षाएँ होती थीं जो पढ़ने वालों को उत्थान के बजाय भटकाने या गुमराह करने के उद्देश्य से थीं। अवांछनीय रचनाओं को दबाना अपेक्षाकृत आसान था, उस समय जब किसी भी पुस्तक की केवल कुछ ही प्रतियाँ किसी भी समय प्रचलन में होती थीं।

पहली सदी के अंत तक यहूदी समुदायों में उन लेखों के बीच स्पष्ट अंतर किया जा रहा था, जो आम जनता के लिए उपयुक्त थे, और गूढ़ ग्रंथों के बीच जो केवल जानकार और दीक्षित लोगों के लिए सीमित थे। इसी प्रकार 2 एस्द्रास 14:1–6 में लेखक बताता है कि कैसे एज्रा को परमेश्वर द्वारा कुछ लेखों को सार्वजनिक रूप से प्रकाशित करने (जिनमें तोराह भी शामिल है) और अन्य को गुप्त रखने का निर्देश दिया गया था (जो कि युग के अंत से संबंधित अन्तकालीन परंपराएं थीं)। 2 एस्द्रास 14:42–46 में 70 पुस्तकों का उल्लेख है, जो स्पष्ट रूप से गैर-कैनोनिकल सामग्री थीं और इब्री कैनन के 24 पुस्तकों के बाद लिखी गई थीं।

“अपोक्रिफा” शब्द का प्रयोग “गैर-कैनोनिकल” अर्थ में पहली बार ईस्वी पाँचवीं सदी में हुआ, जब जेरोम ने इस बात पर जोर दिया कि सेप्टुआजिंट और लातिनी बाइबल में पाए जाने वाले उन ग्रंथों को, जो इब्री पुराना नियम के कैनन में नहीं थे, अपोक्रिफ़ल माना जाना चाहिए। उन्हें पूरी तरह से अस्वीकार नहीं किया गया था, क्योंकि वे उस समय के यहूदी राष्ट्रीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। साथ ही, उन्हें मसीही सिद्धांत के स्रोत के रूप में नहीं बल्कि प्रेरणादायक पूरक अध्ययन के रूप में ही उपयोग किया जाना चाहिए।

प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्रियों ने आमतौर पर जेरोम द्वारा स्थापित परंपरा का पालन किया है, जो पुराना नियम अप्रमाणिक ग्रन्थ को इब्रानी शास्त्रों के ऊपर सेप्टुआजेंट कैनन की अधिकता मानते हैं। जब इब्रानी बाइबिल का अनुवाद मिस्र में टॉलेमी II (285–246 ई. पू.) के शासनकाल के दौरान यूनानी में किया जाने लगा, तो संबंधित विद्वानों ने कई पुस्तकों को शामिल किया, जो इब्रानी प्रमाणिक लेखनों की सामान्यतः स्वीकृत सूची के बाहर रहते हुए भी यहूदी इतिहास और समाज पर प्रभाव डालती थीं। यह प्रक्रिया फिलिस्तीन में समकालीन दृष्टिकोण को दर्शाती थी, जहाँ कई लोग कैनोनिकल लेखनों को अन्य धार्मिक साहित्य के रूपों से अलग करने का प्रयास नहीं करते थे। यहूदी अधिकारियों द्वारा कैनोनिकल शास्त्र के रूप में क्या माना जाए, इस पर लिया गया निर्णय स्वाभाविक रूप से पुराना नियम एपोक्रिफा का गठन करने वाले तत्वों पर प्रभाव डालता था।

मृत सागर की गुफाओं से प्राप्त कुछ पांडुलिपियों और टुकड़ों से यह प्रमाण मिलता है कि कैनोनिकल इब्री लेखों का अंतिम रूप सिकंदर महान (356–323 ई.पू.) के निकट पूर्व में विजय अभियानों से कई दशक पहले ही पूरा हो चुका था। हालाँकि, इन्हें कैनोनिकल के रूप में स्वीकृत किए जाने की प्रक्रिया अधिक लंबी थी। केवल तब, जब इन लेखों को प्रसारित किया गया, पढ़ा गया और तोराह की आत्मिकता के साथ अनुकूल तुलना में देखा गया, उन्हें सामान्य प्रामाणिकता प्राप्त हुई। इस प्रकार कैनोनिकल और अपोक्रिफ़ल लेखों के बीच का अंतर, पारंपरिक यहूदी धर्म द्वारा अन्य किसी माध्यम से अधिक, प्रचलित उपयोग और सामान्य स्वीकृति से आया था। पहले के विद्वानों ने सुझाव दिया था कि जाम्निया की तथाकथित परिषद, जो लगभग ईस्वी 100 में पलिश्तिन में आयोजित हुई थी, ने पुराने नियम पुस्तकों की एक सूची तैयार की थी जो विश्वासियों द्वारा उपयोग के योग्य मानी गईं। हालाँकि, बाद के अध्ययनों ने इस तरह की परिषद के ऐतिहासिक अस्तित्व पर काफी संदेह जताया है, साथ ही यह भी दर्शाया है कि उस समय के यहूदी अधिकारियों ने अपने गैर-कैनोनिकल लेखों को आराधना में सहायता के बजाय बाधा के रूप में अधिक देखा।

यहूदी जिन पुस्तकों को विशेष रूप से कैनन के बाहर मानते थे और इसलिए जिन्हें अप्रोक्रिफल (गोपनीय) माना गया, वे इस प्रकार हैं: 1 एस्द्रास; 2 एस्द्रास; तोबित; जूडिथ; द एड़ीसनस टू एस्तेर; विजडम ऑफ सोलोमन; एक्लेसिआस्टिकस; बारूक; द लैटर ऑफ जेरेमियाह; द एड़ीसनस टू द बुक ऑफ डानियल (द प्रेयर ऑफ अजारियाह एंड द सोंग ऑफ द थ्री यंग मेन, सुसान्ना, बेल, और द ड्रैगन); द प्रेयर ऑफ मनश्शे; 1 मक्काबीस; और 2 मक्काबिस। कुछ सेप्टुआजिंट पांडुलिपियों में 3 और 4 मक्काबिस के शीर्षकों के अंतर्गत कुछ छद्म-ऐतिहासिक सामग्री शामिल थी। इसलिए, यहां तक कि अप्रोक्रिफा भी उस सामग्री में भिन्न होता था, जो उस समय की पांडुलिपि परंपरा के अनुसार शामिल थी। प्रारंभिक मसीही विद्वानों के बीच कैननिकल इब्री शास्त्र की सटीक सीमाओं और अप्रोक्रिफल सामग्री को लेकर भी कुछ मतभेद थे। इब्री और रब्बी परंपरा से एक गंभीर अलगाव ऑगस्टीन के लेखनों के साथ आया, जिन्होंने यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया कि अप्रोक्रिफा की पुस्तकें कैननिकल इब्री और मसीही शास्त्रों के अन्य लेखों के बराबर

अधिकार रखती हैं। जेरोम की स्थिति का समर्थन करने के लिए कुछ असहमति भरी आवाजें उठीं, लेकिन ऑगस्टीन के विचारों को ट्रेंट की परिषद (1546) ने अपनाया और वे आधिकारिक रोमन कैथोलिक शिक्षा बन गए।

रोमन कैथोलिक चर्च ने निम्नलिखित पुस्तकों को देयुटेरोकैनोनिकल शास्त्रों का हिस्सा माना है: तोबित; जूडिथ; द आड़ीसनस टू एस्तेर; विजडम ऑफ सोलोमन; एक्लेसिआस्टिकस; या द विजडम ऑफ जीसस बेन सिराख; बारूक; द एड़ीसनस टू द बुक ऑफ डानियल (द प्रेयर ऑफ अजारियाह एंड द सोंग ऑफ द थ्री यंग मेन, सुसान्ना, बेल, और द ड्रैगन); 1 मक्काबीस; और 2 मक्काबिस। (इनमें से प्रत्येक पर लेख इस शब्दकोश में बिखरे हुए हैं)।

नए नियम के युग के मसीही पहले से ही यहूदी अप्रोक्रिफल रचनाओं से परिचित थे, जिनमें 2 एस्द्रास में पाई जाने वाली प्रकाशनात्मक भविष्यद्वानियाँ भी शामिल थी। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि एक समान साहित्यिक समूह उनके अपने शास्त्रों के आसपास भी विकसित हुआ जब वे संकलित और प्रसारित किए जाने लगे। हालांकि, नए नियम अप्रोक्रिफा को अपने पुराने नियम समकक्ष की तरह केवल एक स्थापित कैनन के संदर्भ में ही समझा जा सकता था। नए नियम लेखनों का सबसे प्रारंभिक सूची, मुराटोरियन कैनन, लगभग ईस्वी 200 में संकलित हुआ, जिससे चर्च का आधिकारिक बयान आने में काफी समय लग गया कि नए नियम अप्रोक्रिफा में क्या माना जाएगा। इस बीच, धार्मिक प्रकृति की एक बड़ी विविधता में सामग्री सामने आई, जो प्रायः पारंपरिक मानी जाती थी और ऐतिहासिक मसीही धर्म के विभिन्न पहलुओं से संबंधित थी। अंततः, यह अप्रोक्रिफल साहित्य उन उद्देश्यों को विफल कर गया जिन्हें इसे पूरा करना था।

अपोक्रिफल सुसमाचार

अपोक्रिफा की एक मुख्य श्रेणी अपोक्रिफल सुसमाचार हैं। इन लेखों में मसीह के बारे में कहानियाँ और कुछ शिक्षाएँ संरक्षित थीं, लेकिन प्रकृति में अधिकांशतः कल्पनाशील होने के कारण, वे कभी भी कैनोनिकल नहीं बन सकीं। इन्हें तीन व्यापक श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

1. **सहदर्शी सुसमाचारों के समान प्रकार**: इसका प्रतिनिधित्व गोस्पेल ऑफ पीटर और द गोस्पेल ऑफ द इजिपसियंस करते हैं, साथ ही ऑक्सिरिंकस 840 और पपीरस एगर्टन 2 जैसे पपीरस के टुकड़े। अन्य पपीरस संग्रहों में कुछ कहावतें कैनोनिकल सुसमाचारों से मेल खाती हैं।
2. **ग्नोस्टिकवाद का प्रचार करने वाले सुसमाचार**: ये दूसरी शताब्दी की एक विधर्मी परंपरा थी, जो सृष्टि और मनुष्य के दार्शनिक ज्ञान (ग्नोसिस) पर जोर देती थी। ये अक्सर यीशु और उनके शिष्यों के बीच संवाद के रूप में होते थे, जैसे कि कॉप्टिक गोस्पेल ऑफ थोमास, अपोक्रिफ़ॉन ऑफ जॉन, द विजडम ऑफ जीसस क्राइस्ट, और द डायलाग ऑफ द रिडीमर। इस श्रेणी में वे "सुसमाचार" भी आते हैं जो बारह प्रेरितों के समूह के रूप में जाने जाते हैं, जैसे कि द मेमोइर्स ऑफ द आपोस्टल्स।
3. **बाल्यकाल के सुसमाचार**: ये कथित रूप से मसीह के प्रारंभिक वर्षों के बारे में काल्पनिक जानकारी प्रदान करते हैं, जिसे अन्यथा अज्ञात माना जाता है। इसी श्रेणी में पीड़ा के सुसमाचार भी आते हैं। ये कथाएँ मसीह के जन्म और बचपन या उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान के कैनोनिकल विवरणों को अलंकृत करने के लिए लिखी गई थीं।

यीशु के बचपन, किशोरावस्था और प्रारंभिक युवावस्था के बारे में जानकारी की कमी के कारण, "बाल्यकाल" सुसमाचार कथित रूप से पाठकों को ऐसा विवरण देने का प्रयास करते हैं जो ऐतिहासिक तथ्य माना जा सके। हालाँकि, इस सामग्री का अधिकांश हिस्सा पूरी तरह से कल्पना के क्षेत्र में था और किसी भी बुद्धिमान पाठक द्वारा इसे कभी तथ्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता था। उदाहरण के लिए, द गोस्पेल ऑफ थोमास में पाँच वर्षीय यीशु पर यह आरोप लगाया गया कि वह एक धारा के किनारे मिट्टी के गौरैया बनाकर सब्त का उल्लंघन कर रहे थे। जब उनके पिता यूसुफ ने स्थिति की जाँच की, तो यीशु ने ताली बजाई और मिट्टी के पक्षी जीवित हो गए और चहकते हुए उड़ गए।

"दुःखभोग" के सुसमाचार मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान के कैनोनिकल विवरणों को अलंकृत करने के लिए लिखे गए थे। मसीही शिक्षाओं के पूरक के रूप में, कई अपोक्रिफल लेख नया नियम सिद्धांत के दायरे से बाहर की विचारधाराओं की घोषणा करते प्रतीत होते थे। मसीह के जीवन के "छिपे हुए वर्षों" को भरने के प्रयासों का सुसमाचारों की परंपराओं में कोई आधार नहीं था। अविश्वासियों की अंतिम स्थिति से संबंधित कार्यों को इस तरह अलंकृत किया गया था जो नए नियम में वर्णित किसी भी बात से बहुत आगे था। कुछ महत्वपूर्ण मामलों में, जैसे विभिन्न गूढ़-ज्ञानवादी संप्रदायों की रचनाओं में, लेखकों ने जानबूझकर विधर्मी शिक्षाओं का प्रचार करने का प्रयास किया, जिसे उन्होंने किसी प्रेरित व्यक्ति के अधिकार के अधीन स्वीकार किया था। द

गोस्पेल ऑफ थोमास, जिसे 1945 में नील नदी के निकट नाग हम्मादी (चेनोबॉस्कियन) से पुनः प्राप्त किया गया था, उन उत्सुक कहावतों और सिद्धांतों को जीवित रखने का प्रयास था, जिन्हें यीशु को समर्पित किया गया ताकि वे व्यापक मान्यता और स्वीकृति प्राप्त कर सकें।

अपोक्रिफल कृतियाँ

कुछ ऐसी अपोक्रिफल कृतियाँ भी हैं, जिन्हें प्रेरितों की उपलब्धियों के विवरण के रूप में माना जाता है, जो पवित्र शास्त्र में दर्ज नहीं हैं। ऐसी "कृतियाँ" कई परंपराओं का स्रोत हैं, जैसे पतरस का उल्टा क्रूस पर चढ़ाया जाना और थोमा का भारत में मिशन। इन परंपराओं की विश्वसनीयता संदेहास्पद है क्योंकि इन लेखों में स्पष्ट रूप से असामान्य सामग्री है। फिर भी, सटीक जानकारी के छोटे अंश इस अधिकांशतः काल्पनिक साहित्य में छिपे हो सकते हैं।

उनके अक्सर विधर्मी स्वभाव के कारण, चर्च ने लगातार ऐसे ग्रंथों का विरोध किया, कभी-कभी तो इनके जलाए जाने की भी माँग की (उदाहरण के लिए, 787 में नाइसिन कौंसिल में)। एक्ट्स ऑफ जॉन में यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के दौरान जैतून के पर्वत पर यूहन्ना से बात करते हुए दिखाया गया है, जिसमें वह यह समझा रहे हैं कि यह केवल एक दृश्य था। एक्ट्स ऑफ थोमास में, यीशु थोमा के रूप में प्रकट होते हैं और एक नवविवाहित दंपत्ति को कुंवारी अवस्था में रहने के लिए प्रेरित करते हैं। यौन संयम एक प्रमुख विषय था, जो प्लेटो के विचारों को दर्शाता था, जिसमें शारीरिक देह का अवमूल्यन किया गया था।

कई विद्वानों के अनुसार, एक्ट्स ऑफ जॉन, सबसे पहले लिखी गई, ईस्वी 150 से पहले की हैं। प्रमुख कृतियाँ (यूहन्ना, पौलुस, पतरस, आंद्रियास और थोमा की) संभवतः दूसरी और तीसरी शताब्दी में लिखी गईं। इनसे अन्य "कृतियों" की उत्पत्ति हुई, जो मुख्य रूप से चमत्कार कहानियाँ थीं, जो सिखाने की अपेक्षा मनोरंजन के लिए लिखी गईं।

अपोक्रिफल पत्रियाँ

अनेक अपोक्रिफल रचनाएँ पत्रियों के रूप में वर्गीकृत हैं। ये सामान्यतः छद्म नाम से लिखे गए ग्रंथ विभिन्न समयावधियों में उत्पन्न हुए। अन्य कई अपोक्रिफल ग्रंथ प्रकाशनात्मक प्रकृति के हैं। इन रचनाओं में प्रेरितीय विधान और सिद्धांत जैसे सामग्री को भी शामिल किया गया है। इनसे जुड़े हैं नाग हम्मादी में पाए गए गूढ़-ज्ञानवादग्नोस्टिक रचनाएँ, जिनमें ऐसे ग्रंथ हैं जो मसीह की शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हैं, साथ ही "गुप्त" निर्देश जो ग्नोस्टिक लेखकों द्वारा संकलित किए गए और कुछ अपोक्रिफल रचनाएँ भी।

प्रकाशनात्मक अपोक्रिफा

एक अन्य समूह को "प्रकाशनात्मक अपोक्रिफा" कहा जा सकता है। "प्रकाशन" का अर्थ है "प्रकटीकरण" या "प्रकाशन," एक ऐसा शब्द जो आमतौर पर उस मसीही साहित्य पर लागू होता था जो यूहन्ना की प्रकाशितवाक्य के समान था, जो स्वयं को प्रकाशितवाक्य 1:1 में एक प्रकाशन कहता है। एक प्राचीन प्रतिष्ठित व्यक्ति के नाम से लिखने की प्रथा, या छद्मनाम का उपयोग, यहूदी और मसीही प्रकाशन ग्रंथों के अधिकांश अज्ञात लेखकों द्वारा किया गया एक सामान्य उपकरण था (यूहन्ना की प्रकाशितवाक्य इसका एक उल्लेखनीय अपवाद है)। यहूदी प्रकाशन ग्रंथों का श्रेय आदम, हनोक, अब्राहम, मूसा, एज़रा और अन्य प्राचीन महापुरुषों को दिया गया। इसी प्रकार, ईस्वी दूसरी शताब्दी और उसके बाद लिखे गए मसीही प्रकाशितवाक्य को पतरस, थोमा, याकूब और अन्य महत्वपूर्ण प्रारंभिक मसीही व्यक्तियों से जोड़ा गया।

नए नियम के समय में यहूदियों के भीतर कुछ समूह उभरे जिन्होंने इतिहास के प्रति एक प्रकाशनात्मक दृष्टिकोण विकसित किया। उन्होंने 1 एनोक के पाँच भाग, अस्संप्सन ऑफ मोसेस, 2 एस्द्रास, और द एपोकैलिप्सिस ऑफ बारुक ग्रन्थ जैसी रचनाओं को प्रस्तुत किया। ये पुस्तकें नया नियम के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे परमेश्वर के राज्य के पुराना नियम और नया नियम की अवधारणाओं के बीच एक पुल का निर्माण करती हैं।

प्रकाशन ग्रंथों को थियोडिसी (परमेश्वर का न्याय) की समस्याओं का उत्तर देने के लिए लिखा गया था। एज़्रा के दिनों के बाद, व्यवस्था ने लोगों के जीवन में पहले से अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। भविष्यद्वक्ताओं के काल में इस्राएल ने बार-बार व्यवस्था से दूर होकर विदेशी देवताओं की पूजा की। भविष्यद्वक्ताओं का मुख्य संदेश इस्राएल को परमेश्वर के साथ सही संबंध में आने और मन फिराव के साथ व्यवस्था का पालन करने की चुनौती देना था। एज़्रा के बाद और नए नियम के समय तक, इस्राएल ने पहले से कहीं अधिक व्यवस्था का पालन किया। यहूदी मूर्तिपूजा से घृणा करते थे और परमेश्वर की निष्ठापूर्वक उपासना करते थे। फिर भी राज्य नहीं आया। इसके स्थान पर मकाब्बी समय में अन्तियोकस IV एपिफ़नीज़ द्वारा भयंकर उत्पीड़न, हस्मोनियों का सांसारिक शासन, पोंपे और रोमी प्रभुत्व, और ईस्वी 66–70 में यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश हुआ। परमेश्वर कहाँ थे? उन्होंने अपने विश्वासी लोगों को क्यों नहीं छुड़ाया? राज्य क्यों नहीं आया? ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए प्रकाशन ग्रंथों को लिखा गया।

प्रकाशनात्मक धर्म का एक सबसे महत्वपूर्ण तत्व एक स्पष्ट द्वैतवाद है, जिसे "इस युग" और "आने वाला युग" के रूप में व्यक्त किया गया। भवश्यद्वाक्ताओं ने वर्तमान समय की तुलना भविष्य के साथ की जब परमेश्वर का राज्य स्थापित होगा। प्रकाशितवक्ताओं ने इस विरोधाभास को अधिक स्पष्ट किया। 1 एनोक में हमें इस प्रकार की भाषा के कुछ अंश मिलते हैं। हम इस भाषा को पूरी तरह से विकसित रूप में 2 एस्द्रास और द एपोकैलिप्सिस ऑफ बरूक (प्रथम शताब्दी

के अंत) में पाते हैं। "परमप्रधान ने एक युग नहीं बल्कि दो बनाए हैं" (2 एस्द्र 7:50); "न्याय का दिन इस युग का अंत और आने वाले अनन्त युग की शुरुआत होगा" (2 एस्द्र 7:113); "यह युग परमप्रधान ने बहुतों के लिए बनाया है, पर आने वाला युग थोड़े लोगों के लिए है" (2 एस्द्र 8:1; देखिए अपोक बार 14:13; 15:7; पिरके अबोत 4:1, 21–22; 6:4–7)। इसके अलावा, इस युग से आने वाले युग में परिवर्तन केवल परमेश्वर के एक लौकिक कार्य द्वारा ही संभव हो सकता है। अस्संप्सन ऑफ मोसेस नामक अपोक्रिफा में कोई मसीही व्यक्तित्व नहीं है; केवल परमेश्वर ही इस्राएल को मुक्ति देने आते हैं। सिमिलिटुड्स ऑफ एनोक में यह परिवर्तन स्वर्गीय, पूर्व-अस्तित्ववान मनुष्य के पुत्र के आगमन के साथ पूरा होता है। 2 एस्द्रास में हमें दाऊदवंशी मसीहा और मनुष्य के पुत्र की अवधारणाओं का एक समामेलन मिलता है।

प्रकाशनात्मक धर्म पुराने नियम के नबुबतिय धर्म से भिन्न है क्योंकि यह वर्तमान युग के प्रति निराशावादी है। प्रकाशन ग्रंथों को पूरी तरह से निराशावादी के रूप में वर्णित करना गलत होगा, क्योंकि उनका मुख्य संदेश यह है कि समय आने पर परमेश्वर हस्तक्षेप करेंगे और अपने लोगों को बचाएंगे। लेकिन वर्तमान के लिए, जब तक यह युग चलता है, उन्होंने इस्राएल के मामलों में हस्तक्षेप से अपने को अलग रखा है। वर्तमान युग दुष्ट स्वर्गदूतों और दैवीय शक्तियों के अधीन है और अपूरणीय रूप से दुष्ट है। परमेश्वर ने इस युग को बुराई के अधीन कर दिया है; उद्धार केवल आने वाले युग में ही अपेक्षित की जा सकती है।

प्रकाशितवक्ताओं ने इतिहास और युगान्तशास्त्र के बीच तनाव को पूरी तरह से खो दिया। उन्होंने इस युग में किसी मुक्ति की आशा नहीं रखी। वास्तव में, परमेश्वर भविष्य के परमेश्वर बन गए, न कि वर्तमान के।

हनोक के स्वप्न-दर्शन में (1 एनोक 83–90), परमेश्वर ने पूरे इतिहास में इस्राएल का विश्वासपूर्वक मार्गदर्शन किया। फिर परमेश्वर ने अपना व्यक्तिगत नेतृत्व वापस ले लिया, मन्दिर को त्याग दिया, और अपने लोगों को फाड़े जाने और खाए जाने के लिए छोड़ दिया। परमेश्वर "अप्रभावित रहे, यद्यपि उन्होंने इसे देखा, और उन्होंने प्रसन्नता से देखा कि उन्हें खा लिया गया, निगल लिया गया और लूट लिया गया, और उन्हें सभी पशुओं के हाथ में फाड़े जाने के लिए छोड़ दिया" (1 एनोक 89:58)। बेबिलोनी बंधुआई के बाद परमेश्वर को इतिहास में निष्क्रिय माना गया। इतिहास को बुराई के अधीन कर दिया गया। सारा उद्धार भविष्य में भेज दिया गया।

तुलनात्मक अध्ययन से पता चला है कि नए नियम के अपोक्रिफा लेखन कम से कम शुरुआती मसीहियत के संस्थापक और शिक्षाओं के बारे में एक विकृत परंपरा को संरक्षित करते हैं। बदतर स्थिति में, कथाएँ पूरी तरह से ऐतिहासिक मूल्य से रहित होती हैं और कुछ मामलों में नए नियम की आत्मिकता से पूरी तरह से विदेशी होती हैं। जहाँ ये किसी प्राचीन परंपरा का समर्थन करती प्रतीत होती हैं, वहां भी इनके प्रमाण अक्सर अन्य स्रोतों से मिलने वाले प्रमाणों से कमतर होते हैं। कुछ रचनाएँ इतनी तुच्छ और महत्वहीन हैं कि उनके अस्तित्व का कोई ठोस कारण समझना कठिन है। कुछ अपोक्रिफा लेखन वास्तव में खो गए और अब केवल बड़े कार्यों में उद्धरणों के रूप में ही ज्ञात हैं।

फिर भी, नया नियम के अपोक्रिफा रचनाएँ इस बात का संकेत देती हैं कि उस समय के साधारण लोगों को क्या आकर्षित करता था। उनके लिए एक रोमांटिक तत्व, प्राप्त आत्मिक सत्य के शरीर को पूरक करने के लिए आवश्यक प्रतीत होता था। कुछ कहानियाँ सजीव और कल्पनाशील थीं, और अन्य, जैसे कि प्रकाशन के ग्रन्थ, कठोर वास्तविकताओं से बचने का एक साधन प्रदान करती थीं। चाहे उनका स्वभाव कुछ भी हो, नए नियम के अपोक्रिफा लेखन ने अपनी मौलिक योग्यता की तुलना में अत्यधिक प्रभाव डाला।

अपोक्रिफल लेखों के विशिष्ट शीर्षक

अबदियास का प्रेरितीय इतिहास

पवित्र ग्रंथों और अपोक्रिफल लेखों से संकलित सामग्री का संग्रह, जिसमें प्रेरितों, विशेष रूप से पौलुस के जीवन का वर्णन है। अबदियास, जो बाबुल का एक प्रारंभिक बिशप था, इस इतिहास का लेखक माना जाता था, लेकिन यह अधिक संभावना है कि इसे छठी शताब्दी ईस्वी में फ्रांस में विभिन्न स्रोतों से संकलित किया गया था। यह अपोक्रिफल "कृतियाँ," जो 10 पुस्तकों में विभाजित हैं, मूल रूप से यूनानी में व्यक्तिगत खंडों के रूप में प्रचलित थीं, जिन्हें एक लातीनी संस्करण बनने पर एकत्र किया गया। इसकी सामग्री को आम तौर पर लोककथाओं या किंवदंतियों के रूप में माना जाता है, लेकिन जहाँ कोई अन्य स्रोत उपलब्ध नहीं है, वहाँ यह कुछ मूल्यवान मानी जाती है।

अबदियास, जो प्रेरितों का समकालीन था, संभवतः मसीह को देखा होगा और कथित रूप से शमोन और यहूदा के साथ व्यापक रूप से यात्रा की। अबदियास को इब्री पाठ का लेखक मानने या यह विश्वास करने का कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है कि उनके शिष्य यूट्रोपियस ने इसे यूनानी में अनुवादित किया या अफ्रीकानस ने यूनानी को लातीनी में अनुवादित किया — हालाँकि लातीनी संस्करण की प्रस्तावना में ये दावे किए गए हैं।

मसीह और अबगरुस के पत्र

अपोक्रिफल रचना जिसमें दो छोटे पत्री हैं, एक कथित रूप से सिरियाई राजा अबगर (अबगरुस) द्वारा लिखा गया और दूसरा कथित रूप से यीशु का उत्तर है। यूसेबियस ने दावा किया कि उसने यह सामग्री अबगर के एडेसा के अभिलेखों में पाई और इसे सिरियाई से यूनानी में अनुवादित किया,

जिसमें शिष्य तद्दै के कार्यों का वर्णन भी शामिल है।

किंवदंती के अनुसार, अबगर, जो एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था, यीशु के चमत्कारों के बारे में सुनता है और एक दूत के साथ एक पत्र भेजता है, जिसमें यीशु से आकर उसे चंगा करने का अनुरोध करता है। साथ ही वह यीशु को यरूशलेम में यहूदियों के खतरनाक विरोध से आश्रय देने की पेशकश करता है। लिखित उत्तर में (बाद में मौखिक उत्तर में परिवर्तित कर दिया गया ताकि इस परंपरा के अनुसार बना रहे कि यीशु के कोई लेखन नहीं थे), यीशु आश्रय की पेशकश को अस्वीकार करते हैं लेकिन वादा करते हैं कि अपने आरोहण के बाद वह एक शिष्य को भेजकर अबगर की चंगाई की इच्छा पूरी करेंगे। बारह शिष्यों में से एक तद्दै को एडेसा भेजा गया, राजा चंगा होता है और समुदाय मसीही धर्म में परिवर्तित हो जाता है। डोक्ट्रिना एडाई (लगभग 400 ईस्वी) के एक अलग संस्करण में, मौखिक उत्तर दिया गया है, और दूत यीशु का एक चित्र लेकर लौटता है जिसे अबगर के महल में प्रमुखता से प्रदर्शित किया जाता है।

यह किंवदंती यूनानी एक्ट्स ऑफ थद्देयुस (पाँचवीं या छठी शताब्दी ईस्वी) में वर्णित से समान है, सिवाय इसके कि इसमें अनन्यास एक रूमाल लेकर लौटता है, जिसमें मसीह के चेहरे की एक चमत्कारिक छवि अंकित होती है।

अब्राहम का प्रकाशन

यहूदी दस्तावेज जो पुराने स्लावोनिक पाठों में मौजूद है, जो यूनानी के माध्यम से एक इब्री या अरामी मूल की ओर जाता है।

अब्राहम का प्रकाशन अब्राहम के मूर्तिपूजा से विमुख होने के साथ शुरू होता है। अब्राहम के युवावस्था की पुरानी रब्बी परंपराओं को शामिल करते हुए, यह परमेश्वर के बुलाहट के प्रति उसकी जागरूकता और इस तथ्य का वर्णन करता है कि परमेश्वर एकमात्र और पवित्र है। जाओएल नामक एक स्वर्गदूत, जिसकी शक्तियाँ और कर्तव्य रब्बी कथाओं से लिए गए हैं, अब्राहम को सातवें स्वर्ग में ले जाता है जहाँ उसे अतीत और भविष्य की घटनाएँ दिखाई जाती हैं। वह आदम और हव्वा के यौन पाप से फिसलन को देखता है, और कैन की हत्या को भी देखता है। अज़ाज़ेल, एक दुष्ट प्राणी, शैतान की भूमिका निभाता है। ये विवरण संभवतः एक परंपरा को दर्शाते हैं कि अब्राहम बाइबल के पहले दस्तावेजों का लेखक था। प्रकटीकरण फिर भविष्य की ओर मुड़ता है और मन्दिर के विनाश, अन्यजातियों पर विपत्तियों और मसीहा के आगमन को दिखाता है। यह संभव है कि इस मिश्रित दस्तावेज ने पहली शताब्दी ईस्वी के अंतिम काल में अपनी अंतिम रूप प्राप्त की।

उत्पत्ति में प्रकट उनके चरित्र के अनुसार, अब्राहम बुराई और परमेश्वर के अज़ाज़ेल जैसे विद्रोहियों को सहन करने के बारे में सवाल उठाते हैं। उन्हें यह उत्तर मिलता है कि बुराई का स्रोत मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा में है। यह प्रकाशन दिखाता है कि कैसे वफादार यहूदियों ने यहूदी धर्म में बड़े कष्ट के समय बुराई की समस्या को समझने के लिए संघर्ष किया। यह उस समय की "स्वर्गदूतों की शिक्षा" के बारे में भी एक जिज्ञासु दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। कुछ विद्वानों द्वारा ग्रंथ के नोस्टिक और मसीही संपादन का उल्लेख भी किया गया है।

अब्राहम का करार

यहूदी अपोक्रिफल लेख जिसमें अब्राहम की मृत्यु का वर्णन है। करार में, जब स्वर्गदूत मीकाएल अब्राहम की आत्मा लेने आता है, तो अब्राहम मरने से इनकार कर देता है। वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर जोर देने में संकोच करते हुए, मीकाएल उसकी मृत्यु से पहले सारी सृष्टि को देखने की इच्छा पूरी करता है। स्वर्गदूत एक रथ द्वारा अब्राहम को स्वर्ग में ले जाता है ताकि वह मानव जाति का अवलोकन कर सके। अब्राहम मानवता के छल-कपट को देखकर इतने आहत होते हैं कि पापियों को शाप देते हैं, जो तुरंत मर जाते हैं। फिर वह एक आत्मा के न्याय का अवलोकन करते हैं, और हालांकि स्वर्गदूत परीक्षण में भाग लेते हैं, वे देखते हैं कि मुख्य न्यायाधीश हाबिल है। आत्मा की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ समान रूप से संतुलित लगती हैं, लेकिन अब्राहम के हस्तक्षेप के कारण, निर्णय अनुकूल हो जाता है। अब्राहम को फिर अपने पापियों को शाप देने की कठोरता का एहसास होता है, लेकिन स्वर्गदूत उन्हें बताते हैं कि जिन लोगों को उन्होंने शाप दिया था उनकी अकाल मृत्यु उनके पापों के प्रायश्चित्त का साधन थी।

पृथ्वी पर लौटने के बाद, अब्राहम ने फिर से मरने से इनकार कर दिया। मृत्यु अपने पूरे भय के साथ प्रकट होती है और अब्राहम के 7,000 सेवकों को मार डालती है (जिन्हें बाद में जीवित कर दिया जाता है), परन्तु वृद्ध संत फिर भी नहीं मरेंगे। अंत में, मृत्यु अब्राहम का हाथ पकड़ लेती है और स्वर्गदूत उसकी आत्मा को स्वर्ग में उठा लेते हैं।

यह विवरण कई यूनानी पांडुलिपियों में पाया जाता है, जिनमें से सबसे पुरानी संभवतः 13वीं शताब्दी ईस्वी की है, साथ ही स्लावोनिक, रोमानियन, अरबी, इथियोपिक, और कॉप्टिक में भी उपलब्ध है। मूल भाषा संभवतः इब्री थी, पहली शताब्दी ईस्वी से, और संभवतः एक मसीही द्वारा इसे यूनानी में अनुवादित किया गया था। करार का एक संक्षिप्त संस्करण भी मौजूद है जिसमें परमेश्वर स्वप्न में अब्राहम की आत्मा को उठाने आते हैं। इस रचना में कोई धार्मिक वक्तव्य देने का प्रयास नहीं है, लेकिन स्वर्गदूत मीकाएल और मृत्यु का चित्रण पहली शताब्दी के यहूदी विचारों के अनुरूप है।

अपोक्रिफल कृतियाँ

प्रेरितों की उपलब्धियों का विवरण होने का दावा करने वाले लेख जो पवित्रशास्त्र में दर्ज नहीं हैं।

अपोक्रिफा

पिलातुस की कृतियाँ

*देखें*के कार्य, पिलातुस (नीचे)।

आदम का प्रकाशन

ग्नोस्टिक प्रकाशनात्मक साहित्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरणों में से एक है। 1946 में, एक किसान ने मिस्र के नगर नाग हम्मादी के उत्तर में लगभग 6 मील (10 किलोमीटर) की दूरी पर एक गुफा में कई प्राचीन ग्रंथ खोजे। इस खोज में 13 कोडेक्स (बंधी हुई पुस्तकों के पूर्ववर्ती) शामिल थे, जिनका स्रोत मसीही और गैर-मसीही था। इस खोज का तुरंत खुलासा नहीं हुआ, इसलिए 1958 तक एक फ्रांसीसी विद्वान, जीन डॉरेस ने "आपोकालिप्स ऑफ आडम" के अस्तित्व को सार्वजनिक किया। यह प्रकाशन कॉप्टिक भाषा में लिखा गया है और कोडेक्स V के पाँच कार्यों में से अंतिम के रूप में खड़ा है।

हालाँकि लेखक की सच्ची पहचान अज्ञात है, परंतु उपशीर्षक इसे झूठे रूप में आदम या शेत को श्रेय देता है: "एक प्रकाशन जिसे आदम ने अपने पुत्र शेत को सात सौवें वर्ष में प्रकट किया।" ग्नोस्टिक साहित्य के लेखकों द्वारा शेत को अक्सर सत्य का संप्रेषण करने वाले के रूप में प्रस्तुत किया गया है (जैसे द गोस्पेल ऑफ द इजिपसियंस, द पाराफ्रेस ऑफ शेम)।

आदम का प्रकाशन का सबसे पुराना मौजूदा प्रतिलिपि ईस्वी 300 से 350 के आसपास का माना जाता है, यद्यपि इसे बहुत पहले लिखा गया हो सकता है। इसके प्रचलित ग्नोस्टिक संदर्भ, यहूदी इतिहास पर इसकी निर्भरता और बपतिस्मा की ओर संकेत के कारण कुछ विद्वान इसे प्रथम और द्वितीय शताब्दियों के यहूदी बपतिस्मा संप्रदायों में उत्पत्ति का मानते हैं। इस कार्य और तीसरी शताब्दी के मानीकेन साहित्य (ग्नोस्टिसिज्म का एक प्रकार) के बीच समानताएं भी मौजूद हैं।

आदम का प्रकाशन मसीही मूल के छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है। वर्षों तक विद्वानों में इस पर बहस होती रही है कि ग्नोस्टिक धर्म मसीही धर्म की एक विधर्मी वृद्धि थी या यह स्वतंत्र उत्पत्ति की एक आंदोलन था। कुछ विद्वान यह तर्क देते हैं कि आदम का प्रकाशन प्रारंभिक, स्वतंत्र ग्नोस्टिसिज्म का एक उदाहरण है। यदि यह मामला साबित हो जाता है तो बहस निश्चित रूप से सरल हो जाएगी।

इसके परिचय और निष्कर्ष के अतिरिक्त, आदम का प्रकाशन को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है: आदम का महत्वपूर्ण अतीत की घटनाओं का सारांश, दुष्ट निर्माता-देवता द्वारा मानवजाति को नष्ट करने के प्रयासों की भविष्यद्वानियाँ, और उस ज्ञानी के आगमन की भविष्यद्वानी जो अपने लोगों को सच्चे परमेश्वर का मार्ग दिखाएगा।

यह प्रकाशन आदम के साथ शुरू होता है, जो कथित तौर पर अपनी मृत्यु शय्या पर अपने पुत्र शेत को ग्नोस्टिक लोगों के भविष्य के रहस्यों को प्रकट कर रहा है। तीन दैवीय प्राणियों द्वारा ये रहस्य उसे रहस्यमय ढंग से संप्रेषित किए गए हैं। आदम अपनी दुष्ट सृष्टिकर्ता-देवता के प्रति दासता की स्थिति का दुःख प्रकट करता है, जो पतन और ग्नोसिस (ज्ञान) की हानि के कारण उत्पन्न हुआ। ग्नोस्टिक साहित्य की सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार, पृथ्वी के शासक दुष्ट सृष्टिकर्ता-देवता और सृष्टि के सच्चे परमेश्वर के बीच एक स्पष्ट भेद किया गया है, जिसका ज्ञान वास्तविक जीवन लाता है। आदम भविष्यद्वानी करता है कि सृष्टिकर्ता-देवता ईर्ष्या से मानवजाति को एक जलप्रलय (नूह की कहानी) और अग्नि (सदोम और अमोरा की कहानी) के द्वारा नष्ट करने का प्रयास करेगा और इस प्रकार मानव को सच्चे परमेश्वर के ज्ञान से दूर रखेगा। ये प्रयास, तथापि, सत्य के परमेश्वर द्वारा भेजे गए स्वर्गदूतों के हस्तक्षेप से विफल हो जाएंगे। अंत में, सच्चा परमेश्वर एक ज्ञानी को भेजेगा जो मानवजाति को ग्नोसिस सिखाएगा ताकि वे उसे जान सकें। सृष्टिकर्ता-देवता ज्ञानी को पराजित करने का प्रयास करेगा परंतु केवल उसके शारीरिक देह को ही हानि पहुंचा सकेगा। ज्ञानी के संदेश के प्रबल होने पर, मानवजाति सृष्टिकर्ता-देवता से मुड़कर ग्नोसिस के द्वारा सच्चे परमेश्वर की खोज करेगी।

*यह भी देखें*ग्नॉस्टिसिज़्म

आदम के अपॉक्रिफल पुस्तकें

आदम और हव्वा के जीवन और मृत्यु का वर्णन लातीनी में दर्ज है, और एक यूनानी संस्करण में इसे आपोकालिप्स ऑफ मोसेस कहा गया है। प्रारंभिक मसीही मूल के अन्य छोटे संस्करण भी मौजूद हैं। अन्य अपॉक्रिफल लेखों की तरह, यह कार्य कल्पनात्मक और अज्ञात लेखन का है।

लातीनी वर्णन के अनुसार, स्वर्ग से निकाले जाने के बाद आदम और हव्वा भूखे होते हैं और सात दिनों तक भोजन नहीं पा सकते। हताशा में पश्चातापी हव्वा, जिसे निषिद्ध फल चखने की जिम्मेदारी लेनी थी, सुझाव देती है कि आदम उसे मार डाले। आदम मना कर देता है, और खोज के बाद वे पशुओं का भोजन खाकर जीवित रहते हैं। आदम सुझाव देता है कि उन्हें पश्चाताप के रूप में अपनी गर्दन तक नदी में खड़े होकर 40 दिनों का उपवास रखना चाहिए, आदम टाइग्रिस में और हव्वा यरदन में है। 18 दिनों के बाद शैतान एक स्वर्गदूत के रूप में हव्वा के पास आता है, उसे बताता है कि प्रभु ने उसके पश्चाताप को स्वीकार कर लिया है, और उसे नदी छोड़ने के लिए मना लेता है। जब वह टाइग्रिस में आदम के पास आती है, तो हव्वा समझती है कि वही शैतान था जिसने उससे बात की थी। शैतान तब बताता है कि उसके पतन का कारण यह था कि उसने मनुष्य की, जो एक निम्न प्राणी था, उपासना करने से मना कर दिया।

तब प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल आदम के पास बीज लेकर आता है ताकि वह भूमि की जुताई करना सीख सके। एक सपने में हव्वा देखती है कि कैन हाबिल को मारता है, और भाइयों को

अलग करके हत्या को रोकने के प्रयास में, कैन को एक किसान और हाबिल को एक चरवाहा बनाया जाता है। इसके बाद एक तीसरा पुत्र, शेत, जन्म लेता है। आदम को परमेश्वर से एक संदेश मिलता है कि उसे मरना है क्योंकि उसने अपनी पत्नी के शब्द को परमेश्वर की आज्ञाओं से अधिक माना। जब आदम बाद में दर्द में होता है और मृत्यु के निकट होता है, तो वह शेत को समझाता है कि शैतान ने हव्वा को निषिद्ध फल चखने के लिए उकसाया और उसने उसे चखने के लिए मना लिया। शेत और हव्वा स्वर्ग के द्वार पर जाकर परमेश्वर से आदम के जीवन के लिए विनती करते हैं। रास्ते में शेत को एक साँप काट लेता है। स्वर्ग में, मीकाएल उन्हें बताता है कि आदम को मरना है। शेत आदम और हाबिल के दफन को देखता है।

अपनी मृत्यु से एक सप्ताह पहले, हव्वा शेत को अपने माता-पिता के जीवन को पत्थर और मिट्टी की पट्टियों पर लिखने के लिए कहती है, ताकि यदि परमेश्वर का क्रोध जल से आए, तो मिट्टी घुल जाएगी और पत्थर बचा रहेगा; यदि आग से, तो पत्थर टूट जाएगा और मिट्टी पक कर कठोर हो जाएगी। हव्वा शेत को केवल छह दिन शोक करने और सब्त के दिन शोक न करने की चेतावनी भी देती है।

यूनानी संस्करण का पाठ लातीनी संस्करण के समान है, सिवाय इसके कि यूनानी संस्करण में आदम के पुनरुत्थान (जो बाद में लातीनी संस्करण में जोड़ा गया था) और हव्वा के प्रलोभन और पतन का एक विस्तृत विवरण शामिल है। आदम के दफन और मारे गए हाबिल के शरीर को ग्रहण करने से पृथ्वी का प्रारंभिक इंकार भी यूनानी विवरण में विस्तार से बताया गया है। दोनों संस्करण संभवतः पहली शताब्दी ईस्वी के इब्री मूल से लिए गए हैं।

अहीकर का पुस्तक

छठी या सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व की निकट-पूर्वी लोककथा, जो कृतघ्नता के दंड को दर्शाती है। इस कहानी के अनुसार, अश्शूर के राजा सन्हेरीब का सचिव अहीकर अपनी बुद्धि के लिए प्रसिद्ध था। साठ पत्नियाँ होने के बावजूद उसकी कोई संतान नहीं थी, इसलिए उसने अपनी बहन के पुत्र नादन को गोद ले लिया और उसे सन्हेरीब के दरबार में अपना उत्तराधिकारी बनने के लिए पाला। अहीकर ने अपने गोद लिए पुत्र को पूरी मेहनत से शिक्षित किया, फिर भी नादन दुष्ट निकला और उसने झूठे दस्तावेज़ बनाकर अपने संरक्षक को मौत की सज़ा दिलवाने की कोशिश की। लेकिन अहीकर को जल्लाद से उसकी मित्रता के कारण बचा लिया गया और उसे तब तक छुपाया गया जब तक कि राजा का क्रोध शांत नहीं हुआ। बाद में, जब सन्हेरीब को उसकी बुद्धि की आवश्यकता महसूस हुई, तो अहीकर को लम्बे बाल, बिखरे हुए वस्त्र, और उंगलियों के नाखूनों को उकाब के पंजों के समान बढ़े हुए देखकर दरबार में लाया गया। राजा की कृपा पाने के बाद, अहीकर ने अपने स्वार्थी भतीजे को कठोर फटकार लगाई। अहीकर की फटकार के जवाब में नादन का शरीर सूज गया और उसका पेट फट गया।

अहीकर की कहानी में पुराने नियम की ज्ञान पुस्तकों और यीशु की कुछ दृष्टांतों के साथ दिलचस्प समानताएँ हैं। अहीकर का उल्लेख अपोक्रिफल पुस्तक तोबीत, यूनानी दार्शनिक डेमोक्रिटस, बारह पितृपुरुषों की प्रकाशनात्मक करार, और कोरान में भी होता है। मूलतः अरामी में लिखी यह कहानी, सिरिएक, अरबी, अर्मेनियाई, इथियोपियाई, और यूनानी में भी पाई जाती है, हालांकि संस्करणों में काफी भिन्नताएँ हैं।

अखमीम का टुकड़ा

मिस्र के अखमीम में एक मकबरे में पाया गया दस्तावेज़ जिसमें अपोक्रिफल गोस्पेल ऑफ पीटर शामिल है। *देखें*का प्रचार, पतरस (निचे)।

एलोजीन्स सुप्रीम

ग्नोस्टिक रचना ("परम अजनबी"), जो 1946 में नाग हम्मादी (मिस्र) के पास एक कलश में खोजी गई। नेओप्लेटोनिक इतिहासकार पोर्फिरी के साथ-साथ विधर्म के विरुद्ध बाद के सिरिएक मसीही लेखों में भी एलोजीन्स के कार्यों का उल्लेख है (जिसका अर्थ है "अजनबी" या "परदेशी")। एलोजीन्स सुप्रीम, कोप्टिक में लिखी एक ग्नोस्टिक "प्रकाशन" है, जो उच्चतर लोक के निर्माण का वर्णन करती है और आकाशीय माता बारबेलो की महिमा करती है। मौजूदा प्रति चौथी शताब्दी में लिखी गई थी, लेकिन मूल संस्करण दूसरी शताब्दी का हो सकता है।

अन्द्रियास की कृतियाँ

एक अपोक्रिफ़ल रचना, जिसमें पतरस के भाई, प्रेरित अन्द्रियास द्वारा यूनान में किए गए चमत्कारों और उनके शहीद होने का वर्णन है। इसका मुख्य विषय है सांसारिक वस्तुओं और अस्थायी मूल्यों को त्याग कर परमेश्वर के प्रति समर्पण के साथ संयमी जीवन अपनाने का गुण। उपलब्ध सबसे पुराना अंश वेटिकन में पाया जाता है। इसका मूल संस्करण संभवतः दूसरी शताब्दी ईस्वी का है और यह काफी लंबा, शब्दाडंबरपूर्ण, और कठिन रहा होगा। छठी शताब्दी में, ग्रेगरी ऑफ टूर्स ने इसे महत्वपूर्ण मानते हुए, अन्द्रियास के चमत्कारों का एक संक्षिप्त संस्करण लिखा, जो अब खो चुका है। अन्द्रियास के शहीद होने का वर्णन संभवतः अलग से भी प्रचलित था।

ग्रेगरी द्वारा दर्ज किए गए कई चमत्कारों में से एक था थिस्सलुनीके का एक कुलीन युवक, एक्सूस, के बारे में जो अन्द्रियास की शिक्षाओं और चमत्कारों के बारे में सुनकर वह फिलिप्पी में उनसे मिलने आता है, परिवर्तित होता है, और उनके साथ रहता है। जब रिश्वत देकर भी सफलता नहीं

मिलती और अन्द्रियास की बात सुनने से इनकार कर देते हैं, तो युवक के माता-पिता उस घर में आग लगा देते हैं, जहाँ मसीही विश्वासी ठहरे हुए हैं। जब आग भड़क उठती है, तो एक्सूस प्रार्थना करता है कि प्रभु आग को बुझा दे और उस पर पानी छिड़कता है, जिसके बाद आग बुझ जाती है। माता-पिता और भीड़, यह मानते हुए कि युवक अब एक जादूगर है, घर में घुसने और सभी को मार डालने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, लेकिन परमेश्वर उन घुसपैठियों को अंधा कर देता है। यद्यपि रात है, घर से प्रकाश चमक उठता है, और जिनकी दृष्टि चली गई थी, उन्हें फिर से देखने की शक्ति मिल जाती है, और युवक के माता-पिता को छोड़कर सभी परिवर्तित हो जाते हैं। माता-पिता शीघ्र ही मर जाते हैं, और एक्सूस अन्द्रियास के साथ रहकर अपनी संपत्ति को गरीबों के लिए खर्च करता है। थिस्सलुनीके लौटने पर, एक्सूस 23 वर्षों से लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा करता है, और उसके बाद एक्सूस और अन्द्रियास और चमत्कार करते हैं और लोगों को प्रचार करते हैं।

पट्राए में प्रांतपाल एजेटेस की पत्नी मैक्सिमिला की दासी अन्द्रियास के पास आती है और अपनी मालकिन को चंगा करने की विनती करती है, जिसका बुखार इतना तीव्र था कि उसका पति उसकी मृत्यु होते ही खुद को तलवार से मार डालने की धमकी दे रहा था। प्रशासक को अपनी तलवार हटाने के लिए कहकर, अन्द्रियास मैक्सिमिला का हाथ पकड़ते हैं और उसका बुखार उतर जाता है। उसके लिए भोजन मंगवाने के बाद, अन्द्रियास एजेटेस की 100 चाँदी की मुद्राओं की पेशकश को अस्वीकार कर देते हैं। शहर में कई चमत्कार करने के बाद, अन्द्रियास को मैक्सिमिला से संदेश मिलता है कि वह प्रांतपाल के भाई स्ट्रैटोक्लीस के दास को चंगा करने के लिए आएं। प्रेरित उस लड़के को स्वस्थ करते हैं, और उसका स्वामी विश्वास करता है।

मैक्सिमिला, अपने पति के क्रोध के बावजूद, अन्द्रियास के प्रचार को सुनने में काफी समय बिताती है और परिवर्तित हो जाती है। इसके बाद वह अपने पति के साथ सोने से इनकार कर देती है और एक रात अपनी जगह एक दासी को भेज देती है। इसके बाद की घटनाओं का वर्णन शहीद होने के वृत्तांत में मिलता है। एजेटेस क्रोध में अन्द्रियास को अपनी पत्नी से दूर करने के लिए उत्तरदायी मानता है और उसे गिरफ्तार करवा देता है। जेल से प्रचार करने के बाद, अन्द्रियास को समुंदर किनारे क्रूस पर चढ़ाने ले जाया जाता है। जब मसीही स्ट्रैटोक्लीस सैनिकों द्वारा अन्द्रियास के साथ किए जा रहे दुर्व्यवहार को देखता है, तो वह लड़ते हुए वहाँ पहुँचता है, और वह और अन्द्रियास मिलकर क्रूस की जगह तक चलते हैं। एजेटेस अपने भाई से डरते हुए सैनिकों को हस्तक्षेप न करने का आदेश देता है। समुंदर किनारे, सैनिक प्रांतपाल के आदेश का पालन करते हैं कि अन्द्रियास को क्रूस से बांध दिया जाए, न कि कील ठोकी जाए, ताकि उसकी मृत्यु धीमी हो और वह कुत्तों द्वारा खा लिया जाए। दो दिनों तक वह क्रूस से लोगों से बातें करता रहता है, और कई लोग एजेटेस के पास अन्द्रियास की रिहाई की मांग करने पहुँचते हैं। घटनास्थल पर पहुँचकर, प्रांतपाल देखता है कि अन्द्रियास अभी जीवित है, और अन्द्रियास को मुक्त करने के लिए उसके पास आता है। अन्द्रियास मांग करते हैं कि उन्हें मरने दिया जाए ताकि वे अपने प्रभु से मिल सकें। यह देख कर, अन्द्रियास की मृत्यु हो जाती है और दर्शक रोते हैं, जबकि मैक्सिमिला और स्ट्रैटोक्लीस उसके शव को क्रूस से उतारते हैं। मैक्सिमिला अपने पति से अलग रहती है और मसीही विश्वासी के रूप में बनी रहती है।

अन्द्रियास की कहानी

यह केवल कॉप्टिक भाषा में मौजूद एक प्रसिद्ध कथा का अंश है। दूसरी शताब्दी ईस्वी के अंत से उत्पन्न इस कथा में, एक महिला रेगिस्तान में अपने बच्चे की हत्या कर देती है और उसके अवशेष एक कुत्ते को दे देती है। जब प्रेरित अन्द्रियास और फिलेमोन पास आते हैं, तो वह महिला भाग जाती है, लेकिन कुत्ता बताता है कि क्या हुआ। अन्द्रियास प्रार्थना करते हैं, और बच्चा, जिसे कुत्ते ने उगल दिया था, जीवन में लौट आता है और हंसता और रोता है।

अन्द्रियास और मत्तियाह की कृतियाँ

यह एक लंबा दस्तावेज़ है जिसकी प्रमाणिकता अत्यधिक संदिग्ध है और संभवतः दूसरी शताब्दी ईस्वी के अंत में लिखा गया था। यह पुस्तक कई अन्य आपोक्रिफाल "कृतियाँ" में से एक थी जो प्रेरितों के बारे में अधिक जानकारी देने के लिए नए नियम की पुस्तक प्रेरितों के काम का पूरक मानी जाती है। चौथी शताब्दी के कलीसिया इतिहासकार यूसुबियस ने इस और अन्य इसी प्रकार के कार्यों को विधर्मी, निरर्थक और झूठा बताया।

इस कहानी में, प्रेरित यह तय करने के लिए चिट्ठियाँ डालते हैं कि उन्हें कहाँ जाना चाहिए। मत्तियाह (कुछ संस्करणों में मत्ती) को आदमखोरों के देश में भेजा जाता है, जहाँ वह जल्द ही नरभक्षी भोज से बचाए जाने की स्थिति में पहुँचता है। तब प्रभु अन्द्रियास को उसे बचाने के लिए भेजते हैं। अन्द्रियास समय पर पहुँचता है और मत्ती को एक बादल द्वारा दूर ले जाया जाता है। अब अकेले बचे अन्द्रियास को गिरफ्तार कर यातना दी जाती है और उसे शहर में घसीटा जाता है, जहाँ वह एक प्रतिमा से पानी बुलाकर शहर को लगभग नष्ट कर देता है। अंततः, अन्द्रियास के चमत्कारों से प्रभावित होकर लोग पश्चाताप करते हैं और उसे छोड़ देते हैं। इसके बाद, अन्द्रियास एक कलीसिया भवन बनाने की योजना बनाते हैं, उसे बनवाते हैं, लोगों को बपतिस्मा देते हैं, और उन्हें प्रभु की विधियाँ सिखाते हैं।

अन्द्रियास और पौलुस की कृतियाँ

एक अपूर्ण गुप्त कथा जो केवल कॉप्टिक अंशों में मौजूद है, जो समुद्र के माध्यम से एक शहर में अन्द्रियास और पौलुस की

आगमन का वर्णन करती है। कथा में, पौलुस अन्द्रियास से उसे बचाने का निर्देश देकर अधोलोक में जाता है। वहाँ वह यहूदा से मिलता है, जो बताता है कि यीशु द्वारा धोखे के लिए क्षमा किए जाने के बाद उसने शैतान की उपासना की थी। अन्द्रियास पौलुस को बचाता है, जो एक लकड़ी का टुकड़ा लेकर लौटता है। कुछ यहूदियों की संदेह के कारण अन्द्रियास को एक बच्चे को चंगा करने के लिए कहा जाता है, लेकिन शहर के द्वार प्रेरितों के लिए बंद रहते हैं। पौलुस अपने लकड़ी के टुकड़े से द्वारों को मारता है, और द्वार पृथ्वी में समा जाते हैं। चमत्कार से चकित होकर, 27,000 यहूदी परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रेरितों की पत्री

यह पत्री 11 प्रेरितों द्वारा "पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की कलीसियाओं को भेजे जाने का दावा करता है, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से संबंधित बातें बताता और सिखाता है"। कुछ का मानना है कि यह पत्री एशिया उपद्वीप में लगभग 160 ईस्वी में लिखा गया था; अन्य इसे मिस्र में उत्पन्न मानते हैं। इसकी तिथि संभवतः दूसरी शताब्दी के मध्य की है। इसके एक विकृत कॉप्टिक पाण्डुलिपि का चौथी या पाँचवीं शताब्दी का संस्करण, एक पूर्ण इथियोपियाई संस्करण, और एक लातीनी अंश उपलब्ध है। 1895 में कॉप्टिक पाण्डुलिपि की खोज से पहले यह पत्री अज्ञात थी।

एक परिचय के बाद एक घोषणा होती है कि "हमारा प्रभु और उद्धारक यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है जिसे परमेश्वर की ओर से भेजा गया था जो सारे संसार का प्रभु है।" इसके बाद सुसमाचारों की कई घटनाओं का सारांश प्रस्तुत किया गया है, जिसमें सुनहरा नियम का नकारात्मक रूप में कथन शामिल है: "अपने शत्रुओं से प्रेम करो, और जो तुम नहीं चाहते कि मनुष्य तुम्हारे साथ करे, वह तुम किसी के साथ न करो।" अध्याय 24 में पुनरुत्थान का विषय प्रस्तुत किया गया है, इसके बाद शिष्यों द्वारा किए गए प्रश्नों और यीशु द्वारा दिए गए उत्तरों की एक श्रृंखला है। अध्याय 31 में पौलुस के परिवर्तन की एक भविष्यद्वानी है। अध्याय 43 में पाँच समझदार कुँवारियों को "विश्वास, प्रेम, अनुग्रह, शांति और आशा" के रूप में पहचाना गया है; मूर्खों के नाम "ज्ञान, समझ (अनुभूति), आज्ञाकारिता, धैर्य और करुणा" हैं। इस कार्य का प्रश्न-उत्तर प्रारूप नाग हाम्मादी के गुप्त ग्रंथों, विशेष रूप से अपोक्रीफ़न ऑफ जॉन के शैली की याद दिलाता है। हालाँकि, सेरिन्थस और शिमोन (अध्याय 7) को "हमारे प्रभु यीशु मसीह के शत्रु" के रूप में उल्लेख करना यह स्पष्ट करता है कि यह कोई ग्नोस्टिक ग्रंथ नहीं है। इस पत्री में प्रामाणिक मसीही धर्म के प्रभाव के कई प्रमाण मिलते हैं, साथ ही प्रेरितीय मसीही धर्म से विचलन के स्पष्ट संकेत भी मिलते हैं।

बारह प्रेरितों का सुसमाचार

उन कई विधर्मी "सुसमाचारों" में से एक, जो मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना के सुसमाचारों के साथ मसीही कलीसिया के प्रारंभिक सदियों में प्रचलन में थे। बारह प्रेरितों के सुसमाचार का नाम सबसे पहले मसीही धर्मशास्त्री ओरिगेन (लगभग ईस्वी 185–254) ने लूका 1:1 पर टिप्पणी में लिया। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह द गोस्पेल ऑफ द एबियोनाइट्स के समान हो सकता है, जिसका उल्लेख कुछ प्रारंभिक मसीही लेखों में किया गया है। बारह प्रेरितों के सुसमाचार के बारे में सीधे तौर पर कुछ ज्ञात नहीं है।

बाल्यावस्था का अरबी सुसमाचार

अपोक्रिफल नए नियम में पाए जाने वाले कई "बाल्यावस्था के सुसमाचारों" में से एक है। यह पाँचवीं शताब्दी का माना जाता है और इसमें यीशु के जन्म का वर्णन है, जिसमें चरवाहों और ज्योतिषियों का आना, मिस्र में पलायन, और बालक यीशु द्वारा किए गए चमत्कार शामिल हैं। यीशु के जीवन के प्रारंभिक काल के बारे में ऐसे विवरण दिए गए हैं, जिनका उल्लेख विधिवत सुसमाचारों (मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना) में नहीं है। इन चमत्कार कथाओं में एक दिलचस्प पक्ष यीशु की माता मरियम की भूमिका है, जो विधिवत सुसमाचारों में दर्ज चमत्कारों के विपरीत है। अरबी सुसमाचार को संभवतः सिरियाई में लिखा गया था और बाद में अरबी में अनुवाद किया गया। इसके कुछ कथाएँ कुरान और अन्य इस्लामी लेखों में भी पाई जाती हैं। इस अपोक्रिफल सुसमाचार के अध्ययन से इसके विधिवत विवरणों के साथ तीव्र विरोधाभास दिखाई देता है, लेकिन यह भी संकेत मिलता है कि इस और इसी तरह की रचनाओं ने कुंवारी मरियम के बढ़ते आदर में कितना योगदान दिया।

यूसुफ बढ़ई का अरबी इतिहास

चौथी शताब्दी की एक रचना, जिसमें यूसुफ के जीवन और मृत्यु का विवरण दिया गया है—जिसमें जानकारी यीशु द्वारा दी गई मानी जाती है। इस विवरण के अनुसार, बढ़ई यूसुफ चार पुत्रों और दो पुत्रियों (अध्याय 2) के पिता बनने के बाद विधुर हो जाते हैं। उन्हें अपने 90वें वर्ष में मरियम की देखभाल सौंपी जाती है (अध्याय 14)। इस प्रकार, इस विवरण के अनुसार, यीशु के भाई-बहन यूसुफ की पूर्व विवाह से संतान हैं। कहा जाता है कि यूसुफ की मृत्यु 111 वर्ष की आयु में हुई। इस दस्तावेज का अरबी और कॉप्टिक दोनों संस्करण उपलब्ध हैं, जिसमें मरियम के लिए यह कहा गया है कि "उसे भी अन्य नाशवान मनुष्यों के समान मृत्यु का सामना करना होगा" (अध्याय 18)। इसलिए, इसे पाँचवीं शताब्दी से पहले का माना गया है, जब "मरियम का स्वर्गारोहण" का विचार प्रचारित हो रहा था।

अरिस्टियास की पत्री

यह पत्री मिस्र में यहूदी धर्म और युनानवाद के संबंधों का प्रारंभिक विवरण प्रस्तुत करता है, उस समय के दौरान जब इब्रानी पुराना नियम यूनानी में अनुवादित किया गया था (जिसे सेप्टुआजिंट कहा जाता है)। लेखक, अरिस्टियास, जो स्वयं को टॉलेमी फिलाडेल्फस II (शासनकाल 283–247 ई.पू.) के अधीन एक सिकंदरिया का दरबारी परिचारक बताते हैं, अनुवाद प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रदान करने का दावा करते हैं। अरिस्टियास के पत्री की संभावित तिथि (आंकड़े 200 ई.पू. से 50 ईस्वी तक भिन्न हैं) दूसरी शताब्दी ई.पू. के अंत में मानी जाती है।

अपने विशाल पुस्तकालय परियोजना के हिस्से के रूप में, राजा टॉलेमी यहूदी व्यवस्था में रुचि दिखाते हैं। अरिस्टियास इस अवसर का उपयोग साम्राज्य में सभी यहूदी दासों की मुक्ति और उन्हें पारिश्रमिक के साथ स्वतंत्र कराने के अनुरोध के लिए करते हैं, और राजा टॉलेमी इस अनुरोध को स्वीकार करते हैं। राजा यह भी कहते हैं कि यरूशलेम में महायाजक अनुवाद परियोजना के लिए अनुवादकों का चयन करें। इसके बाद एक लंबा वर्णन उन उपहारों का दिया गया है जो एलिआज़र, महायाजक को भेजे गए थे, जिसमें विशेष रूप से एक उत्कृष्ट मेज पर जोर दिया गया है। फिर अरिस्टियास मन्दिर, याजकों, महायाजक के वस्त्र, और मन्दिर की सुरक्षा प्रणाली का वर्णन करते हैं, उसके बाद पलिश्तिन और उसके आसपास के क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

अगले भाग में, महायाजक सिकंदरिया जाने से पहले अरिस्टियास और अनुवादकों से बातचीत करते हैं। उनके भाषण का सारांश एक दार्शनिक दृष्टिकोण से व्यवस्था की सावधानीपूर्वक रक्षा को प्रस्तुत करता है। सिकंदरिया में आगमन पर राजा 72 अनुवादकों (प्रत्येक गोत्र से 6) के लिए एक भव्य भोज का आयोजन करते हैं। प्रत्येक अनुवादक सात लगातार रातों के समारोहों में राजा के विशिष्ट प्रश्नों का उत्कृष्ट उत्तर देता है। प्रत्येक अनुवादक का नाम और उसके प्रश्न और उत्तर दर्ज किए गए हैं। फिर कार्य पूरा होता है, और इसे 72 दिनों में फारोस द्वीप पर पूरा किया जाता है, जो सिकंदरिया के यहूदियों और राजा दोनों द्वारा प्रशंसा प्राप्त करता है। अनुवादकों को भव्य उपहारों के साथ विदा किया जाता है।

उपसंहार में, लेखक दावा करते हैं कि वे घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं और उनका विवरण सटीक है। आधुनिक विद्वान इसे नहीं मानते। इसकी अलंकरण और पौराणिकता की गुणवत्ता को पाँचवीं शताब्दी ई.पू. में पहचाना गया था। अरिस्टियास की अनुवाद प्रक्रिया पर चर्चा, यहूदी धर्म की मूर्तिपूजक दुनिया में रक्षा करने के लिए एक सुविधाजनक साहित्यिक रूपरेखा थी। धार्मिक उदारता और मूल यहूदी विश्वासों के प्रति निष्ठा को कुशलतापूर्वक मिलाकर यहूदियों के लिए राजनीतिक सहिष्णुता की अपील की गई थी। अरिस्टियास के पत्र के कई विशेष विवरण संदेहास्पद हैं, लेकिन सेप्टुआजिंट अनुवाद कैसे अस्तित्व में आया, इसके मूल चित्रण को विश्वसनीय माना जा सकता है। सेप्टुआजिंट पर चर्चा के लिए *देखें*"बाइबल के संस्करण (प्राचीन)।

शिशु का अर्मेनियाई सुसमाचार

यह यीशु मसीह के बाल्यावस्था और किशोरावस्था का एक पौराणिक विवरण है, उन कई अपोक्रिफल सुसमाचारों में से एक है, जिन्हें यीशु के प्रारंभिक जीवन के बारे में अधिक जानकारी देने के लिए चार नया नियम सुसमाचारों को पूरक करने के उद्देश्य से लिखा गया था। संभवतः इसका अनुवाद अर्मेनियाई में एक सिरिएक मूल से किया गया था। ऐसा माना जाता है कि नेस्टोरियन मिशनरियों ने लगभग 590 ईस्वी में "इन्फेंसी गोस्पेल" को अर्मेनिया में लाया, परंतु वर्तमान रूप में यह संभवतः वही नहीं है।

अर्मेनियाई सुसमाचार के स्रोतों में मसीह के बाल्यावस्था के बारे में पौराणिक सामग्री वाली दो पुस्तकें, द प्रोटेवैंजेलियम ऑफ जेम्स और इन्फेंसी गोस्पेल ऑफ थॉमस शामिल हैं। अर्मेनियाई सुसमाचार इन दोनों ग्रंथों की सामग्री को बहुत विस्तार देता है और यीशु के जीवन में कई नवीन जोड़ करता है। उदाहरण के लिए, यूसुफ एक दाई की तलाश करता है और हव्वा से मिलता है, जो प्रतिज्ञात उद्धारकर्ता-बीज के पूरा होने का गवाह बनने आई है (उत 3:15)। बाद में, ज्योतिषी आदम द्वारा सेथ को दी गई करार को लाते हैं। यीशु, एक बच्चे की मृत्यु का कारण बनने का आरोप झेलते हैं, परन्तु जब वह बच्चा मरे हुओं में से उठ खड़ा होता है, तो यीशु निर्दोष साबित होते हैं।

यशायाह का आरोहण

*देखें*का आरोहण, यशायाह (निचे)।

याकूब के आरोहण

*देखें*का आरोहण, याकूब (निचे)।

आसनत की प्रार्थना

यहूदी कहानी जो यूसुफ की पत्नी आसनत के बारे में है, जब वह मिस्र में था (उत 41:45)। इसे कई शीर्षकों से जाना जाता है—आसनत का जीवन और अंगीकार, यूसुफ और आसनत की पुस्तक, और उपरोक्त के कुछ अन्य रूप। यह कहानी प्रारंभिक और मध्यकालीन मसीही चर्च में बहुत लोकप्रिय थी। लातीनी, सिरियक, स्लावोनिक, रूमानियाई, और इथियोपियाई संस्करणों के अलावा 40 अर्मेनियाई प्रतियाँ पाई गई हैं।

आधुनिक विद्वान आमतौर पर उपन्यास के स्रोत को 100 ई. पू. से 100 ई. तक मिस्र में प्रचलित यूनानिय यहूदी मत में देखते हैं। आसनत किसी भी यहूदी मत में धर्मांतरित व्यक्ति के लिए एक आदर्श के रूप में प्रतीत होती हैं। यदि यह समझ सही है, तो यह कहानी मसीहपूर्व यहूदी धर्म के एक ऐसे वर्ग

की कम कठोरतावादी दृष्टिकोण को मूल्यवान अंतर्दृष्टि देती है। अपनी पापपूर्ण स्थिति की निराशाजनकता का पश्चातापपूर्ण एहसास और स्वयं को परमेश्वर की दया पर छोड़ देना कहानी में एक बड़ा हिस्सा निभाता है।

मूल रूप से यह शायद यूनानी में लिखा गया था और इसे दो प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। भाग I में आसनत के युसुफ से मिलने से पहले के लाड़-प्यार भरे जीवन, उसकी मूर्तिपूजा के कारण युसुफ द्वारा उसकी प्रारंभिक अस्वीकृति, और उसके परिणामस्वरूप उसकी राख में मन फिराव का वर्णन है। आसनत प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारती हैं, और वह उनके पास एक स्वर्गदूत को भेजते हैं जो उनकी क्षमा की घोषणा करता है और कहता है कि उनका नाम अब जीवन की पुस्तक में लिखा गया है। युसूफ लौटते हैं और आसनत की नई सुंदरता पर आश्चर्यचकित होते हैं, उनकी परिवर्तन पर आनंदित होते हैं। फिरौन के आशीर्वाद से वे अगले दिन विवाह करते हैं।

भाग II उस अवधि का वर्णन करता है जब यूसुफ के पिता, याकूब, और उनका परिवार मिस्र आ चुके हैं। आसनत को प्राप्त करने की इच्छा से फिरौन का बड़ा पुत्र यूसुफ के भाइयों दान और गाद को उसकी सहायता के लिए प्रलोभित करता है ताकि वह आसनत का अपहरण कर सके। इस योजना को यूसुफ के अन्य भाइयों द्वारा विफल कर दिया जाता है, जो फिर दान और गाद को मारने की इच्छा रखते हैं, परन्तु आसनत उनकी जान बचाने के लिए सफलतापूर्वक विनती करती हैं। फिरौन ताज यूसुफ को सौंप देते हैं, जो 40 वर्षों तक शासन करते हैं और फिर शासन फिरौन के छोटे पुत्र को लौटा देते हैं।

आशेर का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

मूसा का आरोहन

*देखें*का आरोहन , मूसा (निचे)

बरनबास की कृतियाँ

बरनबास के बारे में कई विशिष्ट परंपराओं के चक्रों में से एक दस्तावेज़, जो प्रेरित पौलुस के साथी थे, इस दस्तावेज़ में उन्हें साइप्रस से जोड़ा गया है। इस कार्य का पूरा शीर्षक संत बरनबास प्रेरित की यात्राएँ और शहादत है, और इसे संभवतः पांचवीं शताब्दी के अंत या छठी शताब्दी ई. की शुरुआत में साइप्रस में लिखा गया था।

यह पुस्तक युहन्ना मरकुस द्वारा लिखे गए प्रथम-पुरुष के विवरण होने का दावा करती है। वह दावा करते हैं कि उन्होंने पेरगा में प्रेरितों को छोड़ दिया (पुष्टि करें प्रेरि 13:13) ताकि वह पश्चिम की ओर जा सकें परन्तु उन्हें रोका गया। जब उन्होंने अन्ताकिया में फिर से जुड़ने की कोशिश की, तो पौलुस ने उन्हें मना कर दिया। परिणामस्वरूप, कुछ विवाद के बाद, युहन्ना मरकुस और बरनबास साइप्रस के लिए रवाना हो गए। कई लोगों को उपदेश देने और चंगा करने के बाद, बरनबास ने अपने पुराने विरोधी, बार-यीशु का सामना किया, जिसने अंततः यहूदियों को उकसाया कि वे उन्हें पकड़ लें। सालामिस शहर से बाहर ले जाते हुए, उन्होंने उन्हें घेर लिया और जीवित जला दिया। युहन्ना मरकुस और कुछ अन्य विश्वासी उनकी राख को साथ लेकर भागे और उन्हें एक गुफा में, उन शास्त्रों के साथ जो बरनबास ने मत्ती से प्राप्त किए थे दफना दिया। इसके बाद युहन्ना मरकुस सेवा करने के लिए सिकन्दरिया चले गए।

बरनबास की पत्री

यह गुमनाम पत्री एक प्रश्न को संबोधित करता है जो प्रारंभिक कलीसिया में अक्सर पूछा जाता था: मसीही विश्वास का यहूदी मत के साथ क्या संबंध होना चाहिए? क्लेमेंट ऑफ सिकन्दरिया ने इस दस्तावेज़ से अक्सर उद्धृत किया और इसे "बरनबास, जिन्होंने स्वयं भी प्रेरित [पौलुस] के साथ प्रचार किया था" के रूप में वर्णित किया। जेरोम ने भी यही माना। परन्तु लेखक ने खुद को बरनबास होने का दावा नहीं किया है, और लेखन का सबसे प्रारंभिक दावा केवल सिकन्दरिया के कलीसिया के अगुवे से आता है। साहित्यिक और व्याख्यात्मक शैली पूरी तरह से सिकन्दारिया है, इसलिए यह माना जाता है कि यह पत्री सिकन्दरिया में लिखी गई थी।

इस पत्री के लेखक स्पष्ट रूप से यहूदी मत और यीशु मसीह के सुसमाचार के बीच किसी भी संबंध को नकारते हैं। साथ ही, वे यह नहीं कहते कि पुराना नियम नया नियम का विरोध करता है; बल्कि, वे व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं में हर जगह मसीही विश्वास को देखते हैं। वे मानते हैं कि सभी यहूदी धार्मिक अनुष्ठान और समारोह मसीह की ओर संकेत करने वाले रहस्यमय संकेत हैं और एक दुष्ट स्वर्गदूत ने यहूदियों को इसे समझने से अंधा कर दिया है।

पत्री में यरूशलेम के विनाश का उल्लेख है, इसलिए इसे ई. 70 से पहले नहीं लिखा गया था। ई. 132 में यरूशलेम का दूसरा विनाश हुआ जिसने बार-कोखबा के विद्रोह को समाप्त कर दिया। यह हार लेखक के उद्देश्यों के लिए इतनी अच्छी तरह से काम करती कि वह निश्चित रूप से इसका उल्लेख करते यदि वह घटना के बाद लिख रहे होते। कई विद्वानों का सुझाव है कि पत्र लगभग 130 के आसपास लिखा गया था, क्योंकि यह एक मजबूत यहूदी राष्ट्रवाद का समय था। इस राष्ट्रवाद ने कई यहूदी मसीहियों पर यहूदी मत में लौटने का दबाव डाला होगा, और इसलिए बरनाबास के पत्र के लेखक ने यहूदी मत के खिलाफ मसीही विश्वास की रक्षा के लिए लिखा।

बरनाबास का पत्री दो भागों में विभाजित है। पहला भाग (अध्याय 1–17) पुराना नियम की रूपकात्मक व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है। ये अत्यंत आत्मिक और रहस्यमय व्याख्याएँ

यहूदी विधानवाद का विरोध करने और यह समझाने के लिए हैं कि पुराना नियम यीशु मसीह की भविष्यद्वानी कैसे करता है। लेखक स्वीकार करते हैं कि मूसा, दाऊद, और भविष्यद्वक्ताओं जैसे धर्मी लोग मूसा की व्यवस्था का सच्चा अर्थ समझते थे, परन्तु वे तर्क करते हैं कि इस्राएल की बाकी जाति ने परमेश्वर की वाचा को गलत समझा। इसलिए, यहूदियों ने वाचा के आशीर्वादों का दावा खो दिया, जो इसके बजाय मसीहीयों को स्थानांतरित कर दिए गए। इस रूपकात्मक व्याख्या की शैली सिकन्दरिया के कलीसिया के अगुवों के बीच बहुत लोकप्रिय थी। नए नियम कि इब्रानियों की पत्री भी इस प्रकार की व्याख्या का उपयोग करती है। बरनाबास के लेखक अक्सर सप्तुआजिंट से उद्धरण देते हैं, यद्यपि उद्धरण थोड़े स्वतंत्र रूप से किए गए हैं।

1859 में कोडेक्स सिनैटिकस की खोज तक बरनाबास की पत्री का पहला भाग केवल लातीनी संस्करण के रूप में ही जाना जाता था। इस कोडेक्स में बरनाबास की पत्री का पहला ज्ञात यूनानी संस्करण शामिल था, जिसे नये नियम की पुस्तकों के साथ-साथ द शेफर्ड और द डिडाके के साथ जोड़ा गया था। यूनानी संस्करण में एक दूसरा भाग शामिल है जो इस प्रकार शुरू होता है, "अब हम एक बिल्कुल अलग प्रकार के निर्देश की ओर बढ़ें।" इस भाग में नैतिक उपदेश शामिल हैं जो अंधकार के मार्ग को प्रकाश के मार्ग के विपरीत दिखाते हैं, जिनमें से अधिकांश डिडाचे के "दो मार्ग" से प्रतिलिपि किए गए प्रतीत होते हैं। इसका पहले भाग से बहुत कम संबंध है। इसने कई विद्वानों को यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया है कि दूसरा भाग किसी अन्य लेखक द्वारा किसी बाद की तारीख में जोड़ा गया था।

बरनबास का सुसमाचार

14 वीं शताब्दी में इस्लाम में परिवर्तित एक व्यक्ति द्वारा वास्तव में लिखित लंबा इतालवी कार्य। उन्होंने शायद गेलेशियन डिक्री में ऐसे सुसमाचार के रहस्यमय उल्लेख का लाभ उठाने की कोशिश की, जो ई. सन् छठी शताब्दी से पहले नहीं लिखा गया था। अब तक, बरनबास द्वारा एक प्रामाणिक सुसमाचार का कोई अन्य प्रमाण नहीं मिला है, एक ऐसा तथ्य जिसने कई विद्वानों को संदेह में डाल दिया है कि क्या यह कभी अस्तित्व में था।

बरतुल्मै की कृतियाँ

प्रारंभिक मसीही उपन्यास जो प्रेरित बरतुल्मै के अंतिम दिनों और मृत्यु का वर्णन करने का दावा करता है। इस कार्य को पवित्र और महिमामय प्रेरित बरतुल्मै की शहादत के रूप में भी जाना जाता है। यह संभवतः पांचवीं या छठी शताब्दी ई. का हो सकता है और इसे स्पष्ट रूप से अच्छी तरह से प्राप्त किया गया था, क्योंकि इसकी प्रतियां लातीनी, यूनानी, अर्मेनियाई और इथियोपियाई में मौजूद हैं।

इन कार्यों में, बरतुल्मै भारत में जाते हैं, एक मूर्तिपूजक मन्दिर में रहते हैं, और उसकी झूठी भविष्यद्वानी को समाप्त कर देते हैं। फिर, बरतुल्मै एक दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति को ठीक करते हैं, जिससे राजा पोलीमियुस का ध्यान उनकी ओर जाता है। बरतुल्मै राजा की दुष्टात्मा से पीड़ित बेटी को भी ठीक करते हैं। इसके बाद, वे मन्दिर से झूठे देवता को बाहर निकाल देते हैं। इस शक्ति के प्रदर्शन के बाद, कई लोग सुसमाचार पर विश्वास करते हैं। हालाँकि, राजा का भाई क्रोधित हो जाता है और बरतुल्मै को पीटने और सिर काटने का आदेश देता है। उसके इस अविवेकी कार्य का शीघ्र ही बदला लिया जाता है, क्योंकि उसे एक दुष्टात्मा द्वारा गला दबाकर मार दिया जाता है। नेक राजा पोलीमियुस बिशप बन जाते हैं और 20 वर्षों तक सेवा करते हैं।

बरतुल्मै का प्रकाशन

किसी-किसी कोप्टिक ग्रंथ के खंड जो अपोक्रिफल गोस्पेल ऑफ बरतुल्मै से कुछ समानताएँ रखते हैं। कुछ विद्वानों का मानना था कि इन खंडों में दो रचनाओं का प्रतिनिधित्व किया गया है — एक सुसमाचार और एक प्रकाशन। हालाँकि इस सिद्धांत को आम तौर पर त्याग दिया गया है, विवादास्पद बरतुल्मै के प्रकाशन का संदर्भ अभी भी मिलता है।

*यह भी देखें*बरतुल्मै का सुसमाचार (नीचे)।

बरतुल्मै द्वारा मसीह के पुनरुत्थान की पुस्तक

अपोक्रिफल कृति, जो केवल कोप्टिक में मौजूद है और संभवतः ईस्वी पाँचवीं या छठी शताब्दी की है। अन्य अप्रामाणिक लेखों की तरह, यह मसीह के जीवन के विवरणों को बाइबल सुसमाचारों में मिलने वाले विवरणों में जोड़ने का दावा करती है। कहा जाता है कि यह पुस्तक बरतुल्मै ने अपने पुत्र तद्दै को संबोधित की थी, जिसमें उसे चेतावनी दी गई थी कि इस पुस्तक को किसी अविश्वासी और विधर्मी के हाथ में न आने देना। यह पुस्तक एक कथा के रूप में नहीं मानी जा सकती; इसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से बरतुल्मै की महिमा करना है, जो अन्य लोगों से छिपी हुई बातें देखता है। ग्रंथ में कई विघटन हैं; विरोधाभास प्रचुर मात्रा में हैं और इतिहास की अनदेखी स्पष्ट है। यीशु के शव को दो अलग-अलग लोग दफनाते हैं — यूसुफ और फिलोजिनेस, उस लड़के का पिता जिसे यीशु ने चंगा किया था। मरियम, यीशु की माता, को मरियम मगदलीनी के साथ भ्रमित किया गया है। अंतिम भोज के विवरण में लेखक रोटी और दाखमधु के बारे में बाइबल के कथन से बहुत आगे जाता है: "उसका शरीर उस मेज पर था जिसके चारों ओर वे एकत्र थे; और उन्होंने इसे विभाजित किया। उन्होंने देखा कि यीशु का रक्त एक जीवित रक्त की तरह प्याले में बह रहा है।" पुनरुत्थान के विवरण में कल्पनाशील बातें भी जोड़ी गई हैं। मसीह, उदाहरण के लिए, अपने साथ अधोलोक से आदम को वापस लाता है। संदेह करने वाले थोमा की कहानी को भी विस्तृत किया गया है।

पुनरुत्थान की पुस्तक का सबसे सम्पूर्ण पाठ लंदन के ब्रिटिश म्यूज़ियम में है। कई अन्य भाग मौजूद हैं, संभवतः एक पहले के संस्करण से।

बरतुल्मै का सुसमाचार

दूसरी शताब्दी के बाद के कई अपोक्रिफल सुसमाचारों में से एक, जो किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम से जारी किया गया। प्रारंभिक कलीसिया न केवल इन लेखों के अस्तित्व से अवगत थी बल्कि उनके काल्पनिक चरित्र से भी परिचित थी। चौथी सदी में कलीसिया के इतिहासकार यूसेबियस ने इन्हें विधर्मी, जाली, बेतुका, और अधार्मिक बताया। बाद में बरतुल्मै के सुसमाचार का नाम से उल्लेख किया गया, अन्य ग्नोस्टिक सुसमाचारों के साथ, जेरोम की मत्ती के सुसमाचार पर टीका की प्रस्तावना में। हालांकि, इसका कोई प्रमाण नहीं है कि जेरोम ने ऐसा कोई पुस्तक देखा था या कि यह वास्तव में अस्तित्व में था।

एक कार्य जिसे बरतुल्मै के प्रश्न कहा जाता है, यूनानी, लैटिन, और स्लावोनिक ग्रंथों में मौजूद है—यूनानी पाठ संभवतः पांचवीं या छठी शताब्दी से है। इसके पाठ में बरतुल्मै यीशु से पूछते हैं कि वे क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद कहाँ गए थे और यीशु उन्हें बताते हैं कि वे अधोलोक में गए थे। बाद में बरतुल्मै को मरियम से पूछते हुए दिखाया गया है कि उन्होंने अवर्णनीय को कैसे गर्भ धारण किया या उन्हें कैसे जन्म दिया जिन्हें धारण नहीं किया जा सकता। मरियम उन्हें चेतावनी देती हैं कि यदि वे बताना शुरू करेंगी, तो उनके मुंह से आग निकलेगी और सारी दुनिया को भस्म कर देगी, परन्तु प्रेरित आग्रह करते हैं। जब वे स्वर्गदूत के दर्शन और घोषणा की कहानी बताती हैं, तो उनके मुंह से आग निकलती है। दुनिया समाप्त होने वाली होती है, परन्तु यीशु हस्तक्षेप करते हैं और मरियम के मुंह पर अपना हाथ रखते हैं। प्रेरित भी अथाह गड्ढा और "स्वर्ग में जो चीजें हैं" देखने की मांग करते हैं। बरतुल्मै को मनुष्यों के विरोधी, बेलियार, को 660 स्वर्गदूतों द्वारा नियंत्रित और अग्नि की जंजीरों से बंधा हुआ दिखाया जाता है। जब बरतुल्मै उसके गर्दन पर कदम रखते हैं, तो बेलियार बताते हैं कि उन्हें पहले सतनाएल कहा जाता था और बाद में शैतान, स्वर्गदूतों की सृष्टि का वर्णन करते हैं, और बताते हैं कि वे कैसे गिरे और कैसे उन्होंने हव्वा को धोखा दिया। अंत में, बरतुल्मै यीशु से सबसे बड़े पाप के बारे में पूछते हैं। यीशु उत्तर देते हैं कि किसी भी परमेश्वर के भक्त के खिलाफ कुछ भी बुरा कहना पवित्र आत्मा के खिलाफ पाप करना है।

बरूख का प्रकाशन

दो अलग-अलग छद्मग्रंथीय कृतियाँ।

1. 87 अध्यायों का एक छद्मग्रंथ यहूदी दस्तावेज, जो इब्रानी में लिखा गया और यूनानी में अनुवादित हुआ और फिर यूनानी से सिरियाई में अनुवादित हुआ। इब्रानी मूल के केवल कुछ पंक्तियाँ ही अभी भी अस्तित्व में हैं, जो रब्बी लेखनों में उद्धृत हैं। सिरियाई पांडुलिपि छठी या सातवीं शताब्दी ई. की है और यह एकमात्र पूर्ण पाठ है। इसमें कई लेखकों का योगदान और अपॉक्रिफ़ा में द्वितीय एस्द्रास की पुस्तक पर निर्भरता के प्रमाण मिलते हैं। कई अभिव्यक्तियों में नए नियम के समानता से पता चलता है कि यह मूलतः पहली सदी के उत्तरार्ध या दूसरी सदी के पूर्वार्ध में लिखा गया हो सकता है।

पाठ सात असमान लंबाई के खंडों में विभाजित है, जिसमें गद्य और काव्य सामग्री दोनों शामिल हैं। जिन विषयों पर चर्चा की गई है, वे मसीहा और उनके भविष्य के राज्य, इस्राएल की पिछली विपत्तियों, और बाबुलियों द्वारा यरूशलेम के विनाश से संबंधित हैं। पाप और पीड़ा, स्वतंत्र इच्छा, मसीहा द्वारा बचाए जाने वाले लोगों की संख्या, और धर्मियों के पुनरुत्थान जैसे धार्मिक प्रश्नों को हमेशा पाठ के भीतर सुसंगत रूप से नहीं निपटाया गया है। कुछ अंश इस्राएल के भविष्य की एक आशावादी तस्वीर पेश करते हैं; अन्य गहरे निराशावादी हैं। सामान्यतः, दुनिया भ्रष्टाचार का एक दृश्य है जिसके लिए कोई उपाय मौजूद नहीं है। एक नया और आध्यात्मिक संसार निकट है: “जो कुछ अब है वह कुछ भी नहीं है, परन्तु जो होगा वह बहुत महान है। क्योंकि जो कुछ भी नाशवान है वह समाप्त हो जाएगा, और जो कुछ भी मरता है वह चला जाएगा और वर्तमान समय, जो बुराइयों से दूषित है, सब समाप्त हो जाएगा।” वैकल्पिक आशावाद और निराशावाद यहूदी धर्म के प्रथम और द्वितीय शताब्दी ईस्वी में बदलती स्थिति या केवल विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। आशा का संदेश उन लोगों के लिए है जो मूसा की व्यवस्था का पालन करते हैं: "क्योंकि धर्मी न्यायपूर्वक अंत की आशा करते हैं और बिना भय के इस निवास से विदा होते हैं, क्योंकि तेरे पास उनके पास खजानों में सुरक्षित किए हुए कार्यों का संग्रह है।"

पुस्तक के अंतिम भाग को "वह पत्र जिसे नेरियाह के पुत्र बारूक ने नौ और आधे गोत्रों को भेजा था" के रूप में पहचाना गया है। इसे "उकाब की गर्दन से बाँधकर" भेजा गया था, संभवतः इसका अर्थ यह है कि इसे पलिश्तिन के बाहर फैले यहूदियों (प्रवासियों) के लिए भेजा गया था।

बरूख भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के साथी और सचिव थे (यिर्म 36:4–8) । उसका नाम कई अपॉक्रिफ़ा और अप्रमाणित लेखों से जुड़ा हुआ है, जो उसकी मृत्यु के बहुत बाद लिखे गए। सीरियाई बरूख के प्रकाशन को अपॉक्रिफ़ा में बरूख की पुस्तक (1 बरूख) से स्पष्ट रूप से अलग करने के लिए 2 बरूख भी कहा जाता है।

2. 17 अध्यायों का एक अप्रमाणित दस्तावेज़, जिसे बरूख का यूनानी प्रकाशन या 3 बरूख भी कहा जाता है। यह यूनानी, इथियोपियाई, अर्मेनियाई, और स्लावोनिक पांडुलिपियों में संरक्षित है। इसे पहली बार 1609 में वेनिस में और फिर 1868 में प्रकाशित किया गया था, हालांकि इसके अस्तित्व का सुझाव प्रारंभिक मसीही धर्मशास्त्री ओरिजेन ने दिया था। 2

बारूक की तरह, यह प्रकाशन दूसरी सदी ई. का एक मिश्रित दस्तावेज़ प्रतीत होता है परन्तु इसके विपरीत यह एक मसीही दस्तावेज़ है जिसका उद्देश्य अविश्वासी यहूदियों को चेतावनी देना और मसीहियों को उनके साथ धैर्यपूर्वक व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

बेसिलाइड्स का सुसमाचार

द्वितीय शताब्दी के एक ग्नॉस्टिक द्वारा सुसमाचारों पर विवादास्पद टिप्पणी। बेसिलाइड्स के लेखन केवल बाद में कई कलीसिया पिताओं द्वारा उद्धृत और खंडित रूप में शेष हैं। बेसिलाइड्स ने रोमी सम्राट हैड्रियन (ईस्वी 117–138) के शासनकाल के दौरान शिकंदरिया में शिक्षा दी। उसके शिक्षक ग्लॉशियास ने दावा किया कि वह प्रेरित पतरस का प्रत्यक्ष व्याख्याता था। बेसिलाइड्स ने कहा कि उसकी ग्नॉस्टिक योजना पतरस के परमेश्वर और मसीह के संबंध में विचारों पर आधारित थी। उसने परमेश्वर का वर्णन एक असंगत अस्तित्व के रूप में किया, जिसने तीन पुत्रत्व "उत्पन्न" किए। उत्तराधिकार में आरोहण और प्रबोधन के माध्यम से, सर्वोच्च परमेश्वर का सुसमाचार (द गोस्पेल ऑफ लाइट) अंततः यीशु पर अवतरित हुआ।

ओरिगेन ने कहा कि "बेसिलाइड्स ने आकोर्डिंग टू बेसिलाइड्स नाम का सुसमाचार लिखने का साहस किया।" शिकंदरिया के क्लेमेंट और चौथी सदी के एक खंड, एक्टे आर्केलाई के लेखक ने सोचा कि ओरिगेन ने एक अपॉक्रिफ़ा सुसमाचार का उल्लेख किया, जिसका शिक्षण आइरेनिअस के विवरण से लिया गया था। आज, बेसिलाइड्स के बारे में हिप्पोलिटस की समझ के अधिक अनुरूप, इस कार्य को केवल सुसमाचारों पर एक टिप्पणी माना जाता है। बेसिलाइड्स संभवतः बेसिलिडियन नामक एक ग्नॉस्टिक संप्रदाय के जादुई संस्कारों और अनैतिकता के लिए उत्तरदायी नहीं था, जो उसके पुत्र इसिडोर के नेतृत्व में था और सदी के अंत तक मिस्र में जारी रहा।

बिन्यामीन का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

मरियम का जन्म

प्रारंभिक ग्नॉस्टिक लेखन। "ग्नॉस्टिकों के पास एक पुस्तक है जिसे वे मरियम का जन्म (या अवतरण) कहते हैं, जिसमें भयंकर और घातक बातें हैं।" चौथी शताब्दी के बिशप एफिफानियस ने मरियम के जन्म का वर्णन करते हुए ऐसा कहा, एक ऐसा कार्य जो जीवित नहीं बचा है। मरियम के जन्म ने दावा किया कि यह प्रकट करता है कि जकर्याह, युहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पिता ने मन्दिर में क्या देखा—अर्थात, गधे के रूप में यहूदी ईश्वर । उन दिनों में उनके आलोचकों द्वारा यह आमतौर पर माना जाता था कि यहूदी और मसीही एक गधे-ईश्वर की उपासना करते थे। इस निंदात्मक कार्य को मरियम के जन्म के सुसमाचार के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो मरियम के जन्म, प्रारंभिक जीवन और यूसुफ के साथ विवाह का एक कल्पनाशील परन्तु अपेक्षाकृत हानिरहित विवरण है।

मरियम के जन्म का सुसमाचार

कहानियों का एक संग्रह, जो मरियम की कहानी को उसके जन्म से लेकर राजा हेरोदेस द्वारा बेतलेहेम में बच्चों के वध तक बताने का दावा करता है। इस प्रकार की सबसे पुरानी पांडुलिपि को बुक ऑफ द नेटिविटी ऑफ मैरी या गोस्पेल ऑफ जेम्स कहा जाता है, क्योंकि इसका दावा है कि इसे याकूब ने लिखा था, जो यीशु का सौतेला भाई था। इसे ईस्वी 150 में लिखा गया, क्योंकि प्रारंभिक मसीही लेखक जस्टिन ने इसे अपने *डायलॉग्स* (165) में उल्लेख किया है। पश्चिम में इसे पोस्टेल द्वारा पुनः खोजा गया, जिसने इसे यूनानी से लातीनी में अनुवादित किया (*प्रोटेवेंजेलियम जेकोबी*, 1552)। इसके खोने से पहले, इसकी दो प्रमुख लातीनी संशोधन उत्पन्न हुए: प्सयूडो-मैथ्यू और द गोस्पेल ऑफ द नेटिविटी ऑफ मैरी, जो क्रमशः छठी और नौवीं शताब्दी के आसपास संकलित किए गए थे। इन संशोधनों ने बुक ऑफ द नेटिविटी ऑफ मैरी को अधिक कल्पनात्मक कथाओं से समृद्ध किया और ये गोल्डन लेजेंड्स ऑफ जेम्स ऑफ वोरागिन (1230–1298) का आधार बने, जिसने मरियम की आराधना को बढ़ावा देने में सहायक भूमिका निभाई।

द बुक ऑफ द नेटिविटी ऑफ मैरी के अनुसार, मरियम का जन्म धनी, निःसंतान माता-पिता (योआकीम और अन्ना) के यहाँ उनके प्रार्थनाओं के उत्तर में स्वर्गदूत द्वारा होता है। वे मरियम को प्रभु को समर्पित कर देते हैं। छह माह की आयु में मरियम सात कदम चलती है, तो अन्ना उसके शयनकक्ष को एक पवित्र स्थान बना देती है, जहाँ कुछ भी अशुद्ध प्रवेश नहीं कर सकता, और यह प्रतिज्ञा करती हैं कि मरियम फिर से केवल मन्दिर में चलेगी। तीन वर्ष की आयु में मरियम को मन्दिर में रखा जाता है और उसे स्वर्गदूत से भोजन प्राप्त होती है। मरियम के बारहवें जन्मदिन पर महायाजक परमेश्वर से पूछता है कि क्या करना है और उसे एक विधुर से विवाह करने का निर्देश मिलता है। वृद्ध यूसुफ को तब चुना जाता है जब उसके डंडे से एक कबूतर निकलता है। कुछ महीनों बाद, मरियम बेतलेहेम की गुफा में यीशु को जन्म देती है, एक इतनी तेजस्वी ज्योति के माध्यम से कि कोई देख नहीं सकता; धीरे-धीरे ज्योति हट जाती है और बालक मरियम की गोद में प्रकट होता है। द बुक ऑफ द नेटिविटी ऑफ मैरी ज्योतिषियों और हेरोदेस द्वारा बच्चों के वध के वर्णन के साथ समाप्त होता है। मरियम यीशु को कपड़ों में लपेटकर और उसे चरनी में रखकर बचा लेती है।

हाल ही में एक अन्य यूनानी अंश, इस बार मरियम के सुसमाचार से, पाया गया है (चित्र देखें)। यह अंश इतना छोटा

है कि इससे इस सुसमाचार की सामग्री के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिलती।

मुर्गे की पुस्तक

इथियोपिया के कलीसिया द्वारा संरक्षित और अभी भी ईस्टर से पहले गुरुवार को वहां पढ़ी जाने वाली एक अप्रमाणिक कहानी। मुर्गे की पुस्तक के अनुसार, अंतिम भोज की रात, शमौन फरीसी की पत्नी अक्रोसिना, यीशु को रात के खाने के लिए अच्छी तरह से तैयार किया हुआ एक मुर्गा प्रस्तुत करती हैं। जब यहूदा कमरे से बाहर चला जाता है, तो यीशु मुर्गे को छूते हैं और वह जीवित हो जाता है। वह उसे यहूदा का पीछा करने और उसकी गतिविधियों की रिपोर्ट करने का निर्देश देते हैं। मुर्गा लौटता है और आने वाले विश्वासघात के बारे में बताता है, जिसमें तारसुस के पौलुस का भी उल्लेख होता है। शिष्य रोते हैं। यीशु मुर्गे को हजार वर्षों के लिए आकाश में भेज देते हैं।

इसी प्रकार की कहानी सहिदिक कॉप्टिक में एक अंश के रूप में मौजूद है। कॉप्टिक संस्करण में मुर्गे का पुनरुत्थान मसीह के पुनरुत्थान का प्रतीक है।

कुवांरी का कॉप्टिक जीवन

मिस्र की भाषा कॉप्टिक में यीशु की माता मरियम के बारे में अपोक्रिफल रचनाएँ। *देखें*वर्जिन, लाइफ ऑफ द (नीचे)।

तीसरा कुरिन्थियों

एक अपोक्रिफल पत्राचार, जो प्रेरित पौलुस और कुरिन्थियों की कलीसिया के बीच होने का दावा करता है। दूसरी शताब्दी के दौरान लिखा गया और 3 कुरिन्थियों के नाम से जाना जाता है, यह कार्य तीन भागों में विभाजित है: एक पत्री जो कथित रूप से कुरिन्थ के स्तेफनुस से पौलुस को लिखा गया है जिसमें दो झूठे प्रेरितों, शिमोन और क्लोबियस के बारे में बताया गया है; इसकी बताई गयी एक संक्षिप्त कथा; और पौलुस का उत्तर और झूठे सिद्धांत का खंडन। पत्रिओं का यह क्रम मूल रूप से प्रेरित पौलुस के कार्यों का हिस्सा था, जो एक लंबा अपोक्रिफल दस्तावेज़ था, परन्तु यह अपने आप में भी प्रचलित था—यह यहां तक कि अर्मेनियाई बाइबिल के पाठ में भी अपना स्थान बना लिया। यह उस पत्री का वर्णन करने का दावा करता है जिसका उल्लेख 2 कुरिन्थियों 2:4 में है और जो बड़ी व्याकुलता में लिखा गया था।

एक प्रारंभिक कलीसिया पिता, तेर्तुलियन (बपतिस्मे पर), के अनुसार तीसरा कुरिन्थियों का लेखक एशिया का एक प्रिस्बिटर (कलीसिया अगुवा) था, जिसने इसे पौलुस के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर ईस्वी 160 के तुरंत बाद लिखा। उस प्रिस्बिटर का पद से हटाया जाना यह दर्शाता है कि प्रारंभिक मसीही झूठे प्रेरितीय मूल के दस्तावेज़ों के लेखन के प्रति सख्त रवैया रखते थे।

दान का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

मुक्तिदाता का संवाद

एक मसीही ग्नोस्टिक दस्तावेज़, जिसे उद्धारकर्ता का संवाद भी कहा जाता है। यह दस्तावेज़ 1946 में मिस्र के ऊपरी क्षेत्र में आधुनिक नाग हम्मादी शहर के निकट प्राचीन नाग हम्मादी पुस्तकालय में पाया गया। संवाद यीशु और उनके कुछ शिष्यों के बीच की बातचीत का एक काल्पनिक विवरण है जिसमें वे सृष्टि, मानवता, अंत समय और मुक्ति के बारे में प्रश्नों पर चर्चा करते हैं। पांडुलिपि खराब स्थिति में है। इसकी लेखनी और उत्पत्ति अज्ञात हैं, हालांकि यह संभवतः दूसरी या तीसरी शताब्दी ई. के दौरान मिस्र में लिखी गई थी।

थियोडोसियस का प्रवचन

आसम्पसन ऑफ द वर्जिन के कॉप्टिक बोहरिक संस्करण का एक मुख्य स्रोत। *देखें*वर्जिन, आसम्पसन ऑफ द (नीचे)।

डॉक्टरीना अद्दाई

मसीह और अबगरुस के पत्रों का विस्तारित सिरिएक रूप, लगभग 400 ई. में लिखा गया। डॉक्टरीना अद्दाई अबगार (अबगरुस), एदेसा के राजा, और यीशु मसीह के बीच संपर्क की कहानी बताता है। कहा जाता है कि अबगार, जो एक अज्ञात बीमारी से पीड़ित था, ने यीशु को एक दूत भेजा, जिसमें उसने राजा की ओर से चंगाई के लिए अनुरोध और अपने राज्य में पवित्र स्थान में शरण देने का प्रस्ताव भेजा। यीशु मौखिक उत्तर देते हैं, यह वादा करते हुए कि वह अपने स्वर्गारोहण के बाद अपने एक अनुयायी को अबगार के पास भेजेंगे। अबगार का दूत यीशु का एक आत्म-चित्र भी साथ ले जाता है जो एदेसा का गौरव बन जाता है। बाद में अद्दाई राज्य में आता है, अबगार को चंगा करता है और वहाँ मसीहियत की स्थापना करता है। *देखें* अबगरुस, मसीह की पत्रियाँ और (ऊपर)।

एबियोनाइट्स का सुसमाचार

एक प्रारंभिक मसीही लेखक एपिफेनियस (चौथी सदी) द्वारा उद्धृत सुसमाचार, जो झूठी शिक्षाओं के विरुद्ध एक रचना में था। एबियोनाइट्स का सुसमाचार संभवतः आपोक्रिफल गोस्पेल ऑफ द हिब्रुस ही है, हालांकि कुछ विद्वान इसे गोस्पेल ऑफ नासरीन्स के साथ जोड़ते हैं। एबियोनाइट्स शाकाहारी थे; एपिफेनियस के उद्धरण यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु की शाकाहारी जीवनशैली पर जोर देते हैं।

मिस्रियों का सुसमाचार

एक ही नाम से दो आपोक्रिफल रचनाएँ।

1. दूसरी सदी ईस्वी का आपोक्रिफल यूनानी लेखन, जिसका उल्लेख प्रारंभिक चर्च लेखकों, क्लेमेंट और ओरिगेन द्वारा किया गया है। यह मिस्र में उपयोग में था और इसमें ग्नॉस्टिक शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार होता प्रतीत होता है, विशेष रूप से वे शिक्षाएँ जिन्हें सीरिया में शिमोन और मेनांडर द्वारा बढ़ावा दिया गया था। इन ग्नॉस्टिक्स के अनुसार विवाह, मांसाहार, और संतानोत्पत्ति बुरे थे। क्लेमेंट ने संभवतः इस लेखन से उद्धरण देकर एनक्रेटाइट्स के विश्वासों का खंडन किया होगा, जो इन विषयों पर सीरियाई ग्नॉस्टिक्स से मोटे तौर पर सहमत थे। क्लेमेंट द्वारा उपयोग किए गए उद्धरणों में ग्नॉस्टिक्स द्वारा स्त्रियों के प्रति अवमूल्यन की भावना परिलक्षित होती है।

2. 1946 में चेनोबोसकियन (मिस्र) में नाग हम्मादी के ग्नॉस्टिक लेखनों के संग्रह में खोजी गई रचना। इस कार्य का प्रमुख शीर्षक, जिसे कोलफॉन में "गोस्पेल ऑफ द इजिपसियन" कहा गया था, "सेक्रेड बुक ऑफ द ग्रेट इनविजिबल स्पिरिट" था। यह रचना "द प्राईमल स्पिरिट ऑफ द कॉसमॉस" से होने वाले उत्सर्जनों से संबंधित थी और संभवतः बार्बेलो ग्नॉस्टिक संप्रदाय की एक कृति थी।

एलदाद और मेदाद की पुस्तक

पूर्व-मसीही छद्मग्रंथ जिसमें एलदाद और मेदाद की कथित भविष्यद्वानियाँ शामिल हैं, जिन्हें मूसा द्वारा प्रधानों के रूप में नियुक्त किया गया था (गिन 11:26) । चूंकि उनकी भविष्यद्वानी की प्रकृति निर्दिष्ट नहीं की गई थी, इसने एक खोए हुए कार्य को जन्म दिया जिसका उल्लेख द शेफर्ड ऑफ हर्मास में इस प्रकार है: "प्रभु उनके निकट हैं जो उनकी ओर लौटते हैं, जैसा कि लिखा है एलदाद और मेदाद में जिन्होंने जंगल में लोगों से भविष्यद्वानी की थी" (दर्शन II, अध्याय 3) । खोई हुई पुस्तक के बारे में जानकारी का यही एकमात्र स्रोत है।

युगनोस्तोस का पत्र

ग्नॉस्टिक रचना। आधुनिक शहर नाग हम्मादी के पास पाया गया, युगनोस्तोस की पत्री एक शिक्षक द्वारा अपने शिष्य को कॉप्टिक में लिखा गया था। लेखक और रचना की तिथि दोनों अज्ञात हैं। गैर-मसीही ग्नॉस्टिक लेखन का एक प्रारंभिक उदाहरण, यह संभवतः मसीही ग्नॉस्टिक रचना "द विजडम ऑफ जीसस क्राइस्ट" का आधार बना।

युगनोस्तोस का पत्र एक अदृश्य आत्मिक क्षेत्र के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास करता है। यह मनुष्य से परमेश्वर की दूरता पर भी जोर देता है।

हव्वा का सुसमाचार

ग्नॉस्टिक और प्रकाशन से संबंधित लेखन, जिसे केवल साइप्रस के चौथी सदी के उत्तरार्ध के मेट्रोपॉलिटन एपिफेनियस के एक उद्धरण के माध्यम से जाना जाता है। एपिफेनियस ने हव्वा के सुसमाचार को ग्नॉस्टिक और ओरिगेनवादी शिक्षाओं के एक कठोर खंडन में उद्धृत किया। स्पष्ट रूप से, हव्वा के चारों ओर एक पंथ का गठन हुआ था, जैसे कि उसका नाम प्रकाशन का संकेत देता हो क्योंकि अदन की वाटिका में सर्प ने उससे बात की थी। एपिफेनियस का हव्वा के सुसमाचार से उद्धरण कुछ इस प्रकार है: "मैं एक ऊँचे पर्वत पर खड़ा था और मैंने एक विशाल और एक दुर्बल व्यक्ति को देखा, और मैंने गड़गड़ाहट जैसी आवाज़ सुनी। उसने मुझसे कहा, 'मेरे निकट आओ और सुनो,' और उसने मुझसे कहा, 'मैं तुम हूँ और तुम मैं हो। तुम जहाँ भी हो, वहाँ मैं हूँ। मैं सभी वस्तुओं में फैला हूँ, और कोई भी स्थान जहाँ तुम शरण ले सकते हो या मुझमें शरण पा सकते हो; और मुझमें शरण लेने का अर्थ है कि तुम अपने आप में शरण पा रहे हो।'"

यहेजकेल, अपोक्रिफल

यहेजकेल की एक गैर-आधिकारिक पुस्तक का उल्लेख पहली सदी के यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने किया है। एक अपोक्रिफल यहेजकेल का उल्लेख पाँच प्रारंभिक मसीही लेखनों और एक हाल की पुरातात्विक खोज में भी किया गया है। चौथी सदी के बिशप एपिफेनियस ने यहेजकेल की एक दृष्टांत का उद्धरण दिया है, जो एक अंधे व्यक्ति और एक लंगड़े व्यक्ति के बगीचे को लूटने में सहयोग करने की कहानी द्वारा आत्मा और शरीर के पुनरुत्थान को प्रमाणित करता है। रोम के क्लेमेंट ने कुरिन्थियों को लिखते हुए (लगभग ईस्वी 90) और शिकंदरिया के क्लेमेंट ने अपनी दो रचनाओं (लगभग ईस्वी 200) में गैर-आधिकारिक यहेजकेल उद्धरण दिए हैं। एक यहेजकेल के अपोक्रिफोन लेख का उल्लेख झूठे अथानासियाई कैनन में भी किया गया है (जो बाइबल की आधिकारिक पुस्तकों की सूची देने का दावा करता है) और इसका नाम नाइसफोरस, कांस्टेंटिनोपल के पैट्रिआर्क (ईस्वी 806–815) की 'स्टिकोमेट्री' (लयबद्ध गद्य) में आता है। 1940 में, कैम्पबेल बोनर ने यूनानी पेपिरस के कुछ अंश प्रकाशित किए, जो अपोक्रिफल यहेजकेल की उपस्थिति की पुष्टि करते हैं।

एज्रा की चौथी पुस्तक

अपोक्रिफल पुस्तक 2 एसद्रास का एक अन्य नाम। *देखें* एस्द्रास की दूसरी पुस्तक।

गाद का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

उत्पत्ति का अपोक्रिफन

यह नाम उन सात बड़े मृत सागर कुण्डलपत्रों में से एक को दिया गया है जो 1947 में पहली कुमरान गुफा से प्राप्त हुए थे। अन्य तीन के साथ यह यरूशलेम के सीरियाई आर्चबिशप के

कब्जे में आया, लेकिन बुरी तरह से संरक्षित होने के कारण इसे खोला और फोटो नहीं खींचा जा सका, क्योंकि इसे अन्य ग्रंथों की तरह मिटटी के पात्र में नहीं रखा गया था। कुछ छोटे टुकड़े अलग हो गए थे, और उन पर कुछ शब्दों से संकेत मिला कि यह कुलपिता हनोक से जुड़ी एक अपोक्रिफाल अरामी रचना हो सकती है। आगे के टुकड़ों में लामेक का भी उल्लेख किया गया, इसलिए इस ग्रंथ का अस्थायी नाम उस प्राचीन व्यक्ति के लिए रखा गया।

अंततः इसे खोला गया और पाया गया कि यह न केवल क्षतिग्रस्त बल्कि अधूरा था; इसकी शुरुआत और अंत गायब थे। आंतरिक भाग सबसे अच्छा संरक्षित था, लेकिन उस स्याही के कारण इसे काफी नुकसान हुआ था जिससे इसे लिखा गया था। इस ग्रंथ में केवल हनोक और लामेक का ही नहीं बल्कि उत्पत्ति की पुस्तक में उल्लिखित अन्य व्यक्तियों का भी उल्लेख था। यह उत्पत्ति के कुछ हिस्सों का अरामी रूप साबित हुआ जिसमें कुलपिताओं के बारे में किंवदंतियाँ और अन्य सामग्री संस्मरण शैली में प्रस्तुत की गई थी, जो इब्रानी बाइबल में नहीं मिलती। यह शैली मसीही युग की शुरुआत में भक्त यहूदियों में लोकप्रिय थी, इसलिए इसकी मूल रचना को पहली शताब्दी ईसा पूर्व का माना गया है। कुमरान प्रति संभवतः 50 ईसा पूर्व और 70 ईस्वी के बीच लिखी गई थी।

चर्मपत्र के साहित्यिक विशेषताओं ने कुछ वर्गीकरण समस्याएँ उत्पन्न की हैं। स्वतंत्र विस्तार और गैर-बाइबल सामग्री के समावेश ने कुछ विद्वानों को ग्रंथ को उत्पत्ति के पाठ का "तारगुम" या टिप्पणी-प्रसार कहा है। अन्य विद्वानों ने इसे एक "मिद्राश" या इब्रानी कथा का उपदेशात्मक विवरण माना है। ग्रंथ में दोनों तत्व शामिल हैं और इसे उत्पत्ति की कुछ कहानियों का स्वतंत्र पुनर्कथन माना जाता है, जिसमें कल्पनाशील सामग्री जैसे कुलपिता अब्राहम की पत्नी सारा की सुंदरता का वर्णन; स्वप्न; और विपत्तियों और यात्राओं के विवरण शामिल हैं।

अरामी अपोक्रिफन, मसीह के समय में पलिश्तिन में प्रयुक्त अरामी से कुछ पहले का है। इसमें कुछ इब्रानी शब्दावली है, लेकिन अधिकांश में अच्छी अरामी भाषा में लिखा गया है, जिसका अधिकांश हिस्सा बाइबल अरामी के समानांतर है। हालाँकि, ग्रंथ की भाषा पुरानी अरामी (दसवीं से आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व) या आधिकारिक अरामी (असुरी और फारसी काल) की अवधि के बाद की है, जैसा कि कुछ व्याकरणिक रूपों की उपस्थिति से स्पष्ट है। अधिकांश विद्वान भाषा को मध्य अरामी मानते हैं और इसे दानिय्येल की अरामी और बाद की पश्चिमी अरामी के बीच रखते हैं। वे विद्वान सामान्यतः दानिय्येल को दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की तारीख देते हैं, लेकिन यह निष्कर्ष संशोधित करने की आवश्यकता है क्योंकि कुमरान सामग्री से पता चलता है कि कोई भी धार्मिक रचना लगभग 350 ईसा पूर्व के बाद की नहीं है। किसी भी प्रमाण पर, दानिय्येल की अरामी उत्पत्ति अपोक्रिफन की अरामी से पहले की है और उस अवधि में अच्छी तरह से फिट बैठती है जब आधिकारिक अरामी भाषा का प्रमुख रूप थी। उत्पत्ति का अपोक्रिफन दानिय्येल या एज्रा की अरामी को छठी से पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के बाद का मानने का कोई उचित कारण प्रस्तुत नहीं करता।

थोमा का सुसमाचार

*देखें*का सुसमाचार, थोमा (नीचे)।

यशायाह का आरोहण

छद्मलेखीय प्रकाशनात्मक कार्य, जो प्रारंभिक मसीहियों में प्रसिद्ध था; इसे यशायाह की शहादत, हेजेकिय्याह का करार, और यशायाह का दर्शन भी कहा जाता है। इसे पुनः खोजा गया जब इस पाठ के इथियोपियाई संस्करण का एक भाग 1819 में प्रकाशित हुआ। पूरा इथियोपियाई संस्करण ही एकमात्र पूर्ण संस्करण है। एक आंशिक लातीनी पाठ 1832 में प्रकाशित हुआ था, जिसे तीन शताब्दियों पहले वेनिस में प्रकाशित किया गया था। स्लावोनिक और कॉप्टिक संस्करण भी उपलब्ध हैं। सभी तीसरी, पाँचवीं, और छठी शताब्दी की दो यूनानी प्रतियों से जुड़े हो सकते हैं।

यह स्पष्ट नहीं है कि मूल रचना एक ही लेखन थी या लेखन यहूदी था जिसमें बाद में मसीही संपादन हुआ। इसका अंतिम रूप दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध का हो सकता है। यह एम्ब्रोस, जेरोम, ओरिगेन, तेर्तुलियन और संभवतः जस्टिन मार्टियर के लिए भी जाना जाता था। इसकी विषय-वस्तु तीन शीर्षकों में आती है:

1. यशायाह की शहादत। इस सामग्री में नबुबतिय कथन शामिल हैं, जिसमें यहूदा के राजा मनश्शे के हाथों भविष्यद्वक्ता की अपनी मृत्यु की भविष्यद्वानी भी शामिल है। दस्तावेज़ राजा के अंधेरे धर्मत्याग से संबंधित है, जो शैतान के साथ वास करता है और बेलियार का अनुसरण करते हुए, अपने लोगों को हर तरह के पाप में ले जाता है। यरूशलेम, जिसके पतन की भविष्यद्वानी की गई है, को "सदोम" और उसके राजकुमारों को "गोमोरा" कहा जाता है। मिद्राश (भक्तिपूर्ण उपदेश) के रूप में, यह खंड यशायाह द्वारा समझौते या मुकरने की दृढ़ अस्वीकृति पर आधारित है। यशायाह की "दो टुकड़ों में कटकर" शहीद होना वह भाग है जिससे चर्च के पिता परिचित प्रतीत होते हैं।

2. हिजकिय्याह का करार। यह खंड प्रकाशनात्मक है, एक दर्शन यशायाह अपने राजा को देता है। यह "प्रिय" के अवतरण की बात करता है, जो इस दस्तावेज़ में मसीहा के लिए प्रयुक्त एक शीर्षक है। यह दर्शन मसीहा के देह धारण, जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण को शामिल करती है, फिर चर्च के प्रारंभिक इतिहास और प्रभु के दूसरे आगमन से पहले होने वाले धर्मत्याग की ओर मुड़ती है। मसीह-विरोधी को बेलियार या शैतान के रूप में प्रकट किया गया है, जो

मानव रूप धारण करता है और अपनी मां को मारता है (इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका उद्देश्य रोमी सम्राट नीरो था, जिसने अपनी मां एग्रीपिना की हत्या कर दी थी)। पूरा खंड दानिय्येल और बाइबल सर्वनाश पर आधारित है और ग्नोस्टिकवाद से भी प्रभावित था। दर्शन का निष्कर्ष (प्रिय की जीत, दो पुनरुत्थान और अंतिम न्याय) प्रकाशित वाक्य की नए नियम पुस्तक में सभी चीजों की समाप्ति के बहुत करीब है।

3. यशायाह का दर्शन. यह खंड भाषाई रूप से भी #2 से मिलता-जुलता है, लेकिन अधिक ग्नोस्टिक प्रभाव दिखाता है: यशायाह को त्रिएक परमेश्वर के निवास स्थान, सातवें स्वर्ग में ले जाया गया, और यीशु मसीह के कई रहस्य दिखाए गए। इस दर्शन के कारण मनश्शे ने भविष्यद्वक्ता को मार डाला। पहली शताब्दी के अंत में सेरिंथस द्वारा प्रचारित ग्नोस्टिक सिद्धांत स्पष्ट है। यीशु, सांसारिक रूप से जन्मे, मसीह के मेजबान बन गए, जो क्रूस पर चढ़ाई के समय अपना पृथ्विक निवास छोड़ देते हैं।

ऐतिहासिक रूप से, यशायाह के स्वर्गारोहण का मूल्य परस्पर विरोध के विभिन्न विरोधाभासी मत को दिखाना है, जिसने अधिकार और प्रेरणा का दावा करते हुए, शुरुआती मसीहियों के दिमाग को घेर लिया था।

यशायाह की शहादत

*देखें*यशायाह का आरोहन (ऊपर)।

इस्साकार का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

याकूब का प्रकाशन

याकूब के दो ग्नोस्टिक प्रकाशन ग्रन्थ थे (जिन्हें "पहला" और "दूसरा" नाम दिया गया था)। पहला, जो 20 से अधिक पृष्ठों के पाठ को शामिल करता है, यह दावा करता है कि प्रभु द्वारा दिया गया एक अंतकालीन समय है, जिसमें से कुछ क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले और कुछ बाद में, उनके भाई याकूब को दिया गया था, जिन्हें धर्मी याकूब के रूप में भी जाना जाता था। याकूब के दर्शन के रूप में संदर्भित दो दस्तावेज़ 1945 में मिस्र में चेनोबोस्कियन शहर के सामने नील नदी के ठीक पश्चिम में खोजे गए नाग हम्मादी साहित्य के कोडेक्स V में हैं और याकूब के एपोक्रिफ़ॉन से अलग हैं, जो नए नियम अपोक्रिफ़ल में शामिल है। लेखन कॉप्टिक पाठ के 20 पृष्ठों से बना दूसरा प्रकाशन कथित तौर पर जेम्स द जस्ट द्वारा मन्दिर के पांचवें चरण पर दिया गया एक भाषण है और इसमें विहित ग्रंथों के कई संदर्भ या गूँज शामिल हैं। कार्य का अंत भीड़ द्वारा याकूब को मन्दिर से नीचे गिराने और स्तिफनुस की शहादत की याद दिलाते हुए उस पर पथराव करने से होता है।

याकूब का आरोहण

खोई हुई पुस्तक जिसका उल्लेख केवल एपिफानियस (यूनानी द्वीप सलमीस के बिशप) ने अपनी चौथी शताब्दी की रचना रिफ्यूटेशन ऑफ ऑल द हेरेसीज़ में किया है। एपिफानियस के अनुसार, याकूब की आरोहण का उपयोग एबियोनाइट्स द्वारा किया गया था, जो यहूदी मसीहियों का एक कठोर तपस्वी संप्रदाय था। इस पुस्तक में यीशु के भाई याकूब का प्रतिनिधित्व किया गया है, जिसने मन्दिर और बलिदानों के खिलाफ बात की थी। इसने प्रेरित पौलुस को एक यूनानी घोषित किया जो यरूशलेम गया, महायाजक की बेटी से शादी करने की कोशिश की, और अंत में एक धर्मांतरित बन गया और उसका खतना किया गया। जब वह उस युवती को नहीं जीत सका, तो उसने विश्रामदिन, व्यवस्था, और खतना विधि के विरुद्ध काम किया।

गलातियों (1865) पर एक टिप्पणी में, जे.बी. लाइटफुट ने सुझाव दिया कि पुस्तक का शीर्षक याकूब के मन्दिर की सीढ़ियों पर चढ़ने का उल्लेख करता है, जहाँ से उसने लोगों को संबोधित किया था। लाइटफुट ने यह भी सुझाव दिया कि याकूब की मृत्यु आरोहण का भव्य चरमोत्कर्ष थी। प्रारंभिक मसीही लेखक हेगेसिपस के एक उद्धरण के अनुसार (जैसा कि यूसेबियस के चर्च संबंधी इतिहास में दर्ज है), याकूब को उसकी मृत्यु के लिए मन्दिर के शिखर से नीचे गिरा दिया गया था।

याकूब का प्रारंभिक सुसमाचार

यह एक अपोक्रिफ़ल "सुसमाचार" है जो मरियम के प्रतीक विवाह और गर्भावस्था, और यीशु के जन्म, बाल्यावस्था, और किशोरावस्था के बारे में बताता है। यह अपोक्रिफ़ल लेखन सोलहवीं सदी में गुइलौम पोस्टेल द्वारा खोजा गया था।

अय्यूब का करार

बाइबल की पुस्तक अय्यूब से समानता रखने वाला एक प्रकाशनात्मक साहित्य है। संभवतः यह दूसरी सदी ईस्वी में यूनानी भाषा में लिखा गया था। चूँकि इसमें मसीही विचारों का अभाव है, इसे शायद किसी यहूदी द्वारा लिखा गया था।

अध्याय 1–45 में, अय्यूब वक्ता हैं। वे समझते हैं कि पास के मन्दिर को अपवित्र कर दिया गया है क्योंकि उसमें शैतान को बलिदान चढ़ाए गए थे। जब अय्यूब उसे नष्ट कर देते हैं, तो शैतान उन्हें धमकी देता है। अय्यूब के मित्र उन्हें सांत्वना देने आते हैं परन्तु उनके भाषण बहुत संक्षिप्त होते हैं। एलीहू को शैतान के मुखपत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है और वे परमेश्वर की अप्रसन्नता अर्जित करते हैं। परन्तु अय्यूब अपने तीनों मित्रों के लिए बलिदान चढ़ाते हैं। वे पुनर्विवाह करते हैं और उनके सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ होती हैं, जो उनकी संपत्ति के उत्तराधिकारी बनते हैं। अध्याय 46–51, जिसमें अय्यूब के भाई वक्ता हैं, कथा को समाप्त करते हैं।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का जीवन

एक प्रसिद्ध कथा जिसे सेरापियन द्वारा लिखा गया माना जाता है, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रारंभिक जीवन और विशेष रूप से उनकी माता एलिजाबेथ की मृत्यु से संबंधित है। जब यीशु अपने माता-पिता के साथ मिस्र में रह रहे थे, एलीशिबा की मृत्यु उसी दिन होती है जिस दिन हेरोदेस महान की मृत्यु होती है। यूहन्ना, जो एक छोटा लड़का है, नहीं जानता कि उन्हें कैसे दफनाया जाए। बादल यीशु, मरियम, और सलोमी को लाते हैं जो शरीर को धोते हैं। कब्र को मीकाईल और गब्रिएल द्वारा खोदा जाता है, जो जकर्याह और शिमोन की आत्माओं को भी लाते हैं। फिर यूहन्ना को स्वर्गदूतों की देखरेख में रेगिस्तान में बड़ा होने के लिए छोड़ दिया जाता है, जबकि बादल यीशु और मरियम को नासरत ले जाते हैं जहां वे रहते हैं।

यूहन्ना सुसमाचार प्रचारक की पुस्तक

यह लेखन मुख्यतः एल्बिजेन्सिस द्वारा उपयोग किया गया और इसे आम तौर पर बोगोमिल्स से उत्पन्न माना जाता है। यह प्रश्न और उत्तर के रूप में लिखा गया है, जिसे ऐसा समझा गया कि यह प्रेरित यूहन्ना से निकला है, जो अंतिम भोज में यीशु की छाती पर सिर रखकर उनसे पूछते हैं। यह प्रश्न और उत्तर का ढाँचा अन्य शुरुआती ग्नॉस्टिक लेखनों में भी पाया जाता है, विशेष रूप से बरतुल्मै के सुसमाचार में।

इसमें ग्नॉस्टिक धर्मविज्ञान की शिक्षा दी गई है। यह एक संसार की रचना का वर्णन करता है जिसे शैतान ने बनाया है न कि परमेश्वर ने। मसीह मरियम से नहीं जन्मे थे बल्कि एक स्वर्गदूत के रूप में धरती पर भेजे गए थे। वह मरियम के "कान द्वारा प्रवेश करते हैं और कान द्वारा बाहर आते हैं।" यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को शैतान द्वारा भेजा गया है, और उनके अनुयायी (रोमन कैथोलिक चर्च) मसीह के अनुयायी नहीं हैं। बपतिस्मा और प्रभु का भोज व्यर्थ माना गया है।

यह लेखन केवल लातीनी में सुरक्षित है और वर्तमान रूप में यह 12वीं सदी से पहले का नहीं है। एक सुविधाजनक अंग्रेजी अनुवाद एम. आर. जेम्स के *द एपोक्रीफाल एनटी* (1924) में पाया जा सकता है।

यूसुफ की प्रार्थना

यहूदी प्रकाशनात्मक रचना। यूसुफ की प्रार्थना को प्रारंभिक चर्च विद्वान ओरिगेन द्वारा एक दस्तावेज़ के रूप में "अवहेलना न करने योग्य" माना गया था।ओरिगेन के उद्धरण कार्य के बारे में लगभग एकमात्र जानकारी प्रदान करते हैं, ताकि इसकी कुल सामग्री और महत्व अस्पष्ट हो। प्राचीन पुराना नियम अपोक्रिफ़ल और प्रामाणिक लेखनों की एक सूची में इसे तीसरे स्थान पर रखा गया है और इसकी लंबाई 1,100 पद बताई गई है। ओरिगेन के उद्धरण मुख्य रूप से यूसुफ के पिता याकूब पर केंद्रित हैं। याकूब एक स्वर्गदूत के रूप में प्रकट होते हैं, जो इस्राएल नाम धारण करते हैं। उद्धृत अंशों में वे वक्ता हैं और मानवजाति की नियति का पूर्वाभास देते हैं। वे वर्णन करते हैं कि कैसे उन्होंने मेसोपोटामिया की यात्रा के दौरान उरियल से मुलाकात की, और कैसे उरियल ने उनसे कुश्ती की, यह दावा करते हुए कि वह सभी स्वर्गदूतों में महानतम हैं। प्रकाशनात्मक लेखक ने याकूब की यब्बोक में रहस्यमय कुश्ती (उत 32:22–29) और ऐसे अन्य उद्धरण जैसे कि दानि 10:13 के विचार को ध्यान में रखा। चूँकि याकूब का दावा है कि वे "सभी जीवित प्राणियों में प्रथम जन्मे" और सभी स्वर्गदूतों के प्रधान हैं, उरियल उन्हें चुनौती देते हैं।

यूसुफ का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

यूसुफ बढ़ई का इतिहास

यह दस्तावेज़ यीशु के सांसारिक पिता यूसुफ का महिमामंडन करता है और यूसुफ के संप्रदाय को बढ़ावा देता है। हिस्ट्री ऑफ जोसफ के अध्याय 18 के शब्द इसे चौथी सदी का मानते हैं। इसमें यीशु अपनी माता से कहते हैं, "तुम भी उसी अंत की खोज करो जो अन्य मनुष्यों का होता है।" पाँचवीं सदी तक "आसंप्सन ऑफ द वर्जिन" की शिक्षा व्यापक रूप से मानी जाती थी।

यह दस्तावेज़ प्रोटेवांजेलियम ऑफ जेम्स से लिया गया है और इसमें मिस्र, जहाँ यह लिखा गया था, की धार्मिक मान्यताओं और ग्नॉस्टिक प्रभाव से प्रभावित विषयवस्तु शामिल है। यह कॉप्टिक और अरबी में उपलब्ध है और चौथी सदी के कॉप्टिक पाठ के एक अनुवाद में भी संरक्षित है।

यूसुफ बढ़ई का इतिहास युसूफ के जीवन और उनकी 111 वर्ष की आयु में आदर्श मृत्यु का विवरण देने का दावा करता है। यह कहानी कथित तौर पर यीशु द्वारा उनके शिष्यों को जैतून पर्वत पर सुनाई जाती है। यूसुफ, जो बढ़ई थे (मत्ती 13:55), वृद्ध थे और विधुर थे जब उन्होंने 12 वर्ष की मरियम से विवाह किया। (उनके पहले विवाह से छह बच्चे थे।) यूसुफ का दफन मिस्र के ओसीरिस संप्रदाय के अनुष्ठानों के अनुसार किया गया था, जब यीशु ने एक शोकगीत का पाठ किया।

जुबलीस की पुस्तक

जुबलीस दूसरी सदी ईसा पूर्व की अंतिम छमाही में मकाबियों के काल का छद्मलेखीय कार्य है। यह मसीही कलीसिया की शुरुआत से पहले के युग में पर्यावरण को समझने के लिए एक अमूल्य स्रोत है। जुबलीस को उस समय के सबसे महत्वपूर्ण इब्री या अरामी साहित्य के रूप में बुक ऑफ एनोक और द टेस्टामेन्ट्स ऑफ द ट्वेल्व पैट्रिआर्क्स के साथ रखा गया है। इनकी तरह इसका यूनानी में अनुवाद किया गया और कलीसिया के पिताओं द्वारा इसका उपयोग किया गया। अधिकांशतः, जुबलीस इब्री में लिखा गया था क्योंकि यह मूसा

की लेखनी का दावा करता है और इसका मकाबी काल का राष्ट्रीय परिवेश इसे अनिवार्य बनाता है। कुमरान में पाई गई इब्री में 10 पांडुलिपियों के टुकड़े इस बात का समर्थन करते हैं कि यह मूल रूप से इसी भाषा में था।

बाद के यूनानी लेखकों द्वारा इसे इब्री स्रोतों के अनुसरण में "जुबलीस" और "द लिटिल (लेसेर) जेनेसिस" के रूप में संदर्भित किया गया। इसे "द आपोकालिप्स ऑफ मोसेस" और "टेस्टामेंट ऑफ मोसेस" भी कहा गया है। संशोधित रूपों में इसे "द बुक ऑफ आडम्स डटर्स" और "द लाइफ ऑफ आडम" के नाम से जाना गया है।

पचास अध्यायों वाली संपूर्ण पांडुलिपियाँ इथियोपिया की छह पाठ्य पुस्तकों में हैं, जिनमें पाँचवीं और छठी शताब्दी के पाठ सबसे अच्छे हैं। लातीनी पाठ मूल्यवान है पर आंशिक है और यूनानी संस्करण के केवल कुछ टुकड़े शेष हैं। कुमरान में मिले इब्री टुकड़े विशेष महत्व के हैं क्योंकि वे मूल लेखन के समय के हैं। बिबलिओथेके नॅश्नल के पास "इथियोपियन 51" और "इथियोपियन 160" है। ब्रिटिश म्यूजियम में कुफाले या लिबर जूबिलाएरोम और एनोक हैं।

जुबलीस के लेखक का दावा है कि उसके शिक्षा का स्रोत एक प्रत्यक्ष प्रकाशन है। परमेश्वर ने मूसा से पेंटाट्यूक में "लघु विधि" में इस "लिटिल बुक ऑफ जेनेसिस" पुस्तक में बात की थी। सीनै पर परमेश्वर ने मूसा से "एंजेल ऑफ द प्रेसेंस" के माध्यम से संवाद किया, स्वर्गदूत से कहकर, "मूसा के लिए सृष्टि की शुरुआत से लिखो, जब तक मेरा पवित्रस्थान सदा के लिए उनके बीच नहीं बन जाता" (1:27)। यह "फर्स्ट लॉ" के अतिरिक्त है (6:22)।

संक्षिप्त परिचय के बाद जुबलीस उत्पत्ति और निर्गमन के पाठ का अनुसरण करता है 14:31 तक। यह पेंटाट्यूक सामग्री का मिद्राशिक उपचार दिखाता है कि कुलपिताओं ने मूसा से पहले भी विधि का पालन किया। लेखक का उद्देश्य यहूदी धर्म को क्लासिकल रूप में मजबूत करना है, जो यहूदी लोगों के बीच हेल्लेनिस्टिक संस्कृति के गहरे प्रभाव का सामना कर रही थी। ऐसा करते हुए लेखक पेंटाट्यूक इतिहास में जोड़ता और घटाता है। कुलपिताओं को हर प्रकार से सुशोभित किया गया है। उनकी कमजोरियाँ और पापों को हटा दिया गया और उनकी महिमा बढ़ाने के लिए पौराणिक तत्व जोड़े गए। एनोक ने लेखन का आविष्कार किया; नूह ने चिकित्सा का; अब्राहम ने खेती का।

लैव्य 25:8–12 का सहारा लेते हुए, यह कार्य सात की संख्या के महत्व पर जोर देता है। आदम से लेकर मूसा तक का इतिहास सात के चक्रों के अनुसार व्यवस्थित किया गया है। इतिहास को जुबली कालों में विभाजित करने का यह तरीका सीनै में मूसा को प्रकट किया गया था, और इसे दैवीय स्वीकृति प्राप्त है और वास्तव में इसे अनिवार्य किया गया है। यह इतिहास की वह दृष्टि है जो इस्राएल में परमेश्वर की सर्वोच्च और विशिष्ट क्रियाओं को दर्शाती है, जो अन्यजाति जगत से अलग है। अन्य जातियों पर स्वर्गदूतों का शासन है, लेकिन इस्राएल सीधे परमेश्वर के नियंत्रण में है (जुबलीस 15:31 के आगे)।

जुबलीस का चंद्र कैलेंडर के खिलाफ एक आक्रामक रुख (6:36–38) और सौर कैलेंडर की स्वीकृति इस्राएल को शुद्ध करने के लिए एक गहरी सुधार की प्रेरणा का एक और पहलू है। इस्राएल को हर तरह से परमेश्वर के लिए अलग किया जाना है, बिना अन्यजातियों के साथ विवाह या एक मेज पर भोजन किए। सब्त का पालन कठोरता से करने की अपेक्षा की जाती है (50:1–13)। जो लोग यात्रा करते हैं, खरीद-फरोख्त करते हैं, पानी खींचते हैं, बोझ उठाते हैं, जीवों का शिकार करते हैं, या सब्त के दिन दांपत्य संबंध रखते हैं, उनके लिए मृत्यु दंड का प्रावधान है। ये बाइबल के आवश्यकताओं से बहुत आगे जाते हैं और उसी परिवेश से संबंधित हैं जिसने कुमरान समुदाय और एसिनियों को उत्पन्न किया।

एंजेल ऑफ प्रेसेंस की प्रकाशनात्मक घोषणा में एक स्पष्ट परंतु सीमित युगान्तशास्त्र संबंधी सत्य है। जुबलीस में मसीही युग की तत्काल स्थापना की अपेक्षा है। इसके बावजूद, संपूर्ण जोर नैतिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों पर है।

यहूदा का करार

देखें बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

यहूदा इस्करियोती का सुसमाचार

यह अत्यंत प्राचीन ग्नॉस्टिक रचना है, जिसे संभवतः कैनाइट संप्रदाय ने तैयार किया। जैसा कि यह आज हमारे लिए संरक्षित नहीं है, हम इसे केवल प्रारंभिक मसीही लेखकों, विशेष रूप से आईरेनियस, के उद्धरणों के माध्यम से जानते हैं। इस प्रकार, इसे दूसरी शताब्दी ई. के मध्य से पहले लिखा गया होगा। इसमें शायद एक गुप्त सिद्धांत का सारांश था जिसे यहूदा इस्करियोती द्वारा प्रकट किया गया था, जो इस ग्नोस्टिक संप्रदाय को प्रकट किए गए श्रेष्ठ और पूर्ण ज्ञान की सच्चाई का सारांश था। सुसमाचार "विश्वासघात के रहस्य" को प्रस्तुत करता है, यह समझाते हुए कि यहूदा ने अपनी विश्वासघात के माध्यम से पूरे मानव जाति के उद्धार को कैसे संभव बनाया। यह मसीह द्वारा घोषित सत्य के विनाश को रोककर या मसीह के क्रूस पर चढ़ने को रोकने की इच्छा रखने वाली बुरी शक्तियों, आर्कोन्स, की योजनाओं को विफल करके पूरा किया गया था क्योंकि वे जानते थे कि यह उनकी बुरी शक्ति को नष्ट कर देगा।

लेंटुलुस की पत्री

लेंटुलुस, जिसे संभवतः पुन्तियुस पीलातुस का पूर्ववर्ती माना जाता है, के बारे में कहा जाता है कि उसने रोमी सीनेट को एक रिपोर्ट तैयार की थी, जिसे लैटर (अथवा एपिस्ल) ऑफ लेंटुलुस के नाम से जाना जाता है। इसमें उसने यीशु का एक विस्तृत वर्णन दिया: "लंबे और सुंदर, उनके मुख की चमक

श्रद्धा के साथ प्रेम और भय उत्पन्न करती है, उनके बाल काले, चमकदार, घुंघराले, मध्य में विभाजित, और उनके चेहरे पर एक नाजुक लालिमा थी..." इस पत्री की प्रामाणिकता अत्यधिक संदिग्ध है।

लेवी का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

आदम और हव्वा का जीवन

यह एक गैर-कैनोनिकल लेखन का एक सामान्य शीर्षक है, जो यूनानी और लातीनी में उपलब्ध है। यह पुस्तक यहूदी स्वभाव की है, हालांकि इसमें एक मसीही तत्व भी है, जिससे अधिकांश विद्वान इसके मूल कार्य को मसीही युग के प्रारंभ से जोड़ते हैं। पुस्तक की सामग्री में आदम और हव्वा की बाइबल की कथा का विस्तार किया गया है।

यूनानी संस्करण अदन से निष्कासन के साथ शुरू होता है। एक सपने में, हव्वा ने हाबिल की हत्या देखी। आदम के बीमार पड़ने के बाद शेत और हव्वा जीवन के वृक्ष से तेल लेने गए। महादूत मीकाईल शेत से मिले और उन्हें बताया कि आदम मर जाएगा। उनकी मृत्यु के बाद, उन्हें अंततः तीसरे स्वर्ग में ले जाया गया। शेत ने देखा कि कैसे स्वर्गदूतों ने उनके पिता को दफनाया और उन्हें निर्देश दिए कि उनकी माँ को कैसे दफनाया जाए, जिनकी मृत्यु आदम के एक सप्ताह बाद हुई थी।

लातीनी संस्करण अतिरिक्त जानकारी देता है। बगीचे से निष्कासन के बाद, हव्वा ने आदम से उसे मारने के लिए कहा परन्तु इसके बजाय उन्होंने सुझाव दिया कि वे दोनों प्रायश्चित का कार्य करें। आदम 40 दिनों के लिए यरदन में खड़े हो गए और हव्वा 37 दिनों के लिए फरात के पानी में खड़ी हो गईं। वहां, उन्हें फिर से शैतान ने प्रलोभित किया, जो प्रकाश के स्वर्गदूत के रूप में छिपा हुआ था परन्तु अंततः आदम द्वारा उजागर किया गया। अब शैतान ने उनके प्रति अपनी शत्रुता का कारण समझाया: जब स्वर्गदूतों को प्रभु की आराधना करने का आदेश दिया गया, तो उसने परमेश्वर को प्रणाम करने से इनकार कर दिया और परिणामस्वरूप स्वर्ग से निकाल दिया गया।

मत्ती की शहादत

मत्ती के शहादत की कहानी ढीली-ढाली रूप में व्यवस्थित है और "एक्ट्स ऑफ एन्ड्रयू और मैथियास" से गहन रूप से उधार लेती है, जो मानती है कि मैथियास वास्तव में मत्ती ही थे। यह दस्तावेज़ बाद के आपोक्रिफल ग्रंथों की साहित्यिक और धर्मशास्त्रीय प्रेरणा का निम्न स्तर प्रदर्शित करता है।

कहानी तब शुरू होती है जब मत्ती को यीशु द्वारा नरभक्षियों के शहर मायर्ना में एक लकड़ी की छड़ी गाड़ने का निर्देश देते हैं। मत्ती राजा की पत्नी और परिवार से असमोडियस नामक दुष्टात्मा को भगाने के बाद ऐसा करता है। छड़ी रातोंरात एक पेड़ बन जाती है, मत्ती लोगों को उपदेश देते हैं, और वे "मानव बन जाते हैं"। परन्तु असमोडियस बदला लेने की कोशिश करता है और राजा को मत्ती को जलाने का निर्देश देता है। आग सोने की मूर्तियों और कई सैनिकों को भस्म कर देती है, फिर एक अजगर में बदल जाती है और राजा का पीछा करती है, जो मत्ती से सहायता की भीख मांगता है। परन्तु मत्ती की मृत्यु हो जाती है।

कुछ हद तक मन फिरा कर परन्तु अभी तक परिवर्तित नहीं हुआ राजा मत्ती के शरीर को लोहे के ताबूत में रखता है और उसे गुप्त रूप से समुद्र में डुबो देता है। अगले दिन मत्ती दो चमकदार पुरुषों और एक "सुंदर" बच्चे की उपस्थिति में समुद्र पर दिखाई देता है। राजा अंततः परिवर्तित हो जाता है, बपतिस्मा लेता है, और कलीसिया में स्वीकार कर लिया जाता है। मत्ती प्रकट होकर राजा को अपना ही नाम प्रदान करते हैं और उसे एक याजक और उसके परिवार को डीकन और डीकनी के रूप में अभिषेक करते हैं। फिर मत्ती दो स्वर्गदूतों के साथ स्वर्गारोहण करते हैं।

एलदाद और मेदाद की पुस्तक

*देखें*एलदाद और मेदाद की पुस्तक (ऊपर) ।

मूसा का आरोहन

एक यहूदी कथा है कि मूसा को बिना मरे स्वर्ग में शारीरिक रूप से ले जाया गया था। संभवतः ई. 7 और 30 के बीच लिखा गया, यह दो पहले के कार्यों का संयोजन हो सकता है, और इसके बहुत सारे भाग व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से लिया गऐ प्रतीत होते हैं। यह कार्य संभवतः मूसा के असाधारण सांसारिक जीवन को एक चमत्कारी अंत प्रदान करने के लिए उत्पन्न किया गया था, उन्हें एलिय्याह के समान अनुभव का श्रेय देते हुए। परन्तु यह यहूदी कथा मूसा की मृत्यु के पुराने नियम के विवरण के विपरीत है (व्य.वि. 32:48–50; 34:5–7) ।

मूसा का खोया हुआ आरोहन

तीन तथ्य यह इंगित करते हैं कि मूसा के आरोहण की कथा वाला एक अपोक्रिफ़ल ग्रंथ कभी अस्तित्व में था: (1) अपोक्रिफ़ल ग्रंथों की प्रारंभिक सूची में इस शीर्षक से एक पुस्तक का उल्लेख है; (2) कई चर्च पिताओं ने इसका उल्लेख किया है; और (3) कुछ यूनानी अंश जीवित बचे हैं।

इस कार्य में निम्नलिखित वस्तुएँ दिखाई दीं। परमेश्वर ने मूसा के शरीर को दफनाने के लिए प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल को नियुक्त किया। शैतान ने मूसा के दफनाने का विरोध किया क्योंकि उसने सभी पदार्थों पर अधिकार का दावा किया था और क्योंकि मूसा एक हत्यारा था। मीकाईल ने शैतान के दावों का खंडन किया और उस पर अदन मे हव्वा को लुभाने का आरोप लगाया। फिर यहोशू और कालेब ने मूसा के आरोहण

को एक अजीब तरीके से घटित होते देखा। जब उन्होंने देखा, तो उन्होंने मूसा के मृत शरीर को पहाड़ में दफनाते हुए देखा, परन्तु उन्होंने मूसा को भी स्वर्गदूतों की संगति में देखा। वास्तव में मूसा का शरीर मर गया, परन्तु मूसा खुद नहीं मरा।

हालाँकि अक्सर कहा जाता है कि यहूदा (वचन 9) को असंप्सन ऑफ मोसेस का ग्रंथ से उद्धृत किया गया था, परन्तु यह साबित करना असंभव है, क्योंकि उस कार्य के प्रासंगिक हिस्से बच नहीं पाए हैं। ज़्यादा से ज़्यादा यही कहा जा सकता है कि सिकंदरिया का क्लेमेंट (मृत्यु 215 ईस्वी) और ओरिगेन (लगभग 185–254 ईस्वी) सहित कई कलीसिया के पिता ने सुझाव दिया कि मूसा का आरोहण यहू 1:9 में दिए गए विवरण का स्रोत था। उनके पास दोनों कार्य थे। हमारे पास सिर्फ़ यहूदा है, इसलिए हम उनके निष्कर्षों की जाँच नहीं कर सकते। मामले को और जटिल बनाता है कि एक अन्य ग्रंथ (अगला खंड देखें) भी अब असंप्सन ऑफ मोसेस का ग्रंथ कहलाता है। लोग अक्सर मानते हैं कि यहू 1:9 उसी पुस्तक का एक उद्धरण है, जबकि ऐसा नहीं है।

मौजूदा मूसा का आरोहण

यह ग्रंथ, संभवतः यीशु के जीवनकाल में लिखा गया, मूसा द्वारा यहोशू को इस्राएल की जाति के भविष्य की भविष्यद्वानियों का वर्णन करने का दावा करता है। यह अन्य छद्मलेखीय, ऐतिहासिकता रहित रचनाओं के समान है जो महान यहूदी अगुवों के नाम पर लिखी गई थीं।

यह 1861 में इटली के मिलान में एम्ब्रोसियन लाइब्रेरी में संयोग से खोजा गया था। पांचवीं शताब्दी ई. की यह पांडुलिपि लातीनी अनुवाद की एक बहुत ही खराब प्रति है, जो संभवतः इब्रानी मूल के यूनानी अनुवाद से ली गई है। शुरुआत और अंत खो गए हैं। इसमें कई वर्तनी की गलतियाँ हैं, और शब्दों के बीच कोई जगह नहीं है। आश्चर्य की बात नहीं है कि विद्वानों ने लंबे समय तक पूरे छंदों के पढ़ने, व्याख्या और अनुवाद पर विवाद किया है।

शुरुआती तीन पंक्तियाँ बची नहीं हैं, इसलिए मूल शीर्षक खो गया है। जब खोजा गया, तो माना गया कि यह काम लंबे समय से खोई हुई मूसा के आरोहण का ग्रंथ है, परन्तु अब इस पहचान पर व्यापक रूप से संदेह है। यद्यपि पुस्तक का शीर्षक अब भी यही है, यह अधिक संभावना है कि यह मूसा का करार हो (जिसका उल्लेख भी मूसा के आरोहण के साथ प्रारंभिक अपोक्रिफ़ल सूची में किया गया है) या एक मिश्रित रचना जो मूसा के करार और आरोहण के संयुक्त रूप से एक पुस्तक के रूप में संकलित हुई हो।

इस पुस्तक में मूसा के आरोहण का केवल एक संदर्भ है, और यह उसकी मृत्यु के उल्लेख के संबंध में आता है (10:12)। चूँकि पुस्तक का अंत भी खो गया है, इसलिए निष्कर्ष की सामग्री को जानना या यह बताना असंभव है कि मूसा के आरोहण का यह एक बचा हुआ संदर्भ मूल है या इसे किसी लेखक ने गलती से या दो अलग-अलग कार्यों को मिलाकर संपादक द्वारा जोड़ा है। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि बचे हुए भाग के लेखक का मानना था कि मूसा को मरने की उम्मीद थी (1:15; 10:12–14) और यहोशू ने मान लिया था कि वह मर जाएगा (11:4–8)।

यह रचना बीच वाक्य से शुरू होती है (तीन पंक्तियाँ गायब हैं) और मूसा के अगले भाषण की तिथि सृष्टि के 2,500 वर्ष बाद की है (1:2–5)। मरने की उम्मीद में, मूसा ने यहोशू को बुलाया, उसे प्रोत्साहित किया, और उसे बताया कि परमेश्वर ने अपने लोगों (इस्राएलियों) के लिए दुनिया बनाई है, जो अंतिम दिनों में पूरे होते समय मन फिरायेंगे (1:6–18)।

फिर मूसा इस्राएल के भविष्य का पूर्वानुमान करते हैं। लोग देश (कनान) का उत्तराधिकार प्राप्त करेंगे और स्थानीय न्यायाधीश, प्रमुखों (न्यायियों?), और राजाओं द्वारा शासित होंगे (2:1–3)। राज्य विभाजित हो जाएगा, और लोग मूर्तिपूजा की ओर मुड़ेंगे (2:4–9)। पूर्व से एक राजा (नबूकदनेस्सर) दो गोत्रों को लगभग 77 वर्षों के लिए बंदी बना लेगा, जहां वे मूसा की चेतावनियों को याद करेंगे (3:1–14; तुलना करें यिर्म 25:11–12; व्य.वि. 28:15–68; 30:15–20)। कोई व्यक्ति (दानिय्येल) उद्धार के लिए प्रार्थना करेगा (तुलना करें दानि 9:4–19), और परमेश्वर एक राजा (कुस्रू) को बन्दियों को घर भेजने के लिए प्रेरित करेंगे (4:1–6; तुलना करें यश 45:1–6; एज्रा 1:1–4)। कुछ बन्दी अपने नियुक्त स्थान (यरूशलेम) को लौटेंगे और उसकी शहरपनाह बनाएंगे परन्तु [उचित] बलिदान देने में असमर्थ होंगे (4:7–8; तुलना करें एज्रा 3:1–7)। अन्य लोग बँधुआई में रहेंगे परन्तु जनसंख्या में वृद्धि करेंगे (4:9)। यह पुराना नियम काल को समाप्त करता है और अंतर-नियम काल (लगभग 400 से 1 ई. पू.) का आरंभ होता है।

सेल्यूसिड काल (लगभग 201–267 ई.पू.) के व्यापक धर्मत्याग का वर्णन किया गया है, जिसमें याजक और न्यायियों का विशेष उल्लेख है (4:1–6)।। मक्काबी, जिन्होंने सीरिया से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त की और उसे बनाए रखा (164 ई.पू. में) का उल्लेख नहीं किया गया है। इसके बजाय, ध्यान उन राजाओं (हसमोनियन) पर है जिन्होंने खुद को महायाजक बनाया (6:1)। इसके बाद एक अहंकारी राजा (हेरोदेस महान, 37–4 ई.पू.) आएगा, जो निर्दयता से शासन करेगा (6:2–7)। फिर पश्चिम का एक शक्तिशाली राजा लोगों पर विजय प्राप्त करेगा, कुछ को बंदी बना लेगा, दूसरों को क्रूस पर चढ़ा देगा और मन्दिर का एक हिस्सा जला देगा (6:8–9)।

इस बिंदु से, लेखक, अपने समय पर पहुँचकर, भविष्य का अनुमान लगाने लगा था, इसलिए मूसा के मुँह से जो भविष्यद्वानियाँ निकलीं, वे सामान्य या अस्पष्ट और अक्सर अधूरी थीं। अगले शासक (सदूकी?) अधर्मी, विश्वासघाती, पेटू, धोखेबाज़ और धार्मिक अशुद्धता के बारे में चिंतित होंगे, जबकि वे ग़रीबों के पैसो से विलासिता में रहेंगे (7:1–10)।

क्रोध का एक अभूतपूर्व समय आएगा, जब एक महान राजा यहूदियों को सताएगा, उन्हें यातना देगा, कैद करेगा और यहाँ तक कि खतना करने के लिए उन्हें सूली पर चढ़ा देगा (8:1–5) । इस उत्पीड़न के दौरान, टैक्सो नाम का एक लेवी और उसके सात पुत्र परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहेंगे और यूनानी रीति-रिवाज अपनाने के बजाय मर जाएंगे (8:1–7)।

अगला खंड (10:1–10), एक प्रकाशन संबंधी कविता (दस छंद, प्रत्येक में तीन पंक्तियाँ), पुस्तक का एकमात्र प्रकाशनात्मक संबंधी खंड है। प्रभु का राज्य प्रकट होगा, शैतान का अंत होगा, और प्रधान दूत (मीकाईल) इस्राएल का बदला लेगा (10:1–2)। "स्वर्गीय जन अपने राजसिंहासन से उठेगा," और पृथ्वी और आकाश में अद्भुत संकेत होंगे; यहाँ तक कि समुद्र भी सूख जाएगा (10:3–6)। परमप्रधान, अनंत परमेश्वर प्रकट होगा और अन्यजातियों को दंड देगा, उनके देवताओं को नष्ट कर देगा (10:7)। लेकिन इस्राएल प्रसन्न और महिमान्वित होगा, अपने शत्रुओं को गेहन्ना (नर्क) में देखकर आनंद करेगा और अपने सृष्टिकर्ता की कृतज्ञतापूर्वक स्तुति करेगा (10:8–10)। मूसा की अपनी मृत्यु की चर्चा और यहोशू के लिए सांत्वना शब्दों के साथ रचना अधूरी अवस्था में समाप्त होती है।

यह पुस्तक हेरोदेस की मृत्यु के बाद और वरुस द्वारा यहूदिया में विद्रोह को दबाने के बाद (4 ई.पू.) और मन्दिर के नष्ट होने से पहले (70 ईस्वी) लिखी गई होगी। पुस्तक भविष्यद्वानी करती है कि हेरोदेस के बेटे उतने लंबे समय तक शासन नहीं करेंगे, जितने समय तक हेरोदेस ने किया (34 वर्ष, 37–4 ई.पू.) । यह भविष्यद्वानी इस तथ्य पर आधारित हो सकती है कि एक बेटे, अरखिलाउस को 10 साल के शासन (4 ई.पू.-6 ईस्वी) के बाद पदच्युत कर दिया गया था। यदि ऐसा है, तो पुस्तक 6 ईस्वी के बाद लिखी गई थी। परन्तु दो अन्य बेटों (फिलिप्पुस और अन्तिपास) ने वास्तव में अपने पिता से अधिक समय तक शासन किया। लेखक को यह न पता होने के लिए यह आवश्यक है कि पुस्तक हेरोदेस की मृत्यु के 34 वर्षों के भीतर लिखी गई हो - दूसरे शब्दों में, 30 ईस्वी से पहले। इस प्रकार, यह पुस्तक संभवतः 6 और 30 ईस्वी के बीच लिखी गई थी। इसका अर्थ यह भी है कि पुस्तक यीशु के जीवनकाल के दौरान यहूदी चिंतन को प्रतिबिंबित करती है।

लेखक स्पष्टतः एक पलिश्तिनी यहूदी था, लेकिन संभव नहीं कि वह किसी ज्ञात प्रमुख संप्रदाय का सदस्य था। वह रोमी शासन (8:1–10:10) से घृणा करता है लेकिन विद्रोह का समर्थन नहीं करता, जैसा कि जिलोती और उनके पूर्वज करते थे। उसकी रुचि मन्दिर में है (2:8–9; 5:3; 6:9; 8:5), जो किसी एस्सीन के लिए सामान्य नहीं होती। वह सदूकी जीवनशैली की निंदा करता है (7:3–10)। और उसका प्रकाशनात्मक संबंधी लेखन का उपयोग (10:1–10) एक फरीसी के लिए असामान्य माना जाता है।

नप्ताली का करार

*देखें*बारह कुलपतियों के करार (नीचे)।

नीकुदेमुस का सुसमाचार

यह आपोक्रिफल रचना एक्ट्स ऑफ पायलेट का एक अन्य शीर्षक है। *देखें*पायलेट, एक्ट्स ऑफ (नीचे)।

नूह की पुस्तक

नूह के लेखन का संकेत जुबलिस की पुस्तक में दिया गया है, जहाँ कहा गया है कि "नूह ने सभी बातें एक पुस्तक में लिखीं, जैसा कि हमने उसे हर तरह की दवा के बारे में बताया था। इस प्रकार दुष्टात्माएँ नूह के बेटों को नुकसान पहुँचाने से दूर रहीं" (10:13; 21:10 भी देखें)। नूह की पुस्तक का बहुत भाग हनोक की पुस्तक से लिया गया है (अध्याय 6–11, 54–55, 60, 65–69, 106–110 देखें)। अन्य खंड नूह का जलप्रलय और उन विषयों से संबंधित हैं जिनके बारे में नूह को ज्ञान होने का अनुमान लगाया जा सकता है। दुर्भाग्यवश, नूह की पुस्तक का कोई स्वतंत्र पांडुलिपि अब तक ज्ञात नहीं है।

सुलैमान के भजन

*देखें*सुलैमान के भजन, (नीचे)।

बारह कुलपिताओं के करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

पौलुस की कृतियाँ

देखें पौलुस और थेक्ला की कृतियाँ (नीचे)।

अन्द्रियास और पौलुस की कृतियाँ

*देखें*अन्द्रियास और पौलुस की कृतियाँ (ऊपर)

पौलुस और थेक्ला की कृतियाँ

पौलुस और थेक्ला के कार्य दूसरी सदी के उत्तरार्ध में एशिया में रहने वाले एक चर्च के बुजुर्ग द्वारा लिखी गई एक आपोक्रिफल रचना का एक खंड है। तेर्तुलियन के अनुसार (*बपतिस्मा* पर 17.19–21), इस लेखन का उद्देश्य "पौलुस का प्रेम" था, लेकिन इस दस्तावेज को उत्पन्न करने के लिए उस याजक को पदच्युत कर दिया गया। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या उनके बयान का कारण यह था कि उन्होंने प्रेरितीय लेखक होने का झूठा दावा किया था, या क्या यह था कि दस्तावेज़ में व्यक्त दृष्टिकोण को विधर्मी माना गया था।

कहानी एक लोककथा की तरह लगती है। पौलुस अन्ताकिया से भागकर इकुनियुम पहुँचते हैं। उनकी मुलाकात उनेसिफुरूस से होती है, जो पौलुस का अपने घर में स्वागत करता है। पौलुस का संदेश सुनने के लिए लोगों का एक समूह वहाँ इकट्ठा होता है। पड़ोसी घर की खिड़की के पास, थेकला

बैठी हुई है। वह पौलुस को नहीं देख सकती, परन्तु वह उसके संदेश को ध्यान से सुनती है। उसकी माँ, थेक्लिया, चिल्लाती है, "मेरी बेटी, एक मकड़ी की तरह, उसके शब्दों से खिड़की से बंधी हुई है, एक नई लालसा और एक भयानक जुनून से जकड़ी हुई है।" पौलुस सिखा रहे हैं कि "परमेश्वर को देखने" के लिए, एक व्यक्ति को यौन गतिविधि से दूर रहना चाहिए।

थेक्ला, जो विवाह के लिए प्रतिबद्ध है, पौलुस के उपदेश से इतनी प्रभावित होती है कि वह अपनी सगाई थमाइरिस से तोड़ने का निर्णय लेती है। थमाइरिस, संकट में, शहर के गवर्नर से अपील करता है, जो पौलुस को गिरफ्तार करता है और जेल में डाल देता है। थेक्ला ने जेलर को कंगन और चांदी के दर्पण से रिश्वत दी और पौलुस की कोठरी में प्रवेश करती है। वह फिर से उसकी शिक्षा से अभिभूत हो जाती है। मुकदमे में, थेक्ला थामिरिस से शादी करने से इनकार करने पर अड़ी हुई है। पौलुस को शहर से प्रतिबंधित कर दिया गया है; थेक्ला को जलाकर मार डालने की सजा सुनाई जाती है। चमत्कारिक रूप से उसकी जान बच जाती है, और वह पौलुस के साथ फिर से मिल जाती है और उसके साथ अंताकिया की यात्रा करती है।

अंताकिया में, थेक्ला एक कुलीन व्यक्ति, सिकंदर के प्रस्ताव को ठुकरा देती है, और उसे फिर से मौत की सजा दी जाती है। लेकिन जो जंगली जानवर सार्वजनिक अखाड़े में उसे निगलने वाले हैं, वे उसके पैरों को चाटकर उसकी रक्षा करते हैं। जब वह बपतिस्मा लेने के लिए खुद को पानी के कुंड में फेंकती है, तो वह फिर से मौत से बच जाती है - बिजली की चमक से पानी में छिपी मछलियाँ मर जाती हैं, और वे बेजान होकर सतह पर तैरने लगती हैं। रानी ट्राइफ़ेना, जो थेक्ला से मित्रता कर चुकी है, सदमे से बेहोश हो जाती है क्योंकि थेक्ला की जान लेने के लिए बार-बार प्रयास किए जाते हैं। यह देखकर, सिकंदर अंततः गवर्नर से थेक्ला को मुक्त करने की विनती करता है।

एक बार फिर आज़ाद होने के बाद, थेकला पौलुस की तलाश करती है। वह पुरुष की पोशाक पहनकर खुद को पुरुष के रूप में प्रच्छन्न करती है। मायरा में पहुँचकर, वह पौलुस को ढूँढती है और उसे बताती है कि वह इकुनियुम लौट रही है। पौलुस उसे "परमेश्वर का वचन सिखाने" का आदेश देता है। इकुनियुम में कुछ समय तक पढ़ाने के बाद, थेक्ला सिलूकिया की यात्रा करती है।

थेक्ला के जीवन के बाकी हिस्से के बारे में ठीक से लिखा नहीं गया है। कुछ पांडुलिपियों में दर्ज है कि थेकला, सिलूकिया के लोगों से डरकर, एक पहाड़ पर चली गई और एक गुफा में रहने लगी। वहाँ उसने एक तपस्वी जीवन जिया, अपने पास आने वाली कुछ स्त्रियों को शिक्षा दी और उपचार का काम किया। बाद में वह पौलुस की तलाश में रोम चली गई। हालाँकि, पौलुस पहले ही मर चुके थे। जब 90 वर्ष की आयु में थेक्ला की मृत्यु हुई, उसे उसके प्रिय गुरु की कब्र से कुछ ही दूरी पर दफनाया गया।

हालाँकि इस कार्य को आपोक्रिफल माना जाता है और इसे नए नियम कैनन से बाहर रखा गया है, फिर भी कुछ शुरुआती लेखक हैं जिन्होंने इसे बहुत सम्मान दिया है। पौलुस के कार्य, जिसका यह दस्तावेज़ एक हिस्सा है, का उल्लेख ओरिगेन और हिप्पोलिटस द्वारा सम्मानपूर्वक किया गया है। यूसेबियस की राय थी कि दस्तावेज़ नकली था, लेकिन उन्होंने इसे घटिया विधर्मी कार्यों से अलग किया। दो उदाहरण ऐसे हैं जहाँ पौलुस के कार्य से जानकारी का विवरण प्रारंभिक कैनोनिकल पुस्तकों की पांडुलिपियों में पाया गया है (2 तिम 3:11; 19)। यह संभव है कि इस दस्तावेज़ में दर्शाए गए दृष्टिकोण दूसरी शताब्दी ईस्वी में व्यापक रूप से प्रचलित लोकप्रिय धार्मिक परंपराओं को प्रतिबिंबित करते हों।

हालाँकि, तेर्तुलियन का तर्क है कि यह दस्तावेज़ पौलुस के दृष्टिकोण से, जैसा कि कैननिकल सामग्री में व्यक्त किया गया है, काफी भिन्न है। विशेष रूप से, वे पौलुस और थेक्ला के कार्य में एक महिला द्वारा निभाई गई भूमिका पर आपत्ति जताते हैं। तेर्तुलियन कहते हैं कि पौलुस कभी भी किसी महिला को शिक्षा देने या बपतिस्मा देने की अनुमति नहीं देते (बपतिस्मा पर 17.21–23)। पौलुस और थेक्ला के कार्य में पौलुस के दृष्टिकोण से अंतर है, लेकिन वह वैसा नहीं है जैसा तेर्तुलियन ने इंगित किया। यह दस्तावेज़ पौलुस को एंक्रेटाइट दृष्टिकोण का समर्थक दिखाता है, जिसमें सिखाया गया है कि उद्धार के लिए अविवाहित जीवन आवश्यक है। कैनोनिकल पौलुस सिखाते हैं कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है, और अविवाहित जीवन एक विशेष बुलाहट का विषय है, और निश्चित रूप से हर मसीही के लिए यह सामान्य आदर्श नहीं है (1 कुरि 7:1–7) । पौलुस और थेक्ला की कृतियाँ सुझाव देते हैं कि एक स्त्री को नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए पुरुषों का परिधान धारण करना चाहिए और विवाह से बचना चाहिए। प्रमाणिक ग्रन्थ में पौलुस ने निर्देश दिया कि नेतृत्व की स्थिति में एक स्त्री को स्त्री के रूप में कपड़े पहनने चाहिए (1 कुरि 11:4–6), और उन्होंने विवाहित स्त्रियों के सेवा कार्य को स्वीकार किया (रोम 16:3) । पौलुस और थेक्ला की कृतियाँ एक स्त्री का अनुकरण करते हैं जिसकी प्रेरक शक्ति प्रेरित के प्रति व्यक्तिगत भक्ति थी। कैनोनिकल लेखन में संकेत मिलता है कि पौलुस व्यक्तिगत रूप से अपनी ओर ऐसी निष्ठा दिखाने के प्रति दृढ़तापूर्वक असहमति जताते थे (1 कुरि 1:12–17)। केवल मसीह को ही मसीही सेवा में प्रेरक प्रभाव होना चाहिए।

पौलुस और थेक्ला के कार्य हमें पौलुस की शारीरिक उपस्थिति का एक अनोखा विवरण प्रदान करते हैं: "एक छोटा कद का व्यक्ति, गंजा सिर और टेढ़े पैर, अच्छे शरीर वाला, भौहें मिली हुई और नाक कुछ झुकी हुई, मित्रता से भरा हुआ; क्योंकि अभी वह मनुष्य सा दिखाई देता था, और अब उसका मुख स्वर्गदूत सा था।" यह विवरण संभवतः किसी भी

ऐतिहासिक दृष्टि से विश्वसनीय नहीं है; अधिक संभावना यह है कि यह उस काल के एक विशिष्ट यहूदी का चित्र है। लेकिन क्योंकि प्रारंभिक दस्तावेजों में कोई अन्य विवरण संरक्षित नहीं है, इसने पौलुस के कई चित्रों का आधार बनाया है जो सदियों से चले आ रहे हैं।

पौलुस का प्रकाशन

यह दस्तावेज, जो चौथी शताब्दी ई. के अंत में उत्पन्न हुआ था, यह दिखाने का प्रयास करता है कि प्रेरित पौलुस ने तीसरे स्वर्ग या स्वर्गलोक में उठाए जाने पर कुछ अनुभव किए थे, जैसा कि 2 कुरि 12:2–4 में वर्णित है। इस तथ्य ने कि पौलुस ने उस प्रकाशन के दौरान जो देखा या सुना, उसका वर्णन नहीं किया, चौथी शताब्दी के किसी अज्ञात मसीही की कल्पना को उत्तेजित किया। लेखक नरक में एक प्राचीन, बिशप और सेवक द्वारा अनुभव की गई यातनाओं (अध्याय 34–36) का आनंदपूर्वक वर्णन करता है और कहीं-कहीं सन्यासियों और ननों की भक्ति और पवित्रता (अध्याय 7–9) तथा कुँवारी या शुद्ध जीवन जीने वालों (अध्याय 22) की प्रशंसा करता है। इस तरह से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लेखक एक सन्यासी था जो अपने समकालीनों की, चाहे वे लेम्यान हों या याजक, उनकी नकली और कपटपूर्ण धार्मिकता को नापसंद करता था।

यह पुस्तक, जो मूल रूप से यूनानी में लिखी गई थी, लैटिन में अपेक्षाकृत पूर्ण रूप में संरक्षित है। इस धार्मिक कथा की महान लोकप्रियता का एक आंशिक संकेत यह है कि इसे लैटिन के साथ-साथ इथियोपियाई, कॉप्टिक और सिरिएक में भी अनुवादित किया गया था।

इस पुस्तक को सात खंडों में हलके ढंग से संरचित किया गया है। यह कार्य एक छोटे परिचयात्मक खंड से शुरू होता है जो बताने का प्रयास करता है कि यह पुस्तक पहली से चौथी शताब्दी तक क्यों अज्ञात रही (अध्याय 1–2): सम्राट थियोडोसियस अगस्टस द यंगर और साइनेजीयस के राजत्व के दौरान (जिससे यह दस्तावेज़ ईस्वी सन् 388 का प्रतीत होता है), एक सम्माननीय किन्तु अज्ञात व्यक्ति को एक स्वर्गदूत के माध्यम से एक प्रकाशन प्राप्त हुआ। वह व्यक्ति तर्सुस में रह रहा था, उस घर में जहाँ कभी संत पौलुस स्वयं निवास करते थे। स्वर्गदूत ने उस व्यक्ति को नींव को तोड़ने और जो भी मिले उसे प्रकाशित करने का आदेश दिया। आज्ञा न मानने पर स्वर्गदूत द्वारा पीटे जाने के बाद, उस व्यक्ति ने नींव तोड़ी और एक संगमरमर का डिब्बा पाया जिसे उसने तुरंत सम्राट को सौंप दिया। सम्राट ने डिब्बा खोला और उसमें पौलुस के प्रकाशन का मूल संस्करण (जिसकी उसने प्रतिलिपि बनाई) और पौलुस द्वारा उनके मिशनरी यात्राओं में प्रयुक्त एक जोड़ी जूते पाए। इसके बाद रहस्यमय दस्तावेज़ की सामग्री प्रस्तुत की गई है।

अध्याय 3–6 में, पौलुस के बारे में कहा गया है कि उसने परमेश्वर से एक संदेश प्राप्त किया, जिसमें बताया गया कि संपूर्ण सृष्टि परमेश्वर के अधीन है, केवल मनुष्य स्वयं को छोड़कर। अध्याय 7–10 में यह वर्णन है कि प्रत्येक पुरुष और महिला के रक्षक स्वर्गदूत प्रतिदिन सुबह और शाम परमेश्वर को उनके जिम्मे वाले लोगों के कार्यों के बारे में रिपोर्ट करते हैं। इनमें से कुछ कार्य बहुत अच्छे होते हैं, जबकि अन्य अत्यधिक दुष्ट होते हैं। अध्याय 11–18 में, पौलुस पवित्र आत्मा में तीसरे स्वर्ग तक ले जाया जाता है और वहाँ पर वह धर्मियों और पापियों की आत्माओं को देखना चाहता है जब वे इस संसार को छोड़ते हैं। पौलुस के साथ आया स्वर्गदूत उसे एक धर्मी व्यक्ति को दुनिया छोड़ते हुए दिखाता है, एक अधर्मी व्यक्ति, और एक ऐसे व्यक्ति की आत्मा दिखाता है, जो स्वयं को धर्मी मानता था, परंतु वास्तव में वह ऐसा नहीं था।

अध्याय 19–30 पौलुस को तीसरे स्वर्ग तक उठाए जाने का वर्णन करते हैं (तुलना करें 2 कुरि 12:2–4), जहाँ उन्होंने स्वर्ण स्तंभों से घिरे स्वर्ण द्वार को देखा, जिन पर धर्मियों के नाम अंकित स्वर्ण पट्टिकाएँ लगी थीं। स्वर्ग में प्रवेश करने पर उनका स्वागत हनोक और एलिय्याह ने किया और उन्हें ऐसी चीजें दिखाई गईं जिन्हें वे दूसरों को प्रकट नहीं कर सकते थे (अध्याय 21; पुष्टि करें 2 कुरि 12:4)। वहाँ से उन्हें दूसरे स्वर्ग और फिर महासागर से घिरे आकाशमंडल में ले जाया गया (अध्याय 21)। वहाँ उन्होंने झील अचेरूसिया के दूध जैसे सफेद जल को देखा जहाँ मसीह का नगर स्थित था। उन्हें स्वर्ण नाव में नगर में लाया गया जबकि 3,000 स्वर्गदूत एक भजन गा रहे थे। शहद की नदी पर उन्होंने यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल और अन्य भविष्यद्वक्ताओं से मुलाकात की (अध्याय 25); दूध की नदी पर उन्होंने हेरोदेस द्वारा मारे गए शिशुओं को देखा (अध्याय 26); दाखरस की नदी पर उन्होंने अब्राहम, इसहाक, याकूब, लूत और अय्यूब से मुलाकात की (अध्याय 27); तेल की नदी पर उन्होंने उन लोगों से मुलाकात की जो पूरी तरह से परमेश्वर को समर्पित थे (अध्याय 28) । नगर के केंद्र में, एक महान वेदी के पास, दाऊद ने परमेश्वर के लिए हालेलुयाह गाया।

पौलुस की नर्क यात्रा का वर्णन अध्याय 31–44 में किया गया है; यह एक ऐसा स्थान है जो दुःख और पीड़ा से भरा हुआ है, जहाँ आग से उबलती हुई एक नदी बहती है। इस नदी में कुछ दंडित लोग अपने घुटनों तक, कुछ अपनी नाभि तक और कुछ अपने होंठों तक डूबे हुए थे, उनके पापों की गंभीरता के अनुसार (अध्याय 31)। अध्याय 34–36 में एक याजक, बिशप और सेवक की यातनाओं का वर्णन किया गया है। इस पूरे खंड में कल्पना की जा सकने वाली सबसे भयानक यातनाओं का बड़े ही आनंद के साथ विस्तार से वर्णन किया गया है। अंततः, अध्याय 44 में, मसीह यह आदेश देते हैं कि पौलुस के कारण अब से रविवार को कोई यातना नहीं दी जाएगी।

इसके बाद पौलुस का स्वर्गीय मार्गदर्शक स्वर्गदूत उन्हें स्वर्ग में ले जाता है (अध्याय 45–51), जहाँ सभी युगों के धर्मी लोग उनसे मिलने के लिए उत्सुक हैं। वह वहाँ कुंवारी मरियम

(अध्याय 46), अब्राहम, इसहाक, और याकूब से मिलते हैं, साथ ही याकूब के 12 पुत्रों से भी (अध्याय 47), मूसा से मिलते हैं, जो अब तक परिवर्तित नहीं हुए यहूदियों के लिए दुखी होते हैं (अध्याय 48)। वे यशायाह, यिर्मयाह, और यहेजकेल से मिलते हैं, जो अपने-अपने बलिदान की कहानी बताते हैं, और फिर लूत और अय्यूब (अध्याय 49), नूह (अध्याय 50), एलियाह, एलीशा, जकर्याह और उनके पुत्र यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, तथा आदम (अध्याय 51) से भी मिलते हैं। यह दस्तावेज़ यहाँ समाप्त होता है या कुछ अन्य संस्करणों में, पौलुस की जैतून पर्वत की चमत्कारिक यात्रा के साथ समाप्त होता है, जहाँ उन्हें और अन्य शिष्यों को दिव्य आदेश प्राप्त होता है।

दस्तावेज़ विरोधाभासों और असंगतियों से भरा हुआ है और अनुवादित संस्करणों में से कई सभी विवरणों में एक-दूसरे से सहमत नहीं हैं। दस्तावेज़ का मुख्य महत्व चौथी शताब्दी के अंत के मसीही विश्वास के विचारों की झलकियों के संदर्भ में है।

पौलुस का दुःखभोग

यह एक संशोधित लातीनी संस्करण है जो आपोक्रिफल पौलुस की शहादत का हिस्सा है, जिसे पौलुस के कार्य नामक ग्रंथों के एक बड़े संग्रह का हिस्सा माना जाता है। मूल शहादत की कहानी पौलुस द्वारा पैट्रोकलस को पुनर्जीवित करने पर आधारित है, जो नीरो का प्याला लाने वाला सेवक था और पौलुस के उपदेश के दौरान खिड़की से गिरकर मर गया था। पैट्रोकलस नीरो के सामने मसीह के प्रति अपनी नई निष्ठा की घोषणा करता है, जिससे नीरो हैरान रह जाता है। इसके बाद, नीरो सभी "महान राजा (मसीह) के सैनिकों" को पकड़ने का आदेश देता है, जिसमें पौलुस भी शामिल होता है। शहादत का विवरण इस कहानी में यह जोड़ता है कि सेनेका पौलुस और उसकी रचनाओं की प्रशंसा करता है और उनके कुछ अंश कथित रूप से नीरो को पढ़ाता है। साथ ही, पौलुस जब अपनी मृत्यु की ओर बढ़ता है, तो प्लॉटिला से एक रूमाल उधार लेता है और उसे लौटाने का वादा करता है। जब लौटने वाले सैनिक प्लॉटिला का मज़ाक उड़ाते हैं, तो वह उन्हें खून से सना रूमाल दिखाती है।

पौलुस और पतरस का दुःखभोग

देखें पौलुस और पतरस का दुःखभोग (नीचे)।

मोती का भजन

देखें थोमा की कृतियाँ (नीचे)।

पौलुस और पतरस का दुःखभोग

यह लेखन हमें दो रूपों में मिलता है, जिनमें से दोनों को मार्सेलस द्वारा लिखा गया माना जाता है और पांचवीं शताब्दी का है। पहला रूप पतरस और पौलुस की कृतियों के समान है और पौलुस की रोम की यात्रा पर जोर देता है। दूसरा रूप दोनों की रोम में उपस्थिति पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें उनका समय पुन्तियुस पीलातुस के एक रिश्तेदार के घर में रहने का विवरण शामिल है। दोनों रूप पतरस और पौलुस के निकट संबंध और उनके द्वारा शिमोन मागुस का सफलतापूर्वक विरोध करने पर जोर देते हैं, जो स्वयं को मसीह होने का दावा करता है। इनके मृत्युदंड के आदेश इन लेखों में शामिल हैं, लेकिन उनकी शहादत का विवरण संक्षिप्त है।

पतरस का सुसमाचार

देखें अख्मिम का खंड (ऊपर)।

पतरस का प्रचार

यह दस्तावेज़, जो केवल अंशों में ही बचा है, ऐसा प्रतीत होता है कि इसे मिस्र में दूसरी शताब्दी ई. की शुरुआत में लिखा गया था। जबकि शीर्षक स्पष्ट रूप से पेट्रिन के लेखक होने का दावा नहीं करता है, इसे सिकन्दरिया के क्लेमेंट (दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध) द्वारा प्रेरित पतरस (स्ट्रोमेटा 2.15.68) द्वारा एक प्रामाणिक रचना माना गया था। पतरस के उपदेश के अधिकांश अंश सिकन्दरिया के क्लेमेंट के लेखन में संक्षिप्त उद्धरणों के रूप में संरक्षित हैं।

चौथी सदी के कलीसिया इतिहासकार कैसरिया के यूसेबियस ने देखा कि पतरस के प्रचार को किसी भी प्राचीन प्राधिकरणों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था (हिस्टोरिया एक्क्लेसियास्तिका 3.3.1–4), यद्यपि उसे क्लेमेंट द्वारा इसे स्वीकार किए जाने की जानकारी नहीं थी। हालांकि इस दस्तावेज़ के केवल अंश ही बचे हैं, फिर भी वे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे प्रारंभिक मसीही साहित्य के इतिहास में एक संक्रमणकालीन अवस्था को प्रकट करते हैं। पहली सदी के दौरान, मसीही साहित्य, जिसमें समस्त नया नियम शामिल था, अन्य मसीहों के लिए लिखा गया था। दूसरी सदी में, मसीही लेखकों ने अपने विश्वास की रक्षा के लिए अपनी शत्रु मूर्तिपूजकों और यहूदियों की आलोचनाओं के विरुद्ध उत्तर देने की आवश्यकता महसूस की। दूसरी सदी के आरंभ में मसीही स्पष्टीकरण (अर्थात् "रक्षा") साहित्य का एक नया प्रकार प्रकट हुआ, जैसे कि प्रारंभिक मसीही पक्षसमर्थक क्वाद्रातुस और अरिस्टाइड्स की रचनाएँ। प्रीचिंग ऑफ पीटर उस प्रकार के पक्षसमर्थन लेखन और प्रेरितों के कार्यों में पाए जाने वाले उपदेशों और प्रारंभिक पक्षसमर्थकों की रचनाओं के बीच एक संक्रमण को प्रदर्शित करता है।

क्योंकि क्लेमेंट पतरस के प्रचार से विभिन्न अंशों का उद्धरण निरुद्देश्यता से करते हैं, इसलिए मूल रचना में उद्धरणों की क्रमबद्धता निर्धारित करना संभव नहीं है। क्लेमेंट के उद्धरणों के सारांश से दस्तावेज़ की कुछ मुख्य बातें स्पष्ट होती हैं। क्लेमेंट के अनुसार, पतरस ने प्रभु को "व्यवस्था और वचन" कहा था (स्ट्रोमाटा 1.29.182; 2.15.68)। मनुष्य को यह

स्वीकार करना चाहिए कि एक परमेश्वर ने सभी वस्तुओं की शुरुआत की और उसके पास सभी चीज़ों का अंत करने की शक्ति है (स्ट्रोमाटा 6.5.39–41)। प्रीचिंग ऑफ पीटर का लेखक जिन मूर्तिपूजकों का विरोध करता है, वे मानते थे कि सृष्टि अजेय और शाश्वत है। लेखक का तर्क है कि परमेश्वर अदृश्य, अपरिहार्य, किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं रखने वाला, अकल्पनीय, शाश्वत, अमर और अजन्मा है। इस परमेश्वर की उपासना यूनानियों की भांति नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि उन्होंने मूर्खता से साधारण पदार्थों की छवियाँ बनाई हैं और उन्हें देवता मानकर उनकी पूजा करते हैं। इसके अतिरिक्त, वे जानवरों को जो भोजन के लिए उपयोग किए जा सकते थे, इन मूर्तियों के लिए बलिदान करते हैं। यहूदियों की उपासना का अनुसरण भी नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वे स्वर्गदूतों, महादूतों, महीनों और चंद्रमा का सम्मान करते हैं। यदि इस्राएल के किसी भी राष्ट्र का कोई व्यक्ति पश्चाताप करेगा, तो उसे क्षमा मिलेगी (स्ट्रोमाटा 6.5.43)। एक स्थान पर प्रीचिंग ऑफ पीटर में वर्णन किया गया है कि कैसे प्रभु ने पुनरुत्थान के बाद अपने शिष्यों को दुनिया भर में सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजा (स्ट्रोमाटा 6.6.48), हालांकि इस विवरण और पूर्ववर्ती पक्षसमर्थन वक्तव्यों के बीच सटीक संबंध स्पष्ट नहीं है। हो सकता है कि दस्तावेज़ एक विशेष संस्करण के साथ आरंभ हुआ हो। एक अन्य स्थान पर दस्तावेज़ में यह कहा गया है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता मसीह के बारे में बोलते हैं, कभी-कभी पहेलियों में और कभी-कभी स्पष्ट रूप से (स्ट्रोमाटा 6.15.128)। वास्तव में, मसीह के जीवन के मुख्य घटनाएँ—उनका आगमन, यातना, क्रूस पर चढ़ाया जाना, मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण—भविष्यद्वक्ताओं द्वारा विस्तार से भविष्यद्वानी की गई थीं।

प्रीचिंग ऑफ पीटर के बचे हुए अंशों का महत्व इस बात में है कि वे किस प्रकार से यह प्रकट करते हैं कि दूसरी सदी के आरंभिक मसीही धर्म ने सुसमाचार के प्रचार में रक्षात्मक से आक्रामक स्थिति में संक्रमण किया।

पतरस के स्लावोनिक कार्य

यह पतरस की बाद की यात्राओं और रोम में उसकी मृत्यु का विवरण है, जो केवल स्लावोनिक भाषा में सुरक्षित है। इस विवरण के अनुसार, एक बालक (यीशु) पतरस के पास आता है और उसे रोम जाने के लिए कहता है। मीकाईल नामक स्वर्गदूत जहाज के कप्तान के रूप में उन्हें रोम ले जाता है। रोम पहुँचने के बाद, पतरस बालक से कुछ मछलियाँ पकड़ने के लिए कहता है, और वह एक घंटे में 12,000 मछलियाँ पकड़ता है। फिर उस बालक को रोमी कुलीन अरविस्तुस को 50 स्वर्ण मुद्राओं में बेच दिया जाता है। बालक अपने शिक्षकों को शांत कर देता है। स्वर्गदूतों के दर्शन के बाद, पूरा परिवार बपतिस्मा लेता है। नीरो पतरस को गिरफ्तार करता है, जिस पर बालक उसे फटकारता है। कई मृतकों को जीवित किया जाता है, परन्तु बालक उन्हें मीकाईल द्वारा पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में कब्रों में लौटने के लिए भेजता है। पतरस को उल्टा क्रूस पर चढ़ाया जाता है। जब बालक प्रकट करता है कि वह यीशु है, तो कीलें पतरस के शरीर से गिर जाती हैं; वह अपने जल्लादों के लिए क्षमा की प्रार्थना करता है, और फिर उसकी मृत्यु हो जाती है। आरंभिक कलीसिया के नेताओं के ऐसे आपोक्रिफल विवरणों में प्रायः प्रेरितों के असामान्य कार्य और मसीह के साथ उनके संपर्क का वर्णन किया गया है।

पतरस का फिलिप्पुस को पत्री

यह पत्र 1947 में नाग हम्मादी में मिली ग्नॉस्टिक सामग्री का एक भाग है। यह संभवतः दूसरी सदी के अंत या तीसरी सदी की शुरुआत का है। पत्री का नाम उस अंश से आता है, जिसमें पतरस दावा करता है कि उसने यह सामग्री फिलिप्पुस को भेजी थी। पत्री का स्वरूप संवादमूलक है, जो ग्नॉस्टिक साहित्य में आम है। इस लेखन का मुख्य भाग उन प्रश्नों की श्रृंखला है, जो प्रेरित पुनर्जीवित प्रभु से पूछते हैं, और वह उनके उत्तर देता है। ये प्रश्न दिव्य प्रकाश द्वारा प्रकट विश्व संरचना के ग्नॉस्टिक दर्शन की व्याख्या का आधार प्रदान करते हैं। वह प्रकाश मसीह है, जो स्वर्गीय उद्धारकर्ता है।

पीलातुस की कृतियाँ

यह एक अपोक्रिफल दुःखभोग सुसमाचार है जो अपनी वर्तमान रूप में चौथी सदी के मध्य तक पहुँच गया। सबसे पहले जिस मसीही लेखक ने पीलातुस की कृतियाँ का उल्लेख किया, वह एपिफेनियस था, जो एक कलीसिया के विधर्मी शिकारी थे। उन्होंने 375 ईस्वी में विभिन्न विधर्मों की लंबी निंदा लिखी, जिसमें पीलातुस की कृतियाँ का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया (हेरेसिस 50.1)। इससे पहले, जस्टिन मार्टियर ने यीशु के मुकदमे के संबंध में तिबेरियस को पीलातुस की रिपोर्ट का संदर्भ दिया था (I आपोलोजी 35; 48), लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वह पीलातुस की कृतियाँ का संदर्भ दे रहे थे। दूसरी सदी के अंत तक, जस्टिन के एक पीढ़ी बाद, तर्तुलियन ने सम्राट तिबेरियस को पीलातुस द्वारा भेजी गई एक रिपोर्ट का उल्लेख किया, लेकिन यह पीलातुस के कार्य नहीं हो सकता क्योंकि इसमें बताया गया था कि यीशु ने शासक के सामने कई चमत्कार किए थे। यद्यपि यह असंभव नहीं कि पीलातुस की कृतियाँ का एक प्रारंभिक संस्करण चौथी सदी से पहले का हो, लेकिन इसका वर्तमान संस्करण उसी सदी के मध्य में माना जाता है। पीलातुस की कृतियाँ की मूल भाषा यूनानी थी, और इसका अनुवाद लातीनी, कॉप्टिक और अर्मेनियाई में किया गया था। चौथी सदी के कलीसिया इतिहासकार और केसरीया के बिशप यूसेबियस ने इसे यीशु का अपमान करने वाला एक विधर्मी दस्तावेज माना और इसकी निंदा की (हिस्टोरिया एकलेसिअस्टीका, 1.9.3; 9.5.1)। संभवतः द क्रिस्चियन एक्ट्स ऑफ पायलेट इसी मूर्तिपूजक दस्तावेज का प्रतिकार करने के लिए लिखा गया था।

अपोक्रिफा

पीलातुस की कृतियाँ एक संयुक्त दस्तावेज है जिसमें दो मुख्य भाग हैं। पहला भाग (अध्याय 1–16) इब्रानी से यूनानी में नीकुदेमुस द्वारा यीशु के दुखभोग से जुड़ी घटनाओं के बारे में लिखे गए विवरण का अनुवाद है। दूसरा भाग (अध्याय 17–27), जिसे "मसीह का अधोलोक में उतरना" भी कहा जाता है, धर्मी मृतकों की मुक्त करने के लिए मसीह के अधोलोक में उतरने का विशद वर्णन करता है (1 पत 3:19 का एक कल्पनाशील विस्तार जिसे स्वयं प्रेरितों के पंथ में "वह अधोलोक में उतरा" वाक्यांश में बदल दिया गया था)। चौदहवीं सदी के बाद, पूरे दस्तावेज को सामान्यतः गोस्पेल ऑफ निकुदेमुस के रूप में जाना जाने लगा, क्योंकि इस दस्तावेज में निकुदेमुस की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

पीलातुस की कृतियाँ की भूमिका में, एक रोमी सैनिक हनन्याह दावा करता है कि उसने पीलातुस की कृतियाँ को इब्रानी में पाया और सम्राट फ्लावियस थियोडोसियस के शासन के 18वें वर्ष (ईसा पश्चात 425) में इसका अनुवाद यूनानी भाषा में किया। दस्तावेज़ का उद्धरण इस प्रकार है: तिबिरियुस कैसर के 15वें वर्ष (ईसा पश्चात 29) में, निकुदेमुस ने यीशु के दुःख, मृत्यु और पुनरुत्थान से जुड़े घटनाक्रम का एक विवरण लिखा। यहूदी महायाजकों ने पीलातुस के सामने यीशु पर विभिन्न धार्मिक अपराधों का आरोप लगाया और उसे न्यायालय में पेश करने का अनुरोध किया। पीलातुस के अनिच्छुक होने के बावजूद उसने बड़े सम्मान के साथ यीशु को बुलवाया। जब यीशु पहुँचे, तो रोमी प्रतीक चिन्ह स्वयं ही उनके सामने झुक गए (अध्याय 1)। अध्याय 2 में यहूदियों ने यीशु पर आरोप लगाए: (1) कि उनका जन्म व्यभिचार से हुआ था, (2) कि उनके जन्म से बैतलहम के बच्चों की मृत्यु हुई, और (3) कि युसूफ और मरियम मिस्र चले गए क्योंकि उन्हें इस्राएल के लोगों में कोई सम्मान नहीं था। व्यभिचार का आरोप तुरंत 12 धर्मी यहूदियों द्वारा खारिज कर दिया गया जिन्होंने मरियम और युसूफ की सगाई देखी थी। अध्याय 3 में पीलातुस और यीशु के बीच एक संवाद (यूह 18:33–38 पर आधारित) शामिल है। यहूदियों ने यीशु पर परमेश्वर की निंदा करने का आरोप लगाया, और पीलातुस ने अनिच्छा से यीशु को उन्हें सौंप दिया (अध्याय 4)। इसके बाद निकुदेमुस यहूदी परिषद में खड़े होकर यह आग्रह करते हैं कि वे यीशु को जाने दें, क्योंकि यदि वह परमेश्वर से नहीं हैं तो उनका आंदोलन असफल हो जाएगा (पुष्टि करें प्रेरि 5:38–39), लेकिन यहूदी इसका विरोध करते हैं (अध्याय 5)। फिर यीशु द्वारा चंगे किए गए तीन यहूदी उनके समर्थन में गवाही देते हैं (अध्याय 6), और इसके बाद रक्तस्राव से चंगी हुई स्त्री बर्नीस गवाही देती हैं (अध्याय 7)। भीड़ यीशु को एक नबी घोषित करती है (अध्याय 8)। जब पीलातुस एक कैदी को छोड़ने की पेशकश करते हैं, तो यहूदी बरअब्बा को माँगते हैं, और पीलातुस फिर हाथ धोते हैं और यीशु को दो अपराधियों, डाइसमास और गेस्टास के साथ कोड़े मारकर क्रूस पर चढ़ा दिया जाता है (अध्याय 9)। भीड़ यीशु का उपहास करती है, जबकि एक अपराधी (गेस्टास) को दूसरा अपराधी डांटता है (अध्याय 10)। यीशु की मृत्यु के समय सूर्य पर अंधकार छा जाता है, जिसे यहूदी सामान्य ग्रहण मानते हैं (अध्याय 11)। इसके बाद अरिमथिया के युसूफ को यहूदी पकड़ कर जेल में डाल देते हैं; जब वे उसे मारने आते हैं, तो वह गायब हो जाता है (अध्याय 12)। कब्र पर पहरेदारों ने स्वर्गदूत के दर्शन की सूचना दी, लेकिन यहूदियों ने उन्हें रिश्वत देकर चुप करा दिया (अध्याय 12)। फिर तीन यहूदी गलील से आते हैं: फिनेहास, एक याजक; अदास, एक शिक्षक; और एंगाइअस, एक लेवी। वे बताते हैं कि उन्होंने माउंट मालीच पर यीशु के महान आदेश और स्वर्गारोहण का साक्षात्कार किया (अध्याय 14)। निकुदेमुस सुझाव देते हैं कि आस-पास के पहाड़ों की जाँच की जाए ताकि यह देखा जा सके कि कहीं कोई आत्मा यीशु को ऊपर ले जाकर चट्टानों पर गिरा तो नहीं दिया, लेकिन यहूदी वहाँ कुछ नहीं पाते सिवाय अरिमथिया के युसूफ के, जो अपने नगर में होते हैं (अध्याय 15)। युसूफ को परिषद में गवाही देने के लिए बुलाया जाता है और वह बताता है कि पुनर्जीवित यीशु ने कैद के दौरान उससे भेंट की और उसे रिहा कर दिया (अध्याय 15)। अन्य गवाहों की गवाही सुनने के बाद, परिषद यह निर्णय लेती है कि यदि 50 वर्षों के बाद भी यीशु की स्मृति जीवित रहती है, तो ये कहानियाँ सत्य हो सकती हैं (अध्याय 16)।

दूसरा दस्तावेज़ युसूफ द्वारा परिषद में बोलने का एक विवरण प्रस्तुत करता है। युसूफ का दावा है कि दो भाई यीशु के साथ ही पले-बढ़े थे। परिषद उन्हें उनकी कहानियाँ बताने के लिए बुलाती है (अध्याय 17)। अधोलोक में रहते हुए, उन भाइयों का दावा है कि एक महान प्रकाश प्रकट हुआ और अब्राहम और यशायाह आनंदित हो उठे (अध्याय 18)। शैतान ने सोचा कि यीशु को अधोलोक में रोका जा सकता है (अध्याय 20); लेकिन जब महिमा के राजा (मसीह) पहुंचे, तो द्वार टूट गए। शैतान को स्वर्गदूतों को सौंप दिया गया, जो उसे बाँधने के लिए थे (अध्याय 22) और अधोलोक द्वारा अपने राज्य के विनाश का कारण बनने के लिए उसे डाँटा गया (अध्याय 23)। महिमा के राजा (मसीह) ने फिर आदम और अन्य धर्मी मृतकों को अधोलोक से बाहर निकाला (अध्याय 24) और उन्हें स्वर्ग में ले गए (अध्याय 25), जहाँ मन फिरानेवाले अपराधी को भी देखा गया (अध्याय 26)। दोनों भाइयों का दावा है कि उन्हें महादूत मीकाईल द्वारा यीशु के पुनरुत्थान का संदेश समस्त मानवजाति तक पहुँचाने के लिए भेजा गया है।

पीलातुस की कृतियाँ चार कैनोनिकल सुसमाचारों के उद्धरणों और संकेतों का एक संग्रह है, जो कल्पनाशील और आश्चर्यजनक परिवर्धनों के साथ मिश्रित है। यह मूल रूप से एक पक्षसमर्थन दस्तावेज़ है जो यीशु के पुनरुत्थान की सत्यता को मूर्तिपूजक और यहूदी विरोधियों के दावों के खिलाफ बचाव करने का प्रयास करता है। दुर्भाग्य से, इसमें एक यहूदी-विरोधी स्वर है जो चौथी शताब्दी से मध्य युग के अंत तक दुःखभोग सप्ताह की घटनाओं के मसीही नाटकीयकरण को चित्रित करता था।

पिस्टिस सोफिया

यह चौथी शताब्दी की एक कॉप्टिक पांडुलिपि (कोडेक्स एस्केवेनस) है, जो आज के प्रमुख ग्नोस्टिक कार्यों में से एक है। इस रचना में चार अध्याय हैं, और इसका नाम नायिका, सोफिया, से लिया गया है, हालांकि केवल पहले भाग में ही उसका उल्लेख है। इस भाग में बताया गया है कि कैसे यीशु ने अपने पुनरुत्थान के पहले 11 वर्षों के दौरान अपने शिष्यों को परम रहस्य, अर्थात् प्रकाश का खजाना सिखाने के लिए लौटे। यीशु जैतून पर्वत पर लौटते हैं जहाँ वह युगों के माध्यम से ऊपर उठाए जाते हैं और अपनी यात्रा में तेरहवें युग में पहुँचते हैं जहाँ वह सोफिया को पाते हैं। वह दुःख में है क्योंकि उसने प्रकाश के खजाने की एक झलक देखी है, लेकिन ऑथेडेस (स्वेच्छाचारी) द्वारा धोखा खा जाती है, जो उसके सामने झूठी चमक लाता है, जिससे वह पदार्थ की शक्तियों के हाथों में गिर जाती है। फिर भी, वह अपनी आशा और विश्वास बनाए रखती है, और 12 प्रार्थनाओं के बाद, यीशु उसे ऑथेडेस और अराजकता से मुक्त कराते हैं और उसे तेरहवें युग की निचली सीमा पर पुनःस्थापित कर देते हैं।

यह कार्य संवाद शैली में है - जिसमें यीशु अपने शिष्यों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देते हैं। इसकी विषयवस्तु पूर्णतः ग्नोस्टिक है, जो एक छुपे हुए सिद्धांत के द्वारा उद्धार की दृष्टि प्रस्तुत करती है जो ज्ञान का प्रकाश प्रदान करता है।

याकूब का प्रारंभिक सुसमाचार

*देखें*प्रारंभिक सुसमाचार, याकूब (ऊपर)।

सुलैमान के भजन

*देखें*के भजन, सुलैमान (नीचे)।

बरतुल्मै द्वारा मसीह के पुनरुत्थान की पुस्तक

*देखें*मसीह के पुनरुत्थान की पुस्तक, बरतुल्मै द्वारा (ऊपर)।

रूबेन का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

सिबिलीन भविष्यद्वानियाँ

मूल रूप से 15 पुस्तकों का एक छद्मग्रंथ,जिनमें से 12 बाद के यूनानी पांडुलिपियों में मौजूद हैं। शब्द *सिबिल* यूनानी मूल का है। यह देवताओं का एक भविष्यवक्ता होने का दावा करता था और आमतौर पर एक आने वाली विनाशकारी घटना का संदेश देता था। कुछ यहूदियों ने प्रचार उद्देश्यों के लिए इस लेखन शैली को अपनाया और उपयोग किया।

सिबिलीन भविष्यवाणियाँ मकाबियों के आरंभिक काल (165 ईसा पूर्व) से लेकर दूसरे मंदिर के विनाश (76 ईस्वी) के ठीक बाद तक की अवधि को शामिल करती हैं। लेखकों ने, संभवतः सिकंदरिया, मिस्र में लिखते हुए, परमेश्वर की एकता और सार्वभौमिकता पर जोर दिया। परमेश्वर सभी घटनाओं को नियंत्रित करता था, जबकि मूर्तिपूजक देवता व्यर्थ थे और कुछ भी करने में असमर्थ थे। "परन्तु परमेश्वर एक ही है, सबसे उच्च, जिसने आकाश, सूर्य, सितारे और चंद्रमा बनाए हैं... उसने मनुष्य को सभी का ईश्वर-निर्धारित शासक बनाया है। हे मनुष्यों... देवताओं को बनाने से शर्म करो" (पुस्तक 2)। परमेश्वर राष्ट्रों के इतिहास को नियंत्रित करता है। सिबिलीन भविष्यद्वानियों में दस पीढ़ियों का इतिहास प्रस्तुत किया गया है, असुर साम्राज्य से लेकर दूसरे मन्दिर के विनाश और महान भूकंप तक (पुस्तक 4.47ff)। तीसरी पुस्तक में एक खंड भी शामिल है जो महान न्याय से पहले की जाने वाली विनाश और कठिनाइयों का वर्णन करता है। इसमें दो मसीहाई खंड हैं, जहाँ मसीहा विश्वासी लोगों के लिए शांति और समृद्धि का युग लाता है: "वह मनुष्यों के ऊपर अपना राज्य सदा के लिए स्थापित करेगा... भले लोगों की भूमि पर केवल शांति ही आएगी" (पंक्तियाँ 767, 780)। अनन्त स्थिति उन विश्वासियों के लिए सुरक्षित रखी गई है जो मरे हुओं में से शरीर सहित जी उठेंगे: "परन्तु सब धर्मात्मा पृथ्वी पर फिर से जीएंगे, जब परमेश्वर उन्हें श्वास, जीवन और अनुग्रह देगा" (पुस्तक 4.187–190), जबकि अधर्मी नरक में फेंके जाएंगे, "और जिन्होंने अधर्म के कार्यों से पाप किया है, एक मिट्टी का ढेर उन्हें फिर से ढक देगा, और अंधकारमय टार्टरस और नरक की काली खाइयाँ" (पंक्तियाँ 183–186)।

सिबिलीन भविष्यद्वानियों के लेखकों का स्पष्ट उद्देश्य यहूदियों के विश्वास की तर्कसंगतता को प्रमाणित करना था, और उन्होंने अपने संदेश को यूनानियों द्वारा प्रस्तुत और रोमियों द्वारा सराहा गया सिबिल के रूप में प्रस्तुत किया। इस्राएल के परमेश्वर पर बल देने और मूर्तिपूजा के विरोध में, ये रचनाएँ परमेश्वर के अतीत और भविष्य के रहस्यों को प्रकट करने वाले भविष्यद्वानी साहित्य की धारा में खड़ी हैं। सिबिल को दिव्य भविष्यद्वक्ता के रूप में उपयोग करते हुए गैर-यहूदी संसार को संदेश पहुँचाने के लिए इस साहित्यिक शैली का प्रयोग किया गया।

सिलवानुस की शिक्षाएं

यह एक ग्नोस्टिक साहित्यिक रचना है, जिसे सिलवानुस, जो पतरस और पौलुस के साथी थे, से सम्बद्ध किया गया है। यह 1946 में मिस्र के ऊपरी हिस्से में चेनोबोस्कियन में खोजा गया था।

शिमोन का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (नीचे)।

पतरस के स्लावोनिक कृतियाँ

*देखें*के स्लावोनिक कार्य, पतरस (ऊपर)।

सुलैमान के भजन

सुलैमान के भजन 18 गीतों का संग्रह है जो सुलैमान को समर्पित हैं। इन्हें छद्मग्रंथ माना जाता है। भजन संभवतः एक लेखक द्वारा लिखे गए थे, जो पहली शताब्दी ई. पू. के मध्य में रहते थे और इब्रानी भाषा में लिखते थे। लेखक का धार्मिक दृष्टिकोण व्यवस्था, न्याय और इस्राएल के भविष्य के बारे में फरीसी विचारधारा का है। सुलैमान के भजन अपने रूप और वाक्यांशों में बाइबल के भजन पुस्तक से लिए गए हैं। रूप और वाक्यांशों में एक समानता यह है कि धर्मी और दुष्ट के बीच विरोधाभास पर जोर दिया गया है। दुष्ट वे अन्यजाति हैं जो प्रभु की पवित्र वस्तुओं को अपवित्र करते हैं (2:3) और वे धर्मत्यागी यहूदी हैं जो पाप में गिर गए हैं (3:11, 13)।

पापी का चरित्र मूर्ख का होता है, जबकि बुद्धिमान व्यक्ति का चरित्र इसके विपरीत होता है (पुष्टि करे. ज्ञान साहित्य)। मूर्ख को प्रभु की कोई चिंता नहीं होती (4:1); उसकी वाणी और कर्म उसकी अधर्मिता को प्रकट करते हैं (4:2के आगे के वचन) । वह अपने झूठ, दूसरों के न्याय, झूठी शपथों, उसकी अनैतिकता, नियमों की अवहेलना, और दूसरों की कीमत पर अपनी स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं के लिए जाना जाता है (पुष्टि करे. 12)। धर्मी वे बुद्धिमान होते हैं, जो प्रभु का भय मानते हैं (4:26) । वह बुरे सपनों या खतरनाक समयों से विचलित नहीं होते (6:4–5) । वह प्रभु की धार्मिकता के प्रति जोश से प्रेरित होता है, जब वह मन्दिर और व्यवस्था की अपवित्रता को देखता है (8:28)। प्रभु का प्रेम उसे अनुशासन में प्रकट होता है, और वह अपने पापों के लिए मन फिराने के साथ प्रभु की फटकार को स्वीकार करता है। लेखक धर्मियों की तुलना स्वर्ग में जीवन के वृक्ष से करता है। वे स्थिर होते हैं और उन्हें उखाड़ा नहीं जा सकता (14:2)। दूसरी ओर, अधर्मी इस जीवन में याद नहीं किए जाएँगे, और परमेश्वर धार्मिकता के साथ उन्हें "शेओल, अंधकार और विनाश" में डालकर न्याय करेंगे (14:6; 15:10)।

लेखक परमेश्वर को उन राष्ट्रों पर शासन करने वाले राजा के रूप में देखता है (2:34) जो अपने शत्रुओं और धर्मियों के शत्रुओं का न्याय करने के लिए तत्पर है (2:38; 4:9) और धर्मियों को न्याय दिलाने के लिए तत्पर है (2:39)। प्रभु की देखभाल प्रकृति में उसके पोषण से दिखती है (5:11–12), उसके द्वारा राजाओं, शासकों, और राष्ट्रों को उठाने में (5:13), और लेखक पाठक को आश्वासन देता है कि उसकी देखभाल विशेष रूप से गरीबों और उन पर है जो उसे पुकारते हैं (5:2–3, 13)। वह धर्मियों की आशा है (8:37)।

परमेश्वर के धर्मी राजत्व और उसके द्वारा धर्मियों की सुरक्षा में पूर्वगामी विश्वास को ध्यान में रखते हुए, भजन इस विश्वास से भरपूर हैं कि धर्मियों की ओर से परमेश्वर के हस्तक्षेप से बुराई दूर हो जाएगी। जिस विशेष ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इन भजनों की रचना हुई थी, वह पोंपे के यरूशलेम में प्रवेश और मन्दिर के अपमान (63 ईसा पूर्व) का समय था। पोंपे की मृत्यु (48 ईसा पूर्व, cf. 2:30) के बाद मसीही युग की आशा की गई थी। अतः, लेखक परमेश्वर को दाऊद के साथ किए गए वाचा की याद दिलाता है (17:5) और इस्राएल के पिछले पापों के लिए परमेश्वर से क्षमा माँगता है। इस्राएल को परमेश्वर के न्याय के कारण अन्य जातियों के आक्रमणों और नियंत्रण का सामना करना पड़ा है (17:6)। चूँकि पोंपे मर चुका था, लेखक ने दाऊदवंशी राजा के अधीन इश्वर-राज्य की पुनःस्थापना के लिए प्रार्थना की - "हे प्रभु, देख, और उनके लिए उनके राजा, दाऊद का पुत्र खड़ा कर। वह समय आ जाए जिसमें तू देखता है, हे परमेश्वर, कि वह इस्राएल, तेरे सेवक पर शासन करे" (17:23)। दाऊदवंशी मसीहा के माध्यम से पापियों, अधर्मी जातियों को देश से निकाल दिया जाएगा और धर्मियों को पवित्र किया जाएगा। मसीही राज्य केवल धर्मी बचे हुए लोगों पर स्थापित होगा, जो देश में लौटने पर 12 गोत्रों में विभाजित होंगे; दाऊदवंशी मसीहा उन गोत्रों और अन्य जातियों पर "अपनी धार्मिकता की बुद्धि" से शासन करेगा (17:29–31)। विदेशी और अन्य जातियाँ राज्य की महिमा में साझेदारी नहीं करेंगी, बल्कि उनकी स्थिति दासता की होगी।

इस्राएल के इस महिमामय भविष्य की आशा भजनों में प्रकट प्रकाशनात्मक तत्व है। ये भजन एक ऐतिहासिक संदर्भ में उत्पन्न हुए थे, लेकिन वे एक नए भविष्य की आशा करते हैं। भजनकार उन सभी पर आशीर्वाद देता है जो परमेश्वर के न्याय, इस्राएल की बहाली और मसीही राज्य के आगमन के साक्षी बनेंगे: "धन्य हैं वे जो उन दिनों में होंगे, क्योंकि वे इस्राएल की भलाई को देखेंगे जो परमेश्वर करेगा, जब वह गोत्रों को इकट्ठा करेगा। प्रभु इस्राएल पर अपनी दया शीघ्रता से लाए! प्रभु स्वयं युगानुयुग तक हमारे राजा हैं" (17:50–51)।

सुलैमान का करार

सुलैमान का करार दूसरी शताब्दी ई. पू. का एक छद्मग्रंथ है। यह लेखन दावा करता है कि इस करार का लेखक सुलैमान स्वयं था। यह सेमिटिक पांडुलिपियों में और कुछ यूनानी ग्रंथों में विद्यमान है।

सामग्री मूल रूप से मसीही है जिसमें क्रूस और कुंवारी जन्म पर जोर दिया गया है, परन्तु इसमें यहूदी सामग्री भी शामिल है। करार बताता है कि कैसे सुलैमान, प्रधान स्वर्गदूत माईकल द्वारा उसे दी गई अंगूठी के माध्यम से, दुष्टात्माओं को वश में करने और उनके कौशल का उपयोग करके अपना मन्दिर बनाने में सक्षम है। हालाँकि, मंदिर पूरा करने के बाद, सुलैमान एक शुनेमिन लड़की के प्रति अपनी वासना के कारण मूर्तिपूजा में चला जाता है। उसके पतन को विधान के लेखक ने दुष्टात्माओं की शक्ति और रूपों और उन पर अधिकार रखने वाले स्वर्गदूतों के बारे में पाठकों को चेतावनी देने के अवसर के रूप में लिया। इस रचना को करार के रूप में लिखा गया है ताकि सुलैमान (अपनी मृत्युशैया पर) अपनी सफलताओं और असफलताओं पर चिंतन करते हुए इस्राएल को अपनी विरासत छोड़ सके।

बारह कुलपिताओं के करार

यह यहूदी छद्मलेखीय ग्रंथ का एक हिस्सा है। इस रचना को "करार" कहा गया है क्योंकि यह याकूब के प्रत्येक पुत्र की मृत्युशैया पर दिए गए उपदेशों का प्रतिनिधित्व करता है। यह करार रूबेन के अपने पुत्रों को दिए गए उपदेश से शुरू होते हैं और बिन्यामीन के उनके वारिसों के लिए दिए गए करार के साथ समाप्त होते हैं। प्रत्येक कुलपिता अपने पुत्रों को अपने चारों ओर एकत्र करता है और अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करता है। उपदेश के दौरान, कुलपिता विशेष दोषों और दृष्टिकोणों के प्रति चेतावनी देते हैं और कुछ गुणों की सिफारिश करते हैं। प्रत्येक कुलपिता की चेतावनियों और सलाह में अक्सर उनके बच्चों के लिए पाप और मुक्ति के विषय में दृष्टिकोण और भविष्यद्वानियाँ शामिल होती हैं। कुलपिता के जीवन का विवरण उनके वंशजों के भविष्य के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करता है। उपदेश के अंत में, प्रत्येक कुलपिता की मृत्यु होती है और उन्हें हेब्रोन में दफनाया जाता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि "करार" की अवधारणा यहो 23–24 में अपनी दिशा पाती है, जहाँ यहोशू इस्राएल के पुरनियों, प्रधानों, न्यायियों और अधिकारियों को बुलाते हैं (यहो 23:2; 24:1) और अपनी मृत्यु से पहले उन्हें एक आदेश देते हैं। 1 रा 2:1–12 में दर्शाया गया है कि दाऊद सुलैमान को मृत्युशैया पर सलाह देते हैं कि वे परमेश्वर के मार्गों पर चलें। कुलपिताओं के भाषणों का आगे का शास्त्रीय संदर्भ उत्पत्ति अध्याय 49 में मिलता है, जहाँ याकूब अपने पुत्रों को उनके भविष्य के बारे में सुनने के लिए बुलाते हैं। भाषण के अंत में याकूब की मृत्यु हो जाती है (उत 49:33)।

वर्तमान पाठ्य रूप (स्लावोनिक, अर्मेनियाई और यहूदी संस्करण) संभवतः दूसरी या तीसरी शताब्दी ई.पू. के दौरान आया था। हालाँकि, अधिकांश सामग्री दूसरी या तीसरी शताब्दी ई.पू. की प्रतीत होती है। विद्वानों की आम सहमति यह है कि सेमिटिक भाषा (या तो इब्रानी या अरामी) में एक मूल पाठ किसी लेखक या लेखकों द्वारा सामान्य युग से पहले तीसरी या दूसरी शताब्दी में लिखा गया था। कुछ बाद की अवधि में, मूल पाठ में मसीही अनुभाग जोड़े गए। मसीही खंडों के उदाहरण: शिमोन का करार 6:7; लेवी का करार 10:2; दान का करार 6:9; नफ्ताली का करार 4:5; आशेर का करार 7:3–4; यूसुफ का करार 19:11; बिन्यामीन का करार 3:8; 9:2–4। ऐसा प्रतीत होता है कि इन करारों को सदियों के दौरान यहूदी और मसीही लेखकों द्वारा पुनः संपादित किया गया है। इस प्रकार हमारे पास लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का एक यहूदी दस्तावेज़ है, जिसमें लंबी अवधि के दौरान यहूदी और मसीही दोनों संपादन हुए हैं। इन करारों ने दसवीं शताब्दी में लोकप्रियता प्राप्त की, विशेषकर कुलपिताओं की भविष्यद्वानियों और उनके गुप्त ज्ञान में विशेष रुचि दिखाई गई।

नीचे प्रत्येक कुलपिताओं के करार का सारांश है। इन अंशों का आधार आर. एच. चार्ल्स के *प्सयूडेपिग्राफा* के पृष्ठ 282–367 पर है।

रूबेन

रूबेन का करार उनके पिता के बिस्तर को अपवित्र करने की स्मृति से अत्यधिक प्रभावित है। यह घटना उस समय की है जब रूबेन ने अपने पिता की दासी बिल्हा को शराब के नशे में बेहोशी की हालत में अपने पास बुला लिया। रूबेन के अनुसार, महिलाओं के कुछ नकारात्मक गुण होते हैं और वह अपने पुत्रों को चेतावनी देते हैं कि उन्हें महिलाओं के साथ अपने संबंधों में सतर्क रहना चाहिए। उनकी टिप्पणियाँ शायद बिल्हा के विषय में उनके और याकूब के बीच की कड़वाहट को दर्शाती हैं। रूबेन भविष्यद्वानी करते हैं कि उनके वंशज लेवी के पुत्रों से ईर्ष्या करेंगे, लेकिन वे उन्हें हरा नहीं पाएंगे। वह अपने वंशजों को परस्पर सम्मान और प्रेम रखने और अपने पड़ोसियों के प्रति सच्चाई निभाने की सलाह देते हैं। रूबेन को हेब्रोन में दफनाया गया।

शिमोन

कुलपिता शिमोन को एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यूसुफ को दासत्व में बेचे जाने की बाइबिलीय घटना को ध्यान में रखते हुए (उत्पत्ति 37:25–28), शिमोन स्वीकार करते हैं कि वह यूसुफ को बेचने के बजाय मार डालना चाहते थे। इस दृष्टिकोण के लिए, परमेश्वर ने उनके दाहिने हाथ को सात दिनों के लिए सुखा दिया। शिमोन अपने पुत्रों को ईर्ष्या, धोखा, और व्यभिचार से दूर रहने की चेतावनी देते हैं। वह भविष्यद्वानी करते हैं कि उनके पुत्र लेवी के पुत्रों को हानि पहुँचाने की कोशिश करेंगे, लेकिन लेवी के पुत्र श्रेष्ठ रहेंगे। शिमोन एक आनंदमय युग की आशा करते हैं (6:4–7a), जब "सर्वोच्च" को आशीर्वाद मिलेगा। पद 7b एक मसीही सम्मिलन है: "क्योंकि परमेश्वर ने एक शरीर धारण किया और मनुष्यों के साथ भोजन किया और उन्हें उद्धार किया।" वह अपने पुत्रों को लेवी और यहूदा के पुत्रों का पालन करने का आदेश देते हैं, क्योंकि उनसे ही उनका उद्धार पूरा होगा। वह भविष्यद्वानी करते हैं कि लेवी से एक महायाजक आएगा और यहूदा की वंशावली से एक राजा उतरेगा। शिमोन अपने करार का समापन इस भविष्यद्वानी के साथ करते हैं कि सभी गैर-यहूदी (एक सम्मिलन) और इस्राएल का उद्धार होगा।

लेवी

लेवी की मृत्युशय्या का करार सपनों के रूप में है, जिन्हें वह अपने पुत्रों को बताते हैं। वह भविष्यद्वानी करते हैं कि उनके और यहूदा के वंशजों में से प्रभु "मनुष्यों के बीच प्रकट होंगे" ताकि हर जाति का उद्धार कर सकें (2:11)। लेवी के वंशज "इस्राएल की सभी संतानों के लिए सूर्य के समान होंगे" (4:3b), और एक सपने में उन्हें दिखाया गया है कि याजकीय पद का आशीर्वाद उनके पुत्रों को मिलेगा (8:2–3)। लेवी

भविष्यद्वानी करते हैं कि यहूदा में एक राजा उठेगा; यह राजा एक नई याजकीय पद की स्थापना करेगा जो यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों की सेवा करेगी। दसवें अध्याय में एक मसीही सम्मिलन है कि अधर्म और अपराध के कारण, लेवी के पुत्र "विश्व के उद्धारकर्ता मसीह" के साथ अन्याय करेंगे (10:2) और इसके लिए वे पूरे विश्व में बिखेर दिए जाएंगे। तेरहवां अध्याय कुछ ज्ञान के विषयों को प्रस्तुत करता है जिसमें व्यवस्था के पालन की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। सोलहवें अध्याय में यह भविष्यद्वानी की गई है कि लेवी के पुत्र 70 सप्ताहों तक पथभ्रष्ट हो जाएंगे। अगले अध्याय में 70 सप्ताहों का विस्तृत विवरण है जिसमें प्रत्येक जुबिली के लिए एक याजकीय पद होगी। पहली याजकीय पद महान होगी, और याजक का परमेश्वर से ऐसा संबंध होगा कि परमेश्वर को पिता कहकर संबोधित किया जाएगा। दूसरी याजकीय पद "प्रियजनों के दुःख में उत्पन्न" होगी (17:3), लेकिन यह याजकीय पद सभी से महिमा पाएगी। अगले पाँच याजकीय पद दुःख, पीड़ा, घृणा, और अंधकार से युक्त होंगी। हालाँकि, एक नई याजकीय पद अंततः प्रकट होगी और समस्त पृथ्वी पर शांति स्थापित करेगी (18:4); पाप का अंत होगा (18:9), क्योंकि इस नई याजकीय पद में समझ और पवित्रता की आत्मा होगी। करार इस चेतावनी के साथ समाप्त होता है कि प्रभु की व्यवस्था या बेलियार (बेलियाल का एक रूपांतर) के कार्यों में से किसी एक को चुनें। पुत्र प्रभु की व्यवस्था का पालन करने का प्रण लेते हैं, और लेवी की मृत्यु के बाद वे उन्हें हेब्रोन में दफनाते हैं।

यहूदा

यहूदा द्वारा करार की शुरुआत में वह अपने वंशजों से कहता है कि उसके पिता ने उससे वादा किया था कि वह राजा बनेगा। "और जब मैं पुरूष हो गया, तब मेरे पिता ने यह कहकर मुझे आशीष दिया, कि तू राजा होगा, और सब बातों में उन्नति करेगा" (1:6)। यहूदा को अपनी प्रारंभिक युवावस्था और जंगली जानवरों पर विजय पाने की अपनी क्षमता की याद आती है। उसने आज्ञाओं का पालन किया और वासना के आगे झुकना नहीं चाहा। उन्होंने भविष्यद्वानी की कि उनके वंशज धन के प्रेम और खूबसूरत स्त्रीओं के प्रलोभन के कारण दुष्टता में पड़ जाएंगे (अध्याय 17)। अध्याय 21 में यहूदा ने भविष्यद्वानी की है कि प्रभु उसके वंशजों को राजत्व और लेवी के पुत्रों को याजकीय पद देंगे। अध्याय 24 में एक मसीही मसीहायी संबंधी संशोधन शामिल है। यह भविष्यद्वानी की गई है कि याकूब के तारे से एक व्यक्ति उठेगा जो पाप रहित होगा और उसमें से धार्मिकता की छड़ी अन्यजातियों के लिए बढ़ेगी (24:6)। करार भविष्य के युगांत संबंधी आशा के साथ समाप्त होता है जब "जो प्रभु के लिए गरीब हैं वे अमीर बनाए जाएंगे और जो प्रभु के लिए मारे गए हैं वे जीवन के लिए जाग उठेंगे" (25:4)। यहूदा मर गया और उसे हेब्रोन में दफनाया गया।

इस्साकार

इस कुलपिता के अंतिम शब्द कुछ हद तक अनोखे हैं क्योंकि इस्साकार को "ईमानदार" और अपराध रहित (अपने कई भाइयों के विपरीत) के रूप में दर्शाया गया है। वह भविष्यद्वानी करता है कि याजकीय पद लेवी से आएगी और राजत्व यहूदा के वंश से आएगा। अध्याय 6 में इस्साकार ने भविष्यद्वानी की है कि उसके बच्चे बेलियार के पीछे "अलग" हो जायेंगे। यदि वे परमेश्वर की दया को पहचानें और इस्साकार के अनुकरणीय जीवन का अनुसरण करें, तब "बेलियार की हर आत्मा उनसे दूर भाग जाएगी।" उनका अंतिम अनुरोध यह है कि उन्हें उनके पिता के साथ हेब्रोन में दफनाया जाए।

जबूलून

कुलपिता जबूलून ने अपने करार की शुरुआत खुद को अपने माता-पिता के लिए एक "अच्छा उपहार" के रूप में वर्णित करके की। वह, इस्साकार की तरह, इंगित करता है कि वह "विचार को छोड़कर" पाप करने के प्रति सचेत नहीं है (और यदि उसके पास कोई अधर्म है तो वह केवल अज्ञानता का पाप है)। जबूलून का दावा है कि उसने युसूफ के खिलाफ की गई कार्रवाइयों का समर्थन नहीं किया था, और उसने अपने पिता को युसूफ की दुर्दशा के बारे में बताया होगा, सिवाय इसके कि अन्य भाई इस बात पर सहमत थे कि "यदि कोई भी रहस्य का खुलासा करता है, तो उसे मार दिया जाना चाहिए" (1: 6)। 1:7 में वह घोषणा करता है कि यदि वह न होता तो अन्य भाइयों ने यूसुफ को मार डाला होता। भाइयों को जबूलून पर इतना संदेह था कि वे उस पर तब तक नज़र रखते थे जब तक यूसुफ को बेच नहीं दिया गया। पद 5:3 में एक परिचित विषय है जो नए नियम और रब्बियों में पाया जाता है: "हे मेरे बच्चों, अपने हृदय में दया करो, क्योंकि जैसा मनुष्य अपने पड़ोसी के साथ करता है, वैसा ही प्रभु भी उसके साथ करेगा।" जबूलून का मानना है कि यह पाठ व्यावहारिक रूप में प्रदर्शित किया गया है। यूसुफ के खिलाफ की गई कार्रवाई के कारण अन्य भाइयों के बेटे बीमार हो गए और मर गए ("क्योंकि उन्होंने अपने दिलों में कोई दया नहीं दिखाई," 5:5)। जबूलून के पुत्र बिना किसी बीमारी के जीवित रहे। जबूलून के पुत्र बिना किसी बीमारी के जीवित रहे। वह यह घोषणा करते हुए अपना ज्ञान शिक्षण जारी रखता है (8:3) कि जिस मात्रा में एक व्यक्ति अपने पड़ोसी पर दया करता है उसी मात्रा में परमेश्वर भी उस पर दया करेगा। जबूलून उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच विभाजन और अंततः अन्यजातियों द्वारा इन राज्यों की विजय की भविष्यद्वानी करता है। हालाँकि, लोग मन फिरायेंगे और प्रभु उन्हें "देश" और यरूशलेम में वापस लाएंगे (9:8)। अध्याय 10 में जबूलून ने भविष्यद्वानी की है कि उसकी मृत्यु के बाद वह "अपने बेटों के बीच एक शासक के रूप में उभरेगा" (10:2), और वह उन लोगों के लिए इनाम जो व्यवस्था का पालन करते हैं और अधर्मियों के लिए सजा का वादा करता है। जबूलून की करार के अंत में मृत्यु हो जाती है और उसे हेब्रोन में दफनाया जाता है।

दान

कुलपिता दान अपने मन में युसूफ के प्रति जलन का विलाप करते हैं और स्वीकारते हैं कि वह बेलीआर की आत्मा से प्रभावित थे। वह बताते हैं कि उन्होंने युसूफ को मारने की योजना बनाई थी ताकि उन्हें अपने पिता का प्रेम मिल सके। दान झूठ और क्रोध की आत्माओं के प्रति सतर्कता की चेतावनी देते हैं और अपने वंशजों को सत्य और सहनशीलता से प्रेम करने का उपदेश देते हैं। वह उन्हें आज्ञाओं का पालन करने और "अपने पूरे जीवन में प्रभु से प्रेम करने और सच्चे दिल से एक-दूसरे से प्रेम करने" (5:3) का आग्रह करते हैं। दान भविष्यद्वानी करते हैं कि उनके पुत्र "अंतिम दिनों में" प्रभु से दूर हो जाएँगे और इस प्रकार लेवी के पुत्रों के क्रोध को भड़काएँगे। वे यहूदा के पुत्रों के खिलाफ भी युद्ध करेंगे। उनके पुत्र लेवी और यहूदा के पुत्रों के खिलाफ विजय प्राप्त नहीं कर सकेंगे क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत उनका मार्गदर्शन करेगा। दान को बताया गया है कि बुक ऑफ एनोक में लिखा है कि शैतान और सभी दुष्टता और अभिमान की आत्माएँ लेवी, यहूदा, और दान के पुत्रों को पाप की ओर ले जाएँगी। वे बंधन में डाल दिए जाएँगे जहाँ वे मिस्र की विपत्तियों और अन्य जातियों के सभी कष्टों को सहेंगे। हालाँकि, जब वे प्रभु के पास लौटेंगे, तब उन पर दया होगी और उन्हें शांति मिलेगी। भविष्यद्वानी है कि यहूदा और लेवी के गोत्र से कोई एक उत्पन्न होगा, जिसे "प्रभु का उद्धार" कहा जाएगा। ऐसा प्रतीत होता है कि यह "उत्पन्न होने वाला व्यक्ति" बेलीआर के खिलाफ युद्ध करेगा और उनके शत्रुओं के विरुद्ध "अनंत प्रतिशोध" लेगा (5:10)। दान की अंतिम चेतावनी यह है कि शैतान और उसकी आत्माओं से सावधान रहें और प्रभु और उस स्वर्गदूत के समीप जाएँ "जो आपके लिए मध्यस्थता करता है" (6:2)। अंतिम खंड में दान अपने पुत्रों को सुनाई गई सभी बातों को अपनी संतानों को देने के लिए कहता है ताकि "अन्यजातियों का उद्धारकर्ता उन्हें ग्रहण कर सके"। इसके बाद एक मसीही दृष्टिकोण आता है जिसमें उद्धारकर्ता को सत्यप्रिय, सहनशील, विनम्र और नम्र बताया गया है (6:9)। जब दान का निधन होता है, तो उन्हें अब्राहम, इसहाक, और याकूब के निकट दफनाया जाता है।

नप्ताली

नप्ताली के बारे में कहा गया है कि वह 130 वर्ष के थे जब उन्होंने अपने अंतिम शब्द कहे। उन्हें अच्छे स्वास्थ्य में बताया गया है, लेकिन एक दावत के अगले दिन महसूस करते हैं कि उनकी मृत्यु निकट है। इस प्रकार वे अपने पुत्रों को अपने पास बुलाते हैं। नप्ताली का मानव और सृष्टि की संरचना और कार्यों के प्रति एक मजबूत क्रमबद्ध दृष्टिकोण है। वह "अन्यजातियों की समस्या" को प्रभु का त्याग और उनके द्वारा "लकड़ी और पत्थरों" का पालन करने के रूप में देखते हैं। क्रम का यह परिवर्तन सोदोम की समस्या थी और इसके कारण महाप्रलय भी आई।

नप्ताली बुक ऑफ एनोक से पढ़ते हैं कि उनके पुत्र प्रभु से भटकेंगे और "जातियों की सभी अधार्मिकता" के अनुसार चलेंगे (4:1)। वह भविष्यद्वानी करते हैं कि उनके वंशज अपने पापों के कारण बंदी बनाए जाएँगे और उसके बाद एक "थोड़े से" प्रभु के पास लौटेंगे और वह उन्हें उनके देश में वापस ले आएगा। उनके लौटने के बाद, नप्ताली भविष्यद्वानी करते हैं कि उनके पुत्र प्रभु को भूल जाएँगे और "अधर्मी" हो जाएँगे, जिसका परिणाम यह होगा कि वे पूरे पृथ्वी पर बिखर जाएँगे। वे इस अवस्था में तब तक रहेंगे जब तक प्रभु की करुणा न आए और कोई उनके पास धर्म और दया का कार्य करता हुआ न आए। नप्ताली अपने 40वें वर्ष में आए दो सपनों का उल्लेख करते हैं। पहले सपने में उन्होंने सूर्य और चंद्रमा को स्थिर देखा। इसहाक ने अपने पोतों को सूर्य और चंद्रमा को अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार पकड़ने के लिए दौड़ने को कहा। लेवी ने सूर्य को पकड़ा और यहूदा ने चंद्रमा को। दोनों को सूर्य और चंद्रमा के साथ ऊपर उठते देखा गया। इस सपने में एक बैल दिखाई दिया जिसके दो बड़े सींग और उकाव के पंख थे। अन्य पुत्रों ने इस बैल को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन नहीं पकड़ सके। हालाँकि, युसूफ ने आकर बैल को पकड़ लिया और "उसे लेकर ऊँचाई पर चढ़ गया" (5:7)।

इसके बाद एक भविष्यद्वानी आती है कि इस्राएल के बारह गोत्रों को असीरियों, मादी, फारसियों, कस्दीयों और सीरियों द्वारा बंदी बना लिया जाएगा। दूसरे सपने में उन्होंने जाम्निया के समुद्र पर एक जहाज को नाविकों और पायलट के बिना तैरते हुए देखा। जहाज पर "याकूब का जहाज" (6:2) का अभिलेख था। याकूब और उनके पुत्र उस जहाज पर थे, और जब तूफान आया, तो याकूब उनके बीच से चला गया। अंततः समुद्र के थपेड़ों से जहाज टूट जाता है, और जबकि युसूफ एक छोटी नाव में निकल जाते हैं, बाकी भाइयों को नौ तख्तों में विभाजित कर दिया जाता है जिसमें लेवी और यहूदा एक ही तख्त साझा करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लेवी की प्रार्थनाओं के कारण अंततः सभी भाई सुरक्षित रूप से किनारे पर पहुँचते हैं। जब नप्ताली इन सपनों को अपने पिता याकूब को सुनाते हैं, तो याकूब जवाब देते हैं कि ये सभी घटनाएँ पूरी होनी चाहिए।

नप्ताली ने अपने पुत्रों को लेवी और यहूदा से जुड़े रहने का उपदेश दिया क्योंकि "उनके माध्यम से इस्राएल को उद्धार मिलेगा" (8:2)। लेवी और यहूदा के माध्यम से अन्यजातियों के धर्मी भी एकत्र किए जाएँगे। नप्ताली का निधन हो जाता है और उन्हें हेब्रोन में दफनाया जाता है।

गाद

कुलपिता गाद को इस रूप में प्रस्तुत किया गया है कि वह यूसुफ से नफरत करता था क्योंकि यूसुफ ने अपने पिता को बताया था कि गाद और उसके कुछ अन्य भाई झुंड की देखभाल करते समय उसमें से सबसे अच्छे हिस्सों का सेवन कर रहे थे। अपने करार के दौरान, गाद अपने पुत्रों के समक्ष

अपनी घृणा के पाप को स्वीकार करता है और उन्हें घृणा को अपने भीतर पालने से चेतावनी देता है क्योंकि यह केवल पीड़ा ही लाती है: "जैसे प्रेम मरे हुओं को भी जीवन दे सकता है और उन्हें वापस बुला सकता है जिन्हें मृत्यु के लिए ठहराया गया है, वैसे ही घृणा जीवितों को मार देती है और जो छोटी-छोटी गलतियाँ करते हैं, उन्हें भी जीवित नहीं रहने देती" (4:6)।

मन फिराव आत्मा को ज्ञान देता है और मन को उद्धार की ओर ले जाता है। गाद अपने पुत्रों को लेवी और यहूदा के वंश का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करता है, क्योंकि वहीं से इस्राएल का उद्धार होता है। वह भविष्यद्वानी करता है कि उसके पुत्र सभी प्रकार की दुष्टता और भ्रष्टाचार में चलेंगे और अंत में कुछ निराशाजनक स्वर में अपने पिताओं के पास दफन होने की इच्छा व्यक्त करता है। गाद को हेब्रोन में दफनाया गया।

आशेर

आशेर भले और बुरे आत्माओं के प्रति सचेत रहता है और यह मानता है कि मनुष्य को इन दोनों के बीच चुनाव करना होता है। आशेर भविष्यद्वानी करता है कि उसके वंशज अधर्मी बनेंगे और परमेश्वर की व्यवस्था की ओर ध्यान नहीं देंगे। इस प्रकार वे अपने शत्रुओं के हाथों में दे दिए जाएँगे और बिखर जाएँगे। वे ऐसी स्थिति में तब तक रहेंगे जब तक "सर्वोच्च परमेश्वर" पृथ्वी पर नहीं आएंगे, "स्वयं मनुष्य के रूप में, मनुष्यों के साथ खाते और पीते हुए... वह इस्राएल और सब जातियों को बचाएगा" (7:3–4)। इस मसीही संदर्भ के बाद यह घोषणा होती है कि प्रभु अपनी दया और अब्राहम, इसहाक, और याकूब के कारण उन्हें इकट्ठा करेंगे। आशेर की मृत्यु होने पर उसे हेब्रोन में दफनाया गया।

यूसुफ

यूसुफ स्वयं को "इस्राएल का प्रिय" (1:2) कहता है और यद्यपि उसने ईर्ष्या और मृत्यु का सामना किया, वह कभी पथभ्रष्ट नहीं हुआ। अपने करार के दौरान, वह गुलामी में बेचे जाने की अपनी कठिनाई का वर्णन करता है। पहले अध्याय के छंदों में एक विशेष शैली है, जहाँ पहली पंक्ति में यूसुफ की कठिनाई का वर्णन है और दूसरी पंक्ति में परमेश्वर की सुरक्षा का गुणगान: "मुझे गुलामी में बेच दिया गया, और सबके प्रभु ने मुझे स्वतंत्र किया: मुझे बंदी बना लिया गया और उसकी सामर्थी बाँह ने मेरी सहायता की। मुझे भूख ने घेर लिया और प्रभु ने मुझे स्वयं पोषित किया" (1:5)। यूसुफ मिस्र में अपने अनुभवों का विवरण देता है, जिसमें आठ अध्याय मिस्री स्त्री के प्रलोभनों पर आधारित हैं। हालाँकि, यूसुफ ने उसके प्रलोभनों का विरोध किया और अपनी दृढ़ निष्ठा के कारण परमेश्वर ने उसे पुरस्कृत किया। वह अपने पुत्रों को सभी कार्यों में प्रभु का भय मानने के लिए प्रेरित करता है क्योंकि जो व्यक्ति प्रभु की व्यवस्था का पालन करता है वह उसके प्रेम का पात्र बनता है। यही उसकी सफलता की कुंजी है। यूसुफ अपने बच्चों को प्रोत्साहित करता है कि जो कोई भी उनके प्रति बुराई करे, उसके प्रति भलाई करें और अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करें। वह अपने भाइयों के प्रति अपने दृष्टिकोण को इस गुण का उदाहरण मानते हैं।

यूसुफ अपने पुत्रों को प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने और लेवी और यहूदा का सम्मान करने की सलाह देता है क्योंकि "परमेश्वर का मेमना, जो संसार के पापों को दूर करता है, जो सभी जातियों और इस्राएल को उद्धार देता है" (19:11) उन्हीं से उत्पन्न होगा। वह मिस्र में दासत्व की भविष्यद्वानी करता है लेकिन अंततः उद्धार का भी उल्लेख करता है। वह अपने पुत्रों को निर्देश देता है कि जब वे मिस्र छोड़ें तो उसकी हड्डियों को भी साथ ले जाएँ, और करार के अनुसार यूसुफ को हेब्रोन में दफनाया गया।

बिन्यामीन

अंतिम कुलपिता बिन्यामिन अपने 125वें वर्ष में अपना करार देते हैं। वे अपने बच्चों को प्रभु से प्रेम करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे उनसे यूसुफ की भलाई का अनुसरण करने का आग्रह करते हैं, क्योंकि यूसुफ नहीं चाहता था कि उसके भाइयों के कार्यों को पाप के रूप में गिना जाए। बिन्यामिन भविष्यद्वानी करते हैं कि यूसुफ में वह भविष्यद्वानी पूरी होगी "जो परमेश्वर के मेमने और संसार के उद्धारकर्ता के बारे में है, और कि एक निर्दोष व्यक्ति अधर्मी मनुष्यों के लिए दे दिया जाएगा, और एक पापरहित व्यक्ति परमेश्वर की वाचा के रक्त में अधर्मी पुरुषों के लिए मरेगा, ताकि अन्यजातियों और इस्राएल का उद्धार हो सके और वह बेलियार और उसके सेवकों का नाश कर दे" (3:8)। यह देखना आसान है कि कैसे इस करार में मसीही व्याख्या ने जगह बना ली। यूसुफ को निर्दोष और बिना पछतावे के दुःख उठाने वाला दिखाया गया है। इसी प्रकार मसीही मसीहा अधर्मियों के लिए कष्ट सहेगा और मरेगा।

बिन्यामिन को विश्वास है कि उसके पुत्रों में बुरे कार्य करने वाले हैं; बुक ऑफ एनोक के अध्ययन से वे भविष्यद्वानी करते हैं कि वे "सदोम की तरह दुराचार करेंगे" और उनमें से केवल कुछ ही जीवित बचेंगे (9:1)। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक गोत्र में से कुछ लोग बचेंगे, क्योंकि बारह गोत्र और अन्यजातियाँ अंतिम मन्दिर में एकत्र होंगे। उनका उद्धार "परमप्रधान" द्वारा उनके "अकेले उत्पन्न नबी" को भेजने के कारण होगा (9:2), और वह एक वृक्ष पर ऊपर उठाया जाएगा, और मन्दिर का परदा फट जाएगा और परमेश्वर की आत्मा अन्यजातियों को दी जाएगी। बिन्यामिन अपने पुत्रों को चेतावनी देते हैं कि यदि वे प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार पवित्रता में चलें, तो समस्त इस्राएल प्रभु के पास एकत्र होगा। जब बिन्यामिन की मृत्यु होती है, तो उन्हें हेब्रोन में दफनाया जाता है।

प्रत्येक कुलपिता के संक्षिप्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि इन करारों पर यहूदी और मसीही दोनों का संपादन हुआ है, और यह केवल मामूली परिवर्तन से कहीं अधिक है। इस पाठ

में दो मसीहा, दोहरी प्रेम की आज्ञा, नैतिक और धार्मिक शिक्षाएँ, और साथ ही सार्वभौमिक उद्धार जैसी विशेषताएँ प्रतिबिंबित होती हैं। हालाँकि, इन विशेषताओं को किसी विशेष समय अवधि या धर्म में समाहित करना कठिन है।

तद्दै की कृतियाँ

यह छठी सदी का एक संस्करण है और पाँचवीं सदी की सीरियाई डॉक्ट्रिना अडेई या अबगार की कथा का विस्तार है। यह कथा अबगार, एदेसा के राजा (ई. 9–46), और यीशु के बीच पत्रियों के एक कथित आदान-प्रदान को सम्मिलित करती है। इस पत्राचार का परिणाम यह होता है कि यीशु के एक शिष्य तद्दै को एदेसा भेजा जाता है। वहाँ तद्दै कई चमत्कार करते हैं, जिसमें अबगार की चंगाई भी शामिल है। तद्दै की कृतियों में अबगार की चंगाई उसके दूत हनन्याह की वापसी पर होता है, जो तद्दै के आने से पहले लौटता है। यह रचना तद्दै की एदेसा में कलीसिया की स्थापना की गतिविधियों पर केंद्रित है।

पौलुस और थेक्ला की कृतियाँ

देखें पौलुस और थेक्ला की कृतियाँ (ऊपर)।

थोमा की कृतियाँ

थोमा की कृतियाँ प्रेरितों के कार्यों के समूह में से एक है जिसमें तीन सामान्य विशेषताएँ हैं। वे प्राचीन दुनिया भर में सुसमाचार के प्रचार का वर्णन करते हैं, प्रेरितों में से एक के कार्यों और शब्दों को बढ़ावा देते हैं, और अनिवार्य रूप से उस प्रेरित की शहादत का वृत्तांत देते हैं। इन "कृतियों की कथाओं" में सबसे पुरानी पौलुस, यूहन्ना, अन्द्रियास, पतरस, और थोमा की हैं। अन्य कार्य कथाओं की तरह, थोमा की कृतियां भी मसीही भक्ति, तत्कालीन लोकप्रिय यूनानिय रोमांस, और यहूदी हागादिक प्रकार की नैतिक शिक्षा का मिश्रण है।

थोमा की कृतियों के विद्वतापूर्ण अध्ययन से पता चलता है कि इसे संभवतः तीसरी सदी की शुरुआत में लिखा गया था। इसे पहले निश्चित रूप से सिरिएक भाषा में लिखा गया था और शायद किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा, जिसमें ग्नोस्टिक विधर्म की ओर गहरी रुचि थी। यह ग्नोस्टिकवादियों, मणिचीयों, और रूढ़िवादी कलीसियाओं में व्यापक रूप से लोकप्रिय हुआ, इस हद तक कि इसे सिरिएक से शीघ्र ही अरबी, अर्मेनियाई, और कई यूनानी अनुवादों में अनुवादित किया गया। इन विभिन्न यूनानी संस्करणों से, कॉप्टिक, लातीनी, और इथियोपिआई अनुवाद बनाए गए। कॉप्टिक संस्करण के कुछ महत्वपूर्ण अंश फिर से अरबी, इथियोपिआई और यूनानी में पुनः अनुवादित किए गए, जिससे एक अत्यंत जटिल पाठ परंपरा उत्पन्न हुई। केवल एक पूर्ण प्राचीन सिरिएक पाठ ही जीवित है, और इसे कुछ मौजूदा यूनानी अनुवादों की तुलना में कम विश्वसनीय माना जाता है।

थोमा की कृतियों के आलोचनात्मक अंग्रेजी संस्करण में, जिसे ए. ऍफ़. जे. क्लिन ने 1962 में प्रकाशित किया था, कथा को परंपरागत कार्यों (प्राक्सिस) में विभाजित किया गया है। इनमें 170 क्रमिक अध्यायों में 13 कार्य शामिल हैं, जिनमें प्रेरित की अंतिम शहादत भी शामिल है। विभिन्न धार्मिक टुकड़े, उपदेश के अंश, और भजन इसमें समाहित हैं, जिनमें प्रारंभिक कलीसिया के दो प्रसिद्ध भजन भी हैं—पहले कार्य में "दुल्हन की गीत" और नौवें कार्य में "मोती का गीत"। पहले छह कार्य किसी विशेष विषय से नहीं जुड़े हुए हैं, और वे वर्णन करते हैं कि थोमा जहाज पर सवार होकर भारत गए (कार्य 3), जो एक दक्षिण भारतीय सेवा का संकेत देता है। फिर भी, यह उत्तर भारतीय राजा गोंडाफारो की सेवा का भी उल्लेख करता है (कार्य 4)। हालाँकि, कार्य 7 से 13 और शहादत दक्षिण भारतीय राज्य मज़्दाई में स्थापित हैं और स्पष्ट रूप से एक ही लेखक द्वारा लिखे गए हैं। संभावना है कि पहले छह कार्य पूर्ववर्ती सामग्री का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें अंतिम सात कार्यों और शहादत को लेखक ने शामिल किया। यह दस्तावेज़ पहली बार थोमा के भारत में प्रचार कार्य, शहादत, और उनकी अस्थियों को एदेस्सा में लौटाए जाने की परंपराओं का उल्लेख करता है। थोमा की कृतियों को, जैसे कि अन्य अपोक्रिफल प्रेरितों के कार्यों को भी, इस विश्वास के साथ लिखा गया है कि संसार को प्रेरितों के बीच सुसमाचार प्रचार के लिए बाँटा गया था और भारत थोमा के हिस्से में आया।

थोमा को इन घटनाओं में सीरियाई शैली के अनुसार पूरे समय "यहूदा थोमा" कहा जाता है, जो उस प्रेरित के संदर्भ का सीरियाई तरीका है। थोमा को यीशु का जुड़वां भाई (नए नियम में दिदुमुस) कहा गया है, जो विशेष दिव्य प्रकाशनों का प्राप्तकर्ता है और जो यीशु के पुनः देहधारण के रूप में प्रस्तुत होता है—थोमा की कृतियों के अध्याय 10, 11, 39, 47, और 48 में। कई इतिहासकार इसे ग्नॉस्टिक विचारधारा का स्पष्ट संकेत मानते हैं। अन्य लोग इसे इस रूप में देखते हैं कि यीशु ने मानव धारणा के अनुकूल होकर अपने प्रेरितों से समानता स्थापित की—ये विशेषताएँ अक्सर प्रारंभिक मसीही साहित्य में पाई जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यूनानी और लातीनी पाठों से ग्नॉस्टिक या मनीकी प्रवृत्तियों को धीरे-धीरे पारंपरिक नकल करने वालों द्वारा संपादित कर बाहर कर दिया गया था।

इस कथा की अनुभूति शीघ्र ही हो जाती है। थोमा के कार्य की शुरुआत यहूदा थोमा के भारत जाने से इंकार करने से होती है। इसके बाद उसे एक दास के रूप में बेच दिया जाता है—जिसे मानव के उद्धार के लिए एक दास के रूप में मसीह के आगमन के समानांतर माना जाता है। इस प्रकार थोमा भारत पहुँचता है, जहाँ वह एक बढ़ई (फिर से यीशु के समानांतर) और घरों का निर्माता बनता है। वह एक विवाह में दूल्हे का साथी बनता है, जहाँ चमत्कार बाँसुरी वादक थोमा को परमेश्वर का प्रेरित मानने के लिए प्रेरित करते हैं; और राजा थोमा से अपनी बेटी के लिए प्रार्थना करने को कहता है। थोमा

के उपदेश में शुद्धता पर विशेष बल दिया गया है, जिसमें आमतौर पर यौन संयम भी शामिल होता है। अंततः, कई लोग—जिनमें राजा भी शामिल है—धर्मांतरित हो जाते हैं और सांडरुक में विश्वासियों की एक सभा का निर्माण करते हैं।

दूसरे कार्य में राजा गोंडोफर थोमा को एक महल बनाने के लिए बड़ी धनराशि देता है। सर्दियों में थोमा राजा को भूमि पर महल की रूपरेखा दिखाकर आश्चर्यचकित करता है, लेकिन वह गरीबों को धन देकर स्वर्ग में राजा के लिए एक महल बनाता है। राजा इसे धोखा मानकर थोमा को कैद कर मारने का निश्चय करता है; लेकिन राजा का भाई, गाद, मरकर स्वर्ग में पहुँचता है, जहाँ वह महल को देखता है और उसे खरीदने की इच्छा व्यक्त करता है। गाद फिर अपने शरीर में पुनर्मिलित होता है और गोंडोफर से महल खरीदने का प्रयास करता है। तब गोंडोफर समझता है कि वह इसे बेच नहीं सकता, थोमा को जेल से रिहा करता है, और गाद को सलाह देता है कि वह अपने स्वर्गीय महल की व्यवस्था करे। इसके बाद थोमा एक महान स्तुति गीत (अध्याय 25, कार्य 2) प्रस्तुत करता है, और दोनों भाई, जो इस सब से विश्वास करने लगे हैं, बपतिस्मा लेने की इच्छा जताते हैं।

इन चमत्कारी कथाओं और शिक्षाओं में नए नियम की सभी पुस्तकों की प्रतिध्वनि प्रतीत होती है, हालांकि सीधे उद्धरण अपेक्षाकृत कम हैं। बिलाम के बोलने वाले गधे और पतरस के जेल से छूटने जैसे प्रिय चमत्कारिक प्रसंग थोमा के जीवन में व्यापक अलंकरण के साथ पुनः अनुभव किए जाते हैं। बोलने वाला गधा घर में प्रवेश करता है और थोमा के आदेश पर एक दानव को बाहर निकालता है; थोमा बंद जेल में बार-बार भीतर और बाहर जाकर बड़ी चिंता उत्पन्न करता है। ऐसे चमत्कार, कष्ट और धर्म-परिवर्तन, अध्याय 3 से 13 तक, यहूदा थोमा के सेवाकार्य की पराकाष्ठा तक चलते हैं।

उनकी शहादत अध्याय 168 में होती है, जब मज़दाई के राजा के आदेश पर चार सैनिक भाले लेकर थोमा की हत्या करते हैं। इसके बाद थोमा अपने अनुयायियों को प्रकट होते हैं, और वे थोमा के अस्थियों को एदेस्सा ले जाते हैं। इसी बीच, मज़दाई के राजा का पुत्र मृत्यु के कगार पर बीमार हो जाता है। हताश होकर राजा थोमा की कब्र पर जाता है, यह सोचकर कि किसी अवशेष से उसके पुत्र का इलाज हो सकता है। शरीर को गायब पाकर, वह उस धूल का उपयोग करता है जहाँ यहूदा थोमा का शरीर रखा गया था, और उसका पुत्र ठीक हो जाता है। इसके बाद राजा विश्वास करता है और विश्वासी समुदाय में शामिल हो जाता है।

थोमा का सुसमाचार

थोमा का सुसमाचार एक गैर-प्रमाणित और विधर्मी सुसमाचार है, जो ग्नोस्टिक मूल का है और संभवतः दूसरी या तीसरी सदी ईस्वी का है। यह उन कई लेखनों में से एक है जो शुरुआती धार्मिक संप्रदायों, जैसे मार्कोसियन (दूसरी सदी का एक समूह जिसने संख्याओं के इर्द-गिर्द एक जटिल अनुष्ठानिक प्रणाली बनाई) और मानीकी (तीसरी सदी का एक द्वैतवादी पंथ, जो प्रकाश और अंधकार के प्रारंभिक संघर्ष पर आधारित था), के बीच प्रचलित थे। यरूशलेम के सिरिल, जिनका निधन 386 ईस्वी में हुआ, कहते हैं कि थोमा का सुसमाचार "मानी के एक दुष्ट शिष्य" द्वारा लिखा गया था (मानीवाद के संस्थापक मानी थे)। यह याकूब के प्रारम्भिक सुसमाचार के साथ-साथ 50 से अधिक आपोक्रिफल सुसमाचारों में से एक है जो कलीसियाओं के शुरुआती विकास और विस्तार के समय में प्रचलित थे।

इस थोमा के सुसमाचार (कभी-कभी इसे "बाल्यकाल सुसमाचार" भी कहा जाता है) को उस कॉप्टिक संस्करण से भ्रमित नहीं करना चाहिए जो 1945 में मिस्र के ऊपरी क्षेत्र में नाग हम्मादी के पास मिला था। वह संस्करण यीशु के 114 "उपदेशों" का संग्रह है, जो मिस्र के मसीही धर्म पर ग्नोस्टिक प्रभाव को उजागर करता है। इसे यीशु के "गुप्त शब्द" कहा जाता है, जिन्हें "दिदुमुस यहूदा थोमा" द्वारा दिया गया बताया गया है। जिस थोमा के सुसमाचार का यहां उल्लेख है, वह यीशु के बचपन के चमत्कारों की एक श्रृंखला है और यह चार संस्करणों में संरक्षित है—दो यूनानी में (एक काफी लंबा है), एक लातीनी में, और एक सीरियाई में।

थोमा के सुसमाचार को पहली बार संभवतः हिप्पोलाइटस (155–235 ईस्वी) द्वारा जाना गया था, जिन्होंने इसका उल्लेख करते हुए कहा, "जो मुझे खोजता है, वह मुझे सात साल के बच्चों में पाएगा; क्योंकि वहाँ मैं, जो चौदहवें युग में छिपा हूँ, पाया जाऊंगा।" हिप्पोलाइटस ने दावा किया कि इसे नासेनेस (एक ग्नोस्टिक संप्रदाय जो सर्प की पूजा करता था) द्वारा आंतरिक मनुष्य की प्रकृति के सिद्धांत के समर्थन में उपयोग किया गया था। ऊपर दिया गया उद्धरण मौजूदा संस्करणों में नहीं पाया गया है, लेकिन यह समझने योग्य है क्योंकि निसेफोरुस के स्तिकोमेट्री (संभवतः चौथी सदी) के प्रमाण से संकेत मिलता है कि पहले का एक संस्करण दोगुनी लंबाई का था। थोमा के सुसमाचार को ओरिगेन (c. 185–254 ईस्वी) और यूसीबियस (c. 260–340 ईस्वी) दोनों ने जाना। बाद वाले ने इसे विधर्मी लेखों के साथ रखा और इसे "पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण और अपवित्र" कहकर अस्वीकार कर दिया (*हिस्टोरिया एक्लेसियास्टिका* 3.25)।

थोमा के सुसमाचार में कहानियाँ बालक यीशु की चमत्कारी शक्ति और अलौकिक ज्ञान को विशेष रूप से दिखाती हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि ये कहानियाँ मूल रूप से ग्नोस्टिक विधर्म के विरोध में प्रामाणिक मसीहों द्वारा गढ़ी गई थीं, जो मानते थे कि "अलौकिक मसीह" पहली बार बपतिस्मा के समय यीशु पर आया था। हालांकि, यह अधिक संभावना है कि इन कहानियों की उत्पत्ति लोगों की जिज्ञासा से हुई कि बालक यीशु कैसा रहा होगा। कुछ कथाएँ संभवतः मूर्तिपूजक स्रोतों से आई होंगी।

अपोक्रिफा

तीन या चार चमत्कारों को छोड़कर, जिन्हें लाभकारी माना जा सकता है, बालक यीशु द्वारा किए गए अलौकिक कार्यों को विनाशकारी कहा गया है। उदाहरण के लिए, जब एक बालक ने यीशु द्वारा बनाए गए कुछ कुण्ड को बिगाड़ दिया, तो यीशु ने उसे शाप दिया और वह पूरी तरह से सूख गया। एक अन्य बालक, जिसने यीशु को उकसाया, "तुरंत ही...गिर पड़ा और मर गया।" एक शिक्षक, जिसने यीशु के सिर पर प्रहार किया, सीधा शापित हुआ और जमीन पर गिर पड़ा। फ्रांसीसी लेखक रेनन ने तो थोमा के सुसमाचार में चित्रित यीशु को "एक दुष्ट छोटा गली का बदमाश" कहा।

सुसमाचार में यीशु को अनंत बुद्धिमान दिखाया गया है। वह अपने शिक्षक जक्कई का उपहास करते हुए कहते हैं, "तुम कपटी हो, पहले, यदि तुम जानते हो, तो अल्फा सिखाओ, और फिर हम तुम पर बीटा को लेकर विश्वास करेंगे।" जब जक्कई स्वयं को डांटते हैं कि वह उस व्यक्ति के सामने कितने तुच्छ हैं जिसे वह शिष्य के रूप में लेना चाहते थे, तो यीशु हँसते हुए घोषणा करते हैं, "मैं ऊपर से आया हूँ ताकि उन्हें शाप दे सकूँ।" पाठ में आगे कहा गया है, "और इसके बाद कोई भी उसे उकसाने का साहस नहीं करता था, कहीं वह उसे शाप न दे दे और उसे अपंग न बना दे।"

अन्य चमत्कारों में 12 जीवित गौरैया को मिट्टी से बनाना, अपने विरोधियों को अंधा कर देना, एक मृत बालक को जीवित करना, कुल्हाड़ी से कटा हुआ एक पाँव ठीक करना, कपड़े में पानी लाना, एक गेहूँ के दाने से भारी फसल काटना, लकड़ी के टुकड़े को उसकी उचित लंबाई तक बढ़ाना, और अपने भाई याकूब को ठीक करना शामिल है, जिसे ईंधन के लिए लकड़ी का गट्ठा इकट्ठा करते समय एक विषैले साँप ने काट लिया था। लंबे लातीनी संस्करण में और अधिक चमत्कार भी पाए जा सकते हैं।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पारंपरिक कलीसिया ने हमेशा अपने पवित्र शास्त्रों के कैनन से थोमा के आपोक्रिफल सुसमाचार को अस्वीकार किया है। हालाँकि, इसे बाद के अन्य समान प्रकार के सुसमाचारों में उद्धृत किया गया है। उदाहरण के लिए, प्सयूडो-मैथ्यू का सुसमाचार, अध्याय 18 से थोमा के सुसमाचार पर आधारित है। अन्य अपोक्रिफल सामग्री के साथ, इसने विशेष रूप से दसवीं शताब्दी से मसीही कला और साहित्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। उदाहरण के लिए, यीशु द्वारा 12 मिट्टी की गौरैया बनाने का उल्लेख कुरान में भी मिलता है।

सत्य का सुसमाचार

1945 के आसपास आधुनिक नाग हम्मादी के पास मिस्र के किसानों के एक समूह ने अनजाने में शेनेसिट-चेनोबोस्कियन नामक प्राचीन गांव की कब्र खोदी और एक जार निकाला जिसमें 13 किताबें (जिनमें से 9 काफी हद तक पूरी थीं) और 15 कृतियों के टुकड़े थे। यह खोज एक प्राचीन ग्नोस्टिक संप्रदाय का पुस्तकालय था और इसमें 51 विभिन्न ग्नोस्टिक लेखों के सम्पूर्ण या भाग शामिल थे—जिनमें से केवल दो ही आधुनिक विद्वानों के हाथों में पहले आए थे। अब इन्हें नग हम्मादी या चेनोबोस्कियन पाठ कहा जाता है और ये मूल ग्नोस्टिक साहित्य की आधुनिक खोज में पहली बार सामने आए थे। ये सभी प्राचीन यूनानी मूल के कॉप्टिक अनुवाद हैं।

कोडेक्स I (जिसे अब "जुंग कोडेक्स" कहा जाता है क्योंकि यह वियेना के जुंग इंस्टीट्यूट के स्वामित्व में है) 13 कार्यों में अद्वितीय है, क्योंकि यह सब-अखिमीमिक कॉप्टिक में है, जबकि अन्य कार्य अधिक सामान्य साहिदिक कॉप्टिक में हैं। कोडेक्स I में पाँच रचनाएँ शामिल हैं, जिनमें दो अत्यधिक विवादास्पद "थोमा का सुसमाचार" और "सत्य का सुसमाचार" हैं।

सत्य का सुसमाचार में कोई शीर्षक नहीं है, बल्कि इसका शीर्षक प्रारम्भ से लिया गया है (पाठ की पहली पंक्ति); इसमें कोई लेखक नहीं है और न ही कोई प्राप्तकर्ता है। वास्तव में, यह कोई सुसमाचार नहीं है, बल्कि यह प्रारंभिक अवस्था के वेलेंटाइनियन ग्नोस्टिकवाद है। क्योंकि इसमें बाद के वेलेंटाइनियन पौराणिक विकास का अभाव है और यह सरलता से, लगभग परंपरागत मसीही विचारधारा में व्यक्त किया गया है, आधुनिक विद्वानों के एक बड़े वर्ग का मानना है कि इसे स्वयं वैलेंटिनस ने लिखा है, हालाँकि इसका कोई अंतिम प्रमाण अभी तक नहीं मिला है। यदि इसे वैलेंटिनस ने नहीं लिखा, तो यह उनके निकटतम शिष्यों के बीच के किसी व्यक्ति का कार्य हो सकता है।

वैलेंटिनस का जन्म मिस्र में लगभग AD 100 से 110 के बीच हुआ था। उन्होंने सिकंदरिया में गहन शिक्षा प्राप्त की, मसीही बने, और पहले मिस्र में शिक्षण कार्य किया, फिर AD 136 के आसपास रोम चले गए जहाँ उन्होंने 154 या 155 तक रहे। तर्तुलियन ने अपने विधर्म-विरोधी कार्य में संकेत दिया कि वैलेंटिनस को रोमी कलीसिया से दो बार निष्कासित किया गया; वे कहते हैं कि वैलेंटिनस एक प्रतिभाशाली और वक्तृत्व कुशल व्यक्ति थे जिनकी एक समय में रोम में बिशप बनने की आशा थी। वैलेंटिनस ने सक्षम शिष्यों को आकर्षित किया जिन्होंने बाद में उनके शिक्षाओं का विस्तार किया, लगभग अप्रत्याशित तरीके से। लेकिन 154 या 155 के बाद उन्होंने रोम छोड़ दिया और पारंपरिक मसीही धर्म से अंतिम रूप से संबंध तोड़ लिया, और ग्नोस्टिक विधर्म का एक रूप सिखाने लगे, जिसका उत्पाद "सत्य का सुसमाचार" था, जो या तो स्वयं उनके द्वारा या उनके निकटतम शिष्यों में से किसी एक द्वारा लिखा गया था। एक उपलब्ध कथन के अनुसार, वैलेंटिनस ने बाद में साइप्रस में शिक्षण कार्य किया, और फिर इतिहास के धुंध में विलीन हो गए।

आईरेनियस ने कहा कि सत्य का सुसमाचार कोई सुसमाचार नहीं है, क्योंकि यह चार सुसमाचारों जैसा नहीं है (*अगेंस्ट हेरेसिस* 3.2.9)। आईरेनियस निःसंदेह सही थे, क्योंकि यह कृति किसी प्रकार की कथा नहीं है। सत्य का सुसमाचार में

यीशु के बारे में कोई कहानी, कोई स्थान का नाम, कोई तिथि, या यीशु के सिवा किसी अन्य व्यक्ति का उल्लेख नहीं है, और यीशु का भी केवल पाँच बार उल्लेख हुआ है।

इस छोटे से ग्रंथ में ज्ञान या जानने की आवश्यकता की अवधारणा 60 से अधिक बार प्रकट होती है। यह ज्ञान आत्मा के भीतर से उत्पन्न होता है जब आत्मा स्वयं में लौटती है और वहाँ वही पाती है जो दिव्यता ने उसमें स्थापित किया था—या शायद अधिक सटीक रूप से, उसमें फंसे हुए दिव्यता के अवशेष को। अतः जिसके पास "ग्नोसिस" है, उसने बस वही लिया है जो उसका अपना है, और उसे यह पता चल सकता है कि वह कहाँ से आया है और कहाँ जाने वाला है। मसीह की भूमिका "जीवितों की पुस्तक" या "जीवित पुस्तक" को प्रस्तुत करना है। यहाँ "पुस्तक" को यीशु के जीवन और शिक्षाओं की सुसमाचार घोषणा के रूप में नहीं, बल्कि उस मौलिक सत्य या सुसमाचार के रूप में समझा गया है, जो सृष्टि से पूर्व विद्यमान था। यह त्रुटि और अज्ञानता ही थे जिन्होंने उद्धारकर्ता का विरोध किया और उसे क्रूस पर चढ़ाया। इसमें यह संकेत निहित है, भले ही स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया हो, कि यह भी दिव्य त्रुटि और अज्ञानता ही था जिससे पदार्थ की उत्पत्ति या सृष्टि हुई। इस पदार्थ में फंसे जीवित प्राणियों का उद्धार शुद्ध दिव्यता में लौटने के साथ होता है। इस वापसी का मार्ग "ग्नोसिस" (ज्ञान) है। प्लेरोमा, जो दिव्यता की पूर्णता है, यीशु और क्रूस के माध्यम से सृष्टि के बीच चुने हुए प्राणियों को खोजने के लिए पदार्थ की गहराइयों में गया।

हालांकि ग्नोस्टिकवाद की ये विशेषताएँ स्पष्ट हैं, यह सुसमाचार अधिकांश ग्नोस्टिक चेनोबोस्कियन लेखनों की तुलना में रूढ़िवाद के अधिक निकट है क्योंकि इसमें केवल एक ही परमेश्वर के पुत्र का उल्लेख है, कई प्रवाहों का नहीं; यह यीशु को एक भौतिक यीशु और एक दिव्य मसीह में विभाजित नहीं करता; और सबसे खास बात यह है कि सोफिया, जो ग्नोस्टिक बैश्विक नाटक में सामान्यत: एक प्रमुख पात्र होती है, यहाँ बिल्कुल नहीं आती। इन कारणों का अन्य कारणों के मध्य में, सत्य का सुसमाचार को वैलेंटाइनस के रूढ़िवाद से विचलन के बहुत निकट रखा गया है।

सत्य का सुसमाचार का नए नियम अध्ययन में कुछ महत्व है, जो कि उसके विधर्मसामग्री द्वारा उपयुक्त नहीं है, क्योंकि यह हर जगह हमारे संपूर्ण नया नियम कैनन को स्वीकार करता है। कुछ विद्वानों के अनुसार, इसमें नया नियम की पुस्तकों की 83 से कम प्रतिध्वनियाँ नहीं हैं, भले ही इसमें यीशु के किसी एक भी वचन का सीधा उद्धरण नहीं है। विशेष रूप से, यह प्रकाशितवाक्य और इब्रानियों की पत्री पर गहराई से निर्भर करता है।

कुँवारी का आरोहन

यह एक प्रचलित कथा है जो कुँवारी मरियम की मृत्यु और उनके आरोहन से संबंधित है। चौथी शताब्दी से पहले की कोई भी ज्ञात संस्करण नहीं है। अधिकांश संस्करण मिस्र से जुड़े हैं। कॉप्टिक संस्करणों में, प्रेरितों के अपने मिशनरी कार्यों पर जाने से पहले यीशु स्वयं मरियम के सामने प्रकट होते हैं; यीशु उनकी आने वाली मृत्यु और आरोहण की घोषणा करते हैं। दूसरे रूप में एक स्वर्गदूत घोषणा करता है। मरियम सभी प्रेरितों की उपस्थिति का अनुरोध करती है, जिन्हें चमत्कारिक रूप से बादलों पर लाया जाता है। मरियम का रूपांतर होता है, और उनके मृत शरीर के संपर्क से कई चंगाईयां होती हैं। उनकी मृत्यु के थोड़े समय बाद, यीशु उन्हें स्वर्ग ले जाते हैं।

यह कथा 1950 में एक नया महत्व और रुचि प्राप्त करती है जब “द आसंप्सन ऑफ द ब्लेस्ड वर्जिन” को आधिकारिक रोमन कैथोलिक मत में शामिल किया गया।

कुँवारी का जीवन

कुँवारी मरियम के प्रारंभिक जीवन और अस्तित्व के बारे में कई विवरण हैं। उनमें से अधिकांश कॉप्टिक ग्रंथों के माध्यम से हमारे पास आते हैं। वे जोआकीम (जिसे क्लियोपास भी कहा जाता है) और अन्ना से मरियम के जन्म के बारे में बताते हैं, जिसे दोस्तों द्वारा कोई संतान न होने के कारण ताना मारा जाता था। मरियम का जन्म एक सफेद कबूतर के दर्शन के बाद हुआ था। कुछ विवरणों में मरियम को प्रभु को समर्पित किया गया था और फिर एक व्यक्ति, युसूफ की देखभाल के लिए सौंप दिया गया था। जब वह घर में मन्दिर के पर्दे पर बुनाई कर रही थी, तो स्वर्गदूत उसकी सेवा करने के लिए आते थे। गब्रिएल द्वारा घोषणा बहुत विस्तार से दी गई है। जब युसूफ एक दाई, सलोमी की तलाश कर रहा था, तब यीशु के जन्म का विस्तार से वर्णन किया गया है। अन्य विवरण मरियम और बालक यीशु के बीच कोमल दृश्यों का वर्णन करते हैं। कुछ संस्करणों में, कुँवारी मरियम को सुसमाचार की अन्य सभी मरियमों के साथ लापरवाही से जोड़ दिया गया है।

जबूलून का करार

*देखें*बारह कुलपिताओं के करार (ऊपर)।

अप्पिया मार्ग

रोम से दक्षिण की ओर इतालवी प्रायद्वीप के तल्ले तक जाने वाला मुख्य राजमार्ग। मूल रूप से, अप्पिया मार्ग कैपुआ में समाप्त होता था। बाद में इसे रोम से लगभग 560 किलोमीटर (350 मील) दूर ब्रिंडिसि तक बढ़ाया गया। इसका नाम रोमी निरीक्षक एपियस क्लॉडियस कैकस से मिला। उन्होंने इसका निर्माण 312 ईसा पूर्व में शुरू किया।

प्राचीन लेखक लिवी, स्ट्रैबो, होरेस और अन्य लोग विभिन्न सन्दर्भों में अप्पिया मार्ग का उल्लेख करते हैं। रोम के दक्षिण में सड़क के कुछ हिस्से आज भी मौजूद हैं। कई स्थानों पर मूल रोम की पक्की सड़क अभी भी सही सलामत है। मूल

सड़क के साथ बने कुछ संरचनाओं के खण्डहर भी देखे जा सकते हैं।

प्रेरित पौलुस ने अपने रोम की यात्रा के दौरान जब पुतियुली में एक जहाज से उतरे तो अप्पिया मार्ग पर यात्रा की (प्रेरि 28:13–15)। रोम के मसीही उनसे मिलने के लिए तीन-सराय और अप्पियुस के चौक ("अप्पियुस का बाजार") के पास के क्षेत्र में आए। ये अप्पिया मार्ग के साथ मौजूद आठ प्रमुख जगहों में से दो थे। अप्पियुस के चौक रोम से 70 किलोमीटर (43 मील) की दूरी पर पोंटाइन मार्शेस के बीच में स्थित था। होरेस, जिन्होंने 65–68 ईसा पूर्व में लिखा था, वहाँ ठहरने वालों पर हमला करने वाले शोर और दुर्गन्ध की शिकायत की थी। तीन-सराय रोम से 16 किलोमीटर (10 मील) करीब स्थित था।

जब पौलुस यात्रा कर रहे थे, तो वे बोविल्लाए से गुजरे होंगे। यह एक गाँव था जो रोम से लगभग 18 किलोमीटर (11 मील) की दूरी पर स्थित था। यह गाँव औगुस्तुस कैसर के परिवार का पैतृक घर और मत केन्द्र था। बोविल्लाए से रोम तक का अधिकांश अप्पिया मार्ग कब्रों से भरा हुआ था। रोमी व्यवस्था ने रोम के शहर के भीतर गाड़ने पर प्रतिबन्द लगा दिया था। शहर में जाने वाले प्रमुख मार्गों के किनारे मृतकों को गाड़ना आम प्रथा बन गई थी।

अप्पियुस का चौक

एक चौक जो प्रेरितों के काम 28:15 में पाया जाता है। यह वह स्थान था जहाँ मसीही लोग प्रेरित पौलुस से मिले थे जब वे कैसर के सामने उपस्थित होने आए थे। यह संभवतः अप्पियस क्लॉडियस के नाम पर रखा गया था। वे वाया अप्पिया के निर्माणकर्ता थे। वाया अप्पिया दक्षिण-पूर्वी इतालिया से उत्तर-पश्चिम रोम तक जाने वाला एक प्रमुख राजमार्ग था।

चौक के चारों ओर दलदल और कीच से भरा क्षेत्र था। प्राचीन दुनिया में यह खराब पानी, मच्छरों, यात्रियों के लिए महंगे सराय, रात के समय शोरगुल वाले यातायात, और क्षेत्र के माध्यम से काटे गए नहर पर खच्चरों द्वारा खींचे गए नाव पर माल और यात्रियों के लिए कुख्यात था। वाया अप्पिया रोम से लगभग 64 किलोमीटर (40 मील) दक्षिण में अप्पियुस के चौक से होकर गुजरती है।

यह भी देखें अप्पिया मार्ग; चौक।

अप्पैम

अप्पैम

नादाब का पुत्र, और यहूदा के गोत्र में यिशी का पिता (1 इति 2:30–31)।

अप्रमाणिक पत्र

वे पत्र जो उन पुस्तकों की आधिकारिक सूची में शामिल नहीं हैं जिन्हें पवित्रशास्त्र माना जाता है, लेकिन फिर भी धार्मिक या ऐतिहासिक महत्व के माने जाते हैं। *देखें* अप्रमाणिक ग्रंथ (अप्रमाणित पत्र)।

अप्रमाणिक सुसमाचार

देखें अप्रमाणिक ग्रंथ (अप्रमाणिक सुसमाचार)।

अप्रा

बेतआप्रा के लिए केजेवी का अनुवाद। यह मीका 1:10 में उल्लेखित एक पलिश्ती नगर का नाम हो सकता है।

देखिए बेतआप्रा।

अफफिया

अफफिया

कोलोस्से की एक मसीही महिला, जो संभवतः फिलेमोन की पत्नी या बहन थी। प्रेरित पौलुस ने अपने फिलेमोन के पत्र में उनका अभिवादन किया है (फिले 1:2)। इतिहास के अनुसार, वह नीरो के उत्पीड़न के दौरान शहीद हो गई थी। यूनानी ऑर्थोडॉक्स चर्च के संतों के कैलेण्डर में, उन्हें 22 नवंबर को सम्मानित किया जाता है।

अफूस

अफूस

योनातान का उपनाम, जो यहूदा मक्काबी के चार भाइयों में से एक थे (1 मक्का 9:28–13:30)। अन्य मक्काबी उपनामों की तरह, शब्द *अफूस* का अर्थ अनिश्चित है (1 मक्का 2:2–6)। "पसंदीदा," "प्रिय," या "इच्छित" को अनुवाद के रूप में सुझाया गया है। *देखें* योनातान #16।

अफैरेमा

अफैरेमा

उन शहरों में से एक, जिसे देमेत्रियस निकेटर (विजेता) ने सामरिया से छीनकर, यहूदिया में जोड़ दिया (1 मक्का 11:34)। देमेत्रियस सीरिया के राजा थे। कुछ विद्वानों द्वारा नाम अफैरेमा को एप्रैम का विकृत रूप माना जाता है। अफैरेमा संभवतः आधुनिक एत-तैयिबे हो सकता है।

अबगता

राजा क्षयर्ष के दरबार में नियुक्त सात खोजों (राजसी अधिकारियों) में से एक, जिन्हें राजा ने अपने दाखमधु की पार्टी में रानी वशती को लाने के लिए आदेश दिया था (एस्त 1:10)।

अबद्दोन

एक इब्रानी शब्द जिसका अर्थ है "विनाश का स्थान।" यह पुराने नियम में छः बार आता है, आमतौर पर उस स्थान का उल्लेख करते हुए, जहाँ लोग मरने के बाद जाते हैं (अय्यू 26:6; 28:22; 31:12; भज 88:11; नीति 15:11; 27:20)।

अबद्दोन का वही अर्थ है जो अधोलोक (मृतकों की दुनियाँ या क्षेत्र) का है। कुछ बाइबल अनुवादों में अबद्दोन के स्थान पर “नरक”, “मृत्यु”, “कब्र” या “विनाश” जैसे शब्दों का उपयोग किया जाता है।

यही इब्रानी शब्द नए नियम में एक बार अपने यूनानी रूप अपुल्लयोन (प्रका 9:11) में दिखाई देता है। इस पद में, विनाश की अवधारणा को एक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसे "अथाह कुण्ड का दूत" कहा जाता है। इस कारण से, कुछ अनुवाद अबद्दोन के बजाय "विनाशक" शब्द का उपयोग करते हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, यूहन्ना को एक दर्शन मिलता है जिसमें अबद्दोन (या अपुल्लयोन) को मृतकों के स्थान पर शासन करने वाले दूत के रूप में वर्णित किया गया है। यह दूत पाँचवीं तुरही फूंकने के बाद प्रकट होता है (प्रका 9:1)।

यह भी देखें अधोलोक।

अबशालोम

राजा दाऊद और उनकी पत्नी माका का पुत्र (2 शमू 3:3)। अबशालोम एक सुंदर युवा राजकुमार था जो अपने लम्बे, घने बालों के लिए प्रसिद्ध था (2 शमू 14:25–26)। उसकी एक सुंदर बहन, तामार थी, जिसका उसके सौतेले भाई अम्नोन ने बलात्कार किया था। तामार का अनादर करने के बाद, अम्नोन ने उससे विवाह करने से इनकार कर दिया (2 शमू 13:1–20)।

अबशालोम अपनी घायल बहन को अपने घर ले गया। उसे उम्मीद थी कि उसके पिता, दाऊद, अम्नोन को उसके अनाचार के लिए दण्डित करेंगे। दो वर्षों के क्रोध और घृणा के बाद, अबशालोम ने अपना बदला लेने की योजना बनाई। उसने राजा दाऊद और उनके राजकुमारों के लिए अपने घर में एक भोज दिया। दाऊद वहाँ नहीं गए, लेकिन अम्नोन गया और जब वह नशे में मतवाला हो गया तो अबशालोम के सेवकों द्वारा उसकी हत्या कर दी गई। अबशालोम राजा दाऊद के क्रोध से डर गया, इसलिए वह यरदन पार करके गशूर के राजा तल्मै के पास भाग गया, जो उसकी माँ के पिता थे (2 शमू 13:21–39)।

तीन वर्षों के निर्वासन के बाद, दाऊद के सेनापति योआब और तकोआ की एक बुद्धिमान महिला के प्रयासों के कारण अबशालोम को यरूशलेम वापस बुलाया गया। दो वर्षों के बाद, उसे राजा द्वारा पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया (2 शमू 14)। उसने अपने पिता से सिंहासन छिनने का प्रयास शुरू कर दिया। उसने अपने पिता, राजा में विश्वास को कम करते हुए जनता का समर्थन प्राप्त करना शुरू किया (2 शमू 15:1–6)।

आखिरकार, अबशालोम ने दाऊद के खिलाफ एक विद्रोह की योजना बनाई, वह पूरे इस्राएल से समर्थकों को जुटाने के लिए हेब्रोन गया। जब अहीतोपेल ने, जो दाऊद के सबसे बुद्धिमान सहायकों में से एक था, अबशालोम का समर्थन किया, तो हाकिमों ने घोषणा की कि अब अबशालोम राजा है। जब दाऊद ने सुना कि अबशालोम ने क्या किया है, तो उन्हें यरूशलेम से भागना पड़ा (2 शमू 15; भज 3)।

अबशालोम बिना किसी लड़ाई के यरूशलेम पहुँच गया। अहीतोपेल ने उसे तुरन्त 12,000 सैनिकों के साथ दाऊद पर हमला करने की सलाह दी। लेकिन हूशै ने, जो अबशालोम की कचहरी में दाऊद के लिए भेदी था, सुझाव दिया कि अबशालोम को दाऊद के खिलाफ पूरे देश को इकट्ठा करने के लिए कुछ समय लेना चाहिए। हूशै ने चापलूसी का उपयोग करते हुए सुझाव दिया कि अबशालोम को हमले का नेतृत्व करना चाहिए। अबशालोम ने हूशै की सलाह को पसन्द किया और अहीतोपेल ने निराश होकर आत्महत्या कर ली। हूशै ने अबशालोम की योजनाओं को दो याजकों, सादोक और एब्यातार के माध्यम से दाऊद तक पहुँचाया। इस जानकारी के साथ, दाऊद ने यरदन को पार किया और महनैम में डेरा डाला (2 शमू 16–17)।

अबशालोम अपनी सेना को यरदन के पार दाऊद से लड़ने के लिए एप्रैम के वन में ले गया। योआब, अबीशै और गती इत्तै, दाऊद की सेना का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने अबशालोम की सेनाओं को पराजित किया। अबशालोम एक खच्चर पर भाग

निकला, लेकिन उसके लम्बे बाल एक बांज वृक्ष की शाखाओं में फँस गए। वह शाखाओं से अपने बालों के द्वारा लटक गया और कुछ भी करने में असमर्थ था। योआब अबशालोम का पीछा कर रहा था और जब उसने उसे पाया, तो उसने उसे मार डाला। योआब के आदमियों ने शरीर को एक गड्ढे में फेंक दिया और उस पर पत्थर का ढेर लगा दिया (2 शमू 18:1–18)।

दाऊद ने सभी को आदेश दिया था कि वे अबशालोम को नुकसान न पहुँचाएँ। इसलिए, जब अबशालोम की मृत्यु हुई, तो दाऊद स्तब्ध और अत्यंत दु:खी हो गए। दाऊद ने रोते हुए कहा: "हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे!!" (2 शमू 18:33)। अपने शोक में, दाऊद ने ध्यान नहीं दिया कि विद्रोह समाप्त हो गया था जब तक कि योआब ने उन्हें याद नहीं दिलाया कि दाऊद के अनुयायियों ने उनके लिए अपनी जान जोखिम में डाली थी (2 शमू 19:1–8)।

देखिए दाऊद।

अबाना

अबाना

सीरिया के दमिश्क शहर से होकर बहने वाली एक नदी है, जिसे आज बरदा नदी कहा जाता है।

नामान ने सोचा कि अबाना नदी उसके कोढ़ को चंगा करने के लिए यरदन से बेहतर होगी। हालांकि, उसने भविष्यद्वक्ता एलीशा की आज्ञा का पालन करने का निर्णय लिया। उसने यरदन में डुबकी लगायी और उसका कोढ़ चंगा हो गया (2 रा 5:9–14)।

यह भी देखें आमाना।

अबारीम

अबारीम पर्वत

यह यरदन नदी और मृत सागर के पूर्व में स्थित एक पहाड़ी क्षेत्र है, जो मोआब के समतल क्षेत्रों से उत्तर की ओर फैला हुआ है।

नबो पहाड़ का सबसे ऊँचा बिंदु अबारीम में स्थित है, जिसे पिसगा कहा जाता है। इसकी ऊँचाई 2,643 फीट (805 मीटर) है।

मूसा ने अपनी मृत्यु से ठीक पहले पिसगा से प्रतिज्ञा किए गए देश की ओर देखा (व्य.वि. 32:48–50; 34:1–6).

अबारीम नामक डीहों

गिनती 21:11 और 33:44 में इस्राएल के जंगल में डेरा डालने के स्थानों में से एक, अबारीम नामक डीहों केजेवी वर्तनी है। *देखें* अबारीम, डीहों।

अबारीम, डीहों

जंगल में भटकने के दौरान मोआब की दक्षिण-पूर्वी सीमा पर इस्राएलियों का डेरा स्थल (गिन 33:44)। वचन 45 में इस नगर को डीहों कहा गया है, जो अबारीम नामक डीहों का संक्षिप्त रूप है।

अबिय्याम

रहबाम के पुत्र और यहूदा के राजा के रूप में उनके उत्तराधिकारी। उन्होंने 913–910 ईसा पूर्व तक शासन किया (1 इति 3:10)। उन्हें "अबिय्याह" भी कहा जाता था (2 इति 11:18–22; 12:16; 13:1–22; 14:1)।

अबिय्याम के शासन की मुख्य घटना इस्राएल के राजा यारोबाम प्रथम के साथ उनका युद्ध था (2 इति 13:1–3)। एक महत्वपूर्ण युद्ध से पहले, अबिय्याम ने समारैम पहाड़ पर खड़े होकर यारोबाम द्वारा देश के विभाजन और मूर्ति पूजा की आलोचना की (2 इति 13:4–12)। अबिय्याम और उनकी सेना ने युद्ध में परमेश्वर की सहायता के लिए प्रार्थना की। यद्यपि यारोबाम की सेना दुगनी बड़ी थी, अबिय्याम की सेना ने घात से बचकर एक अप्रत्याशित विजय प्राप्त की (2 इति 13:13–19)।

अबिय्याम का यहूदा पर राज्य 1 राजाओं 15:1–8 में अच्छे से वर्णित नहीं किया गया था: "वह वैसे ही पापों की लीक पर चलता रहा जैसे उसके पिता ने उससे पहले किए थे और उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने परदादा दाऊद के समान पूरी रीति से सिद्ध न था" (1 रा 15:3)। लेकिन परमेश्वर ने यरूशलेम में दाऊद के वंशजों को सिंहासन पर बनाए रखने का वादा किया था (1 रा 11:36), इसलिए अबिय्याम के बाद उनके पुत्र आसा राजा बने।

अबिय्याम दाऊद के परिवार के सदस्य थे, इसलिए वे यीशु मसीह के पूर्वज थे (मत्ती 1:7, जिन्हें "अबिय्याह" कहा गया है)।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; बाइबल की घटनाओं का कालक्रम (पुराना नियम); यीशु मसीह की वंशावली।

अबिय्याह

1. केजेवी में अबिय्याम की वर्तनी। 1 इतिहास 3:10 और मत्ती 1:7 में अबिय्याह, रहबाम का पुत्र और यहूदा का राजा था।
   *देखें*अबिय्याम।
2. लूका 1:5 में अबिय्याह एक दल का सदस्य या अगुवा।
   *देखिए*अबिय्याह #6।

अबिय्याह

1. शमूएल का दूसरा पुत्र। वह और उनके बड़े भाई, योएल, बेर्शेबा में बिगड़े हुए न्यायी थे। उनकी बुराई के कारण, इस्राएल के अगुओं ने एक राजा द्वारा शासित होने की माँग की (1 शमू 8:2; 1 इति 6:28)।
2. उत्तरी राज्य इस्राएल के राजा यारोबाम प्रथम के पुत्र। लड़के के रोग ने उसके परिवार को शीलो में भविष्यद्वक्ता अहिय्याह से मार्गदर्शन लेने के लिए प्रेरित किया (1 रा 14:1–2)।
3. यहूदा के राजा रहबाम का पुत्र जिसका उल्लेख 2 इतिहास 12:16–14:1 और मत्ती 1:7 में मिलता है।
   *देखें*अबिय्याम।
4. आहाज की पत्नी और राजा हिजकिय्याह की माता (2 रा 18:2)। कभी-कभी इसे "अबी" के रूप में लिखा जाता है (2 इति 29:1)। वह जकर्याह की बेटी थी।
5. बिन्यामीन के गोत्र से बेकेर के पुत्र (1 इति 7:8)।
6. वह लेवी, जिसने राजा दाऊद द्वारा स्थापित 24 याजकीय दल में से आठवें का नेतृत्व किया (1 इति 24:10; लूका 1:5)।
7. एक याजकीय परिवार के प्रधान जिन्होंने बाबेल में बँधुआई के बाद नहेम्याह और अन्य लोगों के साथ मिलकर एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की वाचा बाँधी (नहे 10:7)।
8. एक याजकीय परिवार के प्रधान, जो बाबेल में बँधुआई के बाद जरुब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटे (नहे 12:4)। सम्भवतः वही परिवार जैसा कि #7

अबिलेने

सीरिया में पर्वतों की श्रृंखला के पूर्वी तरफ का एक क्षेत्र है। इस जिले का नाम राजधानी शहर अबिला के नाम पर रखा गया है, जो दमिश्क से लगभग 18 मील (29 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय, अबिलेने पर लिसानियास का शासन था (लूका 3:1)।

अबी

अबी

अबिय्याह का संक्षिप्त रूप, जो यहूदा के राजा हिज़किय्याह की माता का नाम था (2 रा 18:2)।

*देखें*अबिय्याह #4।

अबीअल्बोन

अबीअल्बोन

2 शमूएल 23:31 में अबीएल का एक अन्य नाम। *देखें* अबीएल #2।

अबीआसाप

अबीआसाप

निर्गमन 6:24 में कोरह के वंशज एब्यासाप का वैकल्पिक रूप है।

*देखें*एब्यासाप।

अबीएजेर

1. मनश्शे के वंशजों में से एक अबीएजेर (यहो 17:1–2)। अबीएजेर के पिता का नाम नहीं दिया गया है, लेकिन उन्हें उनकी माँ के भाई गिलाद के वंशजों के साथ सूचीबद्ध किया गया है (1 इति 7:18)। गिनती 26:30 में, अबीएजेर का नाम छोटा करके ईएजेर कर दिया गया है और उनके परिवार को इएजेरी कहा जाता है। गिदोन अबीएजेर के परिवार का हिस्सा थे और वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मिद्यानियों से लड़ने के लिए उनके आह्वान का जवाब दिया (न्या 6:34)। अबीएजेर के वंशजों को अबीएजेरी कहा जाता था (न्या 6:11, 24, 34; 8:32)।
2. अनातोती से बिन्यामीन के गोत्र के एक सदस्य और दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में योद्धा, जिन्हें "तीस" के रूप में जाना जाता है (2 शमू 23:27; 1 इति 11:28)। अबीएजेर को दाऊद द्वारा स्थापित घूर्णन प्रणाली में सेना के नौवें विभाग का अगुवा नियुक्त किया गया था (1 इति 27:12)।

अबीएजेरी

अबीएजेरी

अबीएजेर के परिवार के एक सदस्य (न्या 6:11, 24, 34; 8:32)।

देखें अबीएजेर #1।

अबीएल

अबीएल

1. 1 शमूएल 9:1 और 14:51 के अनुसार कीश और नेर के पिता और राजा शाऊल के दादा। हालांकि, 1 इतिहास की वंशावलियों में अबीएल के स्थान पर नेर को किश के पिता और शाऊल के दादा के रूप में सूचीबद्ध किया गया है (1 इति 8:33; 9:39)। यह भ्रम या तो किसी लेखक की प्रति-त्रुटि के कारण हुआ है, या फिर यह सम्भवतः शाऊल के परिवार में नेर नाम के दो रिश्तेदार रहे होंगे—एक परदादा और दूसरा चाचा।
2. दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक योद्धा, जिसे "तीस" के रूप में जाना जाता था (1 इति 11:32)। उन्हें अराबा के अबीअल्बोन भी कहा जाता है (2 शमू 23:31)।

अबीगैल

अबीगैल

1. नाबाल की पत्नी, जो बाद में दाऊद की पत्नी बनी (1 शमू 25:2–42)। नाबाल एक धनी भेड़ों का मालिक था जिसकी भेड़ों की रक्षा दाऊद के लोगों ने की थी। जब दाऊद ने नाबाल से बदले में भोजन मांगा, तो नाबाल ने मना कर दिया। इससे दाऊद बहुत क्रोधित हो गए। और उन्होंने 400 सशस्त्र लोगों को लिया और नाबाल और उसके घराने पर हमला करने के लिए निकल पड़ा। अबीगैल को अपने पति के इस व्यवहार के बारे में पता चला, तो उसने तुरन्त भोजन एकत्र किया और दाऊद से मिलने के लिए निकली। उसने अपने पति के मूर्खतापूर्ण व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। दाऊद ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि परमेश्वर ने अबीगैल के माध्यम से उन्हें गलत कार्य करने से रोक दिया।
अगली सुबह, जब नाबाल अधिक मदिरा पीने के बाद जागा और उसे घटना के बारे में पता चला, तो उसके मस्तिष्क को आघात हुआ (एक अचानक होने वाली बीमारी जिसमें मस्तिष्क की नसे फट जाती हैं)। दस दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई।
इसके बाद अबीगैल ने दाऊद से विवाह किया और पलिश्तियों के बीच उनके साथ रहने लगी (1 शमू 27:3)। बाद में, उसे अमालेकियों ने पकड़ लिया और दाऊद ने उसे बचाया (1 शमू 30:1–19)। जब दाऊद यहूदा के राजा बने, तब अबीगैल उनके साथ हेब्रोन चली गई (2 शमू 2:2)। उसने दाऊद के दूसरे पुत्र, किलाब (2 शमू 3:3), जिन्हें दानिय्येल भी कहा जाता है (1 इति 3:1), को जन्म दिया।
2. दाऊद की बहन, जिन्होंने येतेर से विवाह किया और अमासा को जन्म दिया (1 इति 2:16–17)। अबीगैल के पिता के बारे में कुछ भ्रम है। 1 इतिहास 2:13–17 में उसे यिशै की बेटी के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। हालांकि, 2 शमूएल 17:25 में, उसके पिता को नाहाश के रूप में पहचाना गया है। यह अंतर इस कारण हो सकता है कि किसी लेखक ने पाठ की प्रतिलिपि बनाते समय गलती की हो, या फिर नाहाश यिशै का ही दूसरा नाम हो सकता है, या नाहाश की विधवा ने यिशै से विवाह कर लिया हो।

अबीगैल

अबीगैल का एक और उल्लेख, दाऊद की बहन (2 शमू 17:25)। *देखें* अबीगैल #2।

अबीत

एदोम के चौथे राजा हदद की राजधानी शहर (उत 36:35; 1 इति 1:46)।

अबीतल

राजा दाऊद के पांचवें पुत्र शपत्याह की माता (2 शमू 3:4; 1 इति 3:3).

अबीतूब

बिन्यामीन के गोत्र से शहरैम और हूशीम का पुत्र (1 इति 8:11)।

अबीदा

अबीदा

मिद्यान के पुत्रों में से एक। मिद्यान अब्राहम के पुत्र थे, जो उनकी उपपत्नी कतूरा से उत्पन्न हुए थे (उत 25:2, 4; 1 इति 1:33)।

अबीदान

गिदोनी के पुत्र और बिन्यामीन के गोत्र के अगुवा, जब इस्राएली मिस्र से निकलने के बाद सीनै के जंगल में भटक रहे थे (गिन 1:11; 2:22)। अगुवा के रूप में, उन्होंने तंबू के समर्पण में अपने गोत्र की भेंट प्रस्तुत की (गिन 7:60–65)।

अबीनादाब

1. एक व्यक्ति जो किर्यत्यारीम में रहता था, जिसने परमेश्वर के सन्दूक को अपने घर में रखा जब उसे पलिश्तियों से वापस लाया गया था (1 शमू 6:21–7:2)।
2. यिशै का दूसरा पुत्र और दाऊद का भाई (1 शमू 16:8; 17:13; 1 इति 2:13)। उसने पलिश्तियों के साथ युद्ध के समय शाऊल की सेना में सेवा की।
3. बेन-अबीनादब का एक अन्य रूप। वे 1 राजाओं 4:11 में राजा सुलैमान के प्रशासनिक अधिकारियों में से एक था। *देखें* बेन-अबीनादब।
4. शाऊल के पुत्रों में से एक (1 इति 8:33; 10:2)।

अबीनोअम

बाराक का पिता। बाराक कनानी लोगों के खिलाफ युद्ध में इस्राएली न्यायी दबोरा का सहयोगी था (न्या 4:6, 12; 5:1, 12)।

अबीब या आबीब

यह इब्रानी महीने निसान का कनानी नाम है, जो लगभग मध्य-मार्च से मध्य-अप्रैल के बीच आता है।

*देखें*प्राचीन और आधुनिक कैलंडर।

अबीमाएल

अबीमाएल

योक्तान के कई पुत्रों या वंशजों में से एक, और इस प्रकार शेम के वंशज (उत 10:28; 1 इति1:22)।

अबीमेलेक

फिलिस्तीनी शासकों के लिए एक शाही उपाधि। यह मिस्रियों द्वारा उपयोग की जाने वाली उपाधि "फिरौन" और अमालेकियों द्वारा उपयोग की जाने वाली उपाधि "अगाग" के समान है।

1. अब्राहम के समय में गरार का राजा। गरार गाज़ा के पास एक शहर था। अब्राहम ने अपने जीवन के डर से लोगों से कहा कि उनकी पत्नी सारा, उनकी बहन है (उत 20:1–18)। उन्होंने पहले भी मिस्र में ऐसा किया था (उत 12:10–20)। सारा को अबीमेलेक के हरम में ले लिया गया, लेकिन परमेश्वर ने अबीमेलेक को एक स्वप्न में चेतावनी दी कि सारा विवाहित है और यदि उसने उन्हें छुआ तो वह मर जाएगा। अबीमेलेक ने सारा को अब्राहम को लौटा दिया। बाद में, अब्राहम और अबीमेलेक ने नेगेव रेगिस्तान में बेर्शेबा में जल अधिकारों को स्पष्ट करने के लिए एक संधि की (उत 21:22–34)।
2. इसहाक के समय में गरार का राजा। इसहाक ने अपने पिता अब्राहम की तरह, लोगों से कहा कि उनकी पत्नी रिबका उनकी बहन है। अबीमेलेक को खतरे का पता था क्योंकि वह जानता था कि उनके पहले के राजा के साथ क्या हुआ था। इसलिए अबीमेलेक ने रिबका की रक्षा की और घोषणा की कि जो कोई भी उन्हें या इसहाक को छुएगा, उसे मृत्यु दंड दिया जाएगा (उत 26:1–11)। पानी और उन्नत्ति को लेकर विवादों के कारण, अबीमेलेक ने इसहाक से फिलिस्तीन क्षेत्र छोड़ने के लिए कहा (उत 26:12–22)। अंततः उन्होंने बेर्शेबा में एक शांति संधि की, जो अब्राहम और पहले के अबीमेलेक के बीच की गई संधि का नवीनीकरण था (उत 26:26–33)।

3. शेकेम में एक उपपत्नी से गिदोन का पुत्र (न्या 8:31)। अपने पिता की मृत्यु के बाद, अबीमेलेक ने अपनी माता के परिवार के साथ मिलकर अपने 70 सौतेले भाइयों को मार डाला। योताम ही एकमात्र था जो बच गया (न्या 9:1–5)। अपने शासन के तीसरे वर्ष में, उन्होंने एक विद्रोह को कठोरता से दबा दिया (न्या 9:22–49)। अंततः, एक स्त्री ने उनके सिर पर चक्की का पाट गिरा दिया जिससे उनकी मृत्यु हो गई। अबीमेलेक ने अपने शस्त्रधारी से कहा कि वह उन्हें तलवार से मार डाले ताकि कोई यह न कह सके कि उनकी मृत्यु एक स्त्री के हाथों हुई थी (न्या 9:53–57)।
4. गत के पलिश्ती नगर का राजा आकीश (1 शमू 21:10–15)।
5. एब्यातार का पुत्र, एक याजक जो दाऊद के समय में सादोक के साथ सेवा करता था (1 इति 18:16)।

अबीराम

अबीराम

1. एलीआब के दो पुत्रों में से एक, अबीराम और उसका भाई दातान, मूसा और हारून के विरुद्ध एक विद्रोह में शामिल हो गए। मूसा ने प्रार्थना की, जिससे धरती उन दोनों भाइयों और उनके परिवारों के नीचे फट गई। वे एक बड़े भूकंप में मारे गए (गिन 16:1–33)।
2. हीएल का सबसे बड़ा बेटा। जब उनके पिता ने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध यरीहो का पुनर्निर्माण किया, तो उनकी जल्दी मृत्यु हो गई (1 रा 16:34)। यहोशू ने इस घटना की भविष्यवाणी की थी (यहो 6:26)।

अबीशग

अबीशग

शूनेम की एक सुन्दर जवान कुँवारी को राजा दाऊद के अन्तिम दिनों में उनकी देखभाल के लिए भेजा गया था (1 रा 1:1–4)। दाऊद की मृत्यु के बाद, अदोनिय्याह ने अपने सौतेले भाई, राजा सुलैमान से अबीशग से विवाह करने की अनुमति मांगी। उस समय, एक मृत राजा की रखैल को अपनाना यह दावा करना था कि आप अगले राजा हैं (एक रखैल वह स्त्री होती है जो एक पुरुष के साथ रहती है और पत्नी जैसी सम्बन्ध रखती है परन्तु विवाह के पूर्ण अधिकारों के बिना)। अदोनिय्याह की इस विनती ने सुलैमान को क्रोधित कर दिया और उन्होंने अदोनिय्याह को मारने का आदेश दिया (1 रा 2:13–25)।

अबीशू

1. हारून का परपोता, पीनहास का पुत्र और एज्रा का पूर्वज (1 इति 6:4–5, 50; एज्रा 7:5)। अबीशू का नाम एज्रा की वंशावली के लेखों में 1 एस्त्रास में भी प्रकट होता है (1 एस्त्रास 8:2; 2 एस्त्रास 1:2)।
2. बेला का पुत्र और बिन्यामीन का पोता (1 इति 8:4)।

अबीशूर

शम्मै का पुत्र और यहूदा के गोत्र से अहबान और मोलीद का पिता। उसकी पत्नी अबीहैल थी (1 इति 2:28–29)।

अबीशै

राजा दाऊद का भतीजा। दाऊद की बहन सरूयाह का पुत्र (उसके पिता का उल्लेख नहीं है) और योआब तथा असाहेल का भाई (1 इति 2:16)।

अबीशै एक रात दाऊद के साथ शाऊल के शिविर में गया और शाऊल को सोते समय मारना चाहता था, परन्तु दाऊद ने उसे रोक दिया (1 शमू 26:6–12)। उसने योआब की मदद की ताकि वह अपने भाई, असाहेल की मृत्यु का बदला लेने के लिए शाऊल के सेनापति, अब्नेर को मार सके (2 शमू 3:30)।

बाद में, अबीशै ने एदोमियों पर विजय प्राप्त की (1 इति 18:12–13) और अमोनियों के खिलाफ एक निर्णायक युद्ध में दूसरा मुख्य प्रधान था (1 इति 19:10–15)। अबीशै अक्सर कठोर था। उदाहरण के लिए, वह अबशालोम के विद्रोह के दौरान दाऊद का अपमान करने के लिए शिमी का सिर काटना चाहता था, लेकिन फिर भी, दाऊद ने उसे रोका (2 शमू 16:5–12; 19:21–23)। जब राजा दाऊद यरदन के पार भागे, अबीशै ने दाऊद की तीन दलों में से एक का नेतृत्व किया जिसने अबशालोम को हराया (2 शमू 18:1–15)।

बाद में, पलिश्तियों के खिलाफ एक युद्ध में, अबीशै ने विशालकाय यिशबोबनोब को मारकर दाऊद का जीवन बचाया (2 शमू 21:15–17)। उसे दाऊद के सबसे बहादुर योद्धाओं में से एक कहा गया है (2 शमू 23:18–19; 1 इति 11:20–21)।

अबीहू

हारून और एलीशेबा का दूसरा पुत्र था (निर्ग 6:23; गिन 26:60; 1 इति 6:3)।

अबीहू और उसके भाई नादाब ने मूसा, हारून और इस्राएल के 70 पुरनियों के साथ सीनै पर्वत पर परमेश्वर की महिमा की आराधना में शामिल हुए (निर्ग 24:1–11)। हारून के चारों पुत्रों को उनके पिता के साथ याजक ठहराया गया (निर्ग 28:1), परन्तु बाद में अबीहू और नादाब प्रभु के सामने "अनुचित आग" के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए (लैव्य 10:1; देखें गिन 3:2–4; 26:61; 1 इति 24:1–2)।

अबीहूद

बेला के नौ पुत्रों में से एक (1 इति 8:3)। अबीहूद को उस अबीहूद के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिए जो यीशु के पूर्वजों की सूची में मत्ती के सुसमाचार में शामिल हैं।

अबीहूद

मत्ती रचित सुसमाचार में यीशु के पूर्वजों की सूची में एक व्यक्ति का उल्लेख है। उन्हें एलयाकीम के पिता के रूप में सूचीबद्ध किया गया है (मत्ती 1:13)।

देखिए यीशु मसीह की वंशावली।

अबीहैल

पुराने नियम में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए प्रयुक्त एक नाम।

1. सूरीएल के पिता और इस्राएल के जंगल में भटकने के दौरान लेवियों के मरारी परिवार के एक प्रमुख (गिन 3:35)।
2. अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था और उससे अहबान और मोलीद उत्पन्न हुए (1 इति 2:29)।
3. हूरी का पुत्र, गाद के वंशजों में से एक, जो गिलाद और बाशान में निवास करता था (1 इति 5:14)।
4. एक महिला का नाम 2 इतिहास 11:18 में है। उसका राजा रहबाम से संबंध स्पष्ट नहीं है। कुछ अनुवादों में, अबीहैल, रहबाम की दूसरी पत्नी प्रतीत होती हैं। हालांकि, पहले केवल एक पत्नी का उल्लेख है। अबीहैल शायद रहबाम की पहली पत्नी, महलत की माँ थीं। इसलिए, अबीहैल एलीआब की बेटी थीं, जो दाऊद के सबसे बड़े भाई थे। उन्होंने अपने चचेरे भाई यरीमोत से शादी की, जो दाऊद के पुत्रों में से एक थे।
5. एस्तेर के पिता और मोर्दकै के चाचा (एस्त 2:15; 9:29)।

अबूबुस

अबूबुस

टॉलेमी (Ptolemy) के पिता। टॉलेमी यरीहो में एक सैन्य राज्यपाल थे। उन्होंने अपने ससुर, सिमोन मक्काबी और सिमोन के दो बेटों की 134 ईसा पूर्व में हत्या कर दी (1 मका 16:11–17)।

देखें मक्काबियों का काल।

अबेदनगो

अबेदनगो

दानिय्येल के तीन मित्रों में से एक, जिन्हें नबूकदनेस्सर ने मृत्यु की सजा दी थी, परन्तु आग की भट्ठी में एक स्वर्गदूत ने उनकी रक्षा की (दानि 1:7; 3:12–30)।

देखें शद्रक, मेशक और अबेदनगो; दानिय्येल की अतिरिक्त जानकारी (अजर्याह की प्रार्थना)।

अब्दा

1. अदोनीराम का पिता। अदोनीराम राजा सुलैमान के अधीन बेगारों के ऊपर मुखिया था (1 रा 4:6)।

2. शम्मू का पुत्र। वह बेबीलोन में बँधुआई के बाद यरूशलेम में लेवियों का अगुवा था (नहे 11:17)। 1 इतिहास में, उसका नाम शमायाह और ओबद्याह दिया गया है (1 इति 9:16) ।

अब्दी

1. लेवी वंश के मरारी कुल का एक सदस्य। अब्दी का पोता एतान, राजा दाऊद के समय में एक संगीतकार था (1 इति 6:44; 15:17)।

2. एक लेवी, जिसके पुत्र कीश ने राजा हिजकिय्याह के समय सेवा की (2 इति 29:12)। इस अब्दी को कभी-कभी अब्दी #1 के साथ भ्रमित किया जाता है।

3. एज्रा के समय में एलाम कुल का एक सदस्य। उसने बेबीलोन में बँधुआई के बाद एक गैर-इस्राएली स्त्री से विवाह किया (एज्रा 10:26)।

अब्दीएल

अब्दीएल

गूनी का पुत्र और अही का पिता (1 इति 5:15)। अही यहूदा के राजा योताम और इस्राएल के राजा यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के दौरान, गाद के गोत्र में एक कुल अगुवा था (1 इति 5:15–17)।

अब्देल

शेलेम्याह के पिता। शेलेम्याह उन अधिकारियों में से एक थे जिन्हें यहूदा के राजा यहोयाकीम ने यिर्मयाह और बारूक को गिरफ्तार करने के लिए भेजा था, जब राजा ने उनके भविष्यवाणी के कुण्डलपत्रों को पढ़कर जला दिया था (यिर्म 36:26)।

अब्दोन (व्यक्ति)

1. हिल्लेल के पुत्र, जिन्होंने आठ वर्षों तक इस्राएल का न्याय किया (न्या 12:13–15)। वह एक अत्यंत धनी व्यक्ति थे। उनके पास 70 गधे थे।
2. बिन्यामीन के गोत्र से शाशक का पुत्र। वह यरूशलेम में रहता था (1 इति 8:23, 28)।
3. बिन्यामीन के गोत्र से यीएल का सबसे बड़ा बेटा था। वह गिबोन में रहता था। यह अब्दोन शाऊल के पूर्वजों की सूची में उल्लिखित है (1 इति 8:30; 9:36) ।
4. मीका का पुत्र (2 इति 34:20) । उसे मिकायाह का पुत्र अकबोर भी कहा जाता है। *देखें*अकबोर #2।

अब्दोन (स्थान)

कनान अर्थात् वह भूमि जिसका वादा परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार से किया था, पर विजय के बाद लेवियों को आशेर के क्षेत्र से मिले चार नगरों में से एक (यहो 21:30; 1 इति 6:74)। अब्दोन सम्भवतः एब्रोन के ही समान है (यहो 19:28)। आज, अब्दोन को खिरबेत अबदेह कहा जाता है।

अब्नेर

नेर का पुत्र और शाऊल का चचेरा भाई, अब्नेर शाऊल की सेना में एक सेनापति था (1 शमू 14:50; 17:55)। उसे शाऊल द्वारा अत्यधिक सम्मान दिया जाता था। वह राजा की मेज पर दाऊद और योनातान के साथ भोजन भी करता था (1 शमू 20:25)।

शाऊल की मृत्यु के पांच साल बाद, अब्नेर ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को इस्राएल का राजा बनाया (2 शमू 2:8–9)। ईशबोशेत और यहूदा के राजा दाऊद के बीच दो साल तक युद्ध चला। अब्नेर ने ईशबोशेत की सेना का नेतृत्व किया और योआब ने कई छोटे युद्धों में दाऊद की सेना का नेतृत्व किया। दाऊद की सेना आमतौर पर विजयी होती थी, लेकिन अब्नेर शाऊल के अनुयायियों के बीच शक्तिशाली बन गया।

अब्नेर ने शाऊल की रखैल, रिस्पा के साथ सम्बन्ध बनाए। यह अनुचित था क्योंकि केवल राजा को ऐसा करने की अनुमति थी। अब्नेर शायद स्वयं राजा बनने की योजना बना रहा था। जब ईशबोशेत ने उसे डांटा, तो अब्नेर इतना क्रोधित हो गया कि उसने ईशबोशेत को छोड़ दिया और दाऊद के साथ एक समझौता कर लिया। दाऊद ने उसे बहुत सम्मान दिया, और बदले में, अब्नेर ने वादा किया कि वह पूरे इस्राएल को दाऊद का समर्थन करने के लिए लाएगा।

राजा पर अब्नेर के प्रभाव से योआब डर गया और उसे मार डाला। उसने दावा किया कि उसने अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने के लिए ऐसा किया, जिसे अब्नेर ने युद्ध में मारा था। अब्नेर को सार्वजनिक अन्तिम संस्कार और शोक के साथ सम्मानित किया गया। इस प्रकार का आदर केवल एक शासक या महान अगुवे को दिया जाता था। राजा दाऊद

उसकी कब्र पर जोर से रोए, और यहां तक कि लोग भी उनके साथ रोए (2 शमू 3:7–34)। दाऊद ने अब्नेर की हत्या के लिए योआब की निंदा की।

यह भी देखें दाऊद; इस्राएल का इतिहास.

अब्बा

अरामी शब्द जिसका अर्थ "पिता" है, जो मरकुस 14:36; रोमियों 8:15; और गलातियों 4:6 में परमेश्वर के लिए प्रयुक्त है। यह नाम मसीह और पिता के बीच, और विश्वासियों (बच्चों के रूप में) और परमेश्वर (पिता के रूप में) के बीच एक बहुत ही घनिष्ठ और अविभाज्य संबंध को व्यक्त करता है।

अब्बीम (स्थान)

बिन्यामीन के गोत्र की भूमि में एक नगर (यहो 18:23)। यह बेतेल के दक्षिण में स्थित था।

अब्राम

अब्राहम का मूल नाम (उत 11:26)। *देखें* अब्राहम।

अब्राहम

बाइबिल के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों में से एक, जिसे परमेश्वर ने ऊर नगर से परमेश्वर के अपने लोगों का कुलपति होने के लिए बुलाया था।

अब्राहम का नाम मूल रूप से अब्राम था, जिसका अर्थ है "पिता महान है।" जब उसके माता-पिता ने उसे यह नाम दिया था, तो संभवतः वे ऊर के चंद्र पंथ का सदस्य था, इसलिए उसके पुराने नाम में सुझाया गया पितृ देवता, चंद्र देवता या कोई और अन्यजातीय देवता हो सकता है। परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर अब्राहम रख दिया (उत्पत्ति 17:5), आंशिक रूप से, निस्संदेह, मूर्तिपूजक जड़ों से स्पष्ट अलगाव को संकेत करने के लिए। नया नाम, जिसका अर्थ बाइबिल के लेखों में "बहुतों का पिता" के रूप में किया गया है, अब्राहम से परमेश्वर के वादे का एक बयान भी था कि उनके कई वंशज होंगे, साथ ही साथ परमेश्वर में उसके विश्वास की एक महत्वपूर्ण परीक्षा भी थी - क्योंकि उस समय वह 99 वर्ष के थे और उनकी निःसंतान पत्नी 90 वर्ष की थी (उत 11:30; 17:1–4, 17)।

अब्राहम का जीवन

अब्राम की कहानी उत्पत्ति 11 में शुरू होती है, जहां उसके पारिवारिक संबंधों को दर्ज किया गया है (उत 11:26–32)। अब्राम के पिता, तेरह, का नाम ऊर में पूजे जाने वाले चंद्र देवता के नाम पर रखा गया था। तेरह के तीन बेटे थे, अब्राम, नाहोर और हारान। लूत के पिता हारान की मृत्यु परिवार के ऊर छोड़ने से पहले ही हो गई थी। तेरह ने लूत, अब्राम और अब्राम की पत्नी सारै को ऊर से कनान जाने के लिए ले लिया, लेकिन वे हारान नामक देश में ही बस गए (पद 31)। प्रेरितों 7:2–4 में यह कहा गया है कि अब्राहम ने ऊर में रहते हुए ही एक नए देश में जाने के लिए परमेश्वर की बुलाहट सुनी।

अब्राम के जीवन के बारे में एक महत्वपूर्ण बात उत्पत्ति 11:30 में पाई जाती है: "सारै संतान उत्पन्न करने में असमर्थ थी" (एनएलटी)।सारै की बांझपन की समस्या ने अब्राम और सारै के जीवन में विश्वास, प्रतिज्ञा, और पूर्ति के महान संकटों का आधार प्रदान किया।

तेरह की मृत्यु के बाद, परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "अपने देश, अपने कुटुम्ब और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।" यह आज्ञा एक "वाचा" का आधार थी, जिसमें परमेश्वर ने अब्राम को उस नए देश में एक नए राष्ट्र का अधिकारी बनाने का वादा किया था (उत 12:1–3)।अब्राम ने परमेश्वर के वादे पर भरोसा करते हुए, 74 साल की उम्र में हारान छोड़ दिया। कनान में प्रवेश करते हुए, वह सबसे पहले शेकेम गया, जो गिरिज्जीम पर्वत और एबाल पर्वत के बीच एक महत्वपूर्ण कनानी राजकीय शहर था। मोरे के बांजबृक्ष के पास, जो एक कनानी मंदिर था, परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया (12:7)। अब्राम ने शेकेम में एक वेदी बनाई, फिर बेतेल के आस-पास चला गया और फिर से प्रभु के लिए एक वेदी बनाई (12:8). आर.एस.वी. में उपयुक्त वाक्यांश "प्रभु के नाम को पुकारना" का अर्थ केवल प्रार्थना करना नहीं है। बल्कि, अब्राम ने एक घोषणा की, उसने कनानियों के सामने उनके झूठे उपासना केंद्रों में परमेश्वर की वास्तविकता को प्रकट किया। बाद में अब्राम मम्रे के बांजवृक्षों के पास हेब्रोन चले गए, जहाँ उसने फिर से परमेश्वर की आराधना करने के लिए एक वेदी बनाई। एक दर्शन में दिए गए एक और आशीष (15:1) ने अब्राम को यह कहने के लिए प्रेरित किया कि वह अभी भी निःसंतान है और दमिश्क का एलीएजेर उसका उत्तराधिकारी है (15:2)। नुज़ी दस्तावेजों की खोज ने उस अन्यथा अस्पष्ट बयान को स्पष्ट करने में मदद की है। हुरियन प्रथा के अनुसार, उच्च पदवाले और धनवान निःसंतान दंपत्ति एक वारिस को गोद ले लेता थे। अक्सर एक दास गोद लिया जाता था, वारिस अपने गोद लिया हुए माता-पिता के दफ़नविधि और शोक के लिए ज़िम्मेदार होता था। यदि एक पुत्र गोद लिए गए गुलाम-वारिस के बाद पैदा होता है, तो स्वाभाविक रूप से वह उसका स्थान ले लेता था। इस प्रकार अब्राम के प्रश्न के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया सीधे इसी बिंदु पर है: "नहीं, तेरा दास तेरा वारिस नहीं होगा, क्योंकि तेरा एक

पुत्र होगा जो सब कुछ जो मैं तुझे देता हूँ, उसका वारिस होगा" (उत 15:4, एनएलटी)। फिर परमेश्वर ने अब्राम के साथ, एक वारिस, एक देश और भूमि को सुनिश्चित करने के लिए एक वाचा बाँधी।

जब इश्माएल का जन्म हुआ तब अब्राम 86 वर्ष का था। जब अब्राम 99 वर्ष का हुआ, तब प्रभु वृद्ध कुलपति के सामने प्रकट हुए और उन्होंने एक पुत्र और आशीष के अपने वाचा के वचन की फिर से पुष्टि की (उत 17)। खतने को वाचा संबंध की मुहर के रूप में जोड़ा गया (17:9–14), और उस समय अब्राम और सारै के नाम बदलकर अब्राहम और सारा कर दिया गया (17:5, 15)। एक और पुत्र के वादे पर अब्राहम की प्रतिक्रिया हंसना था: "फिर अब्राहम भूमि पर झुक गया, लेकिन वह अविश्वास में अपने आप में हँसा। 'मैं सौ साल की उम्र में पिता कैसे बन सकता हूं?' उसने सोचा। 'इसके अलावा, सारा नब्बे साल की है; वह बच्चा कैसे जन सकती है?' " (उत 17:17)।

उत्पत्ति 18 और 19 में यरदन के मैदान के दो नगरों, सदोम और गमोरा के पूर्ण विनाश का वर्णन है। अध्याय 18 की शुरुआत तीन व्यक्तियों से होती है जो दिन की गर्मी में आराम की तलाश कर रहे हैं। अब्राहम ने अपने मेहमानों को जलपान और भोजन पेश किया।हालाँकि, वे कोई साधारण यात्री नहीं थे, बल्कि प्रभु के दूत और दो अन्य दूत थे (18:1–2; 19:1)। यह मानने का कारण है कि प्रभु का दूत स्वयं परमेश्वर थे (18:17, 33)। प्रतिज्ञा किए गए पुत्र की एक और घोषणा ने सारा को अविश्वास में हँसाया परन्तु फिर हँसने से इनकार कर दिया (18:12–15)।

उत्पत्ति 21 से 23 अब्राहम की कहानी का चरम बिंदु है। आखिरकार, जब अब्राहम 100 वर्ष के थे और उनकी पत्नी 90 वर्ष की थी, तब "प्रभु ने ठीक वही किया जो उन्होंने वादा किया था" (उत 21:1)। अपने लंबे समय से प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र के जन्म पर वृद्ध दंपत्ति की खुशी को रोका नहीं जा सका। अब्राहम और सारा दोनों ने प्रतिज्ञा के दिनों में अविश्वास में हँसा था; अब वे आनंद से हँस रहे थे क्योंकि "आखिरी हंसी" परमेश्वर की थी। बालक, जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा के समय पर हुआ था, उसका नाम इसहाक रखा ("वह हंसा!")। सारा ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित किया है; इसलिए सब सुननेवाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे।" (उत 21:6)।

इसहाक के जन्म पर हुई ख़ुशी का अंत अब्राहम के विश्वास की परीक्षा के साथ हो गया, जो अध्याय 22 में वर्णित है, जब परमेश्वर ने इसहाक को बलिदान करने की आज्ञा दीं। केवल वही व्यक्ति जिसने अब्राहम के साथ परमेश्वर के पुत्र की प्रतिज्ञा प्राप्त करने के 25 लंबे वर्षों का अनुभव किया हो, वही इस तरह की कठोर परीक्षा के आघात की कल्पना कर सकता है। जैसे ही चाकू गिरने वाला था, और तब ही, परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग की चुप्पी को तोड़ते हुए पुकारा, "अब्राहम!" (22:11)। प्रतिज्ञा का नाम, "बहुतों का पिता," का सबसे महत्वपूर्ण अर्थ तब सामने आया जब अब्राहम के पुत्र को बचा लिया गया और परीक्षा को समझाया गया: "मैं जानता हूं कि तू सचमुच परमेश्वर का भय मानता है; और अपने प्रिय पुत्र को भी मुझ से नहीं रख छोड़ा" (उत 22:12)।

ये शब्द एक वादे के साथ जुड़े थे जो झाड़ियों में फंसे हुए मेढ़ा की खोज में निहित था। प्रभु ने एक वैकल्पिक बलिदान, एक एवजी प्रदान किया। इस स्थान का नाम "यहोवा के पहाड़ पर प्रदान किया जाएगा" रखा गया। मसीही विश्वासी आम तौर पर पूरे प्रकरण को परमेश्वर द्वारा अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को संसार के पापों के लिए बलिदान के रूप में प्रदान करने की आशा के रूप में देखते हैं।

यह भी देखें वाचा; कुलपतियों का काल; इस्राएल का इतिहास; सारा #1।

अब्रोन

यहूदीत की पुस्तक में उल्लेखित एक धारा या सूखी नदी का तल। यह उस मार्ग पर स्थित था जिसे नबूकदनेस्सर के सेनापति, होलोफेर्नेस, ने अपने आक्रमण के दौरान अपनाया था (यहूदीत 2:24)।

कुछ प्रारंभिक विद्वानों ने इसे बाइबल के यब्बोक (गिन 21:24) के साथ जोड़ा। अन्य इसे चेरबोन कहते थे, शायद हाबोर (2 रा 17:6) के गलत पढ़ने के कारण।

अब्रोना

अब्रोना

एलत के पास एक स्थान है जहाँ इस्राएली मिस्र से कनान की यात्रा के दौरान ठहरे थे (गिन 33:34–35)।

देखिए जंगल में भटकना।

अब्रोना

अब्रोना

गिनती 33:34–35 में अब्रोना का रूप, जो जंगल में इस्राएलियों के ठहरने का स्थान था। *देखें* अब्रोना।

अभियोग

अभियोग क्या है?

अभियोग का अर्थ है किसी पर आरोप लगाना। बाइबल में इसका प्रयोग परमेश्वर द्वारा पाप और उद्धार को दर्ज किये जाने के कानूनी संदर्भ में किया गया है। अभियोग की शिक्षा मसीही विश्वास का एक प्रमुख हिस्सा है।

हालांकि संज्ञा "अभियोग" बाइबल में नहीं मिलता है, क्रिया "आरोपित करना" अक्सर पुराने और नए नियम दोनों में पाई जाती है। "अभियोग लगाना" का मूल अर्थ है "खाता बही या खाते में दर्ज करना।" उद्धार के संदर्भ में, यह शब्द लगातार कानूनी अर्थ में उपयोग किया जाता है। इसका एक अच्छा उदाहरण फिलेमोन 1:18 में है, जहां प्रेरित पौलुस उनेसिमुस का कर्ज अपने ऊपर लेते हैं, कहते हैं, "यदि...उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले।"

जब बाइबल अच्छे या बुरे को आरोपित करने की बात करती है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि किसी व्यक्ति का नैतिक चरित्र बदल जाता है। इसके बजाय, इसका मतलब है कि परमेश्वर के दृष्टिकोण से, धार्मिकता या पाप किसी व्यक्ति के खाते में जमा किया जाता है। व्यापक अर्थ में, बाइबल सिखाती है कि दोनों परमेश्वर (भजन संहिता 32:2) और लोग (1 शमूएल 22:15) इस प्रक्रिया में भाग लेते हैं। अच्छे कर्मों को अक्सर पुरस्कार का श्रेय दिया जाता था (भजन संहिता 106:30–31), जबकि बुरे कर्मों को दण्ड का श्रेय दिया जाता था (लैव्यव्यवस्था 17:3–4)।

बाइबल तीन तरीकों से अभियोग की व्याख्या करती है

बाइबल तीन मुख्य तरीकों से अभियोग की व्याख्या करती है:

1. आदम का मूल पाप सभी लोगों पर आरोपित किया गया है। परमेश्वर की योजना में, आदम के पहले पाप का श्रेय हर व्यक्ति को दिया गया। इसलिए, हर कोई उस पाप के दोष और दंड में सहभागी है।
2. सभी लोगों के पाप और दोष मसीह पर आरोपित किए गए। यद्यपि यीशु निष्पाप थे, उन्होंने पाप के दंड को अपने ऊपर ले लिया।
3. बाइबल सिखाती है कि मसीह की धार्मिकता विश्वासियों को उनके क्रूस पर किए गए कार्य के कारण दी जाती है। यद्यपि विश्वासियों को पूरी तरह से पवित्र नहीं माना जाता, उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था के सामने धर्मी (परमेश्वर के साथ सही घोषित) ठहराया जाता है और वे मसीह की धार्मिकता से "आच्छादित" होते हैं।

अभियोग और उद्धार

पौलुस ने समझाया कि मसीह ने विश्वासियों के पापों के लिए क्रूस पर दण्ड सह लिया। उन्होंने लिखा कि परमेश्वर "जो पाप से अज्ञात थे, उन्हीं को उन्होंने हमारे लिये पाप ठहराया" (2 कुरिन्थियों 5:21)। पौलुस ने यह भी कहा कि मसीह ने मूसा की व्यवस्था के श्राप को अपने ऊपर ले लिया (गलातियों 3:13)। पतरस, यशायाह 53 पर विचार करते हुए, कहते हैं कि मसीह ने "हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गए" (1 पतरस 2:24)। यह विचार कि संसार का दोष पापरहित उद्धारकर्ता पर रखा गया, मसीह की क्रूस पर पुकार को समझाने में मदद करता है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)।

अभियोग यह भी है कि मसीह की धार्मिकता विश्वासियों के खाते में जमा की जाती है। अब्राहम के जीवन से एक उदाहरण इसे स्पष्ट करता है। जब परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष देने का वादा किया, तो उत्पत्ति 15:6 कहता है कि अब्राहम ने "यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धार्मिकता गिना।" बाइबल सिखाती है कि कोई भी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से उस स्तर की धार्मिकता नहीं रखता जो परमेश्वर मांगते हैं (भजन संहिता 130:3; यशायाह 64:6; रोमियों 3:10)। लेकिन अपने उद्धार की योजना में, परमेश्वर आवश्यक धार्मिकता प्रदान करते हैं (यशायाह 45:24; 54:17; होशे 10:12)। जब कोई व्यक्ति मसीह के कार्य को विश्वास द्वारा स्वीकार करता है, परमेश्वर मसीह की धार्मिकता को उनके खाते में जमा करते हैं।

पौलुस के रोमियों को पत्र में विश्वासियों को ईश्वरीय धार्मिकता का अभियोग एक प्रमुख विषय है (रोमियों 3:21–5:21)। पौलुस उस पापी के आनन्द के बारे में बात करते हैं जो धर्मी घोषित किया जाता है (रोमियों 4:6)। मसीह की धार्मिकता का आरोपण परमेश्वर की कानून कचहरी में न्यायसंगत ठहराने की ओर भी ले जाता है (रोमियों 5:18)। मसीह की मृत्यु, जो पापी के लिए मानी जाती है, पवित्र परमेश्वर द्वारा बरी किए जाने का कारण है। बाइबल सिखाती है कि आदम के पाप के हानिकारक प्रभाव, जो मानवता पर आरोपित थे, मसीह में विश्वास करने वालों के लिए उलट दिए जाते हैं। मसीह को मनुष्य के पाप का आरोपण उनकी धार्मिकता को विश्वासियों को श्रेय देने की अनुमति देता है।

यह भी देखें आदम (व्यक्ति); मसीहशास्त्र; पुरुष का पतन; पाप।

अभिलेखागार

ऐतिहासिक महत्व या भविष्य के संदर्भ के लिए सुरक्षित रखे गए महत्वपूर्ण दस्तावेजों या अभिलेखों का संग्रह।

देखें अभिलेखागार का भवन।

अभिशापात्मक भजन

अभिशापात्मक भजन

वे भजन जिनमें अपने शत्रुओं के लिए श्राप या बुरी कामनाएँ शामिल हैं। ये तत्व 18 भजनों में दिखाई देते हैं:

- भजन संहिता 5
- भजन संहिता 17
- भजन संहिता 28
- भजन संहिता 35
- भजन संहिता 40
- भजन संहिता 55
- भजन संहिता 59
- भजन संहिता 70
- भजन संहिता 71
- भजन संहिता 74
- भजन संहिता 79
- भजन संहिता 80
- भजन संहिता 94
- भजन संहिता 109
- भजन संहिता 129
- भजन संहिता 137
- भजन संहिता 139
- भजन संहिता 140

इन तत्वों को आमतौर पर अपने शत्रुओं के न्याय के लिए प्रार्थना या इच्छा के रूप में व्यक्त किया जाता है।

साधारण पाठक के लिए, ऐसी इच्छाएँ पवित्रशास्त्र के बाकी हिस्सों, विशेष रूप से यीशु की शिक्षाओं के साथ विरोधाभासी लग सकती हैं। लैव्य 19:17–18 कहता है, “अपने मन में एक दूसरे के प्रति बैर न रखना; अपने पड़ोसी को अवश्य डाँटना, नहीं तो उसके पाप का भार तुझको उठाना पड़ेगा। बदला न लेना, और न अपने जातिभाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने समान प्रेम रखना।"

यीशु तर्क देते हैं कि "पड़ोसी" में सभी शामिल हैं (लूका 10:29–37)। पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने कहा, "अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो" (मत्ती 5:44; 38–48 से तुलना करें)। यह विचार पुराने नियम से मेल खाते है, जो हमें अपने शत्रुओं की सहायता करना सिखाते है (नीति 25:21–22; तुलना करें रोम 12:20)।

भजन संहिता 109 यीशु की शिक्षाओं का विरोधाभास प्रतीत होता है क्योंकि इसमें सबसे अधिक श्राप और कुछ सबसे कठोर बातें हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि यह भजन बाइबल के लिए बहुत कठोर है। लेकिन इस भजन को क्रिसोस्टम, जेरोम, ऑगस्टीन और अन्य विद्वानों द्वारा भविष्यद्वाणी और मसीहाई भजन दोनों के रूप में देखा गया है।

थॉमस हॉर्न ने इस भजन के भूतकाल को भविष्यकाल के रूप में लिखा है, जिससे यह भविष्यद्वाणी का भजन बन गया है। यहूदा के बदले एक नये प्रेरित का चुनाव करते समय पतरस द्वारा भज 109:8 का उद्धरण हॉर्न की प्रेरणा थी (प्रेरि1:20)। यह भजन यीशु के कष्टों के बारे में बात करता है, जो इसे श्राप देने के बजाय मसीह के बारे में भविष्यद्वाणी करने वाला भजन बनाता है।

एक और परेशान करने वाला अंश भज 137:8–9 है, जो बाबेल के बच्चों की हिंसक मौत के बारे में खुशी से बात करता है। हॉर्न का मानना था कि यह 539 ईसा पूर्व में बाबेल पर आक्रमण की भविष्यद्वाणी थी।

न्याय की मांग करने वाले ये भजन बाइबल के बाकी हिस्सों के विपरीत नहीं हैं। यिर्मयाह ने बदला लेने के लिए प्रार्थना की (यिर्म 11:20)। उन्हें प्रभु द्वारा उत्तर मिला (पद 21–23)। धर्मी जो न्याय की खोज करते हैं, उन्हें उत्तर मिलेगा (लूका 18:1–8)। प्रकाशितवाक्य में, शहीद पुकारते हैं, “हे प्रभु, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लहू का पलटा कब तक न लेगा?” (प्रका 6:10)। उनकी पुकार सुनी जाती है। दाऊद ने अपने शत्रुओं को हराया, और उन्होंने अपने शत्रुओं को परमेश्वर के शत्रुओं के रूप में देखा। भजनकार के शत्रुओं को न्याय मिलना चाहिए। लेखक की इच्छाएँ परमेश्वर के न्याय के साथ मेल खाती थीं।

यह भी देखें न्याय; भजन संहिता की पुस्तक; परमेश्वर का क्रोध।

अभिषिक्त (एक व.), अभिषिक्त (बहु व.)

अभिषेक का अर्थ है किसी को विशेष भूमिका या उद्देश्य के लिए चुनना। बाइबल में यह कई बार व्यक्ति पर तेल लगाने से जुड़ा होता था, लेकिन इसका अर्थ यह भी होता था कि किसी विशेष कार्य के लिए उस व्यक्ति का परमेश्वर के आत्मा से भर देना।

नए नियम में, यीशु मसीह को तीन महत्वपूर्ण भूमिकाओं में प्रस्तुत किया गया है:

- भविष्यद्वक्ता (वह जो परमेश्वर के लिए बोलता है)
- याजक (वह जो लोगों को परमेश्वर से जोड़ने में सहायता करता है)
- राजा (एक शासक जो लोगों की अगुआई करता है)

यीशु परमेश्वर के अभिषिक्त है। "मसीहा" शब्द इब्रानी शब्द से आया है जिसका अर्थ है "अभिषिक्त।" "मसीह" शब्द यूनानी शब्द से आया है जिसका अर्थ भी "अभिषिक्त" होता है।

मसीहा का सच्चा अभिषेक आत्मिक होता है (भज 2:2; दानि 9:25–26)। यह अभिषेक, पवित्र आत्मा द्वारा होता है (यशा 61:1; लूका 4:1, 18–19)। नासरत का यीशु वास्तव में पुराने नियम की भविष्यवाणी के अनुसार अभिषिक्त या मसीहा थे। यह उनके पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक और उसके बाद हुए चमत्कारों से प्रमाणित हुआ (यूह 1:32–51; लूका 4:33–37)। यीशु की तरह, मसीहियों को भी पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त कहा जाता है। आत्मा उन्हें उनके विश्वास को समझने और ऐसा जीवन जीने में सहायता करता है जो परमेश्वर को प्रसन्न करे (2 कुरि 1:21–22; 1 यूह 2:20, 27)।

*यह भी देखें*मसीहा।

अभिषेक करना

किसी व्यक्ति या वस्तु पर अनुष्ठानिक तरीके से तेल या मरहम उंडेलना।

अभिषेक के लिए इब्रानी शब्द पहली बार उत्पत्ति 31:13 में आता है, जहाँ यह याकूब द्वारा बेतेल के पत्थर पर तेल उंडेलने का उल्लेख करता है (उत 28:18–19)। बाद में यह अनुष्ठान दोहराया गया (उत 35:9–15)। यह अनुष्ठान स्पष्ट रूप से धार्मिक था जो पवित्र उपयोग में प्रवेश का संकेत देता था। एक धार्मिक कृत्य के रूप में, अभिषेक का उद्देश्य अभिषिक्त व्यक्ति को संबंधित देवता की गुणवत्ता से संपन्न करना था। प्राचीन काल से ही इब्रानी लोग अपने राष्ट्रीय समुदाय के अधिकारीयों के सिर पर विशेष तेल उंडेलकर उन्हें नियुक्त करते थे। विशेष ईश्वरीय उपयोग के लिए वस्तुओं को अलग रखने के लिए भी इसी प्रथा का उपयोग किया जाता था।

पवित्रशास्त्र आधिकारिक चीज़ों और व्यक्तियों के औपचारिक अभिषेक के कुछ विवरण प्रदान करता है। याकूब ने एक चट्टान पर तेल उंडेला और एक घोषणा की। जब इस्राएल के पहले राजा का अभिषेक किया गया, तो भविष्यवक्ता-न्यायाधीश शमूएल ने शाऊल को निर्देश देना के लिए एक तरफ ले गया (1 शमू 9:25–27), फिर "तेल की कुप्पी ली और उसके सिर पर उंडेला, और उसे चूमा और कहा, 'क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है' (1 शमू 10:1)। तम्बू और उसके याजकों के अभिषेक के लिए, एक विशेष तेल तैयार किया जाता था और केवल उस पवित्र उद्देश्य के लिए ही उपयोग किया जाता था। कुशल इत्र निर्माताओं ने जैतून के तेल में सर्वोत्तम मसालों (गंधरस, दालचीनी, अगर, तज) को मिलाया (निर्ग 30:22–25)। यहोवा ने निर्दिष्ट किया कि जो कुछ भी परमेश्वर के लिए अलग किया गया है—तम्बू, सन्दूक, मेज और उसके उपकरण, दीपस्तम्भ और बर्तन, धूप की वेदी और मुख्य वेदी, धोने का कटोरा—सबका अभिषेक किया जाना चाहिए। महायाजक हारून और उसके पुत्रों का भी अभिषेक किया जाना था (निर्ग 30:26–32)। परिणामस्वरुप पवित्र साज-सामान, आराधना के पवित्र उपकरण और पवित्र याजकों के साथ एक पवित्र स्थान बन गया।

इस्राएल राष्ट्र में भविष्यवक्ता, याजक और राजा के पद अभिषेक से जुड़े थे। भविष्यवक्ताओं को कभी-कभी आधिकारिक अभिषेक द्वारा नियुक्त किया जाता था (1 रा 19:16)। उन्हें परमेश्वर के अभिषिक्त कहा जा सकता था (1 इति 16:22; भज 105:15)। लैवीय याजक पद की स्थापना के समय, सभी याजकों को उनके पद के लिए अभिषेक किया गया था, हारून के पुत्रों के साथ-साथ स्वयं हारून को भी अभिषेक किया गया था (निर्ग 40:12–15; गिन 3:3)। बाद में, साधारण याजकों के अभिषेक के समय अभिषेक को दोहराया नहीं गया, क्यूंकि यह विशेष रूप से महायाजक के लिए आरक्षित था (निर्ग 29:29; लैव्य 16:32)।

अपने स्वयं के राजा होने से पहले, इस्राएली जानते थे कि राजा की नियुक्ति के लिए अभिषेक एक तरीका है (न्या 9:8,15)। शाऊल से लेकर (1 शमू 10:1; 1 रा 1:39) यहूदा और इस्राएल के सभी राजाओं की नियुक्ति के साथ अभिषेक एक ईश्वरीय रूप से निर्धारित अनुष्ठान बन गया (2 रा 9:1–6; 11:12)। दाऊद का अभिषेक तीन चरणों में हुआ (1 शमू 16:1, 13; 2 शमू 2:4; 5:1–4)। "यहोवा का अभिषिक्त" या इसी तरह का कोई वाक्यांश इब्रानी राजाओं के लिए एक सामान्य पद बन गया (1 शमू 12:3–5; 2 शमू 1:14–16; भज 89:38, 51; विल 4:20)।

परन्तु, अभिषेक का धार्मिक या अनुष्ठानिक महत्व से कहीं अधिक महत्व था। मिस्रियों और सीरियाई लोगों ने चिकित्सा और सौंदर्य कारणों से अभिषेक का अभ्यास किया, और शास्त्रों से पता चलता है कि इस तरह का गैर-धार्मिक अभ्यास भी इस्राएली रीति-रिवाजों का हिस्सा था (2 शमू 12:20; रूत 3:3; मीक 6:15)। वास्तव में, स्वयं का अभिषेक या इत्र न लगाना शोक या संकट का संकेत था (2 शमूएल 14:2; दानि 10:3; मत्ती 6:17)।

नए नियम में बीमार व्यक्ति द्वारा अनुरोध किए जाने पर स्थानीय कलीसिया के प्राचीनों द्वारा प्रार्थना के साथ बीमारों

का अभिषेक करने की सिफारिश की जाती थी (याकू 5:14–16)। तेल के साथ अभिषेक भी प्रेरितों की चिकित्सा सेवा का हिस्सा था (मर 6:12–13)।

अभिषेक का पवित्र तेल

अभिषेक का पवित्र तेल

देखिए अभिषेक।

अभ्येलेरशर

अभ्येलेरशर

भजन संहिता 22 के शीर्षक में एक इब्रानी वाक्यांश है जिसका अनुवाद "भोर की हिरणी की धुन पर" किया गया है। यह सम्भवतः एक प्रसिद्ध प्राचीन धुन थी जो इस भजन के साथ बजाई जाती थी।

देखें संगीत।

अमरना पट्टियाँ

अमरना पट्टियाँ

शाही संग्रहालयों से प्राप्त हुईं मिट्टी की पट्टियाँ, जिन पर लेखन किया गया था। अमरना पट्टियाँ अधिकतर पत्र हैं।मिस्र में अब तक मिली इस तरह की लिपि (कीलाक्षर लेखन) वाली ये एकमात्र मिट्टी की पट्टियाँ हैं।

379 अमरना पट्टियाँ पुराने खण्डहरों में खोजी गई थी। ये खण्डहर नील नदी के पास समतल भूमि पर स्थित है। वे मिस्र के काहिरा से लगभग 190 मील (305.7 किलोमीटर) दक्षिण में हैं। इस क्षेत्र का नाम बेनी अमरान या अमरना गोत्र के लोगों के एक दल के नाम पर रखा गया है। यह गोत्र हाल के दिनों में यहाँ आकर बसा था।

खण्डहरों के स्थान को गलत तरीके से टेल एल-अमरना कहा जाता है। "टेल" एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ "पहाड़ी" या "टीला" होता है, लेकिन यह स्थान एक मैदान पर स्थित है। पास के गाँव "एल-टिल" ने इस नाम "एल-अमरना" में योगदान दिया है।

पट्टियों पर इस्तेमाल की गई कीलाक्षर लिपि में कील या पच्चर के आकर के निशान होते हैं, जिन्हें मिटटी में विशिष्ट स्वरूप (पैटर्न) में दबाया जाता है। प्रत्येक स्वरूप (पैटर्न), जिसे "चिह्न" कहा जाता है, एक ध्वनि या शब्द का प्रतिनिधित्व करता है। कीलाक्षर लिपि विभिन्न भाषाओं को व्यक्त कर सकती थी, जैसे लातिनी लिपि अंग्रेज़ी, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं को दर्शा सकती है। अधिकांश अमरना पट्टियाँ अक्कादी भाषा के एक संस्करण में लिखी गई हैं, तीन पट्टियों को छोड़कर। यह एक सेमिटिक भाषा थी जो मेसोपोटामिया से आई थी और दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के दौरान पश्चिम एशिया में अंतर्राष्ट्रीय पत्राचार और कूटनीति के लिए प्रयुक्त होती थी।

इनमें से 29 पट्टियाँ लिखना सीखने वाले छात्रों के लिए अभ्यास सामग्री प्रतीत होती हैं। इनमें शामिल हैं:

- लेखन प्रतीकों की सूचियाँ
- शब्दों की सूचियाँ
- प्राचीन मेसोपोटामिया की कहानियों की अभ्यास प्रतियाँ

की 350 पट्टियाँ पत्र हैं। ये पत्र मिस्र के दो राजाओं (फिरौनों) को भेजे गए थे:

- अमेनोफिस तृतीय
- अमेनोफिस चतुर्थ (उनके पुत्र)

ये पत्र लगभग 30 वर्षों की अवधि को समेटे हुए हैं। ये अमेनोफिस तृतीय के शासनकाल के दौरान प्रारंभ होते हैं और अमेनोफिस चतुर्थ की मृत्यु के थोड़े समय बाद समाप्त होते हैं।

इनमें से अधिकांश पत्र सीरिया और फिलिस्तीन के स्थानीय शासकों से हैं। वे मिस्र के राजाओं को आधिकारिक विषयों के बारे में लिखते थे।

कुछ पत्र मिस्र के उत्तर और पूर्व में स्थित बड़े और अधिक शक्तिशाली देशों के राजाओं से हैं।

ये पत्र मिस्री फ़िरौन और उन्हें लिखने वाले लोगों के बीच विभिन्न प्रकार के संबंधों को दर्शाते हैं।

कुछ लेखक फ़िरौन के लगभग समकक्ष माने जाते थे। जबकि अन्य को फ़िरौन से कम महत्वपूर्ण समझा जाता था।

देश अक्सर मित्रता स्थापित करने के लिए समझौते (संधियाँ) करते थे। कभी-कभी वे इन मित्रताओं को मजबूत करने के लिए शाही परिवारों के बीच विवाह की व्यवस्था भी करते थे।

वे लेखक जो फ़िरौन से कम महत्वपूर्ण माने जाते थे:

- वे फ़िरौन को पत्र लिखते समय स्वयं को "आपका सेवक" कहते थे।
- वे फ़िरौन को "मेरे प्रभु," "मेरे सूर्य," या कभी-कभी "मेरे देवता" कहते थे।
- आज, हम इन लेखकों को "वासल" और उनके देशों को "वासल राज्य" कहते हैं।
- हम इस प्रकार के संबंध में फ़िरौन को "सुज़रैन" कहते हैं।

वे लेखक जो फ़िरौन के लगभग समकक्ष माने जाते थे:

- वे फ़िरौन को पत्र लिखते समय स्वयं को "आपका भाई" कहते थे।
- वे फ़िरौन को "मेरे भाई" कहते थे।
- आज, हम इसे "समान" या "समानता" का संबंध कहते हैं

फ़िरौन को उन शासकों से पत्र प्राप्त होते थे जिन्हें उनके समकक्ष माना जाता था। इन पत्रों में उपहारों के आदान-प्रदान, विवाह की योजना, देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने और व्यापार को बढ़ावा देने की बातें होती थीं। इनमें भेजे गए या प्राप्त उपहारों की सूचियाँ, उपहारों के लिए अनुरोध, सोना या अन्य मूल्यवान वस्तुएँ शामिल होती थीं। ये पत्र बाबुल, मितानी, अश्शूर, हत्ती (हित्ती राज्य) और अलाशिया (साइप्रस) के शासकों से आते थे।

पलिस्तीन से कुछ पत्र सैन्य सहायता की माँग करते हैं और सैन्य गतिविधियों का उल्लेख करते हैं। वे "हबीरू" का उल्लेख करते हैं, जिसे जल्द ही "हिब्रू" (इब्रानी) शब्द से जोड़ा गया। हबीरू पलिस्तीन के कई स्थानों पर उपस्थित थे और उन्हें "राजा की सारी भूमि को लूटने वाले" के रूप में वर्णित किया गया था। पहले यह माना गया कि अमरना पत्र उस समय के हैं जब इब्री लोग (इस्राएली) मिस्र से बच निकले और यहोशू के नेतृत्व में पलिस्तीन पर आक्रमण किया। इससे यह प्रतीत होता था कि ये विवरण उन लोगों से थे जो इस्राएलियों के आक्रमण के समय फिलिस्तीन में जीवित थे।

बाद में, शोधकर्ताओं ने अन्य जानकारी के साथ अमरना पत्रों की दोबारा जाँच की। उन्होंने पाया कि उनकी पहली धारणा गलत थी। हबीरू आक्रमणकारी इब्री लोग नहीं थे।

"हबीरू" शब्द "अपीरू" की एक भिन्न वर्तनी है। इस शब्द का उपयोग अमरना पत्रों और अन्य ग्रंथों में एक विशेष वर्ग के लोगों का वर्णन करने के लिए किया गया है जिन्हें "अपराधी" या "विद्रोही" कहा जाता था। विभिन्न राष्ट्रों के लोग अपीरू कहे जा सकते थे। कोई व्यक्ति अपने कार्यों के कारण या किसी समूह में शामिल होकर अपीरू बन सकता था। अपीरू, सीरिया और पलिस्तीन में बिना किसी निश्चित घर के घूमते थे और कभी-कभी किराए के सैनिक के रूप में काम करते थे या लोगों से चोरी करते थे।

देखें शिलालेख; मिस्र, मिस्री।

अमर्याह

पुराने नियम का एक सामान्य नाम, जिसका अर्थ है "प्रभु ने कहा है" या "प्रभु ने वादा किया है।"

1. मरायोत का पुत्र, हारून के पुत्र एलीएज़र का वंशज (1 इतिहास 6:7, 52)।
2. महायाजक, अजर्याह का पुत्र, और अहीतूब का पिता (1 इतिहास 6:11; एज्रा 7:3)।
3. हेब्रोन का दूसरा पुत्र और कहात का पोता लेवी के गोत्र से (1 इतिहास 23:19; 24:23)।
4. दक्षिणी राज्य यहूदा के राजा यहोशापात के राज्य के दौरान एक प्रमुख याजक (2 इतिहास 19:11)।
5. एक लेवी, जिसने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के अधीन निष्ठापूर्वक सेवा की (2 इतिहास 31:14–15)।
6. बिन्नूई के बेटों में से एक, जिसने एज्रा की सिफारिश का पालन किया कि वह अपनी गैर-यहूदी पत्नी को बेबीलोन की बँधुआई के बाद तलाक दे दें (एज्रा 10:42)।
7. बँधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ बेबीलोन से लौटने वाला एक याजक (नहे 12:2, 13)। नहेम्याह और अन्य लोगों के साथ, उसने बँधुआई के बाद परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने की एज्रा की वाचा (या समझौते) पर हस्ताक्षर किए (नहेम्याह 10:3)।
8. शपत्याह का पुत्र। वह यहूदा का वंशज और अतायाह का पूर्वज था। अमर्याह बंधुआई के बाद यरूशलेम में रहता था (नहेम्याह 11:4)।
9. हिजकिय्याह का पुत्र और भविष्यद्वक्ता सपन्याह का पूर्वज (सपन्याह 1:1)।

10. एक व्यक्ति जो एज्रा की पूर्वजों की सूची में 1 एसड्रास 8:2 और 2 एसड्रास 1:2 में उल्लिखित है। पहली सूची में, वह उज्जी का पुत्र और अहीतूब का पिता है। दूसरी में, वह अजर्याह का पुत्र और एली का पिता है। वह ऊपर प्रविष्टियों #1 या #2 के अमर्याह के समान हो सकता है। दोनों स्रोतों में उसे अहीतूब का पिता बताया गया है।

अमशै

अमशै

अजरेल का पुत्र। वह प्रमुख याजकों में से एक था जो बाबेल की बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटा (नहे 11:13)। अमशै सम्भवतः मासै के समान हो सकता है (1 इति 9:12)।

अमसी

अमसी

1. लेवी परिवार के मरारीवंशी दल से एक व्यक्ति और एतान संगीतकार के पूर्वज (1 इति 6:46)।
2. अदायाह का एक पूर्वज और मल्किय्याह के विभाग का एक याजक (नहे 11:12)।

अमस्याह

अमस्याह

यहोशापात के समय का एक सैन्य अगुवा, जो 200,000 पुरुषों का प्रभारी था। अमस्याह जिक्री का पुत्र था और बहुत ही भक्तिपूर्ण व्यक्ति था (2 इति 17:16)।

अमस्याह

अमस्याह

1. यहूदा का नौवां राजा, जिसने 796 से 767 ई. पू. तक राज्य किया। वह 25 वर्ष की आयु में अपने पिता राजा योआश के बाद राजा बना। अमस्याह की माता यहोअद्दीन थी। योआश, जो 40 वर्षों तक राजा रहा, षड्यंत्रकारियों द्वारा मारा गया (2 रा 12:19–21)।अमस्याह ने 29 वर्षों तक यहूदा पर शासन किया, परन्तु अन्त में उसे भी षड्यंत्रकारियों ने मार डाला (14:18–20)। जब अमस्याह ने अपना शासन शुरू किया, उस समय इस्राएल के उत्तरी राज्य में एक दूसरा योआश राजा था (14:1–2)।
अमस्याह अपने पूर्वज दाऊद के समान नहीं था (2 रा 14:3)। अपने पिता की तरह, अमस्याह ने परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्य किए, परन्तु देश के धार्मिक जीवन को भ्रष्ट कर रहे अन्यजाति मन्दिरों को हटाने में असफल रहा। उसने व्यवस्था का सम्मान किया, कम से कम अपने शुरुआती समय में (14:4–6)।
अमस्याह ने इस्राएल के प्रतिद्वंद्वी राज्य के प्रति समझदारी से काम नहीं किया। उसने एदोमियों के खिलाफ युद्ध किया। उसने इस्राएल से 100,000 सैनिकों को किराए पर लिया। परन्तु उसे एक भविष्यद्वक्ता द्वारा चेतावनी दी गई कि वह इन सैनिकों का उपयोग युद्ध में न करें, इसलिए अमस्याह ने उन्हें घर भेज दिया।

यहूदा से बाहर जाते समय, गुस्साए सैनिकों ने नगरों पर हमला किया। उन्होंने 3,000 लोगों को मार डाला। अमस्याह की सेना एदोमियों के खिलाफ विजयी रही। नमक की तराई में, उन्होंने युद्ध में 10,000 शत्रुओं को मार डाला। उन्होंने 10,000 और कैदियों को भी मार डाला (2 इति 25:5–13)।
मूर्खतापूर्वक, अमस्याह अपनी विजय के बाद एदोमी मूर्तियों या झूठे देवताओं को अपने साथ वापस ले आया। उसने उनकी उपासना की। प्रभु ने एक भविष्यद्वक्ता को भेजा ताकि वह अमस्याह को बता सके कि मूर्तियों की उपासना करने के कारण उसे नष्ट कर दिया जाएगा (2 इति 25:14–16)। एदोम पर अपनी विजय पर गर्व करते हुए, अमस्याह ने

जल्द ही इस्राएल के राजा योआश पर युद्ध की घोषणा कर दी। योआश ने उसे एक दृष्टान्त में चेतावनी दी कि यहूदा एक फूल की तरह कुचल दिया जाएगा। अमस्याह ने पीछे हटने से इनकार कर दिया। दोनों सेनाएँ यहूदा के बेतशेमेश में लड़ी। अमस्याह की सेना पराजित हो गई। इस्राएलियों ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया और मन्दिर और राजभवन को लूट लिया। अमस्याह को कैद कर लिया गया था, परन्तु जाहिर तौर पर उसे यरूशलेम में ही छोड़ दिया गया था। वह इस्राएल के राजा योआश से 15 वर्ष अधिक जीवित रहा (2 इति 25:17–26)। लाकीश में अमस्याह की हत्या कर दी गई थी। वह यरूशलेम में अपने खिलाफ एक साजिश के बारे में सुनकर वहाँ भाग गया था। उसका शरीर राजधानी नगर वापस लाया गया और शाही कब्रिस्तान में दफनाया गया (2 इति 25:27–28)।

2. शिमोन के गोत्र से योशा का पिता (1 इति 4:34)।
3. मरारी के कुल के एक लेवी हिल्किय्याह का पुत्र (1 इति 6:45)।
4. यारोबाम द्वितीय के दिनों में बेतेल का याजक। वह भविष्यद्वक्ता आमोस का विरोधी था (आमो 7:10–17)।

अमाद

अमाद

उत्तरी फिलिस्तीन में एक नगर है, जो कर्मेल पर्वत के पास स्थित है। यह आशेर के क्षेत्र की सीमाओं के भीतर है (यहोशू 19:26)।

अमाना

अमाना

एक पर्वत श्रृंखला, सम्भवतः एंटी-लबानोन श्रृंखला में। श्रेष्ठगीत 4:8 इसका उल्लेख सनीर और हेर्मोन की चोटी के साथ करता है। यह शायद अबाना (या अमाना) नदी का स्रोत है (2 रा 5:12)। *देखें* अबाना।

अमाम

अमाम

यहूदा के राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित एक नगर। यह एदोम की सीमा के पास था (यहोशू 15:26)।

अमालेक, अमालेकी

अमालेक, एलीपज (एसाव का पुत्र) का पुत्र था, जो उसकी रखैल, तिम्ना से उत्पन्न हुआ था (उत 36:12; 1 इति 1:36)। एदोम के इस गोत्र प्रमुख के वंशज अमालेकी के नाम से जाने गए। वे नेगेव रेगिस्तान में बसे और एदोमियों, अम्मोनियों, मोआबियों, इश्माएलियों और मिद्यानियों के सहयोगी बन गए। अमालेकी, इस्राएल के प्रमुख शत्रु थे। अमालेक ने अपने दादा एसाव की याकूब के प्रति शत्रुता से शुरू हुए भ्रातृ-विरोध को विरासत में पाया। चूंकि याकूब इस्राएल के पूर्वजों में से एक थे, इसलिए अमालेक और इस्राएल के बीच का संघर्ष, धार्मिक और राजनीतिक दोनों आधारों पर था।

नेगेव में घुमंतू अमालेकियों का क्षेत्र कभी-कभी बेर्शेबा के दक्षिण से लेकर दक्षिण-पूर्व में एलाथ और एज़ियन-गेबर तक फैला हुआ था। वे निस्संदेह पश्चिम की ओर तटीय मैदान में, पूर्व की ओर अराबा की बंजर भूमि में और संभवतः अरब तक छापेमारी करते थे। नेगेव में उन्होंने इस्राएलियों के निर्गमन के दौरान उनका मार्ग अवरुद्ध कर दिया था (निर्ग 17:8–16)।

इस्राएल का अमालेक के योद्धाओं के साथ पहला सामना सीनै के पास रपीदीम में हुआ। मूसा एक पहाड़ी के ऊपर खड़े हुए और तब तक परमेश्वर की छड़ी को ऊपर उठाए रखा जब तक इस्राएल ने युद्ध नहीं जीत लिया, फिर एक वेदी बनाई और उसका नाम "यहोवा निस्सी" रखा (निर्ग 17:1, 8–16)। अमालेकियों ने इस्राएल की मरुभूमि की यात्रा के दौरान पीछे रह गए लोगों पर हमला किया (व्य.वि. 25:17–18)। प्रतिज्ञा किए हुए देश की सीमा पर पहुँचने के बाद, लेकिन कालेब और यहोशू की जानकारी को अस्वीकार करने के बाद, अविश्वासी और निराश इस्राएलियों ने अमालेकियों पर हमला किया और पराजित हो गए (गिन 14:39–45)।

जब मोआब के राजा बालाक ने बालाम को इस्राएल को शाप देने के लिए बुलाया, तो उन्होंने अपने शाप को मोआब पर डाल दिया और अपनी अंतिम भविष्यवाणी में अमालेक के गोत्र के अंत की भविष्यवाणी की (गिन 24:20)। मूसा ने अपने विदाई भाषण में इस्राएल के बच्चों को याद दिलाया कि उन्हें अमालेक के वंशजों द्वारा परेशान किया गया था और उन्हें अमालेक के नाम की सारी स्मृति मिटा देनी चाहिए (व्य.वि. 25:17–19)।

न्यायियों के समय के दौरान अमालेकियों ने अपने पारंपरिक क्षेत्र पर कब्जा बनाए रखा और केनियों के साथ जुड़ गए (1 शमू 15:5–6), मूसा के ससुर के वंशज थे, जो अराद के दक्षिण में नेगेव में बस गए थे (न्या 1:16)। अमालेकी को, जो अभी भी अन्य घुमंतू गोत्रों (मोआबी, अम्मोनी, मिद्यानी) के साथ जुड़े हुए थे, मोआब के राजा एगलोन ने इज़राइल को हराने और यरीहो पर कब्जा करने के लिए एकत्र किया था (न्या 3:12–14)। दबोरा के गीत में अमालेक को इस्राएल के खिलाफ गोत्रों के एक गठबंधन के रूप में उद्धृत किया गया है (न्या 5:14)। नाम कई आधुनिक अनुवादों में छोड़ा गया है और अन्य में "घाटी में" के रूप में अनुवादित किया गया है। हालांकि, दबोरा और बाराक के समय में अमालेकी उत्पीड़न का उल्लेख अन्य अंशों में किया गया है (न्या 6:3, 33; 7:12)। गिदोन ने गठबंधन को हराया था (न्या 7:12–25), लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि अमालेकियों को नेगेव से बाहर निकाला गया था।

1 शमूएल के अनुसार, शाऊल ने अपनी सेनाओं को अमालेकियों के खिलाफ भेजा (14:47–48) और परमेश्वर से उन्हें और उनकी सभी संपत्तियों को नष्ट करने का आदेश प्राप्त किया (15:1–3)। उन्होंने उनके नगर पर आक्रमण किया (15:4–7) लेकिन उनके राजा, अगाग को नहीं मारा (15:8)। शाऊल ने अमालेकियों के सबसे अच्छे पशुओं को अपने लोगों में बांट दिया (15:9), जिसके लिए प्रभु ने उनकी निंदा की और शमूएल को भेजा कि वह उन्हें बताएं कि उनके पाप के कारण उनका राज्य समाप्त हो गया है (15:10–31)। फिर शमूएल ने अगाग का वध किया (15:32–35)। अमालेकियों का एक अवशेष अवश्य बच गया होगा, क्योंकि वे फिर से दाऊद के शत्रु के रूप में प्रकट हुए जब वह अभी भी एक युवा योद्धा थे (27:8)। उन्होंने अमालेकियों द्वारा ले जाई गई अपनी दो पत्नियों को बचाया और अधिकांश आक्रमणकारी दल को मार डाला (30:1–20)। अमालेकी राजा, दाऊद के शासनकाल के दौरान इस्राएल के शपथबद्ध शत्रु थे (2 शमू 1:1)। वे इस्राएल के शत्रुओं में सूचीबद्ध हैं (2 शमू 8:12; 1 इति 18:11; भज 83:7)। कुछ बचे हुए अमालेकियों का विनाश दाऊद के कई सौ वर्षों बाद यहूदा के दक्षिणी राज्य के हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान हुआ (1 इति 4:41–43)।

अमालेकियों का पर्वत

देखें अमालेकियों का पहाड़ी देश (पर्वत)।

अमालेकियों के पहाड़ी देश

अमालेकियों के पहाड़ी देश

एप्रैम में पिरातोन के पास का एक क्षेत्र, सम्भवतः शेकेम के पश्चिम में लगभग 9.6 किलोमीटर (छह मील) दूर (न्या 12:15)। इसका उल्लेख इब्रानी बाइबल में है, परन्तु पुराने नियम की यूनानी पांडुलिपियों में नहीं है। कुछ विद्वानों को यह सन्दर्भ भ्रमित करने वाला लगता है। हालांकि, न्यायियों 5:14 और 12:15 के आधार पर यह तर्क दिया जा सकता है कि एप्रैम में एक छोटा अमालेकी जिला था।

अमालेकियों की पहाड़ी को कभी-कभी "अमालेकियों का पर्वत" भी कहा जाता है।

अमाव

फरात नदी के निकट का क्षेत्र। इसमें पतोर नगर भी शामिल था, जहाँ मोआब के राजा बालाक ने भविष्यद्वक्ता बिलाम की खोज में दूत भेजे थे (गिन 22:5)। अमाव का नाम 1450 ई.पू. के इद्रिमी शिलालेख में दिखाई देता है। यह क़ेन-अमुन की कब्र पर भी दिखाई देता है, जिन्होंने 15वीं शताब्दी ई.पू. के अंत में मिस्र के अमेनोफिस द्वितीय के अधीन सेवा की थी।

अमासा

1. यित्रो (येतेर) और दाऊद की बहन अबीगैल का पुत्र था (2 शमू 17:25; 1 इति 2:17)। इस प्रकार, वह दाऊद का भांजा था। अमासा एक सेनापति था जिसने अबशालोम का समर्थन किया जब उसने अपने पिता दाऊद के खिलाफ विद्रोह किया। जब दाऊद के सेनापति योआब ने अबशालोम को मार डाला, तो दाऊद ने अमासा को क्षमा कर दिया और उसे योआब के स्थान पर सेनापति बना दिया (2 शमू 19:13)। यह बात योआब को बहुत बुरी लगी, और वह बदला लेने की प्रतीक्षा करने लगा। जब उसे अवसर मिला, तो उसने अपने प्रतिद्वंद्वी अमासा को धोखे से मार डाला (2 शमू 20:4–13)। दाऊद योआब को सजा नहीं दे सके परन्तु उन्होंने अपने पुत्र सुलैमान को निर्देश दिया कि योआब को अमासा और दाऊद के एक अन्य सेनापति की हत्या के लिए फांसी दी जाए (1 रा 2:5–6, 28–34)।

2. एप्रैम के गोत्र से हदलै के पुत्र अमासा ने नबी ओदेद का समर्थन किया। ओदेद ने राजा आहाज के समय में यहूदा के दक्षिणी राज्य से पकड़ी गई स्त्रियों और बच्चों को गुलाम बनाने का विरोध किया (2 इति 28:8–13)।

अमासै

अमासै

1. एल्काना का पुत्र और महत का पिता (1 इति 6:25; 6:35)। वह गायक हेमान के पूर्वजों की सूची में शामिल है।
2. 30 वीरों का एक मुखिआ, जो राजा शाऊल को छोड़कर दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुआ था (1 इति 12:18)।
3. जब दाऊद परमेश्वर का सन्दूक यरूशलेम लाए, तब जुलूस में एक तुरही बजाने वाले याजक (1 इति 15:24)।
4. दूसरे महत का पिता। यह महत हिजकिय्याह का समकालीन था और उनके सुधारवाद में सहभागी था (2 इति 29:12)।

अमित्तै

अमित्तै

जबूलून के गोत्र से भविष्यद्वक्ता योना के पिता। अमित्तै छोटे गाँव गथेपेर से थे। गथेपेर नासरत के उत्तर-पूर्व में स्थित है (2 रा 14:25; योन 1:1)।

अमोन नगरी

अमोन नगरी

'नहीं' का वैकल्पिक पाठ, ऊपरी मिस्र की राजधानी थीबीस का इब्रानी नाम (नहे 3:8) *देखें*थीबीस।

अमोन नगरी

अमोन नगरी

नहूम 3:8 में थीबीस का रूप। *देखें*थीबीस।

अमोरियों का पर्वत

*देखें*अमोरियों का पहाड़ी देश (पर्वत)।

अम्नोन

1. दाऊद की पत्नी अहीनोअम से उनका सबसे बड़ा पुत्र। वह हेब्रोन में उत्पन्न हुआ था (2 शमू 3:2; 1 इति 3:1)। अम्नोन ने धोखे से अपनी सुन्दर सौतेली बहन तामार के साथ दुष्कर्म किया। तामार के भाई अबशालोम ने बदला लेने के लिए उसे मार डाला (2 शमू 13:1–33)।
2. यहूदा के गोत्र से शिमोन का पहला पुत्र (1 इति 4:20)।

अम्पलियास, अम्पलियातुस

प्रेरित पौलुस ने अपने पत्र के अंत में रोमियों को जिन मसीहियों को अभिवादन भेजा, उनमें से एक का नाम अम्पलियातुस था (16:8)। पौलुस ने अम्पलियातुस को "प्रभु में मेरे प्रिय" कहा है। इस मसीही के बारे में, जिनका नाम सामान्य रोमी नाम है, और कुछ ज्ञात नहीं है।

अम्फिपुलिस

प्राचीन यूनान का एक शहर। यह एक समय थ्रेसियन एडोनी गोत्र का घर था। अम्फिपुलिस एक उपजाऊ क्षेत्र में स्ट्राइमन नदी के पूर्वी तट पर एक रणनीतिक स्थान पर स्थित था। इसका नाम का अर्थ "शहर के चारों ओर" है। यह शायद उस नदी की ओर संकेत करता है जो तीन ओर से शहर को घेरती है। यह फिलिप्पी से लगभग 48.2 किलोमीटर या 30 मील की दूरी पर स्थित है। यह अंततः रोमी सड़क विया एग्नातीया पर एक महत्वपूर्ण जगह बन गया। अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर, पौलुस इस व्यावसायिक केन्द्र से होकर थिस्सलुनीके की ओर गए (प्रेरि 17:1)।

अम्बर

अम्बर

कुछ शंकुधारी पौधों से निकलने वाली जीवाश्मित राल। समय के साथ यह राल स्पष्ट पीले या नारंगी ठोस में बदल जाती है। इस शब्द का उपयोग केजेवी में प्रभु के दर्शन में देखे गए रंग का वर्णन करने के लिए किया गया है (यहे 8:2)। यह रंग पॉलिश किए हुए पीतल या काँसे के समान होता है (यहे 1:4, 27)। *देखें*रंग।

अम्माह

अम्माह

गिबोन क्षेत्र में यरूशलेम के उत्तर में स्थित एक पहाड़ी, यहाँ योआब के नेतृत्व में दाऊद की सेना और अब्नेर के नेतृत्व में इश्बोशेत की सेना के बीच एक युद्ध हुआ था। यह युद्ध शाऊल के समर्थकों और दाऊद के समर्थकों के बीच लम्बे संघर्ष की शुरुआत बना (2 शमू 2:24–32; 3:1)।

अम्मिदी

अम्मिदी

यह नाम उन नगरों की एक सूची में पाया जाता है जो यह दर्शाती है कि कौन-कौन से निर्वासित लोग बेबीलोन से जरूब्बाबेल के साथ लगभग 538 ई.पू. यरूशलेम लौटे थे (1 एस 5:20)। एज्रा 2:25–26 और नहेम्याह 7:29–30 की सूचियों में ऐसे स्थान से किसी समूह का उल्लेख नहीं है।

अम्मिनादीब

कुछ अंग्रेजी संस्करणों में एक शब्द श्रेष्ठगीत 6:12: "मुझे पता भी न था कि मेरी कल्पना ने मुझे अपने राजकुमार के रथ पर चढ़ा दिया।"

अमेरिकन स्टैंडर्ड संस्करण [मार्जिनल रीडिंग] और न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल [मार्जिनल रीडिंग] में "अम्मिनादीब" का उल्लेख "मेरे लोग" के स्थान पर किया गया है। जबकि हाल के अनुवादकों ने इस शब्द को एक उचित नाम नहीं माना है।

- अमेरिकन स्टैंडर्ड संस्करण "अम्मिनादीब" को "मेरे इच्छुक लोग" के रूप में अनुवादित करता है।
- द रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड संस्करण "अम्मिनादीब" को "मेरे राजकुमार के पास" से बदलता है।
- न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल "अम्मिनादीब" को "मेरे महान लोग" से बदल देती है।
- न्यू लिविंग ट्रांसलेशन "अम्मिनादीब" को "मेरे राजसी बिछौने में मेरे प्रिय के साथ" से बदलता है।

अम्मी

अम्मी इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ है "मेरे लोग।" पुराने नियम में, "परमेश्वर के लोग" वाक्यांश इस्राएल देश का वर्णन करने का सबसे सामान्य तरीका है। यह विचार परमेश्वर के मूसा से किए गए वादे से आता है जब इस्राएली मिस्र छोड़ने वाले थे: "मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लूँगा (*अम्मी*) और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा।" (निर्ग 6:7)।

इस्राएल को "मेरे लोग" कहा जाना यह दर्शाता था कि उनका परमेश्वर के साथ कितना व्यक्तिगत सम्बन्ध था। यह उन अन्यजातियों से अलग था जो कई देवताओं (मूर्तियों) की उपासना करते थे।

शब्द *अम्मी* परमेश्वर का उनके लिए प्रेम दर्शाता था। यह उनके पूर्वजों से किए गए वादों के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता को दर्शाता था (व्य.वि. 4:37; 7:8)। परमेश्वर ने इस्राएलियों को "मेरे लोग" कहकर विशेष अधिकार दिए, परन्तु परमेश्वर उनसे यह भी अपेक्षा करते थे कि वे विश्वासयोग्य रहें और उनकी आज्ञा का पालन करें। इस्राएली अक्सर ऐसा करने में असफल रहते थे। भविष्यद्वक्ता (जो परमेश्वर के संदेशों को बोलते थे) अक्सर लोगों को परमेश्वर के प्रति उनके कर्तव्य की याद दिलाते थे।

होशे की पुस्तक में अम्मी

ऐसी भविष्यवाणिय चेतावनी का उदाहरण होशे की लेखनी में मिलता है। भविष्यद्वक्ता होशे ने अपनी अविश्वासी पत्नी के साथ अपने विवाह को परमेश्वर के अपने लोगों के साथ सम्बन्ध के रूप में देखा। परमेश्वर ने अपने आपको उन लोगों के साथ जोड़ा था जिन्होंने परमेश्वर को अन्य देवताओं के लिए त्याग दिया था। होशे ने अपने बच्चों को जो नाम दिए, वह उनके अविश्वासी लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण को दर्शाते थे।

पहले बालक का नाम यिज्रेल रखा गया था (होशे 1:4)। यिज्रेल के दो अर्थ हैं:

- यह उस स्थान का नाम है जहाँ राजा अहाब ने नाबोत की हत्या की थी (1 रा 21:1–16)। यह इस्राएल के इतिहास में भयानक अनुभव को याद दिलाता है।
- इस नाम का अर्थ "परमेश्वर बोते हैं" भी है। यह अर्थ होशे की आशा को व्यक्त करता है कि इस्राएल के लोग, अपनी सभी असफलताओं के बावजूद, जल्द ही परमेश्वर के पास लौट आएंगे।

दूसरे बालक का नाम *लोरुहामा* रखा गया जिसका अर्थ है "दया नहीं की गई" (होशे 1:6)। उस नाम ने परमेश्वर की अवज्ञा के प्रति घृणा और पश्चात्ताप न करने वाले लोगों से दूर होने की इच्छा को व्यक्त किया।

होशे के तीसरे बालक का नाम *लोअम्मी* रखा गया, जिसका अर्थ है "मेरे लोग नहीं" या "मेरी प्रजा नहीं" (होशे 1:9)। वह नाम इस्राएल के लिए सबसे बड़े दुःख को प्रकट करता था: परमेश्वर के साथ उनकी वाचा का टूट जाना। परमेश्वर इस्राएल से कह रहे थे, "उसका नाम *लोअम्मी रखना*—'मेरे लोग नहीं'—क्योंकि इस्राएल मेरे लोग नहीं हैं और मैं उनका परमेश्वर नहीं हूँ" (होशे 1:9)।

हालाँकि सब कुछ निराशाजनक प्रतीत हो रहा था, होशे की भविष्यवाणी केवल विनाश के साथ समाप्त नहीं हुई, बल्कि उन्होंने देखा कि इस्राएल मन फिराएगा। इसके प्रत्युत्तर में, परमेश्वर अपनी वाचा को उनके साथ पुनःस्थापित करेंगे: "और जिनसे मैंने कहा था, ' तुम मेरे लोग नहीं हो,' उनसे मैं कहूंगा, 'अब तुम मेरे लोग हो।' तब वे उत्तर देंगे, 'तू हमारा परमेश्वर है!'" (होशे 2:23)।

अम्मीएल

1. गमल्ली का पुत्र। वह उन 12 व्यक्तियों में से एक थे जिन्हें मूसा द्वारा कनान की भूमि की जासूसी के लिए भेजा गया था। अम्मीएल ने दान के गोत्र का प्रतिनिधित्व किया (गिन 13:12)। बाद में एक महामारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई (गिन 14:37)।
2. लोदबार के माकीर के पिता। मपीबोशेत, जो योनातान का पुत्र था, माकीर के घर में दाऊद से छिपा हुआ था (2 शमू 9:4–5)। बाद में माकीर ने अबशालोम के साथ युद्ध में दाऊद की आपूर्ति में सहायता की (2 शमू 17:27–29)।
3. दाऊद की पत्नी बतशूआ या बतशेबा के पिता (1 इति 3:5)। अम्मीएल को एलीआम भी कहा जाता है (2 शमू 11:3)।
4. ओबेदेदोम का छठा पुत्र। वह अपने परिवार के साथ दाऊद के शासनकाल के दौरान मंदिर में द्वारपाल के रूप में सेवा करते थे (1 इति 26:5, 15).

अम्मीजाबाद

बनायाह का पुत्र। बनायाह और अम्मीजाबाद दोनों राजा दाऊद की सेना में उच्च पदस्थ अधिकारी थे (1 इति 27:5–6)।

अम्मीनादाब

मत्ती 1:4 और लूका 3:33 में उल्लेखित।

*देखें*अम्मीनादाब #1।

अम्मीनादाब

1. एलीशेबा का पिता, जो हारून की पत्नी थीं (निर्ग 6:23)। अम्मीनादाब, नहशोन का भी पिता था, जो जंगल में यहूदा के गोत्र का अगुवा था (गिन 1:7; 2:3; 7:12, 17; 10:14; 1 इति 2:10)। अम्मीनादाब, दाऊद के पूर्वजों की सूची में शामिल है (रूत 4:18–22)। बाद में, वह यीशु मसीह के पूर्वजों की सूची में भी शामिल किया गया (मत्ती 1:4; लूका 3:33)। *देखें*यीशु मसीह की वंशावली।
2. यिसहार के लिए वैकल्पिक नाम, जो कहात के पुत्रों में से एक है (1 इति 6:22)। *देखें* यिसहार #1।
3. राजा दाऊद के समकालीन लेवी, जिसने प्रभु के सन्दूक को यरूशलेम लाने में सहायता की (1 इति 15:1–4, 10–11)।

अम्मीशद्दै

अम्मीशद्दै

अहीएजेर के पिता। अहीएजेर दान के गोत्र के अगुवा थे जब इस्राएली मिस्र से निकलने के बाद सीनै के जंगल में भटक रहे थे (गिन 1:12; 2:25; 10:25)। अगुवा के रूप में उन्होंने तंबू के समर्पण पर अपने गोत्र की भेंट प्रस्तुत की (गिन 7:66, 71)।

अम्मीहूद

1. एप्रैम के गोत्र के एक अगुवा, एलीशामा के पिता (गिन 1:10)। अम्मीहूद, यहोशू के परदादा थे (1 इति 7:26)।
2. शिमोन गोत्री शमूएल के पिता। शमूएल ने प्रतिज्ञा की गई भूमि को विभाजित करने में मूसा की सहायता की (गिन 34:20)।
3. नप्ताली के गोत्र से पदहेल के पिता। पदहेल ने भी प्रतिज्ञा की गई भूमि को विभाजित करने में मूसा की सहायता की (गिन 34:28).
4. गशूर के राजा तल्मै का पिता। अम्नोन की हत्या के बाद भागने वाले अबशालोम को तल्मै ने शरण दी थी (2 शमू 13:37)।
5. ओम्री का पुत्र और यहूदा के गोत्र के ऊतै के पिता (1 इति 9:4)।

अम्मोन, अम्मोनियों

सेमेटिक (यहूदी) वंश के लोग जो मोआब के उत्तर-पूर्व के यरदन पार में एक उपजाऊ क्षेत्र में बसे थे, अर्नोन और यब्बोक नदियों के बीच और पूर्व की ओर सीरियाई रेगिस्तान तक फैले हुए थे। मुख्य शहर रब्बा (रब्बत-अम्मोन) था, जिसे आज अम्मान के नाम से जाना जाता है, जो जॉर्डन की राजधानी है।

अम्मोनियों का वंश लूत की छोटी बेटी से आता है (उत 19:38)। उसका नाम इब्रानी में मूल रूप से "मेरे पितृ कुल का पुत्र" का अर्थ था, जो एक वास्तविक कुल और व्यक्तिगत नाम की स्मृति को संरक्षित करता था और अम्मोनियों और इस्राएलियों के बीच एक संबंध का सुझाव देता था। यह नाम प्राचीन पश्चिमी एशिया में दूसरी सहस्राब्दी के मध्य से बार-बार प्रकट होता है। एक रूप असीरियन शिलालेखों में पाया गया था; अन्य रूप 15वीं शताब्दी ई.पू. के अगेरीटिक ग्रंथों में, मारी ग्रंथों में, अमरना पत्रों में और अललख पत्रों में देखे गए हैं।

अम्मोनियों का एक जातीय समूह था जो दूसरी सहस्राब्दी ई.पू. की शुरुआत में दक्षिणी यरदन पार क्षेत्र में उत्पन्न हुआ था। यद्यपि वे मिश्रित वंश के थे, उनकी भाषा इब्रानी से निकटता से संबंधित थी। अम्मोनियों की भाषा पुरानी कनानी-फोनीशियन लिपि में लिखी जाती थी, जिसे इस्राएली लोग संभवतः पढ़ और समझ सकते थे। अम्मोनी लोग अक्सर इब्री लोगों से विवाह करते थे (1 रा 14:21, 31; 2 इति 12:13) और उनके व्यक्तिगत नामों में प्रारंभिक अरबी प्रभाव दिखाई देते थे।

भाषा, जातीय पृष्ठभूमि और शारीरिक विशेषताओं के संदर्भ में, अम्मोनी लोगों को एमोरी लोगों से अलग करना कठिन था और वे संभवतः निकट संबंधी थे। दोनों समूह शायद लगभग उसी समय भूमि में प्रवेश कर चुके थे, क्योंकि जब यहोशू ने इस्राएलियों को कनान में प्रवेश कराया, तब तक अम्मोनी राज्य और हेशबोन का एमोरी राज्य पहले से ही अच्छी तरह स्थापित थे।

पुराना नियम बताता है कि अम्मोन का क्षेत्र कभी रपाईम या जमजुम्मी नामक दैत्यों की एक जाति द्वारा बसाया गया था, जिनके बारे में लगभग कुछ भी ज्ञात नहीं है (व्य.वि. 2:20–21; "जूजियों," उत 14:5)। मृत सागर कुण्डलपत्रों में पाए गए उत्पत्ति अपोक्रिफ़न नामक एक पाठ में भी रपाईम का उल्लेख है, जिन्हें चार राजाओं के गठबंधन द्वारा पराजित किया गया था (उत 14:1, 5)। एलाम के राजा कदोर्लाओमेर के दल (उत 14) ने उन दैत्यों की शक्ति को तोड़ दिया और संभवतः एसाव, अम्मोन और मोआब द्वारा भूमि के अधिग्रहण को बहुत आसान बना दिया। अम्मोनियों ने भूमि को अधिक आसानी से अधिग्रहित कर लिया जब एलाम के राजा कदोर्लाओमेर के दल द्वारा दैत्यों की शक्ति को तोड़ दिया गया। राजा ओग को, जो अम्मोनियों के लिए परिचित था (व्य.वि. 3:11), रपाईम का वंशज माना जाता था और उसकी खाट को उसके बड़े आकार के कारण पूजनीय माना जाता था।

जब इस्राएली कादेश पहुंचे, तो उन्होंने एदोम के सुव्यवस्थित राज्य का सामना किया, लेकिन उन्हें एदोमियों के क्षेत्र से गुजरने की अनुमति नहीं मिली (गिन 20:14–21)। वे उत्तर की ओर अम्मोनी देश की ओर बढ़े, जो उस समय एमोरी राजा सीहोन के कब्जे में था। उन्होंने भी उन्हें अपने देश से गुजरने की अनुमति नहीं दी, लेकिन इस्राएलियों ने उन्हें युद्ध में हरा दिया और उनके देश पर कब्जा कर लिया (गिन 21:21–24)। उन्हें मूसा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा निर्देशित किया गया था कि वे अम्मोनी क्षेत्र पर कब्जा करने की कोशिश न करें, क्योंकि वह पहले से ही लूत के वंशजों को दिया जा चुका था (व्य.वि. 2:19, 37)।

उत्तर की ओर बढ़ते हुए, इस्राएलियों ने बाशान के राजा ओग को पराजित किया (व्य.वि. 3:1–11), फिर वे यरदन घाटी में गए, जहाँ उन्होंने मोआब के मैदानों में डेरा डाला। वहाँ

मोआब के राजा बालाक ने एक ज्योतिषी, बिलाम को इस्राएलियों पर शाप देने के लिए नियुक्त किया, लेकिन बिलाम ने हर बार आशीर्वाद ही दिया (गिन 22–24)। मोआबियों के कार्यों में समर्थन देने के कारण, अम्मोनियों को प्रभु की मंडली से दसवीं पीढ़ी तक के लिए बाहर कर दिया गया (व्य.वि. 23:3; नहे 13:1–2)।

इस्राएली गोत्र गाद, रूबेन और मनश्शे के आधे गोत्र को एमोरियों और बाशान के अधीन उपजाऊ यरदन पार क्षेत्र ने आकर्षित किया और उन्होंने अम्मोनियों की सीमा पर वहाँ बसने का निर्णय लिया (गिन 32; व्य.वि. 3:16; यहो 13:8–32)। इसके बाद उन्होंने यरदन नदी पर एक वेदी बनाई, जिसे अन्य गोत्रों ने पहले विद्रोह के रूप में समझा क्योंकि ऐसा प्रतीत हुआ कि वे एक प्रतिद्वंद्वी पूजा स्थल स्थापित कर रहे थे (यहो 22:10–34)।

इस्राएलियों द्वारा कनान पर विजय प्राप्त करने से पहले, अम्मोनियों ने अपने पड़ोसी मोआबियों और एदोमियों के समान राजनीतिक संगठन और व्यवस्थित जीवन का स्तर प्राप्त नहीं किया था। यहाँ तक कि सातवीं शताब्दी ई.पू. तक भी यह जाति मूल रूप से घुमंतू थी। इस्राएल के कनान में बसने के तुरंत बाद, अम्मोनियों ने मोआबियों और अमालेकियों के साथ मिलकर गठबंधन किया जब मोआब के राजा एग्लोन ने मृत सागर के उत्तरी छोर पर पूर्व मोआबी क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया (न्या 3:12–13)

ई.पू. 12वीं शताब्दी के अंत तक इस्राएलियों ने, जो उस समय कनान देश में सुरक्षित रूप से स्थापित हो चुके थे, सीरियाई, सिदोनियों, मोआबियों, अम्मोनियों और पलिश्तियों के देवताओं की पूजा करके परमेश्वर को क्रोधित कर दिया (न्या 10:6)। अम्मोनियों ने अपने पहले अभिलिखित, राजनीतिक विस्तार में इस्राएल पर आक्रमण किया और गिलाद में खुद को स्थापित करने में सफल रहे (न्या 10:7–8)। फिर उन्होंने यरदन को पार किया और यहूदा, बिन्यामीन और एप्रेम के गोत्रों पर हमला किया (न्या 10:9)। निराशा में गिलाद के बुजुर्गों ने सहायता के लिए यिप्तह की ओर रुख किया, जो एक सामाजिक बहिष्कृत थे लेकिन एक सक्षम सैन्य नेता थे (न्या 11:1–11)। उन्होंने अम्मोनियों को इतनी निर्णायक रूप से पराजित किया कि उन्हें यरदन के पश्चिम में अम्मोनी बस्तियों के खिलाफ आगे के अभियान चलाने की आवश्यकता नहीं पड़ी (न्या 11:12–33)।

11वीं शताब्दी के अंत के करीब, नाहाश नामक एक अम्मोनी राजा सत्ता में आया, जो यरदन पार इस्राएली बस्तियों पर अम्मोनी प्रभुत्व को पुनः स्थापित करने के लिए दृढ़ था। उसने लगभग 1020 ई.पू. में एक आक्रमक सैन्य अभियान शुरू किया, जो उसे उत्तर में याबेश-गिलाद तक ले गया। नगर के निवासी उसके सामने आत्मसमर्पण करने के लिए तैयार थे, लेकिन उन्होंने हाल ही में अभिषिक्त इस्राएली राजा शाऊल से मदद की अपील करने के लिए अपने आत्मसमर्पण में देरी की। शाऊल ने जल्द ही एक सेना संगठित की और अम्मोनियों को निर्णायक रूप से पराजित किया (1 शमू 11:1–11)। इस विजय ने यरदन घाटी में अम्मोनी प्रभुत्व से कई सदियों तक स्वतंत्रता सुनिश्चित की, हालांकि बाद में अपने शासनकाल में शाऊल को इस्राएल के शत्रुओं, जिनमें अम्मोनी भी शामिल थे, के साथ और युद्ध लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा (1 शमू 14:47–48)।

जब दाऊद राजा बने, तो उन्होंने अम्मोनी, पलिश्ती और अमालेकी लोगों से चाँदी और सोना लिया, या तो लूट के रूप में या कर के रूप में (2 शमू 8:11–12; 1 इति 18:11)। इसके तुरंत बाद, दाऊद ने योआब को एक मजबूत सेना के साथ अम्मोनी देश को नष्ट करने और रब्बा की राजधानी शहर को घेरने के लिए भेजा (2 शमू 11:1; 1 इति 20:2)। घेराबंदी कई महीनों तक चली, लेकिन योआब ने शहर को कमजोर कर दिया और फिर दाऊद ने इसे पूरी तरह से जीत लिया (2 शमू 12:26–29)। आत्मसमर्पण के समारोह में अम्मोनी राजा का विशाल सुनहरा मुकुट दाऊद के सिर पर रखा गया (2 शमू 12:30; 1 इति 20:1)। जीते गए शहर को लूटा गया और उसके निवासियों को दास बना लिया गया। अन्य अम्मोनी शहरों को भी जीता गया और राष्ट्र को इस्राएल के बढ़ते हुए अधीनस्थ राज्यों की संख्या में जोड़ा गया (2 शमू 12:31; 1 इति 20:3)। दाऊद ने अम्मोनी लोगों पर अम्मोनी राज परिवार से एक राज्यपाल नियुक्त किया। शोबी, जो नाहाश का एक और पुत्र था (इसलिए हानून का भाई), अम्मोनी लोगों का शासक बना और दाऊद की अबशालोम के विद्रोह से भागने के दौरान सहायता की (2 शमू 17:27)। दाऊद के सबसे अच्छे योद्धाओं में से एक अम्मोनी था (2 शमू 23:37)।

अम्मोनी और इस्राएल के संबंध सुलैमान के शासनकाल के दौरान, जो दाऊद के उत्तराधिकारी थे, सामान्यतः शांतिपूर्ण रहे और अम्मोनी निस्संदेह उस काल की समृद्धि और धन में सहभागी रहे। सुलैमान की मृत्यु के बाद, राज्य रहूबियाम के अधीन विभाजित हो गया और मिस्र के राजा शिशक के अभियान द्वारा और कमजोर हो गया, जिसने फिलिस्तीन और अम्मोनी क्षेत्र में भी आक्रमण किया। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए, अम्मोनियों ने इस्राएल और यहूदा से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। अम्मोनी, मोआबी और म्यूनियों के साथ मिलकर यहूदा के राजा यहोशापात के खिलाफ युद्ध करने के लिए शामिल हो गए (871–848 ई.पू. शासनकाल)। भय में, यहोशापात ने प्रार्थना में परमेश्वर से सहायता मांगी (2 इति 20:1–12)। अम्मोनी और उनके सहयोगी आपस में लड़ने लगे और एक-दूसरे को नष्ट कर दिया, जिससे यहोशापात और उनके लोगों के लिए बहुत सा लूट का सामान छोड़ गए—जिसे ले जाने में तीन दिन लगे (2 इति 20:22–25)। अंततः अम्मोनी फिर से उभर आए, सातवीं शताब्दी ई.पू. के अंत तक, अम्मोन फिर से पूरी तरह स्वतंत्र हो गया और दक्षिण यरदन पार का प्रमुख राज्य बन गया। हालांकि, अम्मोनी स्वतंत्रता अल्पकालिक थी, क्योंकि 599 ई.पू. में,

बाबुल के इतिहास के अनुसार, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी सेना को सीरिया में भेजा और दक्षिणी फिलिस्तीन पर आक्रमण करना शुरू किया। 593 ई.पू. में, अम्मोनी यरूशलेम में यहूदा के राजा सिदकिय्याह और एदोम, मोआब, सोर और सिदोन के प्रतिनिधियों के साथ बाबुल के खिलाफ विद्रोह करने की साजिश में मिले (यिर्म 27:1–3)। भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने उन्हें चेतावनी दी कि परमेश्वर उनकी योजना को विफल कर देंगे (यिर्म 27:4–22)। नबूकदनेस्सर ने विद्रोह को कुचलने के लिए एक सेना भेजी और यरूशलेम पर हमला किया, जिसे उन्होंने एक लंबी और कठोर घेराबंदी के बाद नष्ट कर दिया (586 ई.पू.), और कई यहूदियों को बाबुल में निर्वासित कर दिया। हालांकि, अम्मोन पर तुरंत आक्रमण नहीं किया गया और कई यहूदी वहाँ शरण लेने के लिए गए (यिर्म 40:11), जिनमें एक व्यक्ति इश्माएल भी शामिल था (यिर्म 40:13–16)। इश्माएल ने अम्मोन के राजा बालीस के साथ मिलकर गदल्याह की हत्या की साजिश रची, जिन्हें नबूकदनेस्सर ने यहूदिया के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया था, जो अब बाबुल का एक प्रांत बन गया था। हत्या को अंजाम देने के बाद, इश्माएल अम्मोन भाग गया (यिर्म 41:1–15)। नबूकदनेस्सर ने फिर से सैनिक भेजे जिन्होंने रब्बा को लूट लिया और कई अम्मोनियों को बंदी बना लिया। हालांकि शहर नष्ट नहीं हुआ, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र का विनाश पूर्ण था। तीसरी शताब्दी ई.पू. में, अरब आक्रमणकारियों ने आकर शेष संगठित राजनीतिक संरचना को नष्ट कर दिया, इस प्रकार अम्मोन के एक अर्ध-स्वतंत्र राज्य के रूप में अंत को चिह्नित किया।

अम्मोनियों का रब्बाह

यब्बोक नदी के स्रोतों के पास स्थित, प्राचीन अम्मोनी राज्य की राजधानी। यह यरदन के लगभग 25 मील (40.2 किलोमीटर) पूर्व में स्थित थी और यरदन पूर्व पठार की लम्बाई और दक्षिण दमिश्क से आने वाले मुख्य कारवां मार्ग के बीच में स्थित था। इस सड़क को राजा का राजमार्ग भी कहा जाता था (गिन 20:17; 21:22)। आधुनिक यरदन की राजधानी, अम्मान में प्राचीन शहर शामिल है। तीसरी शताब्दी ई.पू. में, मिस्र के टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फस ने शहर का पुनर्निर्माण किया और इसका नाम फिलदिलफिया रखा। 63 ई.पू. में रोम के फिलिस्तीन पर कब्जा करने के बाद, यह शहर दिकापुलिस का हिस्सा बन गया, और 106 ईस्वी के बाद अरब के रोमी प्रांत का हिस्सा बन गया।

रब्बाह पवित्रशास्त्र में पहली बार उस स्थान के रूप में प्रकट होता है जहाँ बाशान के राजा ओग का विशाल लोहे का पलंग रखा गया था (व्य.वि. 3:11; "अम्मोनियों के रब्बाह")। जब यरदन पूर्व को गाद, रूबेन और मनश्शे के आधे गोत्र के बीच विभाजित किया गया, तो गाद का क्षेत्र रब्बाह के निकट तक फैला था, लेकिन इसमें शामिल नहीं था (यहो 13:25)।

रब्बाह ने पवित्रशास्त्र में दाऊद के शासनकाल के दौरान अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय योआब ने शहर की घेराबन्दी की, और युद्ध के दौरान, हित्ती ऊरिय्याह ने राजा के विशेष आदेश पर अपना जीवन खो दिया (2 शमू 11:1; 12:26–29)। शहर दो भागों में विभाजित था—ऊपरी शहर और निचला शहर, जिसे "जलवाला नगर" कहा जाता था (12:27)। योआब ने निचले शहर पर कब्जा कर लिया और सम्भवतः पानी की आपूर्ति पर नियन्त्रण प्राप्त किया, और फिर दाऊद के आने और विजय को पूरा करने की प्रतीक्षा की (पद 27–28)। रब्बाह पर पूरी विजय के बाद, दाऊद ने शहर में सैनिकों को नहीं रखा बल्कि इसे अम्मोनियों के नियन्त्रण में छोड़ दिया, जो इस्राएल के अधीनस्थ बन गए।

लगभग 250 साल बाद, आमोस ने उस समय के समृद्ध शहर पर न्याय की घोषणा की (आमो 1:13–14)। जब नबूकदनेस्सर ने यरदन पूर्व पर आक्रमण के दौरान रब्बाह में रुकावट डाली, तो यह एक महत्वपूर्ण स्थान था (यहेज 21:20)। यह रब्बाह में ही था कि बाद में बालीस, अम्मोनियों के राजा, ने उस हमले की योजना बनाई जिसके परिणामस्वरूप गदल्याह की मृत्यु हुई (यिर्म 40:14), जो यहूदिया का बाबेली राज्यपाल था, और यिर्मयाह की मिस्र में बँधुआई हुई। रब्बाह के खिलाफ यिर्मयाह की भविष्यवाणी यिर्म 49:2–3 में दर्ज है।

चूंकि आधुनिक अम्मान में प्राचीन रब्बाह शामिल है, इसलिए प्राचीन शहर की खुदाई सम्भव नहीं है। रोमी थिएटर शहर के केन्द्र में स्थित है, जिसमें 6,000 लोगों के बैठने की व्यवस्था है। एक ओडियम, या संगीत हॉल, और एक फव्वारा, जो रोमी काल के हैं, के जर्जर अवशेष पास में खड़े हैं। प्राचीन गढ़ पर दिखाई देने वाली हर चीज रोमी, बीजान्टिन, या अरबी है, सिवाय उत्तर-पूर्व कोने के, जहाँ यिरोन युग के शहर की दीवार का हिस्सा अभी भी उजागर है। गढ़ के दक्षिण-पश्चिम कोने में रोमी मन्दिर हर्क्यूलिस को समर्पित था।

यह भी देखें दिकापुलिस; फिलदिलफिया #1।

अम्रापेल

अम्रापेल

शिनार या बाबेल का राजा। जिसने एलाम के राजा कदोर्लाओमेर की मदद की, जो पलस्तीन के पांच शहरों के विद्रोह को रोकने में सहायक था (उत 14:1–11)।

अम्राम

1. कहात का पुत्र। वह लेवी के गोत्र का सदस्य था। अम्राम ने योकेबेद से विवाह किया और उनके तीन प्रसिद्ध बच्चे हुए: हारून, मूसा और मरियम (निर्ग 6:16–20; गिन 26:58–59)। इस्राएलियों की जंगल यात्रा के दौरान, अम्रामियों की एक विशेष ज़िम्मेदारी थी। वे वाचा के सन्दूक और मेज, दीपस्तंभ, वेदियाँ और तम्बू में उपयोग की जाने वाली अन्य वस्तुओं की देखभाल के प्रभारी थे (गिन 3:27, 31)। बाद में, अम्रामियों का एक समूह मंदिर के खजाने में रखी गई भेंटों का प्रभारी था (1 इति 26:23–24)।
2. बानी के परिवार का एक याजक। जिसने बाबेल की बंधुवाई के बाद अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक देने के लिए एज्रा की दृढ़ सलाह का पालन किया (एज्रा 10:34)।
3. आईआरवी इसका उपयोग हाम्रान के रूप में करता है ताकि 1 इतिहास 1:41 में दीशोन के पुत्र की पहचान की जा सके। हाम्रान स्वयं हेमदान का एक वैकल्पिक रूप है (तुलना करें उत 36:26)।
4. *देखें* हेमदान।

अम्रामियों

अम्रामियों

अम्राम का वंशज। वह कहात का पुत्र है (गिन 3:27; 1 इति 26:23)। *देखें* अम्राम #1।

अय्या

अय्या

1. सिबोन के पुत्र, जो सेईर से उत्पन्न हुए होरी के वंशज थे। अय्या, एसाव के पूर्वजों की सूची में सूचीबद्ध है (उत 36:24; 1 इति 1:35–40)।
2. शाऊल की रखेल रिस्पा का पिता (या संभवतः माता) (2 शमू 3:7; 21:8–11)।

अय्या

नहेम्याह 11:31 में कनानी नगर आई के लिए एक वैकल्पिक नाम है।

देखें आई।

अय्या

1 इतिहास 7:28 में उल्लेखित एप्रैम के गोत्र का एक नगर। अय्या गाज़ा का एक अन्य नाम है, लेकिन यह पलिश्ती गाज़ा से अलग है। कुछ विद्वानों का मानना है कि नहेम्याह 11:31 में सूचीबद्ध अय्या, अय्या या आई को सन्दर्भित करता है, जो सम्भवतः एक पड़ोसी नगर है। कई लोग यशायाह 10:28 में अय्यात की पहचान अय्या से करते हैं। यह आधुनिक खिरबेत हैयान है।

अय्यात

कनानी नगर आई के लिए एक वैकल्पिक नाम (यशा 10:28)।

देखिए आई।

अय्यालोन

1. यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम में 15 मील (24 किलोमीटर) की दूरी पर तराई में स्थित एक नगर।(आधुनिक यालो)।
यह मूल रूप से दान के गोत्र को दिया गया था (यहो 19:42)। अय्यालोन, दान के चार नगर में से एक जो लेवियों के लिए बनाया गया था (यहो 21:24)। बाद में, यह एप्रैम के गोत्र में शरण नगर बन गया (1 इति 6:69)। दान उत्तर की ओर चला गया और अपनी मूल भूमि को बनाए रखने में असमर्थ रहा, जिसमें अय्यालोन भी शामिल था (न्या 1:34–36)। अय्यालोन के पास, शाऊल और योनातान ने पलिश्तियों के खिलाफ एक युद्ध जीता (1 शमू 14:31)। बिन्यामीन के गोत्र के लोग भी एक समय वहां निवास करते थे (1 इति 8:13)।
सुलैमान की मृत्यु के बाद, इस्राएल दो राज्यों में विभाजित हो गया। राजा रहबाम ने अय्यालोन को मजबूत किया, क्योंकि यह दोनों राज्यों की सीमा पर था (2 इतिह 11:10)। मिस्र के फ़िरौन शीशक ने दावा किया कि उसने लगभग 924 ई. पू. में अय्यालोन पर विजय प्राप्त की (2 इति 12:2–12)। बहुत बाद में, पलिश्तियों ने आहाज के शासनकाल के दौरान अय्यालोन पर कब्जा कर लिया (2 इति 28:18)।
अय्यालोन की तराई उस युद्ध के लिए प्रसिद्ध है जहाँ यहोशू ने गिबोन पर नियंत्रण पाने के लिए युद्ध किया था (यहो 10:12)। इस युद्ध के दौरान, यहोशू ने परमेश्वर से प्रार्थना की: "हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह" (यहो 10:12)।
*यह भी देखें*शरण के नगर; लेवीय नगर।
2. जबूलून के क्षेत्र में एक नगर। न्यायी एलोन का कब्रिस्तान (न्यायियों 12:12)।

अय्यूब (व्यक्ति)

1. योब का के.जे.वी. अनुवाद, याशूब का एक वैकल्पिक रूप, इस्साकार के तीसरे पुत्र, उत्पत्ति 46:13 में। *देखें*याशूब #1।

2. अय्यूब की पुस्तक का केन्द्रीय पात्र। अय्यूब द्वारा सहा गया तीव्र कष्ट पुस्तक के मुख्य विषय के लिए ढांचा प्रदान करता है, जो परमेश्वर के सन्तान के जीवन में कष्ट की भूमिका से सम्बन्धित है।

नाम की व्युत्पत्ति जटिल है। कुछ लोगों ने इसे एक इब्रानी शब्द से व्युत्पन्न माना है जिसका अर्थ है "शत्रुता करना" और सुझाव दिया है कि यह अय्यूब की परमेश्वर की इच्छा के सामने झुकने से इनकार करने की दृढ़ता को दर्शाता है। हालांकि, यह नाम कई पश्चिमी यहूदी ग्रंथों में एक उचित नाम के रूप में आता है, और इसे केवल एक सामान्य नाम के रूप में समझना सबसे अच्छा लगता है। पश्चिमी यहूदी में नाम का अर्थ या तो "कोई पिता नहीं" या "मेरा पिता कहाँ है?"

पुस्तक के लेखकत्व और भौगोलिक उत्पत्ति के बारे में निश्चितता की कमी के कारण अय्यूब को इतिहास में स्थान देना कठिन हो जाता है। यहेजकेल 14:14, 20 में अय्यूब का नाम आने से यह सम्भावना प्रबल होती है कि वे प्राचीन काल के एक महान व्यक्ति थे।

*यह भी देखें*अय्यूब की पुस्तक।

अय्यूब की पुस्तक

पुराने नियम की पुस्तक, जो धर्मग्रंथों की श्रेणी में आती है, उसे लेखन कहा जाता है।

समीक्षा

- लेखक
- तिथि
- पृष्ठभूमि की जानकारी
- उद्देश्य और धर्मशास्त्रीय शिक्षाएँ
- विषय सूची

लेखक

अय्यूब की पुस्तक के लेखक का प्रश्न कठिन है। यह कठिनाई न केवल किसी व्यक्ति को लेखक का दर्जा न दिए जाने के कारण है बल्कि पुस्तक की संरचना के कारण और भी जटिल हो जाती है, जो कुछ विद्वानों के अनुसार, यह कई साहित्यिक कृतियों का मिश्रण है।

कुछ विद्वान जो सोचते हैं कि यह पुस्तक एक मिश्रित कार्य है, वे विभिन्न खंडों में मौजूद कथित असंगतियों पर अपने विचार आधारित करते हैं। उदाहरण के लिए, प्रस्तावना (अध्याय 1–2) और उपसंहार (42:7–17) को पुस्तक के मुख्य भाग से अलग माना जाता है क्योंकि वे अय्यूब को एक आदर्श नैतिक चरित्र वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। हालाँकि, संवाद कुछ हद तक अधिक मानवीय अय्यूब को चित्रित करते हैं,

जिसके परमेश्वर के बारे में कथन कई बार उग्र और चौंकाने वाले होते हैं।

यह सत्य है कि अय्यूब को प्रस्तावना में एक आदर्श नैतिक चरित्र वाले पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि जब वे अपनी पत्नी के द्वारा परमेश्वर को श्राप देने के सुझाव को अस्वीकार करते हैं, जैसा कि प्रस्तावना में दर्ज है (2:9–10), वे संवादों में भी परमेश्वर को श्राप नहीं देते। पुस्तक का मुख्य बिंदु यह प्रतीत होता है कि उच्चतम नैतिक चरित्र वाला व्यक्ति भी इस संसार में परमेश्वर के तरीकों के साथ संघर्ष करता है। अध्याय 1 और 2 में दर्ज़ संकटों की श्रृंखला के बाद, और आंतरिक संघर्ष की अवधि जो निस्संदेह सात दिन और सात रातों के दौरान घटित हुई थी, जब उसने बोलना शुरू किया (2:11–13), अय्यूब को वे गहरे आंतरिक प्रश्न मिले, जिनका इस पुस्तक में उल्लेख किया गया है। संवादों में अय्यूब का उच्च नैतिक चरित्र स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, क्योंकि पूरे संवाद में, भले ही वह परमेश्वर को समझ नहीं पाता, फिर भी वह उसके सामने सच बोलता है।

पुस्तक में जिन अन्य भागों को जोड़े जाने का आरोप लगाया गया है, वे हैं एलीहू के भाषण (32–37), परमेश्वर का प्रवचन (38–41), और अध्याय 28 में बुद्धि पर प्रवचन। कुछ विद्वानों का मानना है कि अंतिम संस्करण के लेखक ने अपनी रचना के लिए एक साहित्यिक संरचना प्रदान करने हेतु इन मौजूदा लेखनों को उधार लिया।

पुस्तक की मुख्य संरचना, जिसमें प्रस्तावना, संवाद और उपसंहार शामिल हैं, को जरूरी नहीं कि संपादन की जटिल प्रक्रिया का परिणाम माना जाए। उदाहरण के लिए, हम्मुराबी की संहिता की एक समान संरचना है, जैसे कि एक प्राचीन मिस्री कार्य *आत्महत्या पर विवाद* के रूप में है।

लेखनता की समस्या के संबंध में, यह स्वीकार करना सबसे उचित लगता है कि लेखक गुमनाम हैं। उनका धर्मशास्त्र निश्चित रूप से यहोवावादी है; इस प्रकार, वे संभवतः एक इब्री थे। उनकी साहित्यिक कौशल उल्लेखनीय थी, क्योंकि उन्होंने युगों के माध्यम से ज्ञात सबसे बेहतरीन कार्यों में से एक का निर्माण किया है।

तिथि

पुस्तक की लेखनता पर प्रश्न होने के कारण, इसकी तिथि भी प्रश्न में है। अधिकांश आधुनिक विद्वान इस पुस्तक को पश्चकाल, लगभग पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में मानते हैं। हालांकि, कुछ इसे बँधुआई के अंत की ओर मानते हैं। अन्य इसे सुलेमानी युग में रखते हैं, जबकि कुछ इसे कुलपतियों के युग का मानते हैं।

आंतरिक प्रमाण पुस्तक के लिए एक बहुत प्रारंभिक समय की ओर संकेत करते हैं। कोई लेवीय अनुष्ठान उद्धृत नहीं हैं। अय्यूब अपने परिवार के लिए बलिदान करते हैं जैसे कि याजक के काल में किया जाता था (1:5)। अय्यूब की संपत्ति, जो पशुधन के रूप में दी गई है, पितृसत्तात्मक वातावरण को दर्शाती है (पद 3)।

पुस्तक की भाषा भी एक प्रारंभिक तिथि की ओर संकेत कर सकती है। कुछ भाषाई तत्व इब्रानी भाषा के अधिक प्राचीन रूपों को इंगित करते हैं, जैसा कि उगारित के महाकाव्य लेख में संरक्षित है। यह संभव है कि अय्यूब स्वयं दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में रहते थे। यदि पुस्तक—या इसका कोई हिस्सा—तब लिखा गया था, तो यह बाइबल कैनन में स्थान पाने वाली पहली लिखित लेख का प्रतिनिधित्व कर सकती है। पुस्तक अपने अंतिम रूप में सुलेमान के युग में आई हो सकती है, जब इब्रानी बुद्धि साहित्य का बहुत उत्पादन हुआ था।

पृष्ठभूमि

अय्यूब की पुस्तक पुराने नियम की पुस्तक के समूह से संबंधित है जिसे बुद्धि की पुस्तक के रूप में जाना जाता है। यह पुस्तके मानव जीवन के बुनियादी मुद्दों से संबंधित है। इस्राएली लोग ही बुद्धि की पुस्तको का निर्माण करने वाले एकमात्र प्राचीन लोग नहीं थे। इस प्रकार की लेखनी अन्यजाति संस्कृतियों से भी उत्पन्न हुई, और अक्सर अन्यजाति धर्म की संरचना के भीतर मानव घटनाओं के क्रम को समझाने के प्रयासों का प्रतिनिधित्व करती है।

पुराने नियम की अय्यूब की पुस्तक के समान कई प्राचीन रचनाएँ प्राचीन संस्कृतियों से जानी जाती हैं। एक सुमेरियन पुस्तक मौजूद है जो साहित्यिक दायरे या भावना की गहराई में बाइबिल की पुस्तक से तुलना नहीं करती है। यह एक ऐसे युवक की दुर्दशा को दर्शाती है जिसका दुख उसके व्यक्तिगत देवता से लंबी विनती के परिणामस्वरूप खुशी में बदल गया। सुमेरियन विचारधारा के अनुसार, देवता बुराई के साथ-साथ अच्छाई के लिए भी जिम्मेदार थे। केवल किसी तरह की शांति ही उनके द्वारा की जाने वाली बुराई को रोक सकती थी। दुनिया में बुराई की मौजूदगी की समस्या पर दार्शनिकता या व्याख्या करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है।

एक बाबेली की पुस्तक, जिसे आमतौर पर *मैं बुद्धि के प्रभु की स्तुति करूंगा,* शीर्षक दिया गया है, दार्शनिक रूप से सुमेरियन *अय्यूब* के साथ समान है। इस काम में लेखक अपनी पीड़ा को जीवंत शब्दावली में वर्णित करता है। कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सकता। वह सोचता हैं कि क्या उसकी अन्यजाति धर्म की अनुष्ठानिक बाध्यताएँ वास्तव में एक देवता को मनभावनी लगेगी। देवता मर्दुक का एक दूत उसे एक सपने में दिखाई देता है और उसकी पीड़ा को दूर करता है। लेखनी का अंत मर्दुक की स्तुति के एक खंड के साथ होता है जिसमें यह पुष्टि होती है कि उसने देवताओं को जो भेंट दी, वे देवताओं के हृदय को प्रसन्न करने के लिए थीं।

एक और लेख, "मनुष्य की दुर्दशा के बारे में एक संवाद," भी बाइबिल की पुस्तक अय्यूब के समान है। यह इस तथ्य से जूझती है कि देवताओं की आराधना करने से किसी के जीवन

की गुणवत्ता में कोई फर्क नहीं पड़ता। इस काम में एक पात्र पीड़ित को याद दिलाता है कि देवताओं के तरीके समझना कठिन हैं, और मनुष्य स्वाभाविक रूप से विकृत है। पीड़ित देवताओं से विनती करता है, लेकिन संवाद उस बिंदु पर समाप्त हो जाता है, जिसमें समस्या का कोई समाधान नहीं होता है।

ये साहित्यिक रचनाएँ धार्मिक या दार्शनिक दृष्टि से पुराने नियम के अय्यूब की पुस्तक से तुलनीय नहीं हैं। वे जीवन पर केवल एक भाग्यवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और जीवन को देवताओं की मनमानी इच्छा द्वारा संचालित समझते हैं। हालाँकि, ये साहित्यिक रचनाएँ, जो दूसरी और पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के बीच की तारीखों के हैं, हमें साहित्यिक आधार प्रदान कर सकते हैं जहाँ से अय्यूब की पुस्तक का उदय हुआ। अर्थात्, अय्यूब की पुस्तक उस समय के इतिहास में विचार किए जा रहे गहरे प्रश्नों का प्रेरित उत्तर प्रस्तुत करती है। इस प्रकार का साहित्य अय्यूब की पुस्तक के लिए एक प्रारंभिक तिथि का तर्क प्रस्तुत करता है।

उद्देश्य और धर्मशास्त्रीय शिक्षाएं

अय्यूब की पुस्तक के मुख्य उद्देश्य का प्रश्न सदियों से बाइबिल के विद्वानों के बीच एक गंभीर प्रश्न रहा है। यह कहना कठिन है कि पुस्तक का उद्देश्य बुराई की समस्या का समाधान प्रस्तुत करना है, क्योंकि जिस बिंदु पर उत्तर की अपेक्षा की जाती है, वहीं पर परमेश्वर उत्तर देने के बजाय प्रश्न पूछते हैं।

कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि इसका मुख्य उद्देश्य इस प्रश्न का उत्तर देना है कि "धर्मी लोग क्यों कष्ट सहते हैं?" यह सच है कि पुस्तक में इस प्रश्न से बहुत कुछ जुड़ा हुआ है, लेकिन इसमें भी कई समस्याएँ हैं। जब कोई पुस्तक के अंत में आता है, तो उसके पास केवल सांत्वना देने वालों के शब्द और एलीहू के कथन होते हैं जो उस प्रश्न से बिलकुल भी संबंधित नहीं होते हैं। तब कोई आश्चर्य कर सकता है कि हमें अय्यूब के आंतरिक संघर्षों के अभिलेख के साथ लंबे संवाद क्यों दिए गए। जब परमेश्वर बवंडर से बोलता है, तो हमें यह समझाने की कोई चिंता नहीं होती कि धर्मी लोग क्यों कष्ट सहते हैं। अय्यूब को बस विश्व में अपना स्थान स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

पुस्तक के लिए दूसरा दृष्टिकोण अपनाना सबसे अच्छा लगता है। किसी भी साहित्यिक कार्य के केंद्रीय विषय को खोजने के प्रयास में, प्रस्तावना और उपसंहार को देखना चाहिए। प्रस्तावना में कोई यह देख सकता है कि लेखक क्या करना चाहता है, और उपसंहार में पाठक लेखक की समझ को पा सकता है कि लेखक ने वास्तव में क्या किया है।

अय्यूब की प्रस्तावना में, लेखक ने कुशलता से एक रहस्यपूर्ण वातावरण स्थापित किया हैं। हमें अय्यूब के उत्तम नैतिक चरित्र के बारे में बताया गया है। फिर शैतान ने ताना मारा, "परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।" (1:11)। हम सोचते हैं कि क्या अय्यूब परमेश्वर को श्राप देगा और इस प्रकार अपने विश्वास को अस्वीकार करेगा, लेकिन फिर हम उसके भरोसे की महान पुष्टि सुनते हैं: "यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।" (पद 21)।

फिर लेखक एक और रोमांचक स्थिति स्थापित करता हैं जब शैतान अय्यूब को पीड़ित करने का प्रस्ताव करता है। इस परीक्षा में अय्यूब की पत्नी के निराशाजनक शब्द जोड़े जाते हैं: "परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।" फिर हम आश्चर्य करते हैं कि क्या यह परीक्षा अय्यूब के विश्वास को नष्ट कर देगी। रहस्य तब टूटता है जब हम पढ़ते हैं कि "इन सब बातों में भी अय्यूब ने अपने मुँह से कोई पाप नहीं किया।" (2:10)।

फिर लेखक ने कहानी में अय्यूब के मित्रो का परिचय कराया। हमें बताया गया है कि वे सात दिनों तक मौन रहे। हम आश्चर्य करते हैं कि अय्यूब के मन में क्या चल रहा होगा। क्या वह अभी भी दृढ़ विश्वास का व्यक्ति है, या बीमारी के कारण उसका विश्वास खत्म हो रहा है? जब अय्यूब बोलता है और अपने जन्म के दिन को कोसता है, तो रहस्य गहरा हो जाता है। लेखक ने हमारे मन में एक सवाल उठाया है: क्या अय्यूब का विश्वास सुरक्षित रहेगा?

कई बार हमें लगता है कि ऐसा होगा। अय्यूब ने विश्वास के कई महान कथन बोले हैं। वह कहता है कि परमेश्वर उसे सही ठहराएगा। पुस्तक की सबसे बड़े कथनों में से एक 19:25–27 में है: "मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा।और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आँखों से अपने लिये करूँगा, और न कोई दूसरा। यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर-चूर भी हो जाए।" अन्य समयों में अय्यूब परमेश्वर के भूमंडल के व्यवस्थित नियंत्रण के बारे में गहरी शंकाएँ व्यक्त करता हैं। रहस्य जारी रहता है। संवादों के माध्यम से हम अय्यूब के संघर्ष के नमूना का पता लगाते हैं। यह एक भावनात्मक संघर्ष है जिसमें अय्यूब निराशा की गहराइयों और विजयी विश्वास की ऊँचाइयों से बोलते हैं।

उपसंहार में रहस्य का समाधान हो जाता है। अय्यूब की परीक्षाओं ने उसके विश्वास को नष्ट नहीं किया है और न ही उसे कमजोर किया है। वह विजयी होकर, विनम्र विश्वास के साथ उभरता है। वे अंततः परमेश्वर से कह सकते हैं, "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती। तूने मुझसे पूछा, 'तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है?' परन्तु मैंने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था।" (42:2–3)।

लेखक का उद्देश्य स्पष्ट है। शुरुआत में उसने प्रश्न उठाया है, "क्या अय्यूब का विश्वास परीक्षा के बावजूद बना रहेगा?" संवादों ने रहस्य को बढ़ा दिया है, और उपसंहार ने इसका हल निकला है। अय्यूब अपने कष्टों के बीच भी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा। हम सीखते हैं कि अय्यूब का विश्वास वास्तविक है।

इसलिए, अय्यूब की पुस्तक विश्वास और विश्वास में दुख की भूमिका पर एक पुस्तक है। अय्यूब की पुस्तक सिखाती है कि सच्चा धर्मी व्यक्ति परमेश्वर के न्याय में देरी के बावजूद परमेश्वर के प्रति वफादार रहेगा। हो सकता है कि वह इतिहास में परमेश्वर द्वारा किए गए सभी कार्यों को समझने में सक्षम न हो, लेकिन परमेश्वर की अच्छी योजना और बुद्धिमानीपूर्ण प्रावधान में उसका विश्वास सुरक्षित रहेगा। विश्वास का यह पहलू बाइबल में विश्वास के कुल विवरण का एक पहलू है। यह कर्मों की अनुमति नहीं देता है, लेकिन पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर है।

विश्वास और पीड़ा के बीच यही संबंध नए नियम में भी देखा जा सकता है। याकूब 1:12 में परीक्षाएं और विश्वासयोग्यता को एक साथ इस शब्द में पिरोया गया है। "धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है" (1 पत 1:3–7)। इन पदों के अनुसार, परीक्षाएँ विश्वास की परीक्षा प्रदान करती हैं और इस प्रकार यह प्रकट करती हैं कि किसी का विश्वास सच्चा है या झूठा। जो विश्वास सच्चा नहीं है वह दुख की परीक्षा में खड़ा नहीं होगा (मत्ती 13:20–21)। अय्यूब की पुस्तक विश्वास और परीक्षणों को जोड़ती है; यह एक सच्चे विश्वास की प्रकृति को चित्रित करती है, एक ऐसा विश्वास जो दुख से भी नहीं टूटता।

इस समृद्ध पुस्तक में अन्य सिद्धांत भी हैं। यह सिखाता है कि पाप दंड लाता है। सांत्वना देने वालों के शब्दों में सच्चाई है जिसकी पुष्टि शास्त्रों द्वारा की गई है। फिर भी यह जीवन में दुख की भूमिका का एक छोटा सा हिस्सा है। पुस्तक यह भी सिखाती है कि दुख का एक शिक्षाप्रद कार्य है, क्योंकि यह सर्वशक्तिमान की ओर से ताड़ना है। जिस भाग में परमेश्वर बवंडर से बोलते हैं, उसमें हम सीखते हैं कि दुख चीजों की संरचना का हिस्सा है और हमें सृष्टिकर्ता की बुद्धि के आगे झुकना चाहिए। इस भाग में परमेश्वर स्वयं को व्यक्तिगत रूप से प्रकट करते हैं। अय्यूब ने कहा, "मैंने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं" (42:5)। जब हम परीक्षाओं का अनुभव करते हैं, तो हमें ऐसे परमेश्वर की आवश्यकता होती है जो बुराई की समस्या पर दार्शनिक लेखनी से कहीं अधिक निकट हो। सच्ची धार्मिकता उत्पन्न करने में पीड़ा की भूमिका पर एक और जोर देखी जा सकती है। जबकि पुस्तक की शुरुआत में अय्यूब को एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया था, उसकी धार्मिकता में वह कमी थी जो पीड़ा उसे दे सकती थी। पुस्तक के अंत में, अय्यूब एक अधिक विनम्र व्यक्ति दिखाई देता है, जो विश्व में अपनी भूमिका देखता है और जिसने परमेश्वर की बुद्धि के आगे समर्पण कर दिया है।

विषय सूची

प्रस्तावना (1:1–2:13)

पुस्तक का यह भाग उन घटनाओं का वर्णन करता है जो अय्यूब की पीड़ा का कारण बनीं। उन्हें शुरुआत में एक ऐसे पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है जो धनवान हैं और अपने परिवार की देखभाल अच्छे से करते हैं।

स्वर्ग में एक नाटकीय दृश्य में शैतान प्रकट होता है और प्रभु उससे पूछते हैं, "क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है।" (1:8)। शैतान का जवाब है "परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुँह पर तेरी निन्दा करेगा।" (पद 11)। इसके बाद अय्यूब पर पहली बड़ी विपत्ति आती है, जिसमे उसके परिवार और उसकी संपत्ति का नुकसान होता है।

परमेश्वर और शैतान के बीच एक और मुलाकात अय्यूब को शारीरिक पीड़ा की ओर ले जाती है। यह वही घृणास्पद रोग है जो आगे के संवादों के लिए संदर्भ प्रदान करता है। इन सब में लेखक सावधानीपूर्वक हमें बताते हैं कि अय्यूब ने पाप नहीं किया। उन्होंने अपनी पत्नी की परमेश्वर को श्राप देने की बात का विरोध किया है। उन्होंने अपने बच्चों के मृत्यु के कारण परमेश्वर को त्यागने के और श्राप देने की बात का विरोध किया है। लेकिन अचानक गंभीर तस्वीर संवादों के साथ समाप्त हो जाती है जब हम अय्यूब की शिकायतें सुनते हैं। हम सोचते हैं, क्या अय्यूब ने परमेश्वर पर अपना विश्वास रखना छोड़ दिया है?

अय्यूब के तीन मित्र उसे सांत्वना देने के लिए उसके पास आते हैं। वे सात दिनों तक उसकी उपस्थिति में चुपचाप बैठे रहते हैं और बोलने में संकोच करते हैं। मौन की अवधि के बाद, वे अय्यूब के साथ संवाद शुरू करते हैं।

संवाद (3:1–31:40)

पहला चक्र (3:1–14:22)

अध्याय 3 में दर्ज़ अय्यूब की शिकायत, परमेश्वर की बुद्धि पर सवाल उठाती है कि उसे जन्म देने की इजाज़त क्यों दी गयी। वह सोचता है कि क्यों एक ऐसे व्यक्ति को जीवन दिया गया जिसका जीवन दुखों से भरा हुआ है।

एलीपज अय्यूब के मित्रों में सबसे पहले बोलता है। ऊपर से विनम्र व्यक्ति, लेकिन अंदर से वह कठोर है। उसका उत्तर है कि अय्यूब ने पाप किया होगा—अन्यथा वह इतना कष्ट क्यों सह रहा होगा (4:7–11)? एलीपज का स्पष्ट मानना है कि अय्यूब का प्रश्न परमेश्वर के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को

दर्शाता है। वह अय्यूब से प्रभु पर भरोसा रखने (4:8) और परमेश्वर के प्रति अपनी नाराज़गी त्यागने की विनती करता है, क्योंकि उसका क्रोध केवल विनाश की ओर ले जाएगा (5:2)। वह दुख में एक सकारात्मक तत्व देखता है, क्योंकि वह पुष्टि करता है कि यह सर्वशक्तिमान की ओर से ताड़ना है (पद 17)।

अय्यूब ने जवाब देते हुए कहा कि वह जिस भयानक पीड़ा को झेल रहा है, उसे देखते हुए उसका गुस्सा जायज़ है (6:1–7)। वह यह भी शिकायत करता है कि एलीफाज उसके प्रति दया न दिखाकर गलत है, उसकी तुलना मरूभूमि में एक ऐसी घाटी से करता है जो गर्म, शुष्क मौसम में पानी नहीं देती (पद 14–23)।

अगला सांत्वनादाता, बिलदाद, एलीपज से भी अधिक कठोर है। वह भी, अय्यूब पर पाप करने का आरोप दोहराता है। अय्यूब के बच्चों के संदर्भ में उसका निर्दयी रवैया स्पष्ट है, वह उनकी मृत्यु के लिए उनके जीवन में संभावित पाप को दोषी ठहराता है (8:4)।

एलीपज की तरह बिल्दद भी अय्यूब से परमेश्वर की ओर मुड़ने की याचना करता है (8:5), उसे भरोसा दिलाता है कि परमेश्वर निश्चित रूप से जवाब देगा (पद 6)। वह अय्यूब पर आए संकट को परमेश्वर से दूर जाने के परिणाम के रूप में चित्रित करता है (पद 11–19) लेकिन उसे भरोसा दिलाता है कि परमेश्वर एक निर्दोष व्यक्ति को अस्वीकार नहीं करेगा (पद 20)।

बिलदाद को अय्यूब का जवाब एक मार्मिक प्रश्न से शुरू होता है: "कोई व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में कैसे निर्दोष ठहराया जा सकता है?" (9:2)। इस प्रश्न के बाद एक वाक्पटु कथन आता है जिसमें अय्यूब विश्व में देखी गई परमेश्वर की शक्ति की विशालता को चित्रित करता है (पद 3–12)। अय्यूब शक्तिशाली परमेश्वर के सामने खड़ा है और उसकी शक्ति का सामना करने में पूरी तरह से असहाय है। वह विरोध करता है कि वह ऐसे परमेश्वर से मुकाबला नहीं कर सकता, न ही उसके सामने अपनी बेगुनाही का दावा कर सकता है, क्योंकि परमेश्वर विरोध करने के लिए बहुत शक्तिशाली है।

अय्यूब यह भी शिकायत करता है कि वह परमेश्वर से निष्पक्ष सुनवाई नहीं पा सकता क्योंकि परमेश्वर उसे दोषी मानता है। यह तथ्य कि परमेश्वर ने उसे उसके कष्टों से दण्डित किया है, यह साबित करता है कि वह उसे निर्दोष नहीं मानता (9:14–24)। अय्यूब अपना उत्तर जारी रखता है और फिर से उसे अस्तित्व में लाने में परमेश्वर की बुद्धि पर सवाल उठाता है (10:18–22)।

अगला बोलने वाला सोपर है। वह भी अय्यूब पर पाप का आरोप लगाता है (11:4–6)। अपमानजनक कथन में वह कहता है कि परमेश्वर "क्योंकि वह पाखण्डी मनुष्यों का भेद जानता है, और अनर्थ काम को बिना सोच विचार किए भी जान लेता है। निर्बुद्धि मनुष्य बुद्धिमान हो सकता है; यद्यपि मनुष्य जंगली गदहे के बच्चे के समान जन्म ले" (पद 11–12)।

सोपर के अपमानजनक आरोपों से अय्यूब का क्रोध भड़क उठता है (12:2–3), और वह परमेश्वर से अपना हाथ हटाने के लिए कहता है और परमेश्वर से बोलने की मांग करता है (13:20–28)।

दूसरा चक्र (15:1–21:34)

संवाद का दूसरा चक्र पहले की तरह ही जारी रहता है। एलीपज, बिलदद और सोपर अपने आरोप जारी रखते हैं, अय्यूब के दुर्भाग्य का कारण उसके जीवन में पाप को बताते हैं। लेकिन जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ती है, वक्ता अपने-अपने दावों में और अधिक उलझने लगते हैं, और वे अब एक-दूसरे के तर्कों का उतना सीधा जवाब नहीं देते जितना कि वे संवादों की पहली श्रृंखला में देते थे।

तीसरा चक्र (22:1–31:40)

तीसरे संवाद श्रृंखला में केवल एलीपज और बिलदद बोलते हैं। अय्यूब पर पाप के आरोप और भी तीखे और क्रूर हो जाते हैं। एलीपज कहता है, "क्या तेरी बुराई बहुत नहीं? तेरे अधर्म के कामों का कुछ अन्त नहीं।" (22:5)। यह तीसरा संवाद असामान्य है क्योंकि अय्यूब अन्य संवादों की तुलना में अधिक बोलता है। जबकि बिलदद का तर्क केवल छह पदों तक फैला हुआ है, अय्यूब का उत्तर छह अध्यायों (अध्याय 26–31) तक चलता है।

अध्याय 31 महत्वपूर्ण है। इसमें अय्यूब अपनी बेगुनाही का दावा करता है। यह एक ऐसा अध्याय है जिसमें अय्यूब की ईमानदारी पर संदेह नहीं किया जा सकता। वह पुष्टि करता है कि वह नैतिक रूप से शुद्ध रहा है (पद 1–4), वह धोखेबाज़ नहीं रहा है (पद 5–8), वह व्यभिचार का दोषी नहीं रहा है (पद 9–12), उसे दूसरों की चिंता है (पद 13–23), उसने धन पर भरोसा नहीं किया है (पद 24–28)। वह अपनी बेगुनाही की सामान्य पुष्टि के साथ समाप्त करता है (पद 29–40)।

एक नमूना विकसित होना शुरू होता है। चर्चा में अय्यूब धीरे-धीरे अपने दोस्तों से दूर होता जाता है। वे उसके दुर्भाग्य के कारण के रूप में पाप पर अधिक जोर देते हैं, और अय्यूब अधिक दृढ़ता से अपनी बेगुनाही का दावा करता है। पुस्तक के लेखक ने चतुराई से इस तरह से विवरण बुना है कि पाठक को दोस्तों के कथनों में कुछ भी अपरंपरागत नहीं मिल सकता है। फिर भी, जबकि हम उनके शब्दों से सहमत हो सकते हैं, हम उनके दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं कर सकते। यह सच है कि पाप दंड लाता है, लेकिन मित्र केवल उसी पर जोर देते हैं। अगला मित्र, एलीहू, दुख के एक और कार्य की ओर इशारा करेगा।

हम अय्यूब के निर्दोष होने के दावों में सच्चाई की झलक सुनते हैं। लेकिन अगर हम अय्यूब पर विश्वास करते हैं और सांत्वना देने वालों पर भी विश्वास करते हैं, तो हम भी अय्यूब जैसी ही

दुविधा में पड़ जाते हैं। हम नहीं जानते कि सच्चाई कहाँ है। हम नहीं जानते कि अय्यूब क्यों पीड़ित है।

एलीहू का भाषण (32:1–37:24)

एलीहू एक युवा व्यक्ति है जो बढ़ती हुई अधीरता के साथ अय्यूब और उसके साथी सांत्वनादाताओं की बात सुनता है (32:3)। वह अपनी युवावस्था के बारे में अत्यधिक संवेदनशील है (पद 6–22), लेकिन जब वह बोलता है, तो वह दुख की समझ को प्रकट करता है जो उसके साथियों की तुलना में अधिक परिपक्व है।

एलीहू इस तथ्य पर जोर देता है कि परमेश्वर कई तरीकों से बोलता है और दुख ताड़ना है (33:19), जो परमेश्वर की भलाई को प्रकट करता है (पद 29–33)। जबकि यह विचार एलीपज के पहले भाषण (5:17) में पाया गया था, इसे एलीहू द्वारा अधिक प्रमुखता दी गई है, जो दुख के एक ऐसे आयाम पर जोर देता है जो परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करता है। लेकिन फिर भी ऐसा लगता है कि पूरा उत्तर नहीं दिया गया है। परमेश्वर के वचनों में एक और आयाम आता है।

बवंडर से परमेश्वर की आवाज़ और अय्यूब की प्रतिक्रिया (38:1–42:6)

इस खंड में परमेश्वर बोलते हैं। वह अय्यूब से एक के बाद एक प्रश्न पूछता है, जो सृष्टि के किसी न किसी पहलू से संबंधित है। परमेश्वर पूछता है, "जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली, तब तू कहाँ था?" फिर, व्यंग्यात्मक लहजे में, वह जोड़ता है, "यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे।" (38:4)।

परमेश्वर समुद्रों का उल्लेख करता है और अय्यूब से पूछता है कि महासागरीय घाटियाँ किसने बनाईं (38:8–11)। वह उगते हुए भोर का चित्रण करता है और अय्यूब से पूछता है, "क्या तुमने कभी भोर को प्रकट होने की आज्ञा दी है और भोर को पूर्व दिशा में उगने दिया है?" (पद 12)। आगे के प्रश्न प्रकाश (पद 19–21), हिमपात (पद 22–24), वर्षा (पद 25–30), नक्षत्रों (पद 31–33), तूफानों (पद 34–38), और जानवरों (38:39–39:30) से संबंधित हैं। अय्यूब को सृष्टि में प्रकट परमेश्वर की शक्ति की विशालता का एहसास कराया जाता है। परमेश्वर की शक्ति पर विचार करते समय अय्यूब ने खुद को छोटा और महत्वहीन महसूस किया होगा।

लेकिन ये सवाल अय्यूब को छोटा महसूस कराने से कहीं ज़्यादा हासिल करने के लिए हैं। ये सवाल उसे उसके उपधारणा पर शर्मिंदा भी महसूस कराने के लिए हैं। इस भाग में व्यंग्य खास तौर पर चुभने वाला है, और कोई कल्पना कर सकता है कि हर सवाल के साथ अय्यूब राख के ढेर में और डूबता जा रहा है। प्रकाश की चर्चा वाले भाग में (38:19–21), प्रश्न "उजियाले के निवास का मार्ग कहाँ है, और अंधियारे का स्थान कहाँ है? क्या तू उसे उसकी सीमा तक हटा सकता है, और उसके घर की डगर पहचान सकता है?" और नक्षत्रों की चर्चा वाले भाग में परमेश्वर अय्यूब से पूछते हैं, "क्या तू कचपचिया का गुच्छा गूँथ सकता या मृगशिरा के बन्धन खोल सकता है?" (पद 31)।

अय्यूब ने संवादों में परमेश्वर से जो कहा, वह कुछ हद तक उग्रता दिखाई देता है। उसने मांग की है कि परमेश्वर उससे बात करे (13:22), और उसने परमेश्वर पर अन्याय का आरोप लगाया है (19:6–7; 24:1; 27:2)। अब, जब उसे सर्वशक्तिमान की सामर्थ की याद दिलाई जाती है, तो अय्यूब विश्व में अपने उचित स्थान को पहचानना शुरू कर देता है।

इस लंबे श्रृंखला में महत्वपूर्ण प्रश्न 40:15–41:34, में हैं। यहां, एक असामान्य क्रम में, परमेश्वर अय्यूब का ध्यान जलगज (40:15) और लिव्यातान (41:1) की ओर आकर्षित करते हैं। जबकि कुछ विद्वान इन्हें पौराणिक आकृतियों के रूप में देखते हैं, यह संभावना अधिक है कि ये, इस खंड में उद्धृत अन्य लोगों की तरह, सामान्य जानवरों के साहित्यिक चित्रण हैं जो अपने बड़े आकार और शक्ति के लिए जाने जाते हैं। कई विद्वानों का सुझाव है कि जलगज दरियाई घोड़ा है और लिव्यातान मगरमच्छ है। जिन संदर्भों में इन जानवरों का वर्णन किया गया है, वे इसे समर्थन करते प्रतीत होते हैं। इन दो शक्तिशाली जानवरों के संदर्भ उस खंड को समाप्त करते हैं जिसमें परमेश्वर की आवाज बवंडर से बोलती है। यह एक ऐसा खंड है जो रोमांच से भरा है। इसके अंत में, पाठक पाते हैं कि अय्यूब ने अपना सबक सीख लिया है (42:1–3)।

इन सवालों के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण है जो अय्यूब के पास इतने आग्रहपूर्ण बल के साथ आए। अय्यूब को यह देखने के लिए प्रेरित किया गया कि वह विश्व को नियंत्रित नहीं करता है - परमेश्वर नियंत्रित करता है। अय्यूब को परमेश्वर की शक्ति का सामना करने और यह जानने के लिए मजबूर किया गया कि वह इस विशाल संरचना का केवल एक हिस्सा है जो परमेश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति को दर्शाता है। यह माँग करके कि परमेश्वर उससे बात करे, अय्यूब परमेश्वर को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा था। यह संकेत देकर कि परमेश्वर अन्यायी है, वह परमेश्वर पर निर्णय दे रहा था, इस प्रकार खुद को परमेश्वर से श्रेष्ठ नहीं तो बराबर बना रहा था। परमेश्वर की माँग है कि अय्यूब विश्व में प्रदर्शित शक्ति का सामना करे और अपने चिड़चिड़े शब्दों को दोहराए। अय्यूब एक ऐसा परमेश्वर चाहता था जिसे वह नियंत्रित कर सके; परमेश्वर समर्पण की माँग करता है। अय्यूब एक ऐसी दुनिया चाहता था जिसे वह अपने तरीके से चलाए; परमेश्वर ने एक ऐसी दुनिया बनाई जो उसके तरीके से चले। अय्यूब ने एक भ्रामक परमेश्वर का निर्माण किया था, जिसे अपनी मर्जी का पालन करना चाहिए। इस दुनिया में परमेश्वर के संप्रभु नियंत्रण को पहचानकर, उसे यह देखने के लिए प्रेरित किया जाता है कि दुख का एक उद्देश्य है। अय्यूब उस उद्देश्य को नहीं पहचान सकता, लेकिन यह सर्वशक्तिमान की रचना का हिस्सा है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अय्यूब एक

स्थायी शांति में प्रवेश करना शुरू कर देता है और परमेश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करता है (42:5–6)।

प्रश्नों के इस भाग के बाद अय्यूब की ओर से एक मार्मिक प्रतिक्रिया आती है। वह परमेश्वर की शक्ति को स्वीकार करता है (42:2)। वह स्वीकार करता है कि वह उन चीज़ों को पूरी तरह से नहीं समझ पाया जो उसके लिए बहुत अद्भुत थीं (पद 3), और वह धूल और राख में पश्चाताप करता है (पद 6)।

उपसंहार (42:7–17)

पुस्तक का अंतिम भाग अय्यूब के सांत्वनादाताओं की निंदा से शुरू होता है। उनकी निंदा की जाती है क्योंकि उन्होंने सही बात नहीं कही (42:7)। यह सबसे असामान्य लगता है, क्योंकि उनके शब्द काफी रूढ़िवादी लगते हैं। फिर भी, अंतिम विश्लेषण में, उन्होंने वह नहीं कहा जो सही था क्योंकि दुख की समस्या के लिए उनका उत्तर केवल आंशिक उत्तर था, और क्योंकि यह आंशिक था, यह खतरनाक था। इसने परमेश्वर को एक कठोर प्राणी के रूप में चित्रित किया जो केवल पाप को दंडित करने के लिए दुख का उपयोग करता है। इसने दुख में परमेश्वर के प्रेमपूर्ण हाथ के लिए जगह नहीं दी, जैसा कि एलीहू के समस्या के उत्तर में था।

हालाँकि अय्यूब ने परमेश्वर के बारे में कुछ ऐसी बातें कही जो कठोर थीं, फिर भी उसे फटकार नहीं लगाई गई। वास्तव में, पाठ कहता है कि अय्यूब ने परमेश्वर के बारे में वही कहा जो सही था (42:8)। यह स्पष्ट रूप से 42:1–6 में अय्यूब के अंतिम शब्दों को संदर्भित करता है, जहाँ, पीड़ा से शुद्ध होकर, उसने विनम्रतापूर्वक खुद को परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा के अधीन कर दिया।

यह भी देखें अय्यूब (व्यक्ति) #2; बुद्धि; बुद्धि साहित्य

अरखिप्पुस

अरखिप्पुस

पौलुस का समकालीन। प्रेरित ने अरखिप्पुस को अपनी सेवकाई पूरी करने के लिए प्रोत्साहित किया (कुलुस्सियों 4:17)। पौलुस ने अरखिप्पुस को "हमारे साथी योद्धा" कहा (फिलेमोन 1:2)।

अरखिलाउस

हेरोदेस महान के पुत्र। अरखिलाउस अपने पिता के बाद इदूमिया, सामरिया और यहूदिया में राज्य कर रहे थे (मत्ती 2:22)। *देखें* हेरोदेस, हेरोदियों का परिवार।

अरतिमिस

चन्द्रमा, जंगली जानवरों, और शिकार की यूनानी देवी। इफिसुस में अरतिमिस का पन्थ, जहाँ उन्हें रोमी द्वारा डायना के रूप में जाना जाता है (प्रेरि 19:23–41), विशेष रूप से उन्हें एक उर्वरता देवी के रूप में मना जाता था।

यह भी देखें डायना।

अरनी

लूका की सूची के अनुसार यीशु के पूर्वजों में से एक (लूका 3:33)। अरनी को रूत 4:19 और 1 इतिहास 2:9–10 में राम भी कहा गया है।

अरब, अरब के लोग

दक्षिण-पश्चिम एशिया में एक प्रायद्वीप, जो तीन ओर से समुद्र से और चौथी ओर से उपजाऊ अर्धचंद्र से घिरा हुआ है। राजनीतिक रूप से, अरब प्रायद्वीप के उत्तर में आधुनिक हाशमाइट राज्य जॉर्डन और इराक हैं और दक्षिण में हिंद महासागर है। फारस की खाड़ी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है और लाल सागर इसकी पश्चिमी सीमा बनाता है। इसका क्षेत्रफल लगभग दस लाख वर्ग मील (1,609,000 वर्ग किलोमीटर) है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का लगभग एक-तिहाई है।

पारंपरिक भूगोलवेत्ताओं जैसे स्ट्रैबो ने भूगोलवेत्ता टॉलेमी द्वारा स्थापित उदाहरण का अनुसरण करते हुए अरब को तीन भागों में विभाजित किया: *अरबिया पेट्राया* (पथरीला अरब) उत्तर-पश्चिम में, जिसमें सीनै, एदोम, मोआब और ट्रांसजॉर्डन शामिल थे; *अरबिया डेज़र्टा,* जिसमें सीरियाई रेगिस्तान शामिल था; और *अरबिया फेलिक्स* (सुखद अरब), जिसमें अरब प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग शामिल था।

जब बाइबल में "अरब" को भौगोलिक शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो यह कभी-कभी उत्तरी और दक्षिणी, दोनों भागों को शामिल करता है। उदाहरण के लिए, 2 इतिहास 9:14 बताता है कि अरब के राजा सुलेमान को सोने की भेंट चढ़ाते थे। अन्य समय में अरब का नाम केवल उत्तर-पश्चिमी *अरबिया पेट्राया* को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, पौलुस ने कहा कि उनके परिवर्तन के बाद वे अरब के रेगिस्तानों में चले गए (गला1:17) और सीनै पहाड़ का उल्लेख किया (4:25), जो उस उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में है। बाइबल में अरब में स्थित कई स्थान विशेष रूप से *अरबिया पेट्राया* में हैं। ऐसे स्थानों में बूज, ददान, दूमाह, एफा, यिर्मयाह 49:28–33 का हासोर, मासा, मेशा और मिद्यान शामिल हैं। हाजरमावेत, ओफिर, सब्ताह, सेफार, शेबा और उजाल

दक्षिण में हैं। हविला और पारवाइम शायद उत्तर-पूर्व में हैं, और सेबा के स्थान पर विद्वानों में बहस होती है। अय्यूब की पुस्तक में उल्लेखित उज़ की भूमि को कई विद्वानों द्वारा एदोम और उत्तरी अरब के बीच के क्षेत्र में स्थित माना जाता है।

अरब को कई लोग सबसे गर्म देशों में से एक मानते हैं। कुछ क्षेत्रों में यह धारणा सही है। प्रायद्वीप पूर्व और पश्चिम में समुद्रों के बीच स्थित है, लेकिन ये जल निकाय अफ्रीकी-एशियाई महाद्वीपीय द्रव्यमानों की शुष्क जलवायु निरंतरता को तोड़ने के लिए बहुत छोटे हैं। हालांकि, कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जो समशीतोष्ण (Temperate) और उपोष्णकटिबंधीय (Semitropical) जलवायु का आनंद लेते हैं। दक्षिण में भूमि का अधिकांश भाग इतना ऊँचा है कि उष्णकटिबंधीय गर्मी की तीव्रता से बचा जा सके। तट के साथ निम्नभूमि में उपोष्णकटिबंधीय वातावरण है। आर्द्र क्षेत्रों में धुंध और ओस आम हैं, लेकिन आंतरिक अरब में सूर्य वर्ष भर चमकता रहता है, केवल कभी-कभी आने वाले रेत के तूफान या और भी दुर्लभ बारिश की बौछार से ही ढका रहता है।

प्राकृतिक संसाधनों के मामले में अरब लम्बे समय से वांछित रहा है। पहले राजवंश के फिरौन ने सीनै में फिरोज़ा की खदानों का संचालन किया और ओपीर का सोना और दक्षिण अरब का लोबान और गंधरस विश्व प्रसिद्ध थे। शेबा की रानी सुलैमान के लिए ऐसे कीमती सुगंध-द्रव्य लाई (1 रा 10:2, 10), और इस्राएल और अरब के बीच व्यापार फला-फूला। सुलैमान के पास ओपीर के साथ अपने समृद्ध व्यापार के लिए लाल सागर पर एस्योनगेबेर में एक बंदरगाह था (1 रा 9:26–28)। यहूदा के राजा यहोशापात, जिन्होंने अरबों से भी कर प्राप्त किया (2 इति 17:11), ओपीर के साथ व्यापार को पुनर्जीवित करने की कोशिश की लेकिन असफल रहे (1 रा 22:48)।

अरब से संबंधित जनजातियों ने बाइबल के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जो इस्माएली या मिद्यानी लोग यूसुफ को मिस्र ले गए थे (उत 37:25–36), वे अरब के थे। इसी प्रकार अमालेकी लोग थे जिन्होंने मूसा के साथ *अरबिया पेट्राया* के जंगल में युद्ध किया था (निर्ग 17:8–16)। मूसा के ससुर, यित्रो मिद्यानी थे (निर्ग 18:1)। यहूदा के राजा उज्जियाह ने अरबों के खिलाफ युद्ध किया था (2 इति 26:7); उसी पद में उल्लेखित मुनी भी संभवतः अरब से थे। गेशेम अरबी ने, जो अन्य शिलालेखों से भी ज्ञात है, यरूशलेम की दीवार के पुनर्निर्माण का विरोध किया था (नहे 2:19; 6:1, 6)।

केदार एक महत्वपूर्ण उत्तरी अरब जनजाति था जिसकी अरब के बारे में यशायाह के संदेश में निंदा की गई थी (यशा 21:13–17)। यिर्मयाह ने भी इसके खिलाफ बोला, भविष्यवाणी की कि नबूकदनेस्सर इसे नष्ट करेगा और उसने इसे बाद जीत लिया था (यिर्म 49:28–33)। केदार जनजाति के करीबी सहयोगी नबाति अरब थे (यशा 60:7), जो बाद के इतिहास में प्रमुखता से आते हैं। उन्होंने पेट्रा पर कब्जा किया, जो ओबद्याह की एदोम के बारे में भविष्यवाणी को पूरा करता है। अपोक्रिफा और नए नियम में अरब और अरबों के संदर्भ मुख्य रूप से नबाती अरबों से संबंधित हैं (1 मक्क 11:16; गला 1:17)।

दक्षिणी अरब में चार राज्य विकसित हुए: सबाई, माइनाई, कतबान और हद्रामौत। लगभग 115 ई.पू. में हिम्यराइट राज्य ने दक्षिणी अरब पर नियंत्रण प्राप्त किया, जिसे उन्होंने लगभग 300 ईस्वी तक बनाए रखा। तीन शताब्दियों बाद, अरब प्रायद्वीप ने इस्लाम का उदय देखा।

अरबत्ता

अरबत्ता

गलील के दक्षिण-पश्चिम कोने में एस्द्रेलोन तराई के दक्षिण में स्थित एक क्षेत्र। वहाँ के निवासियों को पतुलिमयिस, सोर (तीरुस) और सीदोन की गैर-यहूदी ताकतों से खतरा था (1 मक्का 5:15)। उन्होंने यहूदा मक्काबी को पत्र लिखकर सहायता की याचना की और यहूदा ने अपने भाई सिमोन को 3,000 पुरुषों के साथ भेजा। उन्होंने गलीलियों को बचाया और "सकुशल यहूदिया ले चला" (1 मक्का 5:23)।

अरबेला

एक प्रमुख युद्ध का स्थल है जब सेनापति बक्खीदेस ने सीरिया से यहूदिया पर आक्रमण किया था (1 मक्का 9:1–2)। इतिहासकार जोसीफस ने इसे गलील का एक शहर कहा और उल्लेख किया कि निचले गलील में अर्बेला की गुफाओं को अचानक हमला करने वाले लुटेरों के खिलाफ रक्षा के लिए मजबूत बनाया गया था। आज, हमें ठीक से नहीं पता कि अर्बेला कहाँ स्थित था। संभावित रूप से कुछ विद्वान इसे गिलाद के बेतर्बेल से जोड़ते हैं, जबकि अन्य इसे गलील की झील के पश्चिम में स्थित वादी एल-हमाम के ऊपर बसे खिरबेत इरबिद के रूप में पहचानते हैं।

अरमसोबा

अरमसोबा

दाऊद के समय में राजा हदादेजेर द्वारा शासित एक सीरियाई क्षेत्र। दाऊद ने उसे 2 शमूएल 8:3 में पराजित किया। इस नाम का उल्लेख भजन संहिता 60 के शीर्षक में मिलता है।

*देखें*सोबा।

अरम्नहरैम

अरम्नहरैम

एक इब्रानी शब्द जिसका अर्थ है "दो नदियों का अराम।" यह उस क्षेत्र को संदर्भित करता है जो ऊपरी फरात और हाबूर नदियों से घिरा हुआ है। इसे कभी-कभी "मेसोपोटामिया" के रूप में अनुवादित किया जाता है (व्य.वि. 23:4)।

उस क्षेत्र का प्रमुख शहर हारान था, जहाँ तेरह और अब्राम रुके थे। यह वही स्थान था जहाँ तेरह की मृत्यु हुई थी (उत 11:31–32)। अब्राम (बाद में अब्राहम कहलाए) का एक सेवक, अब्राहम के पुत्र इसहाक के लिए पत्नी खोजने के लिए उसी क्षेत्र में वापस गया (उत 24:1–10)। इसहाक का पुत्र याकूब भी पत्नी खोजने के लिए हारान लौटा (उत 28:1–5)। अरम्नहरैम का एक और नाम पद्दनराम है। अरम्नहरैम बालाम का घर था, जो एक मूर्तिपूजक भविष्यद्वक्ता था (व्य.वि. 23:4)।

न्यायियों के समय में इस्राएल के एक उत्पीड़क कूशन रिश्आतइम था, जो अरम्नहरैम का राजा था (न्या 3:8–11)। बाद में, राजा दाऊद के अमोन के साथ युद्धों में, उन्हें अरम्नहरैम, अरम्माका और सोबा के अरामी केंद्रों से किराए पर लिए गए भाड़े के रथियों का सामना करना पड़ा (1 इति 19:6; तुलना करें भजन 60 शीर्षक)। *देखें* सीरिया, सीरियाई।

अरम्माका

अरम्माका

1 इतिहास 19:6 में माका के लिए एक वैकल्पिक नाम। *देखें* माका, माका (स्थान)।

अरा

अरा

येतेर का पुत्र, जो आशेर के गोत्र में एक प्रमुख था (1 इति 7:38)।

अराजकता, का जल

प्राचीन विचार में, आदिम समुद्र जो विभाजित थे। तब संसार "ऊपर के जल" और "नीचे के जल" या "गहरे जल" के बीच स्थित था (उत 1:1–2, 6–7)।

अराटस

यूनानी कवि (315?–245? ईसा पूर्व)। अराटस का जन्म सिलिसिया के सोली में हुआ था (एशिया प्रायद्वीप का क्षेत्र)। उन्होंने एथेंस में अध्ययन किया जहाँ वे स्टोइकवाद के संस्थापक ज़ेनो से प्रभावित हुए। स्टोइकवाद एक दर्शन है जो लोगों को शान्त रहने और अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए सिखाता है, इस पर ध्यान केन्द्रित करके कि वे क्या नियंत्रित कर सकते हैं और जो वे नियंत्रित नहीं कर सकते उसे स्वीकार कर सकते हैं। बाद में, अराटस मकिदुनी के एंटिगोनस गोनाटस और अराम के राजा एंटिओकस प्रथम के महल में रहते थे। अराटस का एकमात्र मौजूदा कार्य खगोल विज्ञान पर एक कविता है, "फेनोमेना," जो ज्यूस को समर्पित है। प्रेरित पौलुस ने एथेंस में एरियोपैगस पर अपने भाषण में उस कविता से उद्धृत किया: “हम तो उसी के वंश भी हैं” (प्रेरि 17:28)।

अराद (व्यक्ति)

बेरिया के पुत्रों में से एक। वह बिन्यामीन के गोत्र का है। उसका नाम 1 इतिहास 8:15 में आता है।

अराद (स्थान)

कनान पर इस्राएलियों की विजय के समय नेगेव मरूभूमि में एक कनानी बस्ती या क्षेत्र का नाम था।

अराद के राजा ने इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध किया, लेकिन इस्राएलियों ने उन्हें हरा दिया (गिन 21:1–3; 33:40)। अपनी जीत के बाद, उन्होंने उस स्थान का नाम "होर्मा" रखा, जिसका इब्री में अर्थ "विनाश" है। बाद में, यहोशू और उनकी सेना ने अराद को जीत लिया (यहो 12:14)।

प्राचीन अराद कहाँ स्थित था?

कई वर्षों तक, पुरातत्वविदों का मानना था कि बाइबल में उल्लेखित अराद वही स्थान है जिसे हम अब तेल अराद के नाम से जानते हैं। (तेल एक प्राचीन टीला होता है जहाँ कभी लोग निवास करते थे।) हालांकि, जब शोधकर्ताओं ने तेल अराद के अवशेषों की खुदाई करके इसका अध्ययन किया, तो उन्हें कुछ चौंकाने वाली जानकारी मिली। जब इस्राएली पहली बार इस भूमि में आए थे, तब वहाँ कोई नहीं बसा हुआ था। कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि गिनती और यहोशू में उल्लेखित अराद एक क्षेत्र था और कोई विशिष्ट स्थान नहीं था।

कुछ लोग कहते हैं कि दो अराद थे। एक अराद कनानी शहर है, जो संभवतः तेल मलहाता में स्थित था, जो तेल अराद से लगभग 12 किलोमीटर (7.5 मील) दक्षिण-पश्चिम में है। दूसरा अराद इस्राएली शहर है, जो आधुनिक तेल अराद में

स्थित है। इस दूसरे सुझाव का समर्थन शीशक के एक शिलालेख द्वारा किया जाता है, जो एक मिस्री फ़िरौन थे और जिन्होंने लगभग 940 से 915 ई.पू. तक शासन किया। यह संकेत करता है कि पहले सहस्राब्दी ई.पू. के दौरान अराद नामक दो शहर मौजूद थे।

प्राचीन इस्राएल में तेल अराद की क्या भूमिका थी?

आधुनिक तेल अराद का एकमात्र संभावित उल्लेख न्यायियों 1:16 में है। इस पद में, अराद का उपयोग केनियों द्वारा बसाई गई भूमि के संदर्भ बिंदु के रूप में किया गया है। तेल अराद प्रारंभिक कांस्य युग के दौरान एक बड़ा महत्वपूर्ण शहर था। लगभग 2600 ई.पू. के आसपास नष्ट होने के बाद, इसे 1000 ई.पू. से कुछ समय पहले तक फिर से बसाया नहीं गया था। तेल अराद ने राजा सुलैमान (970 से 930 ई.पू.) के समय से यहूदा की दक्षिणी सीमा पर एक मजबूत गढ़ के रूप में कार्य किया, जब तक कि यहूदी बंधुआई में नहीं ले जाए गए।

शोधकर्ताओं ने तेल अराद में क्या खोजा?

शोधकर्ताओं ने तेल अराद का अध्ययन करते समय कई दिलचस्प बातें खोजीं। उनकी सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक आराधना का एक विशेष स्थान था जिसे इस्राएलियों ने वहाँ बनाया था। यह इमारत दो अन्य महत्वपूर्ण आराधना स्थलों के बहुत समान थी:

- तम्बू (वह पवित्र तम्बू जिसे इस्राएली मरुभूमि में अपने साथ ले गए थे)
- मंदिर (यरूशलेम में बाद में निर्मित आराधना का प्रमुख स्थान)

इमारत में एक वेदी (परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए विशेष मेज) थी, जो निर्गमन 27:1 में वर्णित वेदी के समान आकार की थी। कुछ विद्वानों का मानना है कि इस आराधना स्थल का उपयोग केनियों के एक दल द्वारा किया गया हो सकता है।

शोधकर्ताओं को लिखावट वाले टूटे हुए मिट्टी के बर्तन के टुकड़े भी मिले। (विद्वान इन टुकड़ों को "ओस्ट्राका" कहते हैं।) इनमें से एक टुकड़े पर "यहोवा का घर" (परमेश्वर का एक और नाम) उल्लेखित है। यह यरूशलेम के मंदिर के बारे में बात कर सकता है।

अरादस

फीनीकी नगर अर्वाद का यूनानी नाम है। अरादस उन शहरों में से एक था जिन्हें रोमी कौंसल (शासकीय अधिकारी) लूसियस द्वारा यहूदियों के लिए लिखा गया "सिफारिश पत्र" प्राप्त हुआ था। (1 मक्का 15:16–23)।

यह भी देखें अर्वाद, अरवादी।

अरान

दीशान का पुत्र, सेईर होरी का पोता, और एसाव का वंशज (उत 36:28; 1 इति1:42)।

अराब

अराब

हेब्रोन के दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ी क्षेत्र का एक नगर। कनान पर, जिसे प्रतिज्ञा किया हुआ देश भी कहा जाता है, विजय प्राप्त करने के बाद यह नगर यहूदा के गोत्र को दिया गया था (यहो 15:52)।

अराबा

पूर्वी और पश्चिमी फिलिस्तीन को विभाजित करने वाली महान घाटी। अराबा गलील सागर से दक्षिण की ओर यरदन नदी घाटी के माध्यम से मृत सागर और अकाबा की खाड़ी तक फैली हुई है।सामान्यतः रिफ्ट वैली के नाम से जानी जाने वाली अराबा लगभग 6 मील (10 किलोमीटर) चौड़ी और 200 मील (322 किलोमीटर) लंबी है। अराबा में स्थित मृत सागर पृथ्वी की आंतरिक सतह का सबसे निचला बिंदु है, जो समुद्र तल से 1,275 फीट (388.5 मीटर) नीचे है।

सामान्यतः इब्रानी शब्द 'अरबा' का अर्थ एक बंजर भूमि या उजाड़ क्षेत्र होता है। मृत सागर के उत्तर से गलील सागर तक की घाटी को अरब लोग 'घोर' (अर्थात् "अवसाद") कहते हैं और मृत सागर के दक्षिण में इसे 'अराबा' कहा जाता है।

पुराने नियम में अराबा नाम का कभी-कभी पूरी घाटी की लंबाई के लिए उपयोग किया जाता है, हालांकि कभी-कभी दक्षिणी भाग का संकेत दिया जाता है (व्य.वि.1:1; 2:8), और कहीं पूर्वोत्तर भाग का संकेत मिलता है (व्य.वि. 3:17; 4:49; यहो 11:2)। यह यरदन नदी के पूर्वी भाग का संकेत कर सकता है (व्य.वि. 4:49) या नदी के पश्चिमी भाग का (यहो 11:16) या यरदन नदी की घाटी का (2 शमू 4:7)। इब्रानी पुराने नियम में, अराबा का बहुवचन *(*अरबोत*)* 17 बार मिलता है, और इसका अर्थ है "मैदान"—जो यरीहो या मोआब के निकट अराबा के भाग का संकेत करता है। मृत सागर को कभी-कभी अराबा का ताल या मैदान का सागर कहा जाता है (2 रा 14:25)। अधिकांश भाग के लिए मृत सागर के उत्तर में अरब का खंड था और आज भी, उपजाऊ और उत्पादक है।

यहोशू ने यरीहो को जीतने के लिए अभियान का नेतृत्व अराबा से किया था। अब्नेर गिबोन में पराजित होने के बाद उत्तरी अराबा की ओर भागा (2 शमू 2:29)। ईशबोशेत के हत्यारे

इस क्षेत्र को पार करके उसका सिर दाऊद के पास हेब्रोन ले गए (2 शमू 4:7) और जब सिदकिय्याह बाबेलियों द्वारा पकड़ा गया था, तब वह इस क्षेत्र की ओर भाग रहा था (2 रा 25:4; यिर्म 39:4)।

दक्षिणी अराबा इस्राएल के भटकने का स्थान था, इससे पहले कि वे प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करते। सुदूर उत्तर में, अराबा मूसा के अंतिम कार्यों का स्थल था (गिन 32–36), जहाँ उनका देहांत हुआ और उन्हें अराबा में दफनाया गया (व्य.वि. 1:1), मृत सागर के पूर्व में मोआब के मैदानों में (व्य.वि. 34:1–6)।

मृत सागर के दक्षिण में लोहे और तांबे के भंडार थे और व्यवस्थाविवरण 8:9 इस सामान्य क्षेत्र का संकेत कर सकता है जब यह "वहाँ के पत्थर लोहे के हैं और वहाँ के पहाड़ों में से तू तांबा खोदकर निकाल सकेगा" की बात करता है। यहाँ की भूमि आमतौर पर बंजर है, हालांकि प्राचीन काल में सिंचाई के सावधानीपूर्वक उपयोग से कृषि को सीमित मात्रा में संभव बनाया गया था। इस क्षेत्र से कई महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग गुज़रे हैं। मृत सागर के आसपास का अराबा, सदोम और अमोरा के विनाश से पहले, एक विशेष रूप से उपजाऊ क्षेत्र था, "यहोवा की वाटिका के समान" (उत 13:10)।

इस क्षेत्र का कायाकल्प भविष्यवाणी के वादों में से एक है। यहेजकेल एक महान नदी के बारे में बताते है जो मंदिर से निकलकर अराबा की ओर जाएगी, समुद्र के जल को ताज़ा बनाएगी और मछलियों और अन्य जीवित प्राणियों के लिए एक स्वस्थ वातावरण बनाएगी (यहेज 47:1–12; योए 3:18; जक 14:8)।

देखें फ़िलिस्तीन।

अराबा का ताल

मृत सागर का एक वैकल्पिक नाम है। इस जलराशि को "अराबा का ताल" कहते हैं क्योंकि यह इस्राएल की भूमि के अराबा क्षेत्र के भीतर स्थित है (व्य.वि. 3:17; 4:49; यहो 3:16; 12:3; 2 रा 14:25)।

देखें मृत सागर।

अराबा का ताल

मृत सागर का वैकल्पिक नाम (व्य.वि. 3:17; 2 रा 14:25)।

देखें मृत सागर।

अराबा की नदी

अज्ञात नदी सम्भवतः अराबा में बह रही है (आमो 6:14)। अराबा एक जंगल की दरार का हिस्सा है जो गलील की झील से पूर्व अफ्रीका तक फैला हुआ है। एक नाला (नदी का तल) जिसका नाम अराबा है, वह खारा (मृत) सागर के दक्षिण में है, लेकिन बाइबल में अराबा ("मरुभूमि" या "जंगल") का उल्लेख यरदन की तराई के कुछ हिस्सों (व्य.वि. 4:48–49; यहो 8:14; 2 रा 25:4) और खारा ताल (व्य.वि. 3:17) के लिए किया गया है। वादी अराबा में कई सोते और कभी-कभी वर्षा से पोषित धाराएँ खारा ताल में प्रवाहित होती हैं।

यह भी देखें अराबा।

अराबावासी

अराबावासी

बेतराबा नगर का निवासी। बेतराबा अबीअल्बोन (अबीएल) का गृहनगर था, जो दाऊद के तीस "पराक्रमी पुरुषों" में से एक था (2 शमू 23:31; 1 इति 11:32)।

अराबी

अराबी

यह पारै को दिया गया एक शीर्षक था, जो दाऊद के 30 "पराक्रमी पुरुषों" में से एक योद्धा था (2 शमू 23:35)। यह शीर्षक संकेत देता है कि वह अराब का निवासी था, जो दक्षिणी यहूदा में एक गांव है (यहो 15:52)।

अराम (व्यक्ति)

1. शेम का पुत्र और नूह का पोता (उत 10:22–23; 1 इति 1:17)। अरामियों का पूर्वज। *देखें* सीरिया, सीरियाई।
2. कमूएल का पुत्र, अब्राहम के भाई नाहोर का पोता (उत 22:21)।
3. आशेर के गोत्र से शेमेर का पुत्र (1 इति 7:34)।

4. यीशु मसीह के पूर्वजों की सूची में प्रयुक्त एराम (मत्ती 1:3–4) यूनानी शब्द *अराम* का गलत अनुवाद है, जिसका अर्थ "राम" होता है। यह एक पूरी तरह से अलग नाम है (रुत 4:19)। *देखें* राम (व्यक्ति) #1।

अराम (स्थान)

उस क्षेत्र का नाम जिसे वर्तमान में सीरिया कहा जाता है। *देखें* सीरिया, सीरियाई।

अराम-गशूर

हेर्मोन पर्वत और बाशान के बीच स्थित एक छोटा राज्य है। बाशान गलील की झील के पूर्व और उत्तर-पूर्व का क्षेत्र है। यह अर्गोब क्षेत्र की सीमा से लगा हुआ है, जो गलील की झील के पूर्व में स्थित है। *देखें* गशूर, गशूरी।

अरामी

बाइबल की तीन मूल भाषाओं में से एक। अरामी भाषा दानिय्येल (2:4b–7:28) और एज्रा (4:8–6:18; 7:12–26) के कुछ हिस्सों में पाई जाती है। अरामी वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ उत्पत्ति (31:47), यिर्मयाह (10:11), और नए नियम में भी दिखाई देते हैं।

पुराने नियम का उपयोग

अरामी संरचना में इब्रानी के समान है और उसी लिपि में लिखी जाती है। इब्रानी के विपरीत, अरामी में अधिक शब्दावली है जिसमें कई शब्द गृहीत लिए गए और अधिक विविध प्रकार के संयोजक शब्द हैं। इसमें कई और काल भी होते हैं, जो सर्वनामों या क्रिया "होना" के विभिन्न रूपों के साथ वर्तमान कर्ता का उपयोग करते हैं। यद्यपि अरामी सुखद ध्वनि रूप से इब्रानी की तुलना में कम मधुर और काव्यात्मक है, लेकिन यह अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए संभवतः बेहतर है।

अरामी किसी भी वर्तमान भाषा का सबसे लम्बा इतिहास हो सकता है। इसे बाइबल के पितृसत्तात्मक काल (अब्राहम, इसहाक, और याकूब के जीवन के दौरान) के दौरान बोला जाता था और आज भी उपयोग में है। अरामी और सम्बन्धित भाषा, आरामाई भाषा, ने विभिन्न समयों और स्थानों में कई बोलियों (किसी क्षेत्र या सामाजिक समूह के लिए विशिष्ट शब्द और अभिव्यक्तियाँ) में विकास किया। यह सरल, स्पष्ट, और सटीक है। यह आसानी से दैनिक आवश्यकताओं के अनुकूल हो गया। यह विद्वानों, विद्यार्थियों, वकीलों, और व्यापारियों के लिए समान रूप से उपयोगी था। कुछ ने इसे अंग्रेजी के यहूदी समकक्ष के रूप में वर्णित किया है।

अरामी का आरम्भ अज्ञात है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह एमोरी और शायद उत्तर-पश्चिमी यहूदी की अन्य खोई हुई बोलियों के निकटता से सम्बन्धित थी (एक भाषा परिवार जिसमें इब्रानी, उगारिटिक, और कनानी शामिल हैं)। परन्तु अरामी राज्य कभी अस्तित्व में नहीं आया, कुछ अरामी "राज्य" प्रभावशाली रहे। दसवीं से आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के कुछ छोटे अरामी लेखन पाए गए हैं और उनका अध्ययन किया गया है।

आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में, राजा हिजकिय्याह के प्रतिनिधियों ने अश्शूर के राजा सन्हेरीब के प्रवक्ताओं से कहा, "कृपया अपने दासों से अरामी में बात करें, क्योंकि हम इसे समझते हैं। दीवार पर लोगों की सुनवाई में हमसे इब्रानी में बात न करें" (2 रा 18:26)। फारसी काल तक, अरामी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की भाषा बन गई थी। यहूदी लोग संभवतः बँधुआई में सुविधा के लिए इसका उपयोग करने लगे (कम से कम व्यापार में) जबकि इब्रानी का उपयोग मुख्य रूप से शिक्षित विशिष्ट वर्ग और धार्मिक अगुओं द्वारा किया जाने लगा।

धीरे-धीरे, बाबेल में बँधुआई के बाद, अरामी भाषा पलिश्तियों की भूमि में व्यापक रूप से बोली जाने लगी। नहेम्याह ने शिकायत की कि मिश्रित विवाहों (जिसमें एक पालक यहूदी नहीं थे) से उत्पन्न बच्चे इब्रानी नहीं बोल सकते थे (नहे 13:24)। यहूदी लोग फारसी, यूनानी, और रोमी काल के दौरान अरामी भाषा का व्यापक रूप से उपयोग करते रहे। पुराना नियम अंततः अरामी भाषा में अनुवाद किया गया। इन अनुवादों को *तारगुम* कहा जाता है, और कुछ मृत सागर सूचीपत्र के साथ पाए गए थे।

नए नियम का उपयोग

यह माना जाता है कि यीशु के समय में अरामी पलिश्तियों की सामान्य भाषा थी। हालांकि, यह एक अत्यधिक सरलीकरण हो सकता है। नए नियम में उपयोग किए गए नाम कई भाषाओं में लिखे गए हैं:

- अरामी (उदाहरण के लिए, बरतुल्मै, बार-योना, बरनबास)
- यूनानी (उदाहरण के लिए, अन्द्रियास, फिलिप्पुस)
- लैटिन (उदाहरण के लिए, मरकुस)
- इब्रानी

अरामी का व्यापक रूप से यूनानी और इब्रानी के साथ उपयोग किया जाता था। लैटिन शायद सैन्य और राजनीतिक समूहों तक सीमित था। यीशु के समय में भी रोज़मर्रा की

इब्रानी बोली, मिश्री इब्रानी, का उपयोग किया जाता था। मृत सागर खर्रे के साथ मिश्री इब्रानी दस्तावेज़ भी पाए गए हैं।

नए नियम के कुछ अंशों में उल्लिखित "इब्रानी" क्या था (यूह 5:2; 19:13, 17, 20; 20:16; प्रका 9:11; 16:16)? यीशु के क्रूस पर लिखे गए शिलालेख की भाषाएँ "इब्रानी, लैटिन, और यूनानी" थीं (यूह 19:19–20)। बाद में, प्रेरित पौलुस को "इब्रानी" बोलते हुए चित्रित किया गया (प्रेरि 22:2; 26:14)। उन्होंने कौन सी भाषा बोली, यह स्पष्ट नहीं है, लेकिन वे एक फरीसी थे और पुराने नियम के इब्रानी को पढ़ने में सक्षम थे। *इब्रानी*के लिए यूनानी शब्द को कभी-कभी *अरामी*के रूप में अनुवादित किया जाता है। यह एक सामान्य शब्द हो सकता है सामी या इब्रानी-अरामी के मिश्रण के लिए (जैसे यिद्दिश जर्मन है जो इब्रानी के साथ मिला हुआ है)। किसी भी मामले में, अरामी ने यीशु के समय में यहूदी लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के रूप में इब्रानी को यूनानी से जोड़ने का काम किया। इस अर्थ में, अरामी पुराने नियम के इब्रानी को नए नियम के यूनानी से जोड़ता है।

अरामी

अराम के लोग और सीरियाई लोगों के पूर्वज। *देखें*सीरिया, सीरियाई।

अरारात

अर्मेनिया में एक ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों की श्रृंखला का नाम (2 रा 19:37; यश 37:38)। अरारात काला सागर के ठीक दक्षिण में और इसके और कैस्पियन सागर के बीच स्थित है। यह क्षेत्र सुदूर पूर्वी तुर्की के, जॉर्जियाई रूस के दक्षिणी काकेशस और ईरान के उत्तरी सिरे पर मिलता है। अरारात के पहाड़ों को उस स्थान के रूप में उद्धृत किया गया है जहाँ जब बाढ़ का पानी घटने लगा तो नूह की नाव ठहरी थी (उत 8:4)। उस दूरस्थ क्षेत्र में काफी लोकप्रिय रुचि को कई अटकलों और कई अभियानों ने प्रेरित किया है।

कोई भी व्यक्ति अरारात पर्वत के सटीक स्थान के बारे में दृढ़ता से नहीं कह सकता, हालांकि एक पारंपरिक स्थल प्राचीन उरारतु के केंद्र में वान झील और उर्मिया के बीच इंगित किया जाता है (अरारात के साथ सामान्य व्यंजन पर ध्यान दें), जो कभी असीरिया का एक जिला था। आसपास की स्थलाकृति एक उच्च मैदान है जिसमें विरल वनस्पति, समान रूप से विरल निवास और बंजर लावा क्षेत्र हैं। अग्री दाघ (तुर्की में "मुसीबत का पर्वत") एक चोटी है जो 17,000 फीट (5,180 मीटर) ऊंची है, जिसे स्थानीय जनजातियों ने कोहल नूह नाम दिया है, अर्थात् नूह का पर्वत। इसलिए, नूह के जहाज की अधिकांश खोज वहीं पर केंद्रित है। *देखें*नूह #1; बाढ़।

अरितास

अरितास

1. एक अरबी जाति के कई राजाओं का नाम नबातियों के रूप में जाना जाता है। ये लोग संभवतः इश्माएल के सबसे बड़े पुत्र नबायोत के वंशज हैं (उत 25:12–16; 1 इति 1:29)। यहूदी इतिहासकार जोसीफस के अनुसार, इश्माएल के वंशज एक क्षेत्र में रहते थे जिसे नबातेन कहा जाता था। नबातेन का विस्तार फरात नदी से लेकर लाल सागर तक था। नए नियम के समय में राजधानी शहर, सेला को पेट्रा कहा जाता था।
2. 2 मक्काबियों 5:8 के अरितास, जिसके सामने यासोन याजक पर आरोप लगाया गया था, उन्होंने लगभग 170 ई.पू. शासन किया। नबातियों का मक्काबियों के प्रति स्पष्ट रूप से मित्रवत व्यवहार था (1 मक्का 5:24–28; 9:35)। जोसीफस ने दो अन्य राजाओं का भी उल्लेख किया जिनका नाम अरितास था। अरितास तृतीय ने, जिनका मूल नाम ओबोदास था, नबाती नियंत्रण का विस्तार किया और 87 से 62 ई.पू. के अपने शासनकाल के दौरान दमिश्क पर कब्जा कर लिया।
3. नया नियम एक अन्य अरितास का उल्लेख करता है। राजा अरितास के अधीन दमिश्क के राज्यपाल ने प्रेरित पौलुस को पकड़ने के लिए शहर की निगरानी की (2 कुरि 11:32–33)। बचने के लिए, पौलुस के सहयोगियों ने उन्हें शहर की दीवार में एक खिड़की के माध्यम से एक टोकरी में नीचे उतारा। उस अरितास की पहचान एनीस के रूप में की गई है, जिन्होंने अरितास चतुर्थ की उपाधि ली और 9 ई.पू. से 40 ईस्वी तक शासन किया। उन्होंने एक सीमा विवाद और प्रतिशोध के कारण हेरोदेस अंतिपास पर हमला किया और उसे हराया। (अंतिपास ने अरितास की बेटी को तलाक देकर हेरोदियास से विवाह किया था।

अरिमतियाह

अरिमतियाह

उस युसुफ का गृहनगर जिसने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए गए शरीर को प्राप्त किया और उसे अपनी कब्र में दफनाया (मत्ती 27:57; मरकुस 15:43; यूहन्ना 19:38)। इस नगर का स्थान अज्ञात है। संभवतः रामातैम सोपीम नामक पहाड़ी नगर और अरिमतियाह एक ही हो सकता है, जो भविष्यवक्ता शमूएल का घर था (1 शमूएल 1:1), जो यरूशलेम से लगभग 8 मील (12.9 किलोमीटर) उत्तर-पश्चिम में है। लूका ने इस स्थान को एक यहूदी नगर के रूप में वर्णित किया, और युसुफ स्वयं भी एक यहूदी अधिकारी था (लूका 23:50)।

अरिमतियाह के यूसुफ

अरिमतियाह के यूसुफ

*देखें*यूसुफ #8।

अरियुपगुस

यूनान के एथेंस में एक पहाड़ी हैं। यह एथेंस के गढ़ के उत्तर-पश्चिम में है और बाजार का नजारा दिखाता है (प्रेरि 17:19)। "अरियुपगुस" उस एथेंस वासी महासभा या न्यायालय को भी संदर्भित करता है जिसकी वहाँ सभा होती थी। अनियमित चूना पत्थर की चट्टान को मार्स हिल के नाम से भी जाना जाता था। मार्स यूनानी देवता एरेस का रोमी समकक्ष था।

कुछ इपिकूरी और स्तोईकी दार्शनिकों ने प्रेरित पौलुस को अरियुपगुस की सभा के सामने लाए। पौलुस कई दिनों तक एथेंस के आराधनालय और बाजार *(आगोरा)* में यहूदियों और परमेश्वर का भय रखनेवाले अन्यजातियों के साथ तर्क कर रहे थे (प्रेरि 17:16–21)।

परन्तु पौलुस का मुक़द्दमा आधिकारिक नहीं था, मुक़द्दमे अरियुपगुस में आयोजित किए जाते थे। पाँच शताब्दियों पहले सुकरात ने वहाँ उन लोगों का सामना किया था जिन्होंने उन पर यूनानी देवताओं का अपमान करने का आरोप लगाया था। पौलुस के समय में, अरियुपगुस की महासभा राजनीतिक, शैक्षिक, दार्शनिक, और धार्मिक मामलों के साथ-साथ कुछ कानूनी कार्यवाही पर विचार करने के लिए जिम्मेदार थी।

पौलुस के सम्बोधन का सामान्य स्वर परीक्षण कार्यवाही का सुझाव नहीं देता है। उन्होंने एक बुद्धिमान मसीही विश्वासी के रूप में बात की जो बौद्धिक एथेंस वासी से उनके अपने आधार पर मिल सकते थे (प्रेरि 17:22–31)। कुछ संदेहपूर्ण बने रहे, लेकिन उनका सम्बोधन कुछ के लिए आश्वस्त करने वाला था जो "उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया" (प्रेरि 17:32–34)।

अरियुपगुस का सभासद

एथेंस में अरियुपगुस की महासभा या न्यायालय के एक सदस्य (प्रेरि 17:34)। *देखें*दियुनुसियुस।

अरिस्तर्खुस

प्रेरित पौलुस के एक साथी। अरिस्तर्खुस थिस्सलुनीके के मकिदुनी थे, संभवतः यहूदी वंश के थे। उनका पहला उल्लेख इफिसुस में एक क्रोधित भीड़ द्वारा पकड़े गए लोगों में से एक के रूप में किया गया है (प्रेरि 19:29)।

बाद में, अरिस्तर्खुस पौलुस के साथ उनकी तीसरी मिशनरी यात्रा से लौटे (प्रेरि 20:4)। वह पौलुस के साथ रोम भी गए ताकि वे औगुस्तुस का सामना कर सकें (प्रेरि 27:1–2)।

पौलुस ने अरिस्तर्खुस को एक सहकर्मी (फिले 1:24) और साथी कैदी के रूप में वर्णित किया। पौलुस को अरिस्तर्खुस की मित्रता से बहुत सांत्वना मिली (कुल 4:10–11)। परम्परा कहती है कि रोमी सम्राट नीरो ने अरिस्तर्खुस को रोम में शहीद के रूप में मार डाला।

अरिस्तुबुलुस

यह नाम यूनानी भाषा से लिया गया है। इसका अर्थ है "सर्वश्रेष्ठ सलाह देने वाला।" पुराने और नए नियमों के बीच के समय में, फिलिस्तीन में शासक परिवारों ने इस नाम का उपयोग किया था।

1. सिकन्दरिया (मिस्र) में यहूदियों का याजक। अरिस्तुबुलुस ने मिस्री शासक टॉलेमी को शिक्षा दी, जिन्होंने 180 से 146 ईसा पूर्व तक शासन किया। यहूदिया के यहूदियों ने अरिस्तुबुलुस को पत्र भेजा (2 मक्काबीज 1:10)।
2. अरिस्तुबुलुस I मक्काबी (जिन्हें हस्मोनीयन भी कहा जाता है) कुल के पहले राजा थे। *देखें* हस्मोनीयन।

3. अरिस्तुबुलुस द्वितीय सिकन्दर जेनियस (अरिस्तुबुलुस प्रथम के भाई) और सलोमी सिकन्दर का पुत्र था। 67 ईसा पूर्व में, अरिस्तुबुलुस द्वितीय ने अपने बड़े भाई हाइर्केनस द्वितीय को हराया और राजा बन गए। *देखें*हस्मोनीयन।
4. अरिस्तुबुलुस III हाइर्केनस II के पोते और मरियम्ने के भाई थे, जो हेरोदेस महान की पत्नी थीं। हेरोदेस ने अरिस्तुबुलुस को 17 वर्ष की आयु में महायाजक नियुक्त किया था। जब लोगों द्वारा हस्मोनीयन के रूप में उनकी स्वीकृति ने हेरोदेस को धमकी दी, तो हेरोदेस ने 35 ईसा पूर्व में अरिस्तुबुलुस III को डुबोकर मरवा दिया। *देखें*हस्मोनीयन।
5. हेरोदेस महान और मरियमने के दो पुत्रों में से छोटे अरिस्तुबुलुस और सिकन्दर हेरोदेस के लिए खतरा बन गए जब उन्होंने 29 ईसा पूर्व में उनकी माँ को फांसी दी। 12 ईसा पूर्व में, दोनों भाइयों पर कैसर के सामने मुकदमे में अपने पिता को विष देने का प्रयास करने का आरोप लगाया गया। भाइयों को बरी कर दिया गया और उन्होंने अपने पिता के साथ सुलह कर ली। अरिस्तुबुलुस की सन्तान हेरोदेस, चाल्सिस के राजा, हेरोदेस अग्रिप्पा I यहूदिया के, अरिस्तुबुलुस (नीचे #6 देखें), और हेरोदियास, हेरोदेस अन्तिपास की पत्नी थीं। बाद में, हेरोदेस महान ने 7 ईसा पूर्व में सेबास्ते में अरिस्तुबुलुस और सिकन्दर दोनों को गला घोंटने का आदेश दिया। *देखें* हेरोदेस, हेरोदेस का कुल।
6. अरिस्तुबुलुस (#5 ऊपर) और बिरनीके के पुत्र। यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने उन्हें उनके भाई हेरोदेस अग्रिप्पा के खिलाफ साजिश का हिस्सा बताया। अरिस्तुबुलुस ने सीरिया के राज्यपाल पेट्रोनियस द्वारा रोमी सम्राट कैलिगुला की मूर्ति को यरूशलेम के मन्दिर में स्थापित करने की योजना का विरोध किया, जो 40 ईस्वी में थी।
7. पौलुस ने रोमियों को लिखे अपने पत्र में अरिस्तुबुलुस नामक व्यक्ति के परिवार या घराने को अभिवादन भेजा (रोमियों 16:10)।

अरीएल (व्यक्ति)

अरीएल (व्यक्ति)

1. एक व्यक्ति या वस्तु जिसे दाऊद के अंगरक्षकों के प्रमुख बनायाह ने एक वीरतापूर्ण कार्य में पराजित किया था (2 शमू 23:20; 1 इति 11:22)। यह स्पष्ट नहीं है कि इन पदों में इब्रानी शब्द अरियल एक विशेष नाम है या नहीं। के.जे.वी. के अनुसार, बनायाह ने मोआब के दो "सिंह के समान पुरुषों" को मार डाला। जबकि कुछ विद्वानों का मानना है कि इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उसने मोआब के दो वेदी चूल्हों को नष्ट कर दिया।
2. उन व्यक्तियों में से एक का नाम, जिसे एज्रा ने इद्दो के पास भेजा था ताकि वे यरूशलेम लौट रहे यहूदी बन्दियों के साथ जाने के लिए लेवीय याजकों को बुला सके (एज्रा 8:16)।

अरीएल (स्थान)

अरीएल नाम यरूशलेम के लिए एक काव्यात्मक नाम है। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लोगों को उनके पापों से मन फिराने की चेतावनी देते हुए एक "हाय" भविष्यवाणी में इस नाम का प्रयोग किया है (यशा 29:1–2, 7)।

इस भविष्यवाणी में, यशायाह ने यरूशलेम को "अरीएल" कहा (जिसका अर्थ है "परमेश्वर की वेदी")। किसी पूरी चीज़ के एक हिस्से को नाटकीय प्रभाव के लिए नाम देना एक काव्यात्मक अलंकार है जिसे "उपलक्षण" कहा जाता है। यरूशलेम वह स्थान था जहाँ होमबलि की वेदी स्थित थी, लेकिन यशायाह पूरे नगर को ही वेदी के रूप में संदर्भित करते हैं।

शब्दों के नाटकीय खेल में, यशायाह ने यरूशलेम पर परमेश्वर का न्याय घोषित किया। परमेश्वर की वेदी कहलाने वाला नगर शत्रुओं के द्वारा नष्ट किया जाएगा और स्वयं एक मूर्तिपूजक वेदी, एक अरीएल बन जाएगा।

अरीदाता

हामान के दस पुत्रों में से एक, जिसे उसके पिता के साथ तब मार दिया जब एस्तेर ने यहूदियों को नष्ट करने की हामान की साजिश का पर्दाफाश किया (एस्त 9:7–10)।

अरीदै

अरीदै

हामान के दस पुत्रों में से एक, जिसे उनके पिता के साथ तब मार दिया जब एस्तेर ने यहूदियों को नष्ट करने की हामान की साजिश का पर्दाफाश किया (एस्त 9:7–10)।

अरीसै

अरीसै

हामान के दस पुत्रों में से एक, जिसे उसके पिता के साथ तब मार दिया जब एस्तेर ने यहूदियों को नष्ट करने की हामान की साजिश का पर्दाफाश किया (एस्त 9:7–10)।

अरुब्बोत

एक नगर, जो राजा सुलैमान के 12 प्रशासनिक जिलों में से एक का मुख्यालय था (1 रा 4:10)। अरुब्बोत सम्भवतः मनश्शे के गोत्रीय क्षेत्र में स्थित था, जो सामरिया के लगभग 14.5 किलोमीटर (नौ मील) उत्तर में, आधुनिक 'आरबेह के स्थल पर था।

अरूमा

अरूमा

वह नगर जहां गिदोन के पुत्र अबीमेलेक ने शेकेम के निवासियों द्वारा वहां से निकाले जाने के बाद निवास किया था (न्या 9:1, 22–25, 31, 41)। सम्भावना है कि इसे ही 2 राजा 23:36 में रूमा कहा गया हो।

अरेली, अरेलियों

गाद के सात पुत्रों में से एक (उत 46:16)। बालपोर की महामारी के बाद, मूसा ने मिद्यानियों के साथ युद्ध की तैयारी के लिए एक जनगणना की (गिन 25:6–18; 26:17)। अरेली के वंशज, जिन्हें अरेलियों कहा जाता था, जनगणना में गिने गए।

अरोएर

1. एक ट्रांसजॉर्डनियन (यरदन के पूर्व) शहर जो मूसा के समय से लेकर 586 ई.पू. में यरूशलेम के पतन तक अस्तित्व में था। अरोएर उन शहरों में से एक था जिसे इस्राएलियों ने एमोरी सीहोन और बाशानी ओग से जीता था। अरोएर गाद और रूबेन के गोत्रों और आधे मनश्शे के गोत्र को सौंपे गए क्षेत्र की दक्षिणी सीमा पर था (यहो 13:9)। यह बड़ी अर्नोन घाटी के उत्तरी किनारे पर स्थित था (व्य. वि. 2:36; 3:12; 4:48; यहो 13:9)। इस्राएलियों द्वारा इसे नष्ट करने के बाद अरोएर को सम्भवत: फिर से बनाया गया था (तुलना करें यहो 12:2; गिन 32:34)। अरोएर कई गांवों के लिए एक केन्द्रीय शहर था (न्या 11:26)। यह वह शहर था जहाँ से राजा दाऊद के अधीन जनगणना शुरू हुई थी (2 शमू 24:5)। मोआबियों ने बाद की राजशाही के दौरान इस पर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया और यिर्मयाह के समय तक इसे बनाए रखा (यिर्म 48:19)। दमिश्क के राजा हजाएल ने अरोएर पर कब्जा कर लिया, जिससे ट्रांसजॉर्डन पर सीरियाई नियन्त्रण सुनिश्चित हो गया (2 रा 10:33)। अरोएर की पहचान गाँव 'अरा'ईर के पास एक टीले के साथ की गई है। यह स्थान दीबोन से लगभग 4.8 किलोमीटर (तीन मील) दक्षिणपूर्व में प्राचीन उत्तर-दक्षिण ट्रांसजॉर्डन राजमार्ग के पूर्वी तरफ स्थित है।
2. गाद के गोत्र को सौंपा गया एक शहर (यहो 13:25), जिसका उल्लेख यिप्तह की अमोनियों पर विजय के सन्दर्भ में किया गया है (न्या 11:33)। इस अरोएर को अमान के उत्तर-पश्चिम और रब्बाह के पूर्व में स्थित क्षेत्र में अस्थायी रूप से रखा गया है।

3. यहूदा के नेगेव रेगिस्तान क्षेत्र में एक शहर। अरोएर उन गाँवों में से एक था जो दाऊद की अमालेकियों पर जीत में लूट लिया गया था (1 शमू 30:28)। दाऊद के दो "पराक्रमी पुरुष" होताम के अरोएरी पुत्र थे (1 इति 11:44)। इस अरोएर की पहचान खिरबेत 'आर'अरेह के रूप में की गई है, जो बेर्शेबा से लगभग 12 मील (19 किलोमीटर) दक्षिण-पूर्व में स्थित है।
4. दमिश्क के पास एक शहर (यशा 17:2)। इब्री पाठ में "अरोएर के शहर", लेकिन सेप्टुआजेंट (प्राचीन यूनानी पुराना नियम) में "उसके शहर हमेशा के लिए" (एक पाठ जिसे रिवाईज़्ड स्टैण्डर्ड संस्करण द्वारा अपनाया गया है) लिखा गया है।

अरोएरी

अरोएर का निवासी। अरोएरी होताम, दाऊद के दो "पराक्रमी पुरुषों" का पिता, अरोएर का मूल निवासी था (1 इति 11:44)। *देखें*अरोएर #3।

अरोद, अरोदियों

अरोद, अरोदियों

एसबोन और उसके वंशजों के लिए एक अन्य नाम (गिन 26:16) । *देखें*एसबोन #1।

अरोद, अरोदी, अरोदवासी

अरोद गाद का छठा पुत्र था और अरोदी परिवार का मुलपुरुष (गिन 26:17)। उन्हें उन लोगों की सूची में अरोदी कहा गया है जो याकूब के साथ मिस्र गए थे (उत 46:16)।

अरौना

अरौना एक यबूसी था जिसका खलिहान (जहाँ अनाज भूसे से अलग किया जाता था), बाइबल के इतिहास की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का स्थल था। (यबूस एक प्राचीन कनानी नगर का नाम था जो बाद में यरूशलेम बन गया।)

प्रभु ने एक स्वर्गदूत को इस्राएल पर और अधिक महामारी (रोग या मरी) फैलाने से रोक दिया, जब 70,000 इस्राएली मारे गए (2 शमू 24:15–16)। यह महामारी प्रभु की ओर से राजा दाऊद की गर्वपूर्ण जनगणना का परिणाम थी। अरौना का खलिहान इस घटना का स्थल था।

भविष्यद्वक्ता गाद के निर्देश पर, पश्चातापी दाऊद ने वेदी बनाने के लिए भूमि खरीदी (2 शमू 24:17–25)। अरौना ने वेदी के लिए बैल और आवश्यक सभी चीजें उपहार के रूप में देने की पेशकश की। दाऊद ने उसे भुगतान करने पर जोर दिया, यह कहते हुए कि, "मैं अपने परमेश्वर यहोवा को सेंत-मेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का।" (2 शमू 24:24)।

एक समान विवरण में यबूसी के विदेशी नाम के लिए इब्रानी रूप *ओर्नान* का उपयोग किया गया है (1 इति 21:15–16)। तंबू और वेदी गिबोन की पहाड़ी पर बहुत दूर थे (1 इति 21:27–30)। इस विवरण में कहा गया है कि दाऊद बलिदान चढ़ाने के लिए तंबू में जाने के लिए बहुत जल्दी में थे।

दाऊद ने मंदिर के स्थल के रूप में खलिहान को चुना (1 इति 22:1)। बाद में सुलैमान ने मोरिय्याह पहाड़ पर वहीं मंदिर का निर्माण किया (2 इति 3:1)। खलिहान वही स्थान था जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम को इसहाक की बलि चढ़ाने के लिए जाने की आज्ञा दी थी (उत 22:2)।

आज, एक महत्वपूर्ण मुस्लिम पवित्र स्थल जिसे डोम ऑफ द रॉक कहा जाता है, वहाँ स्थित है जहाँ कई लोग मानते हैं कि अरौना का खलिहान कभी था।

अर्की

हाम के पुत्र कनान से उत्पन्न एक कुल का नाम (उत 10:17; 1 इति 1:15)। अर्की लोग संभवतः अर्का के निवासी थे, जो त्रिपोली के उत्तर में सीरिया में स्थित एक फोनीशियन नगर था।

एक प्रारंभिक शिलालेख के अनुसार, अर्का को अश्शूरी तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने 738 ई.पू. में जीत लिया था। गोत्र की एक और शाखा अतारोत के पास बस गई हो सकती है, जो एप्रैम और बिन्यामीन के बीच की सीमा पर एक नगर था (यहो 16:2).

यह भी देखें अर्की, अर्की लोग।

अर्गोब (व्यक्ति)

एक व्यक्ति जिसे पेकह के विद्रोह में इस्राएल के राजा पकहयाह के साथ मारा गया माना जाता था (2 रा 15:25)। प्रारम्भिक कलीसिया के पिता जेरोम ने सोचा कि नाम अर्गोब (अर्ये के साथ) एक स्थान को सन्दर्भित करता है। आज, कुछ विद्वानों का मानना है कि अर्गोब और अर्ये लिप्यंतरण त्रुटि से

गलती से स्थाननामों की सूची (2 रा 15:29) से हटा दिया गया था।

अर्गोब (स्थान)

जब इस्राएलियों ने राजा ओग को एद्रेई में पराजित किया, तब उन्होंने बाशान के एक क्षेत्र पर विजय प्राप्त की (गिन 21:33–35; व्य.वि. 3:4)। अर्गोब, किन्नेरेत सागर (जो बाद में गलील सागर कहलाया) के पूर्व में स्थित था, गशूर और माका के क्षेत्रों से परे था (व्य.वि. 3:14)। मूसा ने बाशान के सभी क्षेत्रों को, जिसमें अर्गोब भी शामिल था, मनश्शे के आधे गोत्र को सौंप दिया (व्य.वि. 3:13–14)।

मनश्शे के गोत्र के याईर ने अर्गोब के गांवों को अपने अधिकार में किया और उनका नाम हब्बोत-याईर ("याईर के गांव") रखा। 1 राजाओं 4:13 अर्गोब और याईर के गांवों के बीच अंतर बताता है। कहा जाता है कि ये गांव गिलाद में हैं, अर्गोब के दक्षिण में।

व्यवस्थाविवरण 3:14 इस स्थान का स्पष्ट रूप से विरोधाभास करता है। अर्गोब और गिलाद के बीच की सीमा पर याईर के गांवों का स्थान इस स्पष्ट विसंगति के लिए ज़िम्मेदार हो सकता है। याईर की विजय और सुलैमान के शासनकाल के बीच की तीन शताब्दियों के दौरान वह सीमा बदल सकती थी। तब तक, नाम हब्बोत-याईर संभवतः एक अलग समूह के शहरों को संदर्भित कर सकता था।

अर्घ

अर्घ

देखें भेंट और बलिदान।

अर्घ

बलिदान के रूप में जमीन पर तेल या दाखरस जैसे तरल पदार्थ डालने का अनुष्ठान। *देखें* प्रस्तुतियाँ (अर्पण) और बलिदान।

अर्तक्षत्र

फारसी साम्राज्य के तीन राजाओं के नाम:

1. अर्तक्षत्र प्रथम 465 से 424 ई.पू. तक राजा रहे। उन्हें मैक्रोचेइर या लॉन्गिमैनस के नाम से जाना जाता था, जो क्षयर्ष प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी थे, जो 486 से 465 ई.पू. तक राजा रहे। क्षयर्ष प्रथम एस्तेर की पुस्तक और एज्रा 4:6 के अर्तक्षत्र थे।
अर्तक्षत्र प्रथम के उत्तराधिकार के कुछ वर्षों बाद, यूनानियों ने मिस्र को फारस के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उकसाया। केवल 454 ई.पू. में फारसी साम्राज्य में अन्य मतभेदों के साथ-साथ उस विद्रोह को भी कुचल दिया गया था। 449 ई.पू. तक, कैलियास की संधि ने यूनानियों और फारसियों के बीच शांति की स्थापना की। अर्तक्षत्र ने अपने साम्राज्य पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया था और एक शांति का काल शुरू हुआ।
अर्तक्षत्र प्रथम ने कुछ समय के लिए यरूशलेम के पुनर्निर्माण के कार्य को रोक दिया था (एज्रा 4:7–23)। 458 ई.पू. में उन्होंने एज्रा को यहूदियों के मामलों के राज्यमुंशी के रूप में नगर का दौरा करने का आदेश भी दिया था (एज्रा 7:8, 11–26)। 445 ई.पू. में, अर्तक्षत्र प्रथम के 20वें वर्ष में नहेम्याह नागरिक अधिपति के रूप में यरूशलेम गए (नहे 1:1; 2:1)।
कुछ विद्वानों ने एज्रा 7:7 को "सातवें" के बजाय "सैंतीसवां" पढ़ने पर सवाल उठाया है कि क्या अर्तक्षत्र द्वितीय वही फारसी राजा थे जिन्होंने नहेम्याह के साथ बातचीत की थी। लेकिन एलिफेन्टाइन की पेपरै यह दर्शाती हैं कि सामरिया के अधिपति सम्बल्लत, 408 ई.पू. में बहुत वृद्ध हो चुके थे। यह समय दारा द्वितीय की मृत्यु से कुछ समय पूर्व का था, जिन्होंने 423 से 405 ई.पू. तक राज्य किया। सम्बल्लत का नहेम्याह के प्रति विरोध बहुत पहले हुआ होगा। इस प्रकार एज्रा और नहेम्याह की घटनाएँ अर्तक्षत्र प्रथम के जीवनकाल में ही घटित हुई।
अर्तक्षत्र प्रथम स्पष्ट प्रक्रियाएँ स्थापित करने के बाद फारस में यहूदियों के प्रति अपनी दयालुता के लिए उल्लेखनीय थे। एज्रा और नहेमायाह के काम के लिए उनका समर्थन उनके लेखन से स्पष्ट है।
*यह भी देखें*क्षयर्ष; एज्रा की पुस्तक; नहेम्याह

की पुस्तक; एस्तेर की पुस्तक।

2. अर्तक्षत्र द्वितीय नेमोन, अर्तक्षत्र प्रथम के पोते और दारा द्वितीय के पुत्र थे। वह 404 से 359 ई.पू. तक राजा रहे। उनका शासन फारसी साम्राज्य में अशांति का समय था, जिसका एक परिणाम लगभग 401 ई.पू. मिस्र का खोना शामिल था। उन्होंने कई प्रभावशाली इमारतों का निर्माण किया और शूशन में राजभवन का विस्तार किया।
3. अर्तक्षत्र तृतीय ओकस, अर्तक्षत्र द्वितीय के पुत्र और उत्तराधिकारी थे। वह 358 से 338 ई.पू. तक राजा रहे। उन्होंने चतुर कूटनीति के माध्यम से साम्राज्य में शांति स्थापित की, परन्तु उनकी हत्या कर दी गई। न तो उनका और न ही उनके पिता का उल्लेख पुराने नियम में किया गया है।

*यह भी देखें*फारस, फारसी।

अर्द, अर्दी

बिन्यामीन के पहलौठे पुत्र बेला के नौ पुत्र थे (1 इति 8:1; गिन 26:40)। अर्द, जो उन नौ पुत्रों में से एक था, इब्रानी अर्थ में बिन्यामीन का पुत्र कहा जाता है, जिसका अर्थ है वंशज (उत 46:21)। वह अर्दी परिवार का संस्थापक था, जो बिन्यामीन के बड़े गौत्र के भीतर एक छोटा दल था। 1 इतिहास की पुस्तक में (8:3), अर्द को अद्दार कहा गया है। यह वर्तनी में अंतर शायद बहुत समय पहले पाठ की नकल करते समय हुई गलती के कारण है।

अर्दोन

अर्दोन

अजूबा के द्वारा कालेब का तीसरा पुत्र। कालेब के माध्यम से अर्दोन यहूदा का वंशज है (1 इति 2:18)।

अर्नान

अर्नान

रपायाह का पुत्र और ओबद्याह का पिता, जो जरूब्बाबेल के माध्यम से दाऊद का वंशज हुआ (1 इति 3:21)।

अर्नोन

यरदन के पूर्व क्षेत्र में एक नदी है। अर्नोन को आज वादी एल-मोजिब के नाम से जाना जाता है। यह नदी पूर्व से पश्चिम की ओर एक घाटी के माध्यम से बहती है, जिसकी दीवारें 457 मीटर (1,500 फीट) ऊँची हैं और यह मृत सागर में मिलती है।

कनान की इस्राएली विजय के समय, यह घाटी मोआब के दक्षिण और उत्तर में अम्मोनी राज्यों के बीच एक प्राकृतिक सीमा के रूप में कार्य करती थी (गिन 21:13–15)।

यहोशू के नेतृत्व में भूमि के विभाजन के बाद, अर्नोन नदी रूबेन के क्षेत्र की दक्षिणी सीमा बन गई (व्य.वि. 3:12, 16; यहो 13:16)।

अर्पक्षद

शेम के पुत्र और नूह के पोते। अर्पक्षद के वंशज सम्भवतः कसदी थे (उत 10:22–24; 11:10–13; 1 इति 1:17–18, 24; लूका 3:36)।

अर्पक्षद का जन्म जल-प्रलय के दो साल बाद हुआ था जब उनके पिता एक सौ वर्ष के थे (उत 11:10)। वे एबेर के दादा थे, जिन्हें कुछ लोग मानते हैं कि वे इब्रियों के पूर्वज थे (1 इति 1:17–25; लूका 3:35–36)।

अर्पाद

अर्पाद

उत्तरी सीरिया में एक नगर। अर्पाद को अश्शूरियों ने दो बार जीत लिया:

- 740 ई. पू. में तिग्लत्पिलेसेर तृतीय द्वारा
- 720 ई. पू. में सरगोन द्वितीय द्वारा

अश्शूरियों ने अर्पाद और हमात को इस उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया कि कोई भी देवता, यहाँ तक कि इस्राएल का परमेश्वर भी, नगरों को अश्शूर के आक्रमणों से नहीं बचा सकते हैं (2 रा 18:34; 19:13; यशा 10:9; 36:19; 37:13)। अर्पाद और हमात का उल्लेख बाद में दमिश्क (सीरिया के नगर) के विरुद्ध भविष्यवाणी में भी किया गया है (यिर्म 49:23)।

अर्पाद को आधुनिक टेल एरफाद के रूप में पहचाना जाता है, जो अलेप्पो के उत्तर में स्थित है।

अर्बा

अर्बा

विशालकाय अनाकवंशी का एक पूर्वज और अपने लोगों के बीच एक महान योद्धा था (यहो 15:13; 21:11) । अर्बा, किर्यतअर्बा (अर्बा का नगर) का बनाने वाला था, जिसे बाद में हेब्रोन के नाम से जाना गया (यहो 14:15)।

अर्मोन वृक्ष

अर्मोन वृक्ष

विस्तृत फैलाव वाला एक विशाल वृक्ष, जिसका चौड़ा तना और पपड़ीदार छाल होती है, जो फिलिस्तीन में देशज है (उत 30:37; यहेज 31:8)। *देखें*पौधे।

अर्मोनी

अर्मोनी

राजा शाऊल के दो पुत्रों में से एक, जो उसकी उपपत्नी रिस्पा से जन्मा था। दाऊद ने अर्मोनी को, शाऊल के छह अन्य पुत्रों के साथ, गिबोनियों को सौंप दिया। गिबोनियों ने अर्मोनी और उसके भाइयों को अपने लोगों का शाऊल के द्वारा वध का बदला लेने के लिए मार डाला (2 शमू 21:1, 8–9)।

अर्याराथेस

अर्याराथेस

अर्याराथेस 163 से 130 ई.पू. तक एशिया के उपद्वीप में कप्पदूकिया के राजा थे। रोम में शिक्षित होने के कारण, अर्याराथेस ने रोमी विचारों का उपयोग किया और रोमी लोगों के मित्रवत बन गए। अपने रोमी संबंधों के कारण, उन्होंने सीरिया के राजा, देमेत्रियस सोटर की बहन के विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसके बाद सीरिया ने उन पर युद्ध घोषित कर दिया और उन्हें उनके सिंहासन से हटा दिया।

158 ई.पू. में रोम भागने के बाद, अर्याराथेस को कप्पदूकिया के सिंहासन पर पुनर्स्थापित किया गया। सिमोन मक्काबी के जवाब में, रोमियों ने 139 ई.पू. में अर्याराथेस और कई अन्य शासकों को यहूदियों के प्रति इन शासकों के व्यवहारों को व्यक्त करने के लिए पत्र लिखा। यह रोमी पत्र शासकों से यहूदियों के प्रति दयालु होने और "न तो उन्हें हानि पहुँचायें, न उन पर और न उनके नगरों या क्षेत्रों पर आक्रमण करें" (1 मक्का 15:16–19, 22) का अनुरोध करता है।

अर्ये

अर्ये

एक व्यक्ति जिसका उल्लेख अर्गोब के साथ 2 राजाओं 15:25 में किया गया है।

अर्योक

1. एल्लासार के राजा का नाम। तीन अन्य राजाओं के साथ, अर्योक ने पाँच नगरों पर कब्जा किया और कई बंदियों को ले लिया, जिनमें अब्राहम का भतीजा लूत भी शामिल था (उत 14:1–16)।
2. नबूकदनेस्सर के अंगरक्षक का कप्तान या प्रधान जल्लाद। अर्योक दानिय्येल को बाबेल के राजा के पास उनके स्वप्न का अर्थ बताने के लिए ले गया (दानि 2:14–25)।

अर्वद, अर्वदी

एक छोटा किलेबन्द द्वीप, जो सीरिया (प्राचीन फीनीके) के तट से लगभग 3.2 किलोमीटर (2 मील) दूर स्थित है। यह त्रीपुलिस से लगभग 48 किलोमीटर (30 मील) उत्तर में है। अर्वद ने एक बड़ा व्यापारिक और युद्धक बेड़े (जहाजों का समूह) को विकसित किया। सोर की नौसैनिक शक्ति के वर्णन में अर्वद के मल्लाहों की प्रसिद्धि का उल्लेख किया गया है (यहेज 27:8, 11)।

मिस्री अभिलेखों में लगभग 1472 ईसा पूर्व में थुतमोस तृतीय द्वारा अर्वद के पतन का वर्णन मिलता है। अश्शूर के अभिलेख अर्वद के महत्व और 11वीं से 7वीं शताब्दी ईसा पूर्व के बीच विदेशी शक्तियों द्वारा इसको बार-बार जीतने का संकेत देते हैं।

अर्वद को बाद में अरादस या अरादोस के नाम से जाना गया, और इस नाम से इसका उल्लेख 1 मक्काबियों 15:23 में किया गया है। फारसी और यूनानी मत काल के दौरान यह भूमध्यसागर का एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह था, लेकिन बाद में इसका फिर से पतन हो गया। संभवतः अर्वदी कनानी गोत्र का इस द्वीप अर्वद से जातीय सम्बंध रहा होगा (उत 10:18; 1 इति 1:16)। अरवाड द्वीप का आधुनिक नाम है।

अर्सा

अर्सा तिर्सा में राजभवन का प्रधान था, जो इस्राएल के उत्तरी राज्य का एक नगर है। वह राजा एला के लिए काम करता था, जो इस्राएल के उत्तरी भाग पर राज्य करता था। एक दिन, राजा एला अर्सा के घर में मदिरा पीकर मतवाला हो गया। उसी समय, जिम्री नामक व्यक्ति ने उसे मार डाला और स्वयं को राजा घोषित कर दिया (1 रा 16:9–10)।

अर्सासेस

अर्सासेस

पार्थी शासकों द्वारा साझा की गई उपाधि, जिसकी शुरुआत राज्य के संस्थापक अर्सासेस प्रथम (संभवतः 250 ई.पू.) से हुई। अर्सासेस षष्ट (मिथ्रिडेट्स प्रथम) के अधीन पार्थी राज्य में अन्य राष्ट्रों के अलावा मादी और फारस भी शामिल हो गए।

इस विस्तार ने पार्थियों को सेल्यूसीड क्षेत्र के करीब ला दिया। सीरियाई राजा देमेत्रियस निकेटर ने 141 ई.पू. में अर्सासेस षष्ट के राज्य पर आक्रमण करके प्रतिशोध लिया, यह घटना अपोक्रिफा (1 मक्का 14:1–3) में दर्ज है। अर्सासेस उन राजाओं में से एक थे जिन्हें रोमी कौंसल ने यह सलाह दी थी कि वहह यहूदियों को कोई हानि न पहुँचाएँ (1 मक्का 15:15–22)।

अल-तशहेत

भजन संहिता 57, 58, 59 और 75 के शीर्षकों में एक इब्रानी वाक्यांश है। इसका अनुवाद "नष्ट मत करो!" के रूप में किया गया है। यह सम्भवतः एक प्राचीन परिचित धुन हो सकती है जिसके अनुसार भजन गाए जाते थे।

*देखें*संगीत।

अलकिमस

अलकिमस

यहूदियों के इतिहास में पुराने और नए नियमों के बीच के समय के दौरान एक विश्वासघाती महायाजक थे। वह हारून के परिवार से तो थे, लेकिन महायाजकों के सही वंश से नहीं थे। लगभग 163 ईसा पूर्व, सीरियाई राजा देमेत्रियस प्रथम ने अलकिमस को महायाजक नियुक्त किया।

अलकिमस यूनानी संस्कृति के समर्थक थे, जिस कारण यरूशलेम पर शासन करने वाले मक्काबी परेशान थे। वे उसे महायाजक के रूप में नहीं चाहते थे। इसलिए अलकिमस ने राजा देमेत्रियस से यहूदा को नियंत्रित करने के लिए सेनापति बक्खीदेस को भेजने का अनुरोध किया।

बक्खीदेस ने अलकिमस को प्रभारी बनाया, लेकिन यहूदा मक्काबी और उनके भाइयों ने अलकिमस का समर्थन करने वालों के खिलाफ युद्ध किया (1 मक्का 7:1–24)। अलकिमस ने फिर से सहायता मांगी। देमेत्रियस ने निकानोर के नेतृत्व में एक सेना भेजी, लेकिन मक्काबियों ने उन्हें पराजित कर दिया (1 मक्का 7:25–50)।

फिर देमेत्रियस ने बक्खीदेस को एक मजबूत सेना के साथ वापस भेजा। इस बार, यहूदा मक्काबी मारे गए और अलकिमस ने यरूशलेम पर नियंत्रण कर लिया (1 मक्का 9:1–53)। उसने "मंदिर के भीतरी आंगन की दीवार गिराने की आज्ञा दी," लेकिन इससे पहले कि वह इसे पूरा कर पाता, वह लकवाग्रस्त हो गया। लगभग 161 ई.पू. में "अलकिमस का कष्ट बढ़ता गया और उन्हीं दिनों उसकी मृत्यु हो गयी" (1 मक्का 9:54–57)।

*यह भी देखें*मक्काबी काल

अलामोत

अलामोत

भजन संहिता 46 के शीर्षक में एक इब्रानी शब्द है और यह 1 इतिहास 15:20 में भी पाया जाता है।

*देखें*संगीत।

अलाम्मेल्लेक

अलाम्मेल्लेक

आशेर के क्षेत्र में एक नगर था (यहोशू 19:26)।

अलेक्जेंड्रा

पहले हसमोनी राजा अरिस्तुबुलुस की पत्नी, जिन्होंने 104 से 103 ई.पू. तक शासन किया। राजा की मृत्यु के बाद, उन्होंने उनके भाई सिकन्दर यन्नैउस से विवाह किया, जो 103 से 76 ई.पू. तक राजा थे। उनका विवाह संभवतः एक "लेविरैट" विवाह था (एक यहूदी प्रथा जहाँ एक पुरुष अपने मृत भाई की विधवा से कुछ परिस्थितियों में विवाह करता है)।

जब यन्नैउस की मृत्यु हुई तो सिकन्दर यन्नैउस की वसीयत के अनुसार सलोमी अलेक्जेंड्रा रानी बनी। वह यहूदा में रानी के रूप में शासन करने वाली एकमात्र यहूदी महिला थी, सिवाय

हड़पने वाली अतल्याह के, जो 841 से 835 ई.पू. तक रानी थी।

मरने से पहले, यन्नैउस ने रानी से फरीसियों (एक यहूदी धार्मिक दल) के साथ शांति स्थापित करने के लिए कहा, जिन्होंने उनके खिलाफ संघर्ष किया था। सलोमी ने इस सलाह का पालन किया। इससे उसे मदद मिली, क्योंकि उसका भाई शमौन बेन शेतख एक प्रसिद्ध फरीसी अगुवा था।

सलोमी अलेक्जेंड्रा ने लगभग 76 से 67 ई.पू., 10 वर्षों तक शासन किया। यह एक शांतिपूर्ण समय था, जिसके दौरान फरीसियों ने महत्वपूर्ण शक्ति प्राप्त की। फरीसियों को पहली बार सन्हेड्रिन (यहूदियों की सर्वोच्च परिषद) में शामिल होने की अनुमति दी गई। मसीह के समय तक, फरीसी सन्हेड्रिन में सदूकियों जितने प्रभावशाली बन चुके थे।

*देखें*हसमोनी।

अलेक्ज़ेन्ड्रिनस पाण्डुलिपि

अलेक्ज़ेन्ड्रिनस पाण्डुलिपि

यह तीन सबसे महत्वपूर्ण "पाण्डुलिपियाँ" या जिल्दबंद पुस्तकों में से एक है, जिनमें बाइबल की यूनानी भाषा की प्रारंभिक प्रतियाँ शामिल हैं। अन्य दो प्रमुख पाण्डुलिपियाँ हैं वेटिकनस और सिनैटिकस। *देखें*बाइबल की पाण्डुलिपियाँ और पाठ (नया नियम)।

अलेमा

गिलाद में एक नगर। यहूदा मकाबी ने इस नगर से यहूदियों को मुक्त किया जो शत्रुतापूर्ण अन्यजातियों से घिरे हुए थे (1 मक्काबियों 5:24–35)। अधिकांश विशेषज्ञ मानते हैं कि अलेमा गलील सागर के लगभग 25 से 35 मील (40 से 55 किलोमीटर) पूर्व में था। यह सम्भवतः वही स्थान हो सकता है जहां आज गिलाद में आधुनिक शहर अल्मा है। सम्भवतः अलेमा और हेलाम, जहां राजा दाऊद ने एक महत्वपूर्ण युद्ध जीता था, एक ही नगर था (2 शमू 10:16–17)।

अल्फा और ओमेगा

नए नियम में परमेश्वर और यीशु मसीह, दोनों के लिए उपाधि के रूप में प्रयोग होने वाला एक वाक्यांश है (प्रका 1:8; 21:6; 22:13)। अल्फा (A) यूनानी वर्णमाला का पहला अक्षर है और ओमेगा (Ω) अंतिम अक्षर है। अंग्रेजी में इसका समकक्ष है "A और Z"। समान शीर्षक हैं "आदि और अंत" और "प्रथम और अंतिम" (प्रका 1:17; 2:8; 21:6; 22:13)।

इसी प्रकार के कथन पुराने नियम में यशायाह 41:4; 44:6; और 48:12 में पाए जाते हैं। ये परमेश्वर और उनके पुत्र, यीशु की अद्वितीय और विश्वसनीय संप्रभुता (सर्वोच्च शक्ति और अधिकार) पर जोर देते हैं। ये मसीहियों को याद दिलाते हैं कि सृष्टि की रचना और सभी मानव इतिहास का अंत, जीवित परमेश्वर के नियंत्रण में है। *देखें*परमेश्वर के नाम।

अल्मोदाद

अल्मोदाद

योक्तान का एक पुत्र या वंशज। वह नूह के पुत्र शेम के माध्यम से नूह के परिवार का सदस्य था (उत 10:26; 1 इति 1:20)।

अल्मोन

अल्मोन

यहोशू 21:18 में आलेमेत के लिए एक अन्य नाम। *देखें* आलेमेत (स्थान)।

अल्मोनदिबलातैम

अल्मोनदिबलातैम

मोआब में एक क्षेत्र, जहाँ इस्राएली अपने 40 वर्षों के भटकाव के दौरान डेरा डाले हुए थे (गिन 33:46–47)। कुछ लोग इसे बेतदिबलातैम के साथ पहचानते हैं (यिर्म 48:22)।

जंगल में भटकना *यह भी देखें*।

अल्यान

अल्यान*

1 इतिहास 1:40 में अल्यान, शोबाल के पुत्र के लिए एक वैकल्पिक नाम है। *देखें*आल्वान।

अल्लोन (व्यक्ति)

शिमोन के गोत्र से जीजा का पूर्वज (1 इतिहास 4:37)।

अल्लोन (स्थान)

नप्ताली के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक बांज वृक्ष है। कुछ अनुवाद, जैसे किंग्स जेम्स संस्करण, इसे यहोशू 19:33 में एक नगर का नाम मानते हैं। बिरीयन स्टैंडर्ड बाइबिल इसे "सानन्नीम के महान बांज वृक्ष" के रूप में अधिक उपयुक्त मानता है। *देखें* सानन्नीम।

अल्लोनबक्कूत

अल्लोनबक्कूत

बेतेल के पास एक बांज का पेड़ था जिसके नीचे दबोरा को दफनाया गया था (उत 35:8)। दबोरा रिबका की वृद्ध दाई थीं। उस पेड़ का नाम "रोने का बांज" रखा गया था।

अल्वा

एदोम का प्रमुख और एसाव का वंशज (उत 36:40)। अल्वा को 1 इतिहास 1:51 में वैकल्पिक रूप से अल्या कहा गया है।

अवरन

अवरन

यहूदा मक्काबी के भाई एलीआजर का उपनाम है (1 मक्का 2:5; 6:43)। नाम का अर्थ "जागृत," "फीका चेहरा," या "छेदक" हो सकता है।

अव्वा

सीरिया का एक क्षेत्र। इसे 2 राजा 18:34; 19:13 में इव्वा भी कहा गया है। अश्शूर के सर्गोन ने इसे आठवीं शताब्दी ई.पू. में जीत लिया था। जब 722 ई.पू. में सामरिया से इस्राएलियों को निर्वासित किया गया, तब अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने अव्वा और अन्य क्षेत्रों से लोगों को सामरिया के नगरों में बसने के लिए भेजा (2 रा 17:24)।

यह भी देखें हव्वा.

अव्विम (व्यक्ति)

बाइबल में उल्लेखित एक प्राचीन जनसमूह के लिए प्रयुक्त इब्रानी है, जो इस्राएलियों से पहले कनान के दक्षिण-पश्चिमी भाग में रहते थे। अव्विम और अव्वी दोनों शब्द उसी जाति को दर्शाते हैं।

देखिए अव्वी।

अव्वियों और अव्वी

किंग जेम्स संस्करण अव्वी और अव्वियों के रूप (व्य.वि. 2:23 और यहो 13:3)।

देखिए अव्वी।

अव्वी लोग

1. प्राचीन लोग जो गाज़ा के पास गाँवों में रहते थे, वे पलिश्ती आक्रमण द्वारा नष्ट कर दिए जाने से पहले वहाँ रहते थे (व्य.वि. 2:23; यहो 13:3)।
2. जो लोग सीरिया के अव्वा में रहते थे, उनके लिए नाम। अश्शूर के शल्मनेसेर ने 722 ई.पू. में विजय के बाद उन्हें सामरिया में स्थानान्तरित कर दिया (2 रा 17:31)। *देखें* अव्वा।

अशकलोन

अशकलोन

यूदीत 2:28 में अश्कलोन का एक वैकल्पिक रूप है। *देखें* अश्कलोन।

अशदोथ-पिसगा

"पिसगा की ढलानों" का किंग जेम्स संस्करण (व्य.वि. 3:17; यहो 12:3; 13:20)। यह पिसगा पर्वत की ढलानों का उल्लेख करता है।

देखिए पिसगा पहाड़।

अशबे

अशबे

1 इतिहास 4:21 में एक परिवार का नाम है। यह नाम सम्भवतः परिवार के निवास स्थान से संबंधित है।

*देखें*बेत-अशेब।

अशबेल, अशबेलियों

बिन्यामीन के पुत्र जो अपने दादा याकूब के साथ मिस्र चले गए (उत 46:21; 1 इति 8:1)। अशबेल के वंशज, अशबेलियों, मूसा की जंगल में जनगणना में शामिल थे (गिन 26:38)। अशबेल को यदीएल भी कहा जाता है (1 इति 7:6)।

अशरेला

अशरेला

आसाप के चार पुत्रों में से एक, जिसे दाऊद ने पवित्रस्थान में नबूवत और संगीत में सहायता करने के लिए चुना था (1 इति 25:2)। उसे 1 इतिहास 25:14 में यसरेला कहा गया है।

अशहूर

अशहूर

कालेब का पुत्र और तकोआ का पिता (1 इति 2:24; 4:5), या शायद तकोआ नामक नगर का बनाने वाला (2 शमू 14:1–3; आमो 1:1)।

अशीमा

अशीमा

एक देवता जिसकी उपासना हमात के लोगों ने की थी। यह स्पष्ट नहीं है कि वे लोग कहाँ से आए थे। उन्हें 722 ई. पू. में इस्राएल के पतन के बाद सामरिया में बसाया गया था (2 रा 17:30)।

अशुद्ध आत्माएँ

*देखें*दुष्टात्मा; दुष्टात्माग्रस्त होना।

अशुद्ध, अशुद्धता

*देखें*शुद्धता और अशुद्धता से सम्बन्धित नियम।

अशूरी

यह शायद आशेरी की वर्तनी का एक अलग तरीका है, जो आशेर के गोत्र का सदस्य है। अशूरी लोगों ने शाऊल की मृत्यु के बाद इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद के बजाय शाऊल के पुत्र ईशबोशेत का समर्थन किया (2 शमू 2:8–9)। यहेजकेल 27:6 में, इब्रीनी शब्द लोगों के दल के बजाय लकड़ी के एक प्रकार को सन्दर्भित करता है।

अशेरा

कनानी देवी के नाम, जो कनानी देवता बाल से सम्बन्धित थी (न्या 3:7; 1 रा 18:19)। ये शब्द उन लकड़ी के खम्भों को भी सन्दर्भित करते हैं जो इस देवी की उपासना के लिए खड़े किए गए थे।

*देखें*कनानी देवता और धर्म; उपवन।

अश्कनज

अश्कनज

येपेत के माध्यम से नूह का परपोता और गोमेर का पुत्र (उत 10:1–3; 1 इति 1:6)।

अश्कनज का उल्लेख यिर्म 51:27 में अरारात और मिन्नी के साथ किया गया है। यह सुझाव देता है कि अश्कनज स्किथियनों के पूर्वज थे, जो यिर्मयाह के समय अरारात क्षेत्र में रहते थे। स्किथियन अपनी सक्रियता और युद्धप्रियता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अश्शूर साम्राज्य के लिए समस्याएँ उत्पन्न कीं और उसके पतन में सहायता की।

आजकल, "अश्कनजी" शब्द (अश्कनज का बहुवचन रूप) का एक अलग अर्थ है। यह उन यहूदी लोगों को संदर्भित करता है जो अपनी मातृभूमि को छोड़ने के बाद मध्य और पूर्वी यूरोप में बस गए। यह सेफ़ारदीम से भिन्न है, जो यहूदी लोग हैं और स्पेन और पुर्तगाल में बस गए।

अश्कलोन

यह एक प्राचीन नगर है। इसे अस्केलोन भी कहा जा सकता है।

बाइबल में, अश्कलोन पांच मुख्य पलिश्ती नगरों में से एक था, जिसे "पेंटापोलिस" के नाम से जाना जाता था, अन्य चार नगर गाजा, अश्दोद, गत और एक्रोन थे (यहो 13:3)। यह भूमध्य सागर के तट पर स्थित था, आधुनिक तेल अवीव के दक्षिण में लगभग 30 मील या 48 किलोमीटर की दूरी पर। अश्कलोन हमेशा एक महत्वपूर्ण बंदरगाह रहा। इसका अक्सर मिस्र के

साथ संघर्ष होता था और इसे लगभग 1286 ई. पू. में रामसेस द्वितीय द्वारा और लगभग 1220 ई. पू. में मर्नेप्टाह द्वारा कब्जा कर लिया गया था।

अश्कलोन का उल्लेख यहूदा द्वारा जीते गए नगरों में से एक के रूप में किया गया है (न्या 1:18)। जब पलिश्तियों ने 12वीं शताब्दी ई. पू. में कनान पर आक्रमण किया, तो यह उनके प्रमुख केन्द्रों में से एक बन गया। जब शिमशोन की पहेली को उनकी पलिश्ती पत्नी के छल के कारण हल कर लिया गया, तो उसने अश्कलोन में 30 लोगों को मारकर अपना गुस्सा निकाला (न्या 14:19)। यह नगर दान के गोत्र को उनकी भूमि से हटाने के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार था, इसलिए शिमशोन, जो उस गोत्र से थे, सम्भवतः इसके खिलाफ नाराजगी रखते थे।

अश्कलोन का उल्लेख पलिश्तियों द्वारा पवित्र सन्दूक के नियंत्रण की घटना में भी मिलता है (1 शमू 4–6)। जब शाऊल और योनातान मारे गए, तो दाऊद ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया और कहा कि उनकी मृत्यु का समाचार अश्कलोन में नहीं सुनाया जाना चाहिए (2 शमू 1:20)। विभिन्न पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता भी अश्कलोन का उल्लेख करते हैं (यिर्म 25:20; 47:5–6; आमो 1:8; सप 2:4–7; जक 9:5)।

इस्राएल के पतन के दौरान, इस्राएल के राजा पेकह, दमिश्क के राजा रसीन, और अश्कलोन के राजा ने अश्शूर के खिलाफ विद्रोह किया। अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने 734 से 732 ई. पू. तक तीन लगातार अभियानों के साथ प्रतिक्रिया दी, जिनमें से पहले ने अश्कलोन को जीत लिया।

बाद में, नबूकदनेस्सर ने नगर को नष्ट कर दिया और 604 ई. पू. में फिलिस्तीन पर अपनी विजय के दौरान इसके कई निवासियों को मिस्र भेज दिया। समय के साथ, विभिन्न समूहों ने नगर पर नियंत्रण कर लिया, जिनमें स्किथियन, कसदी, फारसी, यूनानी और मक्कबी शामिल थे।

अश्कलोन हेरोदेस महान का जन्मस्थान था, और उसके भवन परियोजनाओं के अवशेष अभी भी वहां पाए जाते हैं। हालांकि अश्कलोन का उल्लेख नए नियम में नहीं है, यह ईस्वी 66 में रोम के खिलाफ यहूदियों के विद्रोह के दौरान एक युद्धभूमि था।

अश्कलोन के लोग

पलिश्ती नगर अश्कलोन के निवासी (यहो 13:3)। *देखें* अश्कलोन।

अश्तरते

अश्तरते

एक अन्यजाति माता-देवी, जिनकी प्राचीन पश्चिम एशिया में व्यापक रूप से पूजा की जाती थी। उन्हें अश्तोरेत के नाम से भी जाना जाता था।

*देखें*कनानी देवी-देवता और धर्म।

अश्तारोत , अश्तारोती

अश्तारोत, अश्तारोती

बाशान का एक नगर, जो राजा ओग का घर था, साथ ही एद्रेई भी (व्य.वि.1:4; यहो 9:10; 12:4; 13:12, 31)।

अश्तारोत, अश्तरत का बहुवचन रूप है, जो एक कनानी उर्वरता देवी का नाम है जिसकी वहाँ उपासना की जाती थी। जब ओग को इस्राएलियों द्वारा पराजित किया गया (व्य.वि. 3:1–11), तो मूसा ने अश्तारोत को मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया (यहो 13:12, 31; व्य.वि. 3:13)। बाद में, यह एक लेवीय नगर बन गया जहाँ गेर्शोमियों का निवास था (1 इति 6:71)।

अश्तारोत्कनम (उत 14:5) संभवतः अश्तारोत के समान ही नगर है। इसका स्थान आमतौर पर आधुनिक टेल अश्ताराह के रूप में पहचाना जाता है, जो गलील सागर के 21 मील या 34 किलोमीटर पूर्व में है। 1 इतिहास 11:44 में, दाऊद के एक वीर पुरुष, उज्जियाह को अश्तारोती कहा गया है।

अश्तारोत्कनम

अश्तारोत्कनम

एक शहर जहाँ चार राजाओं के गठबंधन का नेतृत्व कदोर्लाओमेर, एलाम के राजा ने किया, जिन्होंने रपाईम के दानवों को हराया (उत 14:5; तुलना करें व्य.वि. 3:11)। यह क्षेत्र प्रभु द्वारा अब्राहम और उनके वंशजों को दिया गया था (उत 15:18–20)। यह संभवतः अश्तारोत के समान है।

*देखें*अश्तारोत, अश्तारोती।

अश्तारोथ

अश्तारोथ का किंग जेम्स संस्करण के रूप में जाना जाता था। यह एक नगर था जो देवी अश्तोरेत की मूर्तिपूजा के लिए प्रसिद्ध था (व्य.वि. 1:4)।

*देखें*अश्तारोत, अश्तारोथ।

अश्तोरेत

एक अन्यजाति देवी जिसकी प्राचीन निकट पूर्व में व्यापक रूप से उपासना की जाती थी (1 रा 11:5, 33; 2 रा 23:13)। उसे अष्तोरेत भी कहा जाता था।

*देखें*कनानी देवता और धर्म।

अश्दोद, अश्दोदियों, अश्दोदी

पलिश्तियों के पाँच मुख्य नगरों में से एक, जिसे "पेंटापोलिस" भी कहा जाता है। अन्य चार नगर गाज़ा, अश्कलोन, गत और एक्रोन हैं (यहो 13:3)।

यह एक महत्वपूर्ण स्थान पर था, जो याफा और गाज़ा के बीच, तट के पास, तीन मील (4.8 किलोमीटर) अन्दर था। इसका प्राचीन बन्दरगाह, अश्दोद याम, एक महत्वपूर्ण समुद्री बन्दरगाह था, जो बाद में खुद अन्तर्देशीय शहर से बड़ा हो गया। अश्दोद में हुई खुदाई के द्वारा इसके प्रारम्भिक कनानी कब्जे को 17वीं शताब्दी ईसा पूर्व में प्रगट किया गया। जब इस्राएली कनान में प्रवेश किए, तो अश्दोद पर अनाकवंशियों का जो एक विशाल (लम्बी) जाति थी उनका कब्जा था, (यहो 11:21–22)। परन्तु इसे यहूदा के गोत्र को सौंपा गया था, प्रारम्भ में इस पर जय नहीं प्राप्त किया गया था (यहो 15:46–47)। अश्दोद के लोगों को अश्दोदि कहा जाता था (यहो 13:4; नहे 4:7)।

बारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व में समुद्री लोगों का आक्रमण हुआ, जिसमें पलिश्ती भी शामिल थे, जिन्होंने अश्दोद को नाश कर दिया। बाद में इसे फिर से बसाया गया और एक प्रमुख पलिश्ती शहर के रूप में विकसित किया गया। पुरातत्वविदों ने अश्दोद में पलिश्तियों के रहने के तीन स्तर पाए हैं। ये खोजें हमें बताती हैं कि पलिश्ती कैसे रहते थे।

याजक एली के समय में, पलिश्तियों ने वाचा का सन्दूक पकड़ लिया और उसे अश्दोद में अपने देवता दागोन के मन्दिर में रखा, और बाद में गत और एक्रोन में भी रखा (1 शमू 5)। जहाँ भी सन्दूक ले जाया गया, वहाँ एक गिलटियाँ फैल गई, इसलिए पलिश्ती शासकों ने इसे सोने की भेंट के साथ वापस कर दिया (1 शमू 6:1–18)। दाऊद और सुलैमान के नियंत्रण में होने के बावजूद, अश्दोद पूरी तरह से तब तक नहीं जीता गया जब तक यहूदा के राजा उज्जियाह ने लगभग 792–740 ईसा पूर्व में इसके विरुद्ध युद्ध शुरू नहीं किया (2 इति 26:6)।

उज्जियाह के शासन के बाद, यह शहर स्वतंत्र हो गया क्योंकि यहूदा का प्रभाव कम हो गया था। अश्दोद ने अश्शूरी आक्रमणों का विरोध किया जब तक कि इसे अंततः 711 ईसा पूर्व में सर्गोन द्वितीय द्वारा नाश नहीं कर दिया गया। इस विनाश का समर्थन पुरातत्वविदों (जो पुराने वस्तुओं का अध्ययन करते हैं) द्वारा मिली चीजों से होता है। इनमें से एक चीज एक पत्थर का खम्भा है जिस पर लेखन है। यह खम्भा बाजालत (एक गहरे, कठोर पत्थर) का बना है। यह सर्गोन के बारे में बताता है और 1963 में अश्दोद शहर में पाया गया था। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने पहले यहूदा को अश्दोद, मिस्र, या कूश पर अश्शूरियों के विरुद्ध सहयोगी के रूप में निर्भर न रहने की चेतावनी दी थी (यशा 20)। पुरातत्वविदों ने अश्दोद में प्रमाण पाया है कि उज्जियाह और सर्गोन द्वितीय दोनों ने शहर के हिस्सों को सत्यानाश कर दिया था।

अश्दोद अश्शूरी नियंत्रण में तब तक रहा जब तक कि इसे मिस्र के फ़िरौन साम्तिक प्रथम ने नहीं जीत लिया। उन्होंने 664 से 609 ईसा पूर्व तक शासन किया। अश्दोद को 29 वर्षों की लम्बी घेराबन्दी के बाद कब्जा कर लिया गया, जो इतिहास में दर्ज सबसे लम्बी घेराबन्दी हो सकती है। इसके बाद, 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के पतन के समय के आसपास, नबूकदनेस्सर द्वितीय ने अश्दोद को जीत लिया और उसके राजा को बाबेल ले गया। यिर्मयाह और सपन्याह जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने अश्दोद और उसके लोगों के भाग्य की भविष्यद्वाणी की थी (यिर्म 25:20; सप 2:4)। अश्दोद के बचे हुए निवासियों ने बाद में नहेम्याह के यरूशलेम को पुनर्निर्माण करने के प्रयासों का विरोध किया, और उनकी कुछ स्त्रियों ने यहूदी पुरुषों से विवाह किया (नहे 4:7; 13:23–24)। भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने अश्दोद के लिए और अधिक विपत्ति की भविष्यद्वाणी की थी (जक 9:6)।

मक्काबियों के काल में (जब मक्काबी शासन कर रहे थे), उस समय अश्दोद के नाम से प्रसिद्ध नगर पर यहूदा और योनातन मक्काबी ने उसकी मूर्तिपूजा के कारण आक्रमण किया, लूटा और नाश कर दिया (1 मक 4:12–15; 5:68; 10:77–85; 11:4)। बाद में 63 ईसा पूर्व में पोम्पे ने इस नगर को स्वतंत्र किया और इसे अराम के रोम प्रान्त का हिस्सा बना दिया। हेरोदेस महान ने अपनी मृत्यु के बाद इस नगर को अपनी बहन सलोमी को उपहार स्वरूप दे दिया।

नए नियम में उल्लेख है कि सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस ने अश्दोद में मसीह के बारे में प्रचार किया (प्रेरि 8:40)। चौथी शताब्दी ईस्वी में, प्रारम्भिक मसीही इतिहासकार यूसेबियस ने इसे एक महत्वपूर्ण नगर के रूप में पहचाना, जहाँ चौथी से छठी शताब्दी तक मसीही अध्यक्ष निवास करते थे। परन्तु, मध्य युग के दौरान, अश्दोद, या अश्दोद, का पतन हुआ और अब यह एक छोटा गाँव है जिसका नाम एसदुद है।

अश्दोद लगभग तीन मील (4.8 किलोमीटर) अन्दर स्थित था, लेकिन इसका एक अलग बन्दरगाह था जिसे अश्दोद याम, या अशदोद-ऑन-द-सी के नाम से जाना जाता था। समय के साथ, यह तटीय शहर अन्तर्देशीय शहर से बड़ा हो गया। बन्दरगाह पर की गई पुरातात्विक खुदाई में कनानी, इस्राएली

और यूनानीकरण काल के निवास के विभिन्न स्तरों का पता चला है। एक उल्लेखनीय खोज में एक यूनानीकरण रंगाई सुविधा शामिल है जहाँ मुरेक्स शंख से बैंगनी रंग का उत्पादन किया जाता था, जो राजाओं और धनी लोगों द्वारा कपड़ों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक विलासिता रंग था। यह बन्दरगाह अरबी काल तक उपयोग में रहा। आज, प्राचीन अश्दोद याम के स्थल के पास एक आधुनिक बन्दरगाह स्थापित किया गया है।

अश्ना

अश्ना

यहूदा के गोत्र को इस्राएल द्वारा कनान पर विजय प्राप्त करने के बाद जो दो नगर मिले, उनके नाम (यहो 15:33, 43)। दोनों नगरों का स्थान अज्ञात है, परन्तु ये दोनों यहूदा और फिलिस्तिया को अलग करने वाले निचले इलाकों में स्थित थे। हालांकि फिलिस्तीनी अक्सर इस क्षेत्र में सक्रिय रहते थे, वे कभी भी इसकी पूर्वी सीमा से आगे नहीं बढ़े।

अश्पनज

अश्पनज

नबूकदनेस्सर के अधीन एक अधिकारी जो राजभवन के कर्मचारियों के प्रभारी थे (दानि 1:3)। अश्पनज दानिय्येल और उनके मित्रों को राजा का भोजन खाने के लिए मजबूर करना चाहते थे। अन्यजाति का भोजन खाना परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन होता। आखिरकार, उन्होंने उन्हें अपने हिसाब से खाने की अनुमति दे दी (दानि 1:8–16)।

तीन साल बाद, अश्पनज ने युवकों को राजा के सामने प्रस्तुत किया। नबूकदनेस्सर ने उन्हें अत्यन्त बुद्धिमान और विवेकशील पाया, यद्यपि उन्होंने माँस नहीं खाया था और ना ही राजसी भोज में भाग लिया था (दानि 1:18–20)।

अश्वात

अश्वात

यपलेत का पुत्र, जो एक महान योद्धा था और आशेर के गोत्र में एक कुल का मुखिया था (1 इति 7:33)।

अश्शूर

एक इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद करना कठिन है। अंग्रेजी बाइबल में, इसका अनुवाद असीरिया, असीरियन, असीरियाई, या केवल "अश्शूर" के रूप में किया गया है। ये सभी अनुवाद असीरियाई शब्द *अश्शूर* से आते हैं।

1. उत्पत्ति 10:11 के लिए असीरिया का शब्द। यह एक व्यक्ति नहीं है और इसका अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए: "उस देश से वह [निम्रोद] असीरिया में गया।" उस देश में, जो हिद्देकेल नदी के पूर्व में है, निम्रोद ने चार नगर बनाए: नीनवे, रहोबोतीर, कालह और रेसन।
2. शेम का पुत्र (उत 10:22; 1 इति 1:17)। यह पूरे असीरियाई लोगों का मतलब हो सकता है, या यह एक वास्तविक व्यक्ति हो सकता है। हालांकि, अन्य नाम जैसे अर्पक्षद, व्यक्तिगत व्यक्तियों को संदर्भित करते प्रतीत होते हैं, इसलिए अश्शूर को भी उसी तरह लिया जाना चाहिए (उत 10:24; 11:12)। यदि यह सत्य है, तो उन्होंने अश्शूर नगर की स्थापना की होगी, जिसका नाम उनके नाम पर रखा गया था। अश्शूर के देवता और राष्ट्र का नाम फिर उस नगर के नाम पर रखा गया होगा। *देखें* अश्शूर (स्थान).
3. अश्शूर शहर के मुख्य देवता।

अश्शूर (स्थान)

हिद्देकेल नदी के किनारे एक प्राचीन शहर, जहाँ लोग 2500 ई.पू. से निवास कर रहे थे। अश्शूर एक छोटा शहर था (बेबीलोन या नीनवे के आकार का एक-दसवाँ हिस्सा), लेकिन यह अश्शूरी राज्य की मातृभूमि और पहली राजधानी थी।

2000 ई.पू. तक अश्शूर एक व्यस्त नगर बन चुका था। इसका व्यापार आधुनिक तुर्की में स्थित कनिश नामक अश्शूरी उपनिवेश से होता था। अश्शूर सबसे शक्तिशाली तब बना जब यह प्राचीन अश्शूरी साम्राज्य के राजा शमशी-अदद प्रथम के अधीन था, जिन्होंने 1813 से 1781 ई.पू. तक शासन किया। उन्होंने उत्तरी मेसोपोटामिया (हिद्देकेल और फरात नदियों के बीच की भूमि) के अधिकांश हिस्से को नियंत्रित किया, जिसमें मारी नगर भी शामिल था।

बाद में, बेबीलोन के हम्मुराबी ने नियंत्रण लिया और 1792–1750 ई.पू. तक शासन किया। जब उन्होंने शमशी-अदद को

पराजित किया, तो अश्शूर की महत्ता कम हो गई। उस समय की जानकारी हमारे पास बहुत कम है।

दूसरी सहस्राब्दी के उत्तरार्द्ध में, अश्शूरी लोग पश्चिम एशिया में फिर से एक प्रमुख शक्ति बन गए। उन्होंने अपनी राजधानी किसी अन्य नगर में स्थानांतरित कर दी, लेकिन अश्शूर उनका पवित्र नगर बना रहा और उनके मुख्य देवता, जिन्हें अश्शूर ही कहा जाता था, का निवास स्थान भी रहा।

सैकड़ों वर्षों तक लोग यह नहीं जानते थे कि अश्शूर कहाँ था। 1800 के दशक में यह पता चला कि यह नगर इराक़ के क़लअत शेरगात नामक स्थान पर स्थित है। प्रथम विश्व युद्ध से पहले कई वर्षों तक जर्मन शोधकर्ताओं ने वहाँ खुदाई की। उन्होंने वहाँ से निम्नलिखित पाया:

- अनु-अदद के लिए एक मंदिर जिसमें एक दोहरा ज़िगुरात (सीढ़ीनुमा विशाल पिरामिड) था;
- एक राजमहल और अन्य इमारतें;
- महत्वपूर्ण प्राचीन अभिलेख, जिनमें बाबेली सृष्टि महाकाव्य का एक अश्शूरी विवरण शामिल था (यह एक प्राचीन कथा है कि कैसे संसार की शुरुआत हुई); और
- अश्शूरी कानून संहिता का एक हिस्सा (उनके समाज के लिए नियम)

यह भी देखें अश्शूर, अश्शूरी।

अश्शूर, अश्शूरी

प्राचीन साम्राज्य जिसे तीन से अधिक शताब्दियों तक पश्चिमी एशिया में आतंक और अत्याचार का प्रतीक माना जाता था। अश्शूर को इसका नाम छोटे नगर-राज्य अश्शूर से मिला, जो उत्तरी मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक) में हिद्देकेल नदी के पश्चिमी तट पर स्थित था। यह नगर सूर्य देवता अश्शूर (जिसे अशूर भी लिखा जाता है) की उपासना का केंद्र था। बाइबल में इब्रानी नाम अक्सर आता है और इसे अश्शूर (उत 2:14), (एज्रा 4:2; भज 83:8), या अश्शूरी के रूप में छोड़ दिया गया है (उत 10:11)। नाम का रूप, मूल रूप से अक्कादी भाषा से आता है।

मूल रूप से, अश्शूर उत्तरी मेसोपोटामिया में एक छोटा जिला था, जो हिद्देकेल नदी और ऊपरी ज़ाब, जो हिद्देकेल की एक सहायक नदी है, के बीच एक अपूर्ण त्रिकोण में स्थित था। अंततः अश्शूर ने उत्तरी सीरिया पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया, जिससे भूमध्य सागर तक एक मार्ग सुरक्षित हो गया और उपजाऊ मेसोपोटामिया के मैदान पर कब्जा कर लिया, जिससे अश्शूर क्षेत्र का विस्तार बाबुल के सभी हिस्सों तक फारस की खाड़ी तक हो गया।

इतिहास

आठवीं शताब्दी ई.पू. से पहले

तीसरी सहस्राब्दी ई.पू. के अंत तक, सुमेरियों ने अश्शूर के साथ व्यापार करना शुरू कर दिया था और उसके लोगों को सांस्कृतिक रूप से प्रभावित किया था। समय-समय पर सुमेरी राजा अश्शूर पर राजनीतिक नियंत्रण का दावा करते थे। अगाडे के सरगोन (लगभग 2350 ई.पू.) ने अश्शूर को अपनी राजनीतिक और वाणिज्यिक गतिविधियों के दायरे में लाया और जब अमोरियों ने उर के तीसरे राजवंश को उखाड़ फेंका और अपने राज्य स्थापित किए, तो उनमें से एक ने अश्शूर को अपने क्षेत्र में शामिल कर लिया। हम्मुराबी के काल में, जो पहले बेबीलोनी राजवंश के अंतिम महान राजाओं में से एक था (लगभग 2360–1600 ई.पू.), अश्शूरियों ने बाबुल साम्राज्य के लिए निर्माण सामग्री और अन्य वस्तुएँ प्रदान की।

अश्शूर और अनातोलिया में स्थित अश्शूरी उपनिवेश कानिश के बीच व्यापार अश्शूरी इतिहास के बहुत प्रारंभिक समय में शुरू हुआ। सामानों को एक समय में 200 गधों तक के कारवां द्वारा ले जाया जाता था। ऐसे व्यापार से आने वाली संपत्ति ने अश्शूर को आर्थिक रूप से बहुत मजबूत स्थिति में ला दिया।

अश्शूर वाणिज्यिक विकास के प्रारंभिक चरण के बाद एक लंबे पतन का दौर आया, जो 15वीं शताब्दी ई.पू. में समाप्त हुआ। उस समय अश्शूर को एक गैर-यहूदी लोग, मितानी राज्य के हुर्रियन (बाइबल के होरी) द्वारा अधीनता की स्थिति में ला दिया गया था। 14वीं शताब्दी में एक और अन्य गैर-यहूदियों, हित्तियों ने मितानी की शक्ति को उखाड़ फेंका। अश्शूर धीरे-धीरे फिर से उठने और प्राचीन पश्चिमी एशिया में एक महान शक्ति की भूमिका निभाने में सक्षम हो गया, मुख्यतः एक चतुर राजकुमार, अश्शूर-उबल्लित की नीतियों के माध्यम से। उसका शासन अश्शूर के सर्वोच्चता तक पहुँचने की लंबी प्रक्रिया की शुरुआत का प्रतीक था।

एनलिल-निरारी (1329–1320 ई.पू.), अश्शूर-उबल्लित का पुत्र और उत्तराधिकारी, ने बाबुल पर आक्रमण किया और कुरीगल्जू द्वितीय, बाबुल के कास्साइट राजा (1345–1324 ई.पू.) को पराजित किया। अदद-निरारी प्रथम (1307–1275 ई.पू.) ने बाबुल में कास्साइट्स पर विजय प्राप्त करके अश्शूर की प्रभावशीलता को बढ़ाया। उन्होंने उत्तर-पश्चिम में भी क्षेत्र जोड़ा।

पहले अश्शूर साम्राज्य में एकीकरण और विस्तार की अवधि का चरमोत्कर्ष तब हुआ जब तुकुल्ती-निनुर्ता प्रथम (1244–1208 ई.पू.) ने बाबुल पर कब्जा कर लिया, जिससे पहली बार

बाबुल, अश्शूर शासन के अधीन आ गया। हालांकि, उस चरमोत्कर्ष के बाद अश्शूर शक्ति में गिरावट आई।

लगभग 1200 से 900 ई.पू. के तीन शताब्दियों को विभिन्न लोगों जैसे यूनानी, पलिश्ती, अरामी और इब्रियों के आंदोलनों द्वारा चिह्नित किया गया था। यूरोप से प्रवास कर रहे लोगों के दबाव में, हित्ती साम्राज तेजी से ढह गया, जिसने पहले एशिया के उपद्वीप को राजनीतिक स्थिरता दी थी और व्यापार मार्गों की रक्षा की थी। 1200 ई.पू. तक यह यूनानी मुख्यभूमि से आने वाले समुद्री लोगों के हमलों के कारण गिर गया।

ई.पू. दसवीं शताब्दी के दौरान, अश्शूर ने धीरे-धीरे पुनः उन्नति करना शुरू किया। अदद-निरारी द्वितीय (911–891 ई.पू.) के शासनकाल में, अश्शूर ने फिर से एक प्रमुख आर्थिक और सैन्य विस्तार का युग शुरू किया। अगले 60 वर्षों तक अश्शूर राजाओं ने अदद-निरारी की नीतियों का पालन करते हुए उसके कार्य को मजबूत करने की एक सुसंगत नीति अपनाई। अशुर्नासिरपाल द्वितीय (885–860 ई.पू.) को अश्शूर इतिहास के उस नए युग का पहला महान सम्राट माना जाता है। उनके पास उनके उत्तराधिकारियों के सभी गुण और दोष अत्यधिक मात्रा में थे। उनके पास एक निर्दयी, अथक साम्राज्य निर्माता की महत्वाकांक्षा, ऊर्जा, साहस, घमंड और भव्यता थी। अशुर्नासिरपाल की पहली गतिविधियाँ पूर्व की ओर पर्वतीय क्षेत्र में निर्देशित थीं, जहाँ उन्होंने पर्वतीय लोगों के बीच अश्शूर का नियंत्रण बढ़ाया। पश्चिम में उन्होंने अरामियों को विशेष क्रूरता के साथ अधीन किया और एशिया के उपद्वीप में भी ऐसा ही किया।

शल्मनेसेर तृतीय बाइबल जगत के इतिहासकारों के लिए कारकर की लड़ाई (853 ई.पू.) के लिए प्रसिद्ध है, जिसे प्राचीन विश्व की सबसे पूर्ण रूप से प्रलेखित घटना माना जाता है। उन्होंने सीरिया पर आक्रमण किया, जिसका सामना दमिश्क के बेन-हदद के नेतृत्व में एक गठबंधन ने किया, जिसमें इस्राएल के राजा अहाब और कई अन्य राज्यों का समर्थन था। चूंकि शल्मनेसेर अपना विरोध करने वाले 60,000 सैनिकों को परास्त करने में असमर्थ थे, इसलिए दमिश्क और सामरिया को जीतने में अश्शूरियों को कई वर्षों का समय लगा। इस्राएल के राजा येहू (841–814 ई.पू.) को, जिन्होंने बाद में लड़ाई के बजाय भेंट देना चुना, शायद एक दूत द्वारा शल्मनेसेर तृतीय के काले स्मारक स्तम्भ पर दर्शाया गया है, जिसे शल्मनेसेर की राजधानी शहर, कालह (अब निमरूद कहा जाता है) में खुदाई में निकाला। येहू को अश्शूर सम्राट के चरणों में भूमि को चूमते और चांदी, सोना और सीसे के बर्तन की भेंट अर्पित करते हुए चित्रित किया गया है।

अपने शासन के अंत की ओर शल्मनेसर को कुछ प्रमुख अश्शूर शहरों द्वारा विद्रोह को दबाना पड़ा। उनके उत्तराधिकारी, शम्शी-अदद पंचम (823–811 ई.पू.) ने उनका स्थान लिया। शम्शी-अदद के पुत्र अदद-निरारी तृतीय (810–782 ई.पू.) ने कालह में एक नया महल बनवाया और 804 ई.पू. में दमिश्क (सीरिया) के राजा हज़ाएल पर आक्रमण किया। सीरियाई लोगों पर अश्शूर दबाव बेशक इस्राएल के लिए राहत थी, जिसे हज़ाएल द्वारा उत्पीड़ित किया गया था (2 रा 13:22–25)।

आठवीं शताब्दी से कर्कमिश की लड़ाई तक (605 ई.पू.)

लगभग 800 ई.पू. से उरारतु (अरारात) का प्रभाव बढ़ने लगा, विशेष रूप से उत्तरी सीरिया में, अश्शूर की कीमत पर। अगले पचास वर्षों में अश्शूर की समृद्धि में भारी गिरावट देखी गई। 746 ई.पू. में, कालह शहर में एक विद्रोह के दौरान, पूरे शाही परिवार की हत्या कर दी गई।

अश्शूर शक्ति के अंतिम चरण की स्थापना सूदखोर तिग्लत्पिलेसेर तृतीय (745–727 ई.पू.) द्वारा की गई थी, जिन्हें उनके अपनाए गए बाबुली सिंहासन-नाम पुल (2 रा 15:19; 1 इति 5:26) से भी जाना जाता है। उनके शासनकाल ने उस प्रक्रिया की शुरुआत की जिसके द्वारा अश्शूर ने अपने सभी क्षेत्रों पर नियंत्रण पुनः प्राप्त किया और पश्चिमी एशिया में प्रमुख सैन्य और आर्थिक शक्ति के रूप में स्वयं को दृढ़ता से स्थापित किया। तिग्लत्पिलेसेर ने पहले उत्तर में पर्वतीय दर्रों पर नियंत्रण सुनिश्चित किया ताकि उस दिशा से आक्रमण के खतरे को समाप्त किया जा सके। इसके बाद उन्होंने पश्चिम में सीरिया और फिलिस्तीन को अधीन किया और मिस्र और भूमध्य सागर की सड़क पर नियंत्रण प्राप्त किया। अंततः, कूटनीति के माध्यम से, उन्होंने बाबुल के सिंहासन को भी प्राप्त किया। पुल के नाम से उन्होंने बाबुल का शासन किया, जिससे दो अलग-अलग नामों के साथ एक शासक के अधीन दो मुकुटों की अद्वितीय स्थिति उत्पन्न हुई। उनकी राजनीतिक सूझबूझ आमतौर पर निर्दयी अश्शूर सम्राटों में नहीं पाई जाती थी।

743 ई.पू. से तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने सीरिया और फिलिस्तीन में कई अभियानों का नेतृत्व किया। इस्राएल के राजा मनहेम (752–742 ई.पू.) ने उन्हें कर दिया (2 रा 15:19–20), जैसे कि सुर, बाइब्लोस और दमिश्क ने भी किया। 738 में उन्होंने हमाथ के उत्तर मध्य राज्य को अधीन कर लिया। यहूदा के राजा आहाज (735–715 ई.पू.) की अपील पर प्रतिक्रिया देते हुए, जो एक प्रस्तावित विरोधी-अश्शूर गठबंधन के दबावों का विरोध करने के लिए मदद मांग रहे थे, तिग्लत्पिलेसेर ने 732 में दमिश्क और एक दशक बाद इस्राएल के उत्तरी राज्य की राजधानी सामरिया को जीत लिया। दोनों अवसरों पर लोगों को अश्शूर में निर्वासित किया गया। 722 ई.पू. में सामरिया का पतन इस्राएल के राज्य के अंत का संकेत था।

सरगोन द्वितीय (722–705 ई.पू.) ने स्वयं को वह अश्शूरी शासक बताया जिसने सामरिया पर कब्जा किया, लेकिन बाइबल के लेखों ने इस कब्जे का श्रेय शल्मनेसेर को दिया (2 रा 17:2–6)। निर्वासन की नीति के साथ, सरगोन और उनके उत्तराधिकारियों ने उपनिवेशीकरण की नीति भी जोड़ी। जो

लोग बंदी बनाकर ले जाए गए थे, उनकी जगह लेने के लिए इन अश्शूरी राजाओं ने बाबुल, एलाम, सीरिया और अरब से जनजातियों को लाकर सामरिया और आसपास के क्षेत्र में बसाया। नए आगमन करने वाले लोग निर्वासन के बाद भूमि में बचे हुए स्थानीय लोगों के साथ मिल गए और सामरी कहलाए।

10 वर्षों तक सीरिया और एशिया के उपद्वीप में पश्चिम की ओर और उत्तर में उरारतु में अपने शत्रुओं के खिलाफ युद्ध करने के बाद, सरगोन ने बाबुल पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उसने बरोदक-बलदान II (721–710 ई.पू.; पुष्टि करें 2 रा 20:12–19; यशा 39:1) को एलाम तक खदेड़ा और 709 में स्वयं को बाबुल का राजा बना लिया। उसने अपने लिए एक नया राजधानी शहर, दुर-शारुकिन (खोरसाबाद) नीनवे के पास बनाना शुरू किया, लेकिन इसके पूरा होने से पहले युद्ध में मारा गया।

सरगोन के बाद उसके पुत्र सन्हेरीब (705–681 ई.पू.) ने शासन संभाला, जो अपने शासनकाल के दौरान कई कटु युद्धों में व्यस्त रहा। वह विशेष रूप से बाइबल अध्ययन में यहूदा के खिलाफ अपने अभियान और राजा हिजकिय्याह (715–686 ई.पू.) के शासनकाल के दौरान यरूशलेम की घेराबंदी और भविष्यवक्ता यशायाह की सेवकाई के लिए जाना जाता है (2 रा 18:13–19:37; यशा 36–37)। इसी संकट के दौरान प्रसिद्ध शीलोहाम सुरंग का निर्माण किया गया था, जो शहर की दीवार के बाहर गिहोन के झरने से शीलोहाम के कुंड तक पानी लाने के लिए बनाई गई थी (2 रा 20:20)।

सन्हेरीब की 681 ई.पू. में हत्या कर दी गई थी और उसका उत्तराधिकारी एसर्हद्दोन बना, जिसने मिस्र पर अश्शूर नियंत्रण स्थापित करने का असफल प्रयास किया। एसर्हद्दोन के बाद ओस्नप्पर (अशुरबेनीपाल) (669–626 ई.पू.) आया, जिसने नो-अमोन (थीब्स) पर कब्जा कर लिया, इस प्रकार अश्शूर इतिहास में सबसे बड़ी विजय प्राप्त की (पुष्टि करे नहू 3:3–10)। ओस्नप्पर (अशुरबेनीपाल) ने नीनवे में एक महान पुस्तकालय की स्थापना की, जिसकी 1860 में खुदाई की गई। कई पट्टिकाएँ मिली, जो बेहतरीन मिट्टी से बनी थीं और आकार में 1 से 15 इंच (2.5 से 38 सेंटीमीटर) तक थीं, जिनमें अक्कादी सामग्री का विशाल चयन था। कुछ पट्टिकाओं में ऐतिहासिक लेख हैं; अन्य में खगोलीय जानकारी, गणितीय गणनाएँ और निजी या सार्वजनिक पत्र हैं। संग्रह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ज्योतिष और चिकित्सा से संबंधित है। कई पट्टिकाओं में प्रार्थनाएँ, मंत्र, भजन और सामान्य धार्मिक ग्रंथ हैं। सृष्टि के बाबुली विवरण की एक प्रति भी मिली। यह पुस्तकालय अब लंदन के ब्रिटिश म्यूज़ियम के प्रमुख खजानों में से एक है।

ओस्नप्पर (अशुरबेनीपाल) के शासनकाल के बारे में 639 ई.पू. के बाद बहुत कम जानकारी है क्योंकि उसके अभिलेख उस वर्ष से आगे नहीं बढ़ते। हालांकि, उसके अंतिम 13 वर्षों की घटनाओं के बारे में कुछ जानकारी राज्य पत्राचार, वाणिज्यिक दस्तावेजों और देवताओं को संबोधित प्रार्थनाओं में संकेतों से प्राप्त की जा सकती है। स्पष्ट रूप से, अश्शूर में स्थिति तेजी से गंभीर होती जा रही थी और जब ओस्नप्पर (अशुरबेनीपाल) का 626 में निधन हुआ, तो उसका साम्राज्य तेजी से गिरावट की ओर बढ़ गया।

मादियों ने अश्शूर के इतिहास में एसर्हद्दोन के शासनकाल के दौरान प्रवेश किया, जब वे अभी भी कई संबंधित लेकिन अलग-अलग जनजातियों का समूह थे। बाद में उन जनजातियों को एक एकल राज्य में मिलाया जाने लगा। हेरोडोटस बताते हैं कि उनके राजा फ्रायोर्टेस ने अश्शूर पर हमला किया लेकिन युद्धभूमि में अपनी जान गंवा दी और उसके पुत्र सियाक्सेरेस ने उनका स्थान लिया।

ई.पू. 626 वर्ष ने प्राचीन विश्व में कई महत्वपूर्ण घटनाओं को चिह्नित किया। नबोपोलासर, एक कसदी राजकुमार, उस वर्ष के अंत में बेबीलोन के राजा बने (ई.पू. 626–605)। मादी और नबोपोलासर के बीच एक गठबंधन हुआ, और उस समय से नबोपोलासर की अश्शूर के खिलाफ सफलता लगभग अनिवार्य थी। ई.पू. 617 तक उन्होंने बेबीलोन को सभी अश्शूर छावनियों से मुक्त कर दिया था। फिर उन्होंने फारत के किनारे अरामी जिलों की ओर कूच किया, जो दो और आधे शताब्दियों से अश्शूरी साम्राज्य का हिस्सा थे। योजना थी कि नबोपोलासर पश्चिम से नीनवे पर आक्रमण करें और मादी उसी समय पूर्व से आक्रमण करें; हालांकि, अश्शूर और मिस्रियों की संयुक्त सेनाओं, जो अब सहयोगी थे, ने नबोपोलासर को बेबीलोन लौटने के लिए मजबूर कर दिया।

614 ई.पू. में मादियों ने अश्शूर पर एक बड़ा हमला किया। हालांकि नीनवे हमले के लिए बहुत मजबूत था, मादियों ने कुछ पड़ोसी शहरों को जीत लिया, जिनमें प्राचीन राजधानी अश्शूर भी शामिल था। उसी समय नबोपलासर बाबुल की सेनाओं के साथ पहुंचा। उसने अश्शूर में साइक्सरेस से मुलाकात की और उन्होंने आपसी मित्रता और शांति स्थापित की। उनके गठबंधन की पुष्टि बाद में नबूकदनेस्सर, नबोपलासर के पुत्र और साइक्सरेस की पुत्री एमिटिस के विवाह से हुई। 612 ई.पू. में उनकी संयुक्त सेनाओं ने नीनवे पर अंतिम हमला किया और तीन महीने की घेराबंदी के बाद वह शक्तिशाली शहर गिर गया (नहू 1:8)।

अपनी राजधानी खोने के बावजूद, एक कमजोर अश्शूर साम्राज्य तीन और वर्षों तक जीवित रहा। जो अश्शूरी सैनिक नीनवे से भागने में सफल हुए, वे पश्चिम की ओर हारान भाग गए, जहाँ एक अश्शूर राजकुमार, अश्शूर-उबल्लित को राजा बनाया गया और उन्होंने अश्शूर के राजत्व को पुनः स्थापित करने के लिए मिस्र की सहायता मांगी। नको द्वितीय (609–593 ई.पू.), जिन्हें बाइबल में नको के नाम से जाना जाता है, ने उत्तर दिया और अपने मिस्री सैनिकों के साथ बाबुलियों के

खिलाफ लड़ने के लिए हारान की ओर प्रस्थान किया, जिन्होंने अब तक अश्शूर का विनाश कर दिया था। यहूदा के राजा योशिय्याह (640–609 ई.पू.), जिन्होंने संभवतः स्वयं को अश्शूर के उत्तराधिकारी, नव-बाबुलिया का जागीरदार माना, मिस्री अग्रिम का विरोध करने के लिए गया और मेगिद्दो के युद्धक्षेत्र में एक तीर से घातक रूप से घायल हो गया (2 रा 23:29–30; 2 इति 35:20–24)।

जब नबोपोलासर और उनके सहयोगियों ने 610 ई.पू. में हारान पर हमला किया, तो अश्शूर-उबल्लित ने इसे बचाने का प्रयास नहीं किया बल्कि नको और उनकी सेना की प्रतीक्षा करने के लिए दक्षिण-पश्चिम की ओर भाग गया। मिस्रियों और अश्शूरियों की संयुक्त सेनाएँ हारान पर हमला करने के लिए लौटीं और कुछ प्रारंभिक सफलता प्राप्त की। लेकिन नबोपोलासर की सेना ने अश्शूर-मिस्री सेनाओं को घेराबंदी छोड़ने और कर्कमिश (वर्तमान में जराब्लुस) की ओर पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। वहाँ, नबूकदनेस्सर के नेतृत्व में, बाबुलियों ने शक्तिशाली सेना पर सीधा हमला किया। दोनों पक्षों पर हुए भीषण नरसंहार का वर्णन भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने किया (46:1–12)। नबूकदनेस्सर कर्कमिश की लड़ाई (605 ई.पू.) में विजयी हुआ। हालांकि, अपने पिता की मृत्यु के कारण, उसने अपनी विजय का पीछा नहीं किया बल्कि सिंहासन ग्रहण करने के लिए बाबुल लौट गया।

अश्शूर मसीही कलीसिया में एक परंपरा है कि मादी और नव-बेबीलोनियों के हमले के तहत अश्शूर साम्राज्य के पतन के बाद, अश्शूर लोगों के एक अवशेष ने—मुख्य रूप से राजकुमार, कुलीन और योद्धा—कुर्दिस्तान के पहाड़ों में शरण ली। वहाँ उन्होंने कई सशस्त्र किले बनाए। सिकंदर महान (336–323 ई.पू.), उनके उत्तराधिकारी और रोमी सेना ने इन जनजातियों को जीतने का कोई प्रयास नहीं किया। ट्राजन (ई. 98–117) रोमी सेनाओं के प्रमुख के रूप में आर्मेनिया के माध्यम से जाते हुए, कुर्दिस्तान के उत्तरी क्षेत्र को छूते हुए, फारस की ओर गए। यह कहा जाता है कि बुद्धिमान पुरुष या ज्योतिषी, जिन्होंने बैतलहम में नवजात राजा, शिशु यीशु का दौरा किया, वे एडेसा से आए थे। इस परंपरा के अनुसार, ज्योतिषी, बैतलहम से लौटने पर, राजा की यात्रा पर सुनी और देखी गई अद्भुत बातों की घोषणा की। अश्शुरी लोगों के बीच एक मसीही कलीसिया की स्थापना की गई जो सदियों से जीवित है।

जो क्षेत्र अश्शूर था, जिसमें पूरा मेसोपोटामिया शामिल है, वह वर्तमान में इराक के भीतर है, जो एक अरबी-भाषी देश है और मुख्य रूप से मुस्लिम धर्म का पालन करता है।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; 1 और 2 राजाओं की पुस्तकें; मेसोपोटामिया.

अश्शूरनासिरपाल

अश्शूरनासिरपाल

1. अशुर्नासिरपाल प्रथम लगभग 1049 से 1031 ई.पू. तक अश्शूर के राजा रहे। उन्हें ऐतिहासिक अश्शूरी इतिहास में शमशी-अदद चतुर्थ के सही उत्तराधिकारी के रूप में जाना जाता है। शमशी-अदद चतुर्थ लगभग 1053 से 1050 ई.पू. तक राजा रहे। अशुर्नासिरपाल प्रथम अश्शूर देश के राजा तब बने जब देश दुर्बल स्तिथि में था। यह तिग्लत्पिलेसेर प्रथम के शासन के बाद हुआ, जो एक शक्तिशाली राजा थे। तिग्लत्पिलेसेर प्रथम लगभग 1115–1077 ई.पू. तक राजा रहे।

अश्शूरबनीपाल

2. अशुर्नासिरपाल द्वितीय 885 से 860 ई.पू. तक अश्शूर के राजा थे। वह तुकुल्टी-निनुर्ता द्वितीय के पुत्र थे, जो 890 से 885 ई.पू. तक अश्शूर के राजा रहे। उनके दादा, अदद-निरारी द्वितीय, 911 से 891 ई.पू. तक राजा रहे। उन्होंने नव-अश्शूरी काल की नींव रखी, जो 900–612 ई.पू. तक चला।

   अशुर्नासिरपाल द्वितीय, इस युग के पहले महान सम्राट, ने मध्य फरात के साथ विद्रोही गोत्रों को कुचलकर अपनी स्थिति को मजबूत किया। इसके बाद उन्होंने 877 ई.पू. में सीरिया के विरुद्ध और फिर पलिश्तिनी क्षेत्रों के खिलाफ अभियानों का नेतृत्व किया। अपने वार्षिक वृत्तांत में, उन्होंने पलिश्ती तटीय नगरों से प्राप्त लूट का उल्लेख किया, जिसमें "सोना, चाँदी, टिन, तांबा...बड़े और छोटे बंदर, आबनूस, बोकसवुद और हाथीदांत" शामिल थे।
   अशुर्नासिरपाल का पश्चिम की ओर अभियान, सीरिया पर कई अश्शूरी आक्रमणों में से पहला था, जिसने अंततः इस्राएली सेनाओं को खतरे में डाल दिया। इस अभियान ने उन्हें एक क्रूर और निर्दयी अगुवा के रूप में प्रतिष्ठित किया, एक ऐसा विषय जो अक्सर उनके वार्षिक वृत्तांत में उल्लेखित होता है। कलह में मिली अशुर्नासिरपाल द्वितीय की एक मूर्ति उन्हें एक कठोर, अहंकारी तानाशाह के रूप में दिखाती है। उन्होंने अश्शूरी सेना को एक भयानक सैन्य शक्ति में बदल दिया।
   अशुर्नासिरपाल द्वितीय अपने शत्रुओं के प्रति क्रूर व्यवहार के लिए जाने जाते थे। अपने वार्षिक वृत्तांत में, उन्होंने दावा किया कि: "मैंने उनके योद्धाओं के सिर काट दिए और उन्हें उनके नगर के सामने एक स्तंभ में बदल दिया... मैंने सभी प्रमुख लोगों की खाल उतारी...और मैंने उनकी खालों से स्तंभ को ढक दिया; कुछ को मैंने स्तंभ के भीतर दीवार में बंद कर दिया, कुछ को मैंने स्तंभ पर खूंटे पर लटका दिया"। अन्य क्रूर और हिंसक कृत्यों में शामिल हैं:
   - कैदियों को जीवित जलाना
   - कैदियों के हाथ, नाक और कान काटना
   - आँखें निकालना
   - गर्भवती महिलाओं को काटना
   - कैदियों को प्यास से मरने के लिए रेगिस्तान में छोड़ देना

   अश्शूरनासिरपाल द्वितीय ने कलह (निमरूद) को अपना राजधानी शहर बनाया और 50,000 से अधिक कैदियों का इस्तेमाल करके इसका पुनर्निर्माण किया। ए.एच. लेयार्ड ने 1845 में निमरूद की खुदाई करते हुए शाही राजभवन के साथ कई बड़ी मूर्तियों की खोज की। अशुर्नासिरपाल द्वितीय के बाद 859 ई.पू. में उनके पुत्र शल्मनेसेर तृतीय ने शासन किया, जिन्होंने 35 वर्षों तक शासन किया।

   देखें अश्शूर, अश्शूरी।

अश्शूरबनीपाल

एसर्हद्दोन का पुत्र, अश्शूरबनिपाल 669–633 ई.पू. तक अश्शूर का राजा था। उसने उस समय शासन किया जब राजा मनश्शे, आमोन, और योशिय्याह दक्षिणी राज्य यहूदा पर शासन कर रहे थे। उत्तरी राज्य इस्राएल, जिसकी राजधानी सामरिया थी, 722 ई.पू. में एक अन्य शक्तिशाली अश्शूरी राजा, सर्गोन द्वितीय के हाथों पराजित हो गया था।

अपने जीवन के दौरान, अश्शूरबनीपाल को लगातार अपने साम्राज्य को बनाए रखने और बचाने के लिए बाबेल, फारस, सीरिया, और मिस्र के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ा। यद्यपि वह मुख्य रूप से संस्कृति में रुचि रखता था, उसने अपना अधिकांश समय और संसाधन यह सुनिश्चित करने में लगाया कि जीते हुए लोग नियन्त्रण में रहें, अपने भाई द्वारा नेतृत्व किए गए गृह युद्ध से निपटा, और लगातार सीमा संघर्षों को सम्भाला।

प्राचीन मेसोपोटामिया की संस्कृति के बारे में जो कुछ हम जानते हैं—जैसे उनका इतिहास, धर्म, किंवदंतियाँ, और कहानियाँ—वह अश्शूरबनीपाल द्वारा एकत्रित की गई कीलाक्षर पाठों से प्राप्त होता है। उसने इन पाठों को एक बड़े पुस्तकालय में संकलित किया, जिसे उसने अपनी राजधानी नीनवे में स्थापित किया। यह पुस्तकालय लगभग एक सदी पहले खोजा गया था और अब ब्रिटिश संग्रहालय में स्थित है। यह बाइबल अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है। अश्शूरबनीपाल का पुस्तकालय शायद उसकी सबसे महत्वपूर्ण विरासत है।

अश्शूरबनिपाल को वह अश्शूरी राजा माना जाता है जिसने विदेशियों को सामरिया में बसाया (एज्रा 4:10)। अश्शूरियों के लिए यह आम प्रथा थी कि वे जीते हुए लोगों को स्थानान्तरित करते थे, यही कारण है कि इस्राएल के दस गोत्र सर्गोन द्वितीय की विजय के बाद गायब हो गए। एज्रा 4:10 में, अश्शूरी राजा को ओस्नप्पर कहा गया है, जो इब्रानी वर्तनी का एक लिप्यंतरण है। इब्रीनी और अश्शूरी नामों के बीच समानता, साथ ही जीते हुए लोगों की सूची, यह सुझाव देती है कि अश्शूरबनिपाल सबसे सम्भावित व्यक्ति हैं।

630 ई.पू. तक, अश्शूरी साम्राज्य एकजुट रहने के लिए संघर्ष कर रहा था। अश्शूरबनिपाल की मृत्यु के बाद, अश्शूरी साम्राज्य बिखर गया। कई अश्शूरी सैनिक घर से दूर मारे गए थे, और भाड़े के सैनिक और बन्दी प्रभावी ढंग से नहीं लड़े। इस बीच, एशिया के बर्बर समूहों ने अश्शूर पर हमला किया, और बाबेल ने सफलतापूर्वक विद्रोह किया। मिस्र भी अश्शूरी नियन्त्रण से मुक्त हो गया। अश्शूरबनिपाल का पुत्र स्थिति को सम्भालने में असमर्थ रहा, और 20 वर्षों से भी कम समय में, दुश्मनों के एक कमजोर गठबन्धन ने नीनवे को घेर लिया और 612 ई.पू. में इसे नष्ट कर दिया। पास के हारान में कुछ प्रतिरोध था, परन्तु मादी सैनिकों ने इसे जल्दी से कुचल दिया। अश्शूर निर्दयता से शासन करने के बाद अन्ततः गिर गया।

अश्शूर के पतन के साथ, छोटे राज्य यहूदा को एक नया अवसर मिला। कुछ विद्वान मानते हैं कि अश्शूरबनिपाल राजा योशिय्याह के शासन के आठवें वर्ष के दौरान मरा (2 इति 34:3–7)। जैसे-जैसे अश्शूर ने अपनी शक्ति खोई, यहूदा स्वतः स्वतंत्र हो गया। युवा राजा योशिय्याह यहूदा के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण आत्मिक पुनरुत्थान और राजनीतिक सुधार शुरू करने और पूरा करने में सक्षम था।

*देखें*अश्शूर, अश्शुरी; पहली और दूसरी राजाओं की पुस्तक।

अश्शूरी, अश्शूरी लोग

अब्राहम और उनकी दूसरी पत्नी, कतूरा के वंशज, उनके पोते ददान के माध्यम से (उत 25:3)। अश्शूरी संभवतः अरब में रहते थे।

असरेल

असरेल

यहूदा के गोत्र से यहलेल का पुत्र (1 इति 4:16)।

असल्याह

असल्याह

मशुल्लाम का पुत्र और योशिय्याह के मंत्री शापान का पिता (2 रा 22:3; 2 इति 34:8)।

असल्याह

असल्याह

लूका 3:25 के अनुसार, नहूम का पिता और यीशु के पूर्वजों में से एक था।

*देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

असहस्त्राब्दीवाद

असहस्त्राब्दीवाद

यह एक विश्वास है कि प्रकाशितवाक्य 20 में वर्णित मसीह का हजार वर्षों का राज्य भविष्य की कोई शाब्दिक घटना नहीं है, बल्कि एक प्रतीकात्मक चित्र है। "हजार वर्ष" को वास्तविक समय नहीं, बल्कि रूपक के रूप में समझा जाता है। यह मसीह के प्रथम आगमन (उनका जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान) और उनके दूसरे आगमन (अंत समय) के बीच की पूरी अवधि का वर्णन करने का एक तरीका है। इस अवधि में मसीह आत्मिक रूप से कलीसिया पर राज्य कर रहे हैं।

*देखें*सहस्त्राब्दी।

असायाह

1. यहूदा के राजा योशिय्याह के एक शाही सेवक को नबिया हुल्दा के पास भेजा गया ताकि वह मन्दिर के नवीनीकरण में मिली व्यवस्था की पुस्तक के अर्थ के बारे में पूछ सकें (2 रा 22:12, 14; 2 इति 34:20)।
2. हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान गदोर (सम्भवतः गरार के नाम से भी जाना जाता है) में बसने वाले शिमोन के गोत्र का कुल अगुवा (1 इति 4:36)।
3. राजा दाऊद के समय के एक लेवी अगुवा। असायाह ने यरूशलेम में सन्दूक लाने में सहायता की (1 इति 6:30; 15:6, 11)।

4. शिलोनी का सबसे बड़ा बेटा, बंधुआई के बाद असायाह का परिवार यरूशलेम में बसने वालों में से पहला था (1 इति 9:5)। सम्भवतः यह वही मासेयाह है जो नहेम्याह 11:5 में उल्लेखित है। *देखें*मासेयाह #14।

असारामेल

यह एक रहस्यमय इब्रानी शब्द है जो इस्राएल के पदासीन महायाजक और यहूदा मक्काबी के भाई शमौन को समर्पित शिलालेख में पाया गया है। (1 मक्का 14:28)।

असारामेल के संभावित अर्थों में "परमेश्वर के लोगों का राजकुमार" या "परमेश्वर के लोगों की सभा" शामिल हैं। अपोक्रिफा के सीरियाई संस्करण में "एम" को हटाकर "इस्राएल" दिया गया है - जिससे वाक्य "इस्राएल में महान महायाजक शमौन के तीसरे वर्ष में" पढ़ा जाता है।

असाहेल

1. दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक योद्धा जिसे "तीस" के रूप में जाना जाता है (2 शमू 23:24; 1 इति 11:26)। असाहेल दाऊद की सौतेली बहन सरूयाह का पुत्र और योआब और अबीशै का भाई था (2 शमू 2:18; 1 इति 2:16)। गिबोन की लड़ाई में, दाऊद के सेनापति योआब ने इशबोशेत की सेना के अगुवा अब्नेर की सेनाओं का सामना किया। असाहेल ने, जो "हिरन की तरह दौड़ सकता था," अब्नेर का पीछा किया। उसके बाद हुई मुठभेड़ में, अब्नेर ने असाहेल को मार डाला (2 शमू 2:18–23, 32)।
2. यहूदा के राजा यहोशापात द्वारा लोगों को परमेश्वर की व्यवस्था सिखाने के लिए भेजे गए लेवियों में से एक (2 इति 17:8)।
3. राजा हिजकिय्याह द्वारा नियुक्त एक मन्दिर सहायक, जो लेवियों के समर्थन के लिए दिए गए दशमांश अर्पणों की देखभाल करता था (2 इति 31:13)।
4. योनातान का पिता। योनातान (शाऊल का पुत्र नहीं) ने बाबेल की बँधुआई के बाद कुछ यहूदियों की विदेशी (अन्यजाति) पत्नियों के बारे में कार्रवाई करने के लिए एक आयोग नियुक्त करने का विरोध किया (एज्रा 10:15)।

असिबियास

एक इस्राएली जिन्होंने बेबीलोन में निर्वासन के बाद एज्रा की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दे दिया (1 एस 9:26)। यह संभव है कि वह हशब्याह नामक व्यक्ति (एज्रा 10:25, जिसे "मल्किय्याह" भी कहा जाता है) के समान ही हो।

असीएल

असीएल

येहू का परदादा। येहू शिमोन के गोत्र में एक प्रधान था (1 इति 4:35, 38)।

असुंक्रितुस

असुंक्रितुस

रोम के मसीहियों में से एक जिसे पौलुस ने अभिवादन भेजा था (रोमियों 16:14)।

असुप्पिम

1 इतिहास 26:15, 17 में मन्दिर परिसर का एक हिस्सा, एक इब्रानी शब्द का लिप्यंतरण जिसका अर्थ है "भंडारगृह/कोठरी"।

*देखें*मन्दिर.

असुर

मंदिर के सेवकों में से एक, जिनके वंशज बेबीलोन की बँधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ वापस लौटे थे (1 एस 5:31)। नाम हर्हूर भी एज्रा 2:51 और नहेम्याह 7:53 में सूचीबद्ध है।

अस्त्याजेस

प्राचीन यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस के अनुसार, अस्त्याजेस मादियों के चौथे और अंतिम राजा थे। उन्होंने 35 वर्षों तक शासन किया, जब तक कि 550 ई.पू. में उनके फारसी पोते, कुस्रू द्वितीय ने उन्हें अपदस्थ न कर दिया। अस्त्याजेस ने एक स्वप्न में अपनी बेटी मंदाने की संतान की भविष्य की महानता के बारे में चेतावनी पाई थी। अपने सिंहासन की रक्षा के लिए, उन्होंने मंदाने का विवाह फारसी राजवंशीय रक्त वाले कम्बाइसेस प्रथम से करवा दिया, क्योंकि उस समय फारसी अपेक्षाकृत कमजोर थे। अस्त्याजेस ने अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उनके पुत्र, कुस्रू को जंगल में छोड़ने की योजना बनाई। हालाँकि, कुस्रू को एक ग्वाले ने बचाया और पाला जब तक कि उनकी असली पहचान का पता नहीं चला। फिर उन्हें फारस में अपने शाही माता-पिता के साथ रहने के लिए भेजा गया।

कुस्रू ने अपने दादा के खिलाफ विद्रोह किया और उनका सिंहासन छीन लिया। उन्हें हार्पेगस का समर्थन प्राप्त हुआ, जिनके साथ अस्त्याजेस ने गलत व्यवहार किया था। हेरोडोटस के अनुसार, कुस्रू ने बाद में अस्त्याजेस को शाही दरबार में बिना किसी और हानि के रहने की अनुमति दी।

बेल और अजगर 1:1 के अनुसार कुस्रू को अस्त्याजेस की मृत्यु के बाद राज्य विरासत में प्राप्त हुआ, यह संभवतः एक लोककथा हो सकती है और ऐतिहासिक तथ्य नहीं (बेल और अजगर एक अप्रमाणिक पुस्तक है और कुछ कलीसियाओं द्वारा इसे पवित्रशास्त्र नहीं माना जाता)। कुछ कीलाक्षर शिलालेख हेरोडोटस के विवरण का समर्थन करते हैं।

*यह भी देखें*महान कुस्रू।

अस्पाता

हामान के दस पुत्रों में से एक। यहूदियों को नष्ट करने की हामान की साजिश के खत्म होने पर उसे उसके पिता के साथ मार दिया गया (एस्त 9:7)।

अस्फार

तकोआ जंगल में एक जलाशय है। यह संभवतः एनगदी के दक्षिण में स्थित आधुनिक बिर सेलहूब हो सकता है।

योनातान और शमौन मक्काबी ने सेनापति बक्खीदेस के नेतृत्व में सीरियाई लोगों से भागते समय अस्फार में डेरा डाला था (1 मक्का 9:33)।

अस्मादेव

अस्मादेव

अस्मादेव टोबीत की कहानी में एक पिशाच था (टोबी 3:8)। वह एक ईर्ष्यालु प्रेमी था। कहानी में, अस्मादेव ने इक्बताना नामक नगर में, रागुएल की एकलौती पुत्री सारा के पहले सात पतियों को उनकी विवाह-रात्रि में ही मार डाला था। सारा तब तक बहुत दु:खी थी जब तक कि टोबीत के पुत्र तोबियाह ने उससे शादी नहीं कर ली।

स्वर्गदूत राफेल ने तोबियाह को बताया कि अस्मादेव को कैसे पराजित करना है। तोबियाह ने एक अनुष्ठान में मछली का हृदय और जिगर जलाया, जिससे अस्मादेव पराजित हो गया।

आत्माओं के बारे में इब्री कहानियों में, लोग अक्सर अस्मादेव को दुष्ट आत्माओं के राजा या अगुवा के रूप में मानते थे। उसे फारसी आत्मा "ऐश्मा-देव" से जोड़ा जा सकता है। यह आत्मा तूफान, क्रोध और प्रबल यौन लालसा उत्पन्न करने के लिए जानी जाती थी।

*यह भी देखें*टोबीत की पुस्तक।

अस्मोन

यहूदा के दक्षिण में कादेशबर्ने और "मिस्र के नाले" के बीच स्थित एक शहर (गिन 34:4–5; यहो 15:4)।

अस्रीएल,अस्रीएली

मनश्शे के पुत्र (1 इति 7:14)। उसके वंशज, अस्रीएली, मूसा की जंगल में जनगणना में शामिल थे (गिन 26:31)। बाद में उन्हें मनश्शे के गोत्र से भूमि का एक हिस्सा दिया गया (यहो 17:2)।

अस्वान

मिस्र के दक्षिण में स्थित एक नगर, जो अपने प्राचीन पत्थर की खदानों और नील नदी पर बने प्रसिद्ध अस्वान बाँध के लिए जाना जाता है। प्राचीन काल में इस नगर को सवेने कहा जाता था।

*देखिए*सवेने।

अस्सीर

1. कोरह का पुत्र और कहात के माध्यम से लेवी का वंशज था (निर्ग 6:24; 1 इति 6:22)।

2. एब्यासाप का पुत्र और पिछले अस्सीर का वंशज था (1 इति 6:23, 37)।
3. यकोन्याह (जिसे यहोयाकीन भी कहा जाता है) का पुत्र, यहूदा का राजा (1 इति 3:17)। इब्रानी शब्द *अस्सीर* संभवतः यकोन्याह का वर्णन करने वाला विशेषण हो सकता है। इसका अर्थ होगा "बन्दी रहते हुए" (तुलना करें 2 रा 24:15)। यदि ऐसा है, तो उसके बच्चे तब पैदा हुए जब वह कैद में था।

अस्सुरबनिपाल

अश्शूरी राजा अश्शूरबनीपाल की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें* अश्शूरबनीपाल।

अस्सुस

अस्सुस मूसिया का एक बन्दरगाह था, जो एशिया प्रायद्वीप (अनातोलिया प्रायद्वीप) के रोम प्रान्त का हिस्सा था। जब पौलुस त्रोआस से थलचर यात्रा करके आए, जैसा कि प्रेरि 20:13–14 में वर्णित है तो प्रेरित पौलुस और लूका अस्सुस में फिर से मिले। रोमी लेखक प्लिनी ने उल्लेख किया कि पिरगमुन के राजाओं ने इस नगर की स्थापना की थी, जिसका मूल नाम अपुल्लोनिया था। अस्सुस एक विलुप्त ज्वालामुखी शंकु के शीर्ष और सीढ़ीनुमा किनारों पर स्थित था, जिसकी ऊँचाई 770 फीट या 234.6 मीटर थी। यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने वहाँ कई वर्षों तक निवास किया। यह वह स्थान भी था जहाँ क्लीनथेस का जन्म हुआ था। क्लीनथेस एक स्तोईकी कवि थे जिनका उल्लेख पौलुस ने प्रेरि 17:28 में किया है। आज अस्सुस को बेहराम केवी के नाम से जाना जाता है।

अहजै

अहजै

इम्मेर के वंश का एक याजक। अहजै का वंशज अमशै, एज्रा के समय में यरूशलेम में एक प्रमुख याजक था (नहे 11:13)। अहजै और यहजेरा सम्भवतः एक ही व्यक्ति थे (1 इति 9:12)।

देखिए यहजेरा।

अहज्याह

अहाब का पुत्र जो उत्तरी इस्राएल का नौवां राजा था और दो वर्षों के लिए 853 से 852 ईसा पूर्व तक शासन किया। वह तब राजा बना जब अहाब रामोत-गिलाद को सीरिया के नियंत्रण से वापस लेने के प्रयास में मारा गया।

अहज्याह यहूदा के राजा यहोशापात और यहोशापात के पुत्र यहोराम के समय में राजा बना। वह यहूदा के साथ शांति के समय में शासन कर रहा था, जो पिछले राजाओं, आसा और बाशा के शासनकाल के विपरीत था (2 इति 20:37; तुलना करें 1 रा 22:48–49)। राजा बनने के तुरन्त बाद, उसे मोआब के मेशा के खिलाफ युद्ध करना पड़ा, जिसने इस्राएल को कर चुकाना बंद कर दिया था।

अहज्याह ने यारोबाम प्रथम के झूठे धर्म का पालन किया और अपने माता-पिता, अहाब और ईजेबेल की तरह खुलेआम बाल की उपासना की (1 रा 22:51–53)। 2 राजा 1 में अहज्याह की बीमारी का उल्लेख है, जिससे उसकी मृत्यु हुई। वह अपने महल की दूसरी मंजिल से गिर पड़ा और गंभीर रूप से घायल हो गया। परमेश्वर से सहायता मांगने के बजाय, उसने एक्रोन के देवता 'बाल-जबूब' से सहायता मांगी। भविष्यवक्ता एलिय्याह ने कहा कि परमेश्वर इसके लिए अहज्याह को दण्ड देंगे, और राजा ने उसे गिरफ्तार करने की कोशिश की। परमेश्वर की आग से दो समूह सैनिक नष्ट हो गए, जिससे यह सिद्ध हुआ कि परमेश्वर बाल पर जयवंत हैं, क्योंकि बाल को अग्नि और बिजली का देवता माना जाता था। एलिय्याह की भविष्यवाणी के अनुसार ही अहज्याह की मृत्यु हुई (2 रा 1:2–18)। उसके छोटे भाई यहोराम ने उसके बाद इस्राएल की राजगद्दी संभाली। इसी समय यहूदा का राजा भी यहोराम नाम का व्यक्ति था, जो अहज्याह का बहनोई था।

2. यहोराम का पुत्र, यहोशापात का पोता और पिछले अहज्याह का भतीजा। वह यहूदा का छठा राजा बना, लेकिन केवल एक वर्ष (841 ईसा पूर्व) तक शासन किया, जब वह 22 वर्ष का था (2 रा 8:25–26)। इस्राएल का उत्तरी राज्य परमेश्वर से दूर हो रहा था, और यहूदा भी, क्योंकि अहज्याह अहाब और ईजेबेल का पोता था (उसकी मां, अतल्याह, उनकी बेटी थी)।

अहज्याह ने अपने चाचा यहोराम (जिसे कभी-कभी योराम भी कहा जाता है) के साथ मिलकर अराम के राजा हजाएल के खिलाफ युद्ध किया। इस युद्ध में यहोराम घायल हो गया और स्वस्थ होने के लिए यिज्रेल चला गया। अहज्याह अपने चाचा से मिलने यिज्रेल गया (2 इति 22:7–9), जो एक गलती साबित हुई। सेनापति येहू को एलीशा द्वारा अहाब के वंशजों को नष्ट करने के लिए चुना गया था (2 रा 9:1–13)। उसने योराम और अहज्याह दोनों को मार डाला (2 रा 9:14–29)।

जब अहज्याह की माता, अतल्याह को उसकी मृत्यु के बारे में पता चला, तो उसने सत्ता सम्भाल ली और अहज्याह के सभी

बच्चों को मारने का प्रयास किया। एक बालक, योआश, मृत्यु से बच गया और अंततः राजा बना (2 रा 11:1–21)। अहज्याह को यहोआहाज (2 इति 21:17) भी कहा जाता है।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; राजाओं की पहली और दूसरी पुस्तक; बाइबल की समयरेखा (पुराना नियम); राजा।

अहबान

अहबान

यहूदा के गोत्र से अबीशूर और अबीहैल का पुत्र (1 इति 2:29)।

अहमता

अहमता

प्राचीन मादी साम्राज्य की राजधानी के लिए यूनानी नाम, जो बाद में फ़ारसी और पारथी साम्राज्यों की राजधानी शहरों में से एक बन गया। इसे अहमता (एज्रा 6:2) लिखा गया है, जो इसके अरामी नाम के करीब है। पुराने फ़ारसी नाम, हंगमताना का अर्थ शायद "सभा का स्थान" रहा होगा। आधुनिक हमादान में प्राचीन शहर के अधिकांश खंडहर शामिल हैं।

यह नगर ओरोंटे पर्वत (अलवंद) की पूर्वी ढलानों पर 6,300 फीट (1,920.1 मीटर) की ऊंचाई पर स्थित है, जो समुद्र तल से 12,000 फीट (3,657.4 मीटर) की ऊंचाई तक पहुंचने वाली ग्रेनाइट की चोटी है, जो एक दुर्गम पर्वतमाला का हिस्सा है जिसे केवल एक दर्रे द्वारा विभाजित किया गया है जो अहमता की ओर जाता है। प्रमुख व्यापार मार्ग इस दर्रे पर मिलते थे, जिससे अहमता को इसकी रणनीतिक महत्वता प्राप्त होती थी।

नगर की ऊँचाई भी फारसी और पारथी राजाओं के ग्रीष्मकालीन निवास के रूप में इसकी लोकप्रियता का कारण थी। सर्दियों में, बर्फानी तूफान कई फीट गहरी बर्फ जमा कर देते हैं और तापमान शून्य से नीचे चला जाता है, लेकिन गर्मियों में मौसम ठंडा और आरामदायक होता है; पहाड़ दोपहर के सूरज से छाया देते हैं, जबकि पिघलती बर्फ पर्याप्त पानी लाती है। यूनानी सेनापति ज़ेनोफ़ोन ने बताया कि फारसी राजा कुस्रू हर वर्ष वसंत ऋतु के तीन महीने शूशन में, सर्दियों के सात महीने बेबीलोन में और "गर्मियों के चरम पर दो महीने अहमता में बिताते थे।"

यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने दर्ज किया कि नगर की स्थापना मादी वंश के संस्थापक डियोसीज ने सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में की थी। 550 ईसा पूर्व में कुस्रू ने मादी राजा, अस्तियागेस से शहर पर कब्जा कर लिया। अहमता से ही कुस्रू ने 538 ईसा पूर्व में यह आज्ञा जारी किया था कि उसके राज्य के सभी यहूदी यरूशलेम लौटकर प्रभु के मंदिर का पुनर्निर्माण कर सकते हैं (एज्रा 1:2–4)। बाद में, बेबीलोन के अभिलेखों की निरर्थक खोज के बाद अहमता के अभिलेखों में इस आज्ञा के बारे में एक अरामी ज्ञापन मिला ((6:1–12)। दारा प्रथम (521–486 ई.पू.) ने सिंहासन को सुरक्षित करने के लिए विद्रोह को दबाने के बाद, नगर के ऊपर ओरोंटेस पर्वत के किनारे पर प्रसिद्ध बेहिस्टन शिलालेख खुदवाया। 330 ई.पू. में सिकंदर महान ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया और लूटपाट की।

हालांकि एज्रा 6:2 नगर के लिए एकमात्र स्पष्ट बाइबिल संदर्भ है, अहमता उत्तरी राज्य से बंधुवो को प्राप्त करने वाले मादी नगरो में से एक हो सकता था (722 ईसा पूर्व), अगर नगर देइओसेस द्वारा किलेबंदी से पहले अस्तित्व में था (2 रा 17:6)। टोबिट की पुस्तक अहमता में सातवीं शताब्दी में यहूदी बन्धुवों को रखती है (3:7; 7:1; 14:14), हालांकि इसका ऐतिहासिक मूल्य संदिग्ध है। यूदीत की पुस्तक में एक मादी राजा, अरफक्षद, और एक अश्शूरी राजा, नबूकदनेस्सर के बीच एक युद्ध का वर्णन करती है, जिसमें अश्शूरी अहमता पर कब्ज़ा कर लेते हैं (1:1–2, 14), लेकिन यह विवरण संदिग्ध है क्योंकि उन राजाओं की पहचान अज्ञात है। अंतियोख एपिफेन्स की मृत्यु संभवतः 164 ईसा पूर्व में हुई थी ((2 मक्का 9:1–3, 19–28)।

अहमता तीन फ़ारसी राजधानियों में से एकमात्र है जिसका अभी तक पूरी तरह से उत्खनन नहीं हुआ है, क्योंकि यह आंशिक रूप से ईरान के आधुनिक शहर हमादान के भीतर स्थित है। प्राचीन यूनानी लेखकों ने नगर और इसकी संपदा का विस्तृत विवरण दिया है। उदाहरण के लिए, पॉलीबियस ने बताया कि यह "संपदा और इसकी इमारतों की भव्यता में अन्य सभी नगरो से बहुत आगे निकल गया।" दारा प्रथम के समय से चांदी और सोने में दो नींव शिलालेखों और अर्तक्षत्र द्वितीय के स्तंभ आधारों की आकस्मिक पुरातात्विक खोजों से वहां खुदाई की बड़ी संभावना का संकेत मिलता है। हालांकि, खुदाई को रोका गया है क्योंकि प्राचीन नगर के नीचे के अधिकांश हिस्से तक पहुंचने के लिए आधुनिक हमदान का व्यापक विध्वंस आवश्यक होगा।

यह भी देखें फारस, फारसी।

अहर्हेल

यहूदा के गोत्र से हारूम का पुत्र (1 इति 4:8)।

अहलाब

अहलाब

आशेर में स्थित एक कनानी नगर। इस्राएली कनान पर विजय प्राप्त करने के दौरान इसके निवासियों को हटाने में असफल रहे (न्या 1:31)। सम्भवतः यह वही नगर है जो महलब के रूप में यहोशू 19:29 में उल्लेखित है। यह आधुनिक समय का खिरबेत अल-महालिब है, जो सोर के पास स्थित है।

देखिए महलब।

अहलै

अहलै

1. शेशान की बेटी, यहूदा के गोत्र की सदस्य (1 इति 2:31, 34)। 1 इतिहास 2:31 में, अहलै को कभी-कभी पुत्र कहा जाता है।
2. जाबाद का पिता या पूर्वज। जाबाद दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक था, जिसे "तीस" के रूप में जाना जाता था (1 इति 11:41)।

अहवा

अहवा

बाबुल में वह नदी (और संभवतः शहर) का नाम, जहाँ एज्रा ने यहूदियों के दल में कुछ लेवियों को जोड़ा, जो बँधुआई से घर लौट रहे थे। उन्होंने यहूदियों के लिए वहाँ उपवास की घोषणा भी की, ताकि वे स्वयं को नम्र कर सकें और फिलिस्तीन लौटने से पहले परमेश्वर की सुरक्षा प्राप्त कर सकें (एज्रा 8:15, 21, 31)।

अहसई

अहसई

याजक अहजै का केजेवी रूप (नहे 11:13)।

देखिए अहजै।

अहसबै

अहसबै

एलीपेलेत का पिता। एलीपेलेत माका के नगर में रहता था और दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक योद्धा था, जिसे "तीस" के रूप में जाना जाता था (2 शमू 23:34)।

अहाब

1. उत्तरी इस्राएल के आठवें राजा। उन्होंने लगभग 874–853 ई.पू. तक शासन किया। उनके पिता, ओम्री ने एक राजवंश (वंश) की स्थापना की जो अहाब और उनके दो पुत्रों, अहज्याह और यहोराम के शासनकाल के द्वारा 40 वर्षों तक चला। इस राजवंश का प्रभाव बाइबल में लिखी गई बातों से कई परे था। उनका उल्लेख प्रसिद्ध मोआबी पत्थर पर और अश्शूर से कई लेखों (शिलालेखों) में किया गया है।
1 राजाओं के अनुसार ओम्री, राजा एला के अधीन एक सेनापति थे, जो बाशा के पुत्र थे। जब एला की हत्या कर दी गई, तो ओम्री की सेना ने उन्हें राजा घोषित किया (1 रा 16:8–16)। उन्होंने इसके परिणामस्वरूप हुए गृहयुद्ध में विजय प्राप्त की और तिर्सा, राजधानी नगर पर कब्जा कर लिया (1 रा 16:17–23)। बाद में, उन्होंने अपनी राजधानी सामरिया स्थानांतरित की और उसके चारों ओर सुरक्षा का निर्माण कराया (1 रा 16:24)। ओम्री ने फोनीशियनों के साथ भी एक गठबंधन किया। दाऊद और सुलैमान ने भी ऐसा ही किया था, लेकिन बाद में इसके लिए उनकी आलोचना की गई। जब अहाब अपने पिता के बाद राजा बने (1 रा 16:28), तो उन्होंने इस गठबंधन को फोनीशियन राजा की पुत्री ईजेबेल से ब्याह करके जारी रखा (1 रा 16:29–31)।
ईजेबेल ने झूठे देवताओं का दृढ़ता से समर्थन किया और ऐसे तरीके से व्यवहार नहीं किया जो सही या अच्छा हो। अहाब की उससे शादी का इस्राएल पर बड़ा प्रभाव पड़ा (1 रा 21:21–26)। इसने यहूदा के दक्षिणी राज्य को भी प्रभावित किया। उनकी बेटी, अतल्याह, यहूदा के यहोराम से ब्याह करा दी गई और इस संघ ने भयानक परिणामों को जन्म दिया (2 रा 8:17–18, 26–27; 11:1–20)। ईजेबेल के प्रभाव में अहाब ने परमेश्वर की आराधना को छोड़कर बाल आराधना को अपनाया। यह नया धर्म एक उर्वरता पंथ था जिसमें पुजारियों और मन्दिर की "कुमारियों" के बीच यौन अनुष्ठान शामिल थे, जो सीधे परमेश्वर की व्यवस्था के खिलाफ थे। ईजेबेल से शादी करके, अहाब ने गैर-यहूदी लोगों के

खिलाफ बाइबल की आज्ञा का भी उल्लंघन किया (व्य.वि. 7:1–5)।
बाइबल हमें बताती है कि अहाब ने कई नगर बनाए और अनेक युद्ध लड़े (1 रा 22:39), लेकिन अधिकांश कहानी भविष्यद्वक्ता एलिय्याह पर केंद्रित है (1 रा 17:1; 18:1; 19:1)। अहाब के शासनकाल के प्रारंभ में परमेश्वर ने एलिय्याह को सूखा और अकाल की घोषणा करने के लिए भेजा, जो राजा के पापों के लिए दण्ड था (1 रा 17:1; 18:16–18)। यह सूखा साढ़े तीन वर्षों तक चला और इतना महत्वपूर्ण था कि इसे नए नियम में याद किया गया (लूका 4:25; याकू 5:17)। इसने लोगों और पशुओं दोनों के लिए गंभीर कष्ट पैदा किए (1 रा 18:5)।
सूखे के अंत में, एलिय्याह ने अहाब को चुनौती दी कि वह सभी अन्यजाति भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर और बाल के बीच मुकाबले के लिए इकट्ठा करें। एलिय्याह ने बाल के 450 भविष्यद्वक्ताओं का मजाक उड़ाया क्योंकि वे अपने देवता का ध्यान आकर्षित करने में असफल रहे। फिर उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और स्वर्ग से आग परमेश्वर की वेदी को भस्म करने के लिए उतरी, तब लोगों ने परमेश्वर में अपने विश्वास की घोषणा की और झूठे भविष्यद्वक्ताओं को मारने में एलिय्याह की मदद की (1 रा 18:16–40)। सूखा तुरंत समाप्त हो गया (1 रा 18:41–46)।
जब ईजेबेल को यह पता चला कि उसके भविष्यद्वक्ताओं के साथ क्या हुआ है, तो उसने बदला लेने की प्रतिज्ञा की। एलिय्याह भाग गए और होरेब पर्वत पर परमेश्वर ने उन्हें येहू को इस्राएल का नया राजा होने के लिए अभिषेक करने का निर्देश दिया ताकि वह अहाब की जगह ले सकें (1 रा 19:1–16)। बाद में यह कार्य एलिय्याह के उत्तराधिकारी एलीशा द्वारा पूरा किया गया (1 रा 19:19–21; 2 रा 9:1–10)।
एलिय्याह ने अहाब का सामना किया जब उन्होंने नाबोत नामक एक व्यक्ति से दाख की बारी प्राप्त की (1 रा 21:1–16)। जब नाबोत ने अपनी भूमि बेचने से इनकार कर दिया, तो ईजेबेल ने झूठे गवाहों की व्यवस्था की ताकि वे उस पर परमेश्वर और राजा को श्राप देने का

आरोप लगा सकें। इसके बाद नाबोत को ईश्वर-निन्दा के लिए पत्थर मारकर मृत्यु के घाट उतार दिया गया। एलिय्याह ने अहाब की निंदा की और भविष्यवाणी की कि परमेश्वर उनके परिवार का खूनी अंत करेंगे (1 रा 21:17–24)। हालांकि अहाब ने पश्चाताप किया, जिससे परमेश्वर ने अहाब की मृत्यु के बाद तक न्याय को स्थगित कर दिया (1 रा 21:27–29; 2 रा 10:1–14)।

अपने शासनकाल के दौरान, अहाब को राजा बेन्हदद II के साथ कई सैन्य संघर्षों का सामना करना पड़ा, जो सीरिया (अराम) के थे, मुख्यतः सीरियाई लोगों ने इन मुठभेड़ों को उकसाया। पहले संघर्ष में, बेन्हदद ने सामरिया, इस्राएल की राजधानी को घेर लिया और भारी कर की मांग की। अहाब ने इन मांगों को मानने से इनकार कर दिया और इस्राएल के बुजुर्गों से परामर्श किया। जब सीरियाई हमले की तैयारी कर रहे थे, एक भविष्यद्वक्ता ने अहाब को पहले हमला करने की सलाह दी (1 रा 20:1–14)। सीरियाई पराजित हुए और बेन्हदद मुश्किल से अपने जीवन को बचा पाया (1 रा 20:15–22)। अगले वर्ष, बेन्हदद ने अहाब की सेनाओं के खिलाफ एक और हमला किया, फिर से पराजित हुए और अंततः अहाब के सामने आत्मसमर्पण कर दिया (1 रा 20:23–33)। शर्तों के हिस्से के रूप में, बेन्हदद ने कुछ नगरों को छोड़ दिया जो उनके पिता ने पहले इस्राएल से लिए थे और इस्राएल को दमिश्क में व्यापारिक चौकियां स्थापित करने की अनुमति दी (1 रा 20:34)। हालांकि, बाद में परमेश्वर ने एक भविष्यद्वक्ता के माध्यम से अहाब को एक मूर्तिपूजक शक्ति के साथ ऐसा गठबंधन बनाने के लिए फटकार लगाई (1 रा 20:35–43)।

अहाब के सीरिया के साथ अंतिम युद्ध में, उन्हें यहूदा के राजा यहोशापात के साथ गठबंधन का समर्थन प्राप्त था (1 रा 22:2–4; 2 इति 18:1–3)। इस गठबंधन को अहाब की बेटी अतल्याह की यहोशापात के बेटे यहोराम से शादी के द्वारा मजबूत किया गया था। अहाब ने इस्राएल के उत्तर-पूर्व में स्थित रामोत-गिलाद को पुनः प्राप्त करने के लिए एक

अभियान का प्रस्ताव रखा। जब यहोशापात ने अहाब के 400 भविष्यद्वक्ताओं की आशावादी भविष्यद्वाणी पर संदेह किया, तो भविष्यद्वक्ता मीकायाह को बुलाया गया और उन्होंने अहाब की मृत्यु की भविष्यवाणी की (1 रा 22:5–28; 2 इति 18:4–27)। सीरिया के साथ युद्ध के लिए, यहोशापात ने अपने शाही वस्त्र पहने, जबकि अहाब ने खुद को एक साधारण सैनिक के रूप में छुपा लिया। इसके बावजूद, एक सीरियाई तीरंदाज ने अहाब को उसके कवच के जोड़ों के बीच में मार दिया। अहाब की उस शाम मृत्यु हो गई और उसकी सेना ने युद्ध छोड़ दिया। उसका रथ और कवच सामरिया के कुण्ड के पास धोए गए, जैसा कि एलिय्याह ने भविष्यद्वाणी की थी, कुत्तों ने अहाब का लहू चाटा। अहाब के बाद उनके पुत्र अहज्याह उनके उत्तराधिकारी बने (1 रा 22:29–40; 2 इति 18:28–34)।
*यह भी देखें*एलिय्याह #1; ईजेबेल; इस्राएल का इतिहास; राजा; 1 व 2 राजाओं की पुस्तकें; बाइबल का कालक्रम (पुराना नियम)।

2. कोलायाह का पुत्र। वह यहूदा के अंतिम दिनों के दौरान एक कुख्यात झूठे भविष्यद्वक्ता थे। वह उन यहूदियों में से थे जिन्हें यहोयाकीन की बँधुआई के दौरान 598–597 ई.पू. में बेबीलोन निर्वासित किया गया था। अपने सहयोगी सिदकिय्याह के साथ, अहाब को भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह द्वारा परमेश्वर के नाम में झूठी भविष्यवाणी करने और उनकी यौन अनैतिकता के लिए निंदा की गई थी। (यिर्म 29:21–23।

अहिअन

अहिअन

शमीदा के चार पुत्रों में से एक, जो नप्ताली के गोत्र से था (1 इति 7:19)।

अहियाह

अहियाह

1. यह अहिय्याह नाम की एक अन्य वर्तनी है। *देखें*अहिय्याह #1, #2, और #6

2. एक राजनीतिक अगुवा जिन्होंने बेबीलोन की बँधुआई के बाद नहेम्याह तथा अन्य लोगों के साथ मिलकर एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर किए (नहे 10:26)।

अहिय्याह

1. अहीतूब का पुत्र, जो शीलो में एक याजक था। उसने शाऊल की अन्तिम लड़ाई के दौरान गिबा में वाचा के सन्दूक की देखभाल की (1 शमू 14:3, 18)। वह सम्भवतः अहीमेलेक ही था या उससे सम्बन्धित हो सकता है (1 शमू 21:1–9; 22:9–20)।

2. राजा सुलैमान के राजसी आधिकारिकों में से एक (1 रा 4:3)।

3. शीलो के एक भविष्यद्वक्ता, जिन्होंने राजा सुलैमान के अधिकारी यारोबाम से कहा कि उत्तरी दस गोत्र विद्रोह करेंगे। सुलैमान की मृत्यु से पहले, अहिय्याह ने अपनी चादर को बारह टुकड़ों में फाड़ दिया। उन्होंने यारोबाम को दस टुकड़े दिए और कहा कि परमेश्वर सुलैमान से दस गोत्र लेकर यारोबाम को देंगे (1 रा 11:29–39; 2 इति 10:15)। बाद में, जब यारोबाम इस्राएल के धर्म के प्रति अविश्वासी हो गया, तो उसने अपनी पत्नी को उनके बीमार पुत्र के बारे में पूछने के लिए अहिय्याह के पास भेजा (1 रा 14:1–5)। भले ही वह बूढ़े और अंधे थे, अहिय्याह ने बालक की मृत्यु और यारोबाम और उनके परिवार के पतन की भविष्यवाणी की (1 रा 14:6–17; 15:28–30)। "शीलोवासी अहिय्याह की नबूवत की पुस्तक" सुलैमान के जीवन के बारे में लेखों का स्रोत थी (2 इति 9:29)।

4. उत्तरी इस्राएल के राज्य के राजा बाशा का पिता (1 रा 15:27–28, 33; 21:22; 2 रा 9:9)।

5. यरहमेल का पुत्र जो यहूदा के गोत्र से था (1 इति 2:25)।
6. एहूद का पुत्र (1 इति 8:7)। हालांकि, इब्रानी का अनुवाद करना कठिन है। कुछ अंग्रेजी अनुवाद अहिय्याह को एहूद के पुत्रों में से एक बताते हैं, जबकि अन्य अहिय्याह को वह बताते हैं जो एहूद के पुत्रों, उज्जा और अहीहूद, को बँधुआई में ले गया।
7. दाऊद के पराक्रमी योद्धाओं में से एक, जिसे "तीस" के रूप में जाना जाता था (1 इति 11:36)। उसे अहीतोपेल का पुत्र एलीआम भी कहा जाता है (2 शमू 23:34)।
8. एक लेवी जो राजा दाऊद के परमेश्वर के भवन के भण्डारों का अधिकारी था (1 इति 26:20)।
9. भविष्यद्वक्ता एज्रा के पूर्वज (2 एजड्रास 1:2)।

अही

अही

1. अब्दीएल का पुत्र, गाद के गोत्र में एक मुख्य पुरुष (1 इति 5:15)।
2. शेमेर का भाई और आशेर के गोत्र का एक सदस्य (1 इति 7:34)। हालांकि, इस पद में, "अही" शायद एक नाम नहीं है और इसे "भाई" के रूप में अनुवादित किया जाना चाहिए, जैसा कि अधिकांश आधुनिक अनुवादों में किया गया है।

अहीआम

अहीआम

शारार का पुत्र और दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक योद्धा, जिसे "तीस" के रूप में जाना जाता था (2 शमू 23:33)।

अहीएजेर

अहीएजेर

1. अम्मीशद्दै का बेटा। जब इस्राएल मिस्र से बचकर सीनै के जंगल में भटक रहा था, तब वह दान के गोत्र का नेता था। अपने गोत्र के अगुवे के रूप में, जब पवित्र उपयोग के लिए तम्बू को अलग किया गया था, तब वह एक विशेष उपहार लाया था (गिन 1:12; 2:25; 7:66, 71; 10:25)।
2. शमाआ का पुत्र। बिन्यामीन के गोत्र के योद्धाओं के एक अगुवा, जो दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुए जब वह राजा शाऊल के साथ संघर्ष में थे। अहीएजेर और उनके लोग धनुष या गोफन का उपयोग करते समय दोनों हाथों का उपयोग कर सकते थे (1 इति 12:2–3)।

अहीओर

अहीओर

यहूदी धर्मग्रंथ यहूदीत की पुस्तक अहीओर को "सभी अम्मोनियों का अगुवा" कहती है (यूदी 5:5)। अध्याय 5 का अधिकांश भाग इस्राएल के इतिहास के बारे में अहीओर के संस्करण का वर्णन करता है। यह होलोफर्नेस को दी गई उनकी चेतावनी के साथ समाप्त होता है कि परमेश्वर इस्राएल की रक्षा करेंगे। जब उन्होंने यह कहा, तो सुनने वालों ने उन्हें फाड़ डालने की धमकी दी।

इसके बाद होलोफर्नेस ने फिर अहीओर को इस्राएलियों के पास भेजा और उज्जियाह ने उनका अच्छे से स्वागत किया (यूदी 6)। होलोफर्नेस की मृत्यु के बाद, अहीओर अश्शूरी सेनापति का कटा हुआ सिर देखने गए। यह देखकर उन्होंने यूदित के चरणों में गिरकर उनकी प्रशंसा की। उन्होंने परमेश्वर के सामर्थी कार्यों को पहचाना, उनका खतना किया गया (जो यहूदियों के विश्वास में शामिल होने वाले पुरुषों के लिए एक धार्मिक संस्कार है), और वह इस्राएली समाज के स्थायी सदस्य बन गए (यहू 14:6–10)।

अहीकाम

अहीकाम

शापान का पुत्र, जो यहूदा के राजा योशिय्याह के दरबार का एक मंत्री था (2 रा 22:12)।

अहीकाम उन व्यक्तियों में से एक था जिसे भविष्यद्वक्तिन हुल्दा के पास व्यवस्था की पुस्तक के बारे में पूछने के लिए भेजा गया था (2 रा 22:14–20)। बाद में, राजा यहोयाकीम के शासन में, अहीकाम ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को मारे जाने से बचाया (यिर्म 26:24)। अहीकाम का पुत्र गदल्याह यहूदा का अधिकारी बना जब नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया और उसके अधिकांश नागरिकों को 586 ई. पू. में बाबेल ले गया (2 रा 25:22; यिर्म 39:14; 40:5–16; 41:1–18; 43:6)।

अहीतूब

अहीतूब

1. हारून के सबसे छोटे पुत्र इतामार के याजकीय वंश का एक सदस्य। वह एली के पुत्र पीनहास के वंशज और अहिय्याह तथा अहिमेलेक के पिता थे, जो शाऊल के शासनकाल में याजक थे (1 शमू 14:3; 22:9–12, 20)।
2. हारून के तीसरे पुत्र एलीआजर की याजकीय वंशावली का एक सदस्य। अहीतूब मरायोत के पोता, अमर्याह के पुत्र, और सादोक के पिता थे (1 इति 6:4–7)। सादोक दाऊद के शासनकाल के दौरान एक प्रधान याजक थे (2 शमू 8:17)।
3. संभवतः ऊपर #2 के समान (कभी-कभी लिपिक नामों की पुनरावृत्ति कर देते थे), परन्तु शायद एलीआजर की याजकीय वंश के एक अन्य सदस्य, #2 के सात पीढ़ियों बाद हुआ (1 इति 6:11–12)। अहीतूब के पिता का नाम भी अमर्याह था, और उसके पुत्र या पोते का नाम सादोक था (1 इति 9:11; नहे 11:11)। उसके दादा का नाम अजर्याह था। अहीतूब को एज्रा के पूर्वजों में सूचीबद्ध किया गया है (एज्रा 7:2; 1 एसड्रास 8:2; 2 एसड्रास 1:1)।

अहीतोपेल

राजा दाऊद के विश्वसनीय सलाहकार जिसने बाद में उन्हें धोखा दिया। वह अबशालोम की योजना में शामिल हो गया ताकि राज्य पर कब्जा किया जा सके।। लोगों समझते थे कि अहीतोपेल की सलाह बहुत बुद्धिमानी भरी थी, मानो वह परमेश्वर के वचन हो (2 शमू 16:23)।

जब दाऊद ने सुना कि अहीतोपेल ने उन्हें धोखा दिया और अबशालोम के साथ मिल गया, तो दाऊद ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, अहीतोपेल की सम्मति को मूर्खता बना दे!" (2 शमू 15:31)। अहीतोपेल ने अबशालोम को दाऊद की रखैलों के पास जाने की सलाह दी (2 शमू 16:20–22)। राजा की रखैलों को लेना एक सार्वजनिक कार्य था, जो यह घोषित करता था कि पूर्व राजा का स्थान अब नए राजा ने ले लिया है।

क्योंकि दाऊद अभी भी जीवित थे, यह कार्य दाऊद और अबशालोम के बीच अन्तिम सम्बन्ध तोड़ना था। इसने नातान की उस भविष्यवाणी को भी पूरा किया जो दाऊद से की गई थी कि क्योंकि दाऊद ने गुप्त रूप से किसी अन्य पुरुष की पत्नी को लिया था, उनकी अपनी पत्नियों को सार्वजनिक रूप से उनसे छीन लिया जाएगा (2 शमू 12:7–12)।

अहीतोपेल की दूसरी योजना थी कि 12,000 कुशल सैनिकों के साथ दाऊद पर शीघ्र हमला किया जाए (2 शमू 17:1–3)। हालांकि, अबशालोम ने इस सलाह का पालन नहीं किया। इसके बजाय, उसने हूशै की बात सुनी, जो गुप्त रूप से दाऊद के पक्ष में काम कर रहा था। हूशै ने एक बड़ी युद्ध योजना का सुझाव दिया (2 शमू 17:4–14)। उसकी बातों का उद्देश्य अबशालोम को महत्वपूर्ण महसूस कराना और दाऊद को तैयारी के लिए अधिक समय देना था। जब अहीतोपेल ने देखा कि अबशालोम ने उसकी सलाह नहीं मानी, तो वह अपने नगर लौट गया और आत्महत्या कर ली (2 शमू 17:23)।

अहीनादाब

अहीनादाब

इद्दो का पुत्र और राजा सुलैमान के घर में भोजन लाने के लिए जिम्मेदार 12 अधिकारियों में से एक। अहीनादाब का घर महनैम में था (1 रा 4:14)।

अहीनोअम

1. अहीमास की बेटी और राजा शाऊल की पत्नी (1 शमू 14:50)।

2. एक यिज्रेली स्त्री जो दाऊद की पत्नी बनी, जब शाऊल अपनी बेटी मीकल को वापस ले गया और उसकी शादी पलती से कर दी (1 शमू 25:43–44)। हेब्रोन में, अहीनोअम दाऊद के सबसे बड़े पुत्र, अम्नोन की माता बनी (2 शमू 3:2; 1 इति 3:1)।

अहीमन

अहीमन

1. अनाक के तीन पुत्रों में से एक। अहिमानी उन अनाकवंशी कुलों में से एक थे (दानवों की एक जाति) जो हेब्रोन में रहते थे जब 12 इस्राएली जासूस कनान की भूमि के बारे में जानकारी एकत्र कर रहे थे (गिन 13:22; यहो 15:13–14; न्या 1:10)।
2. एक लेवी जो यरूशलेम में द्वारपाल के रूप में काम करता था (1 इति 9:17)। यह उस समय के बाद की बात है जब कई यहूदी लोगों को अपने देश से दूर रहने के लिए मजबूर किया गया था और फिर लौटने की अनुमति दी गई थी।

अहीमास

अहीमास

1. राजा शाऊल की पत्नी अहीनोअम का पिता (1 शमू 14:50)।
2. अजर्याह का पिता और महायाजक सादोक का पुत्र (1 इति 6:8–9, 53)। अहीमास अबशालोम के विद्रोह के दौरान राजा दाऊद के प्रति विश्वसयोग्य था। उसने और याजक एब्यातार के पुत्र योनातान ने राजा दाऊद तक समाचार पहुँचाने का कार्य किया। अबशालोम की गतिविधियों की सूचना यरूशलेम में सादोक और एब्यातार के द्वारा एनरोगेल में अहीमास और योनातान को भेजी जाती थी, और फिर वे उसे दाऊद तक पहुँचाते थे (2 शमू 15:27–29; 17:15–23)। अहीमास सम्भवतः एक तेज धावक के रूप में प्रसिद्ध था। उसने आधिकारिक दूत को पीछे छोड़कर अबशालोम की हार की खबर दाऊद को दी (2 शमू 18:19–33)।
3. अहीमास, जो सुलैमान के घर के लिए भोजन जुटाने के लिए नियुक्त 12 अधिकारियों में से एक था। वह नप्ताली के गोत्र से था। उसने सुलैमान की बेटियों में से एक बासमत से विवाह किया था (1 रा 4:15)।

अहीमेलेक

1. नोब के एक याजक जिन्होंने दाऊद की सहायता की जब वह शाऊल से भाग रहे थे (1 शमू 21:1–9)। जब दाऊद ने भोजन माँगा, तो उनके पास केवल निवास-स्थान की पवित्र रोटी थी (इस घटना का उल्लेख यीशु ने मत्ती 12:1–8 में किया हैं)। एदोमी दोएग ने शाऊल को वह सब बताया जो उसने देखा, जिससे शाऊल ने अहीमेलेक को घात करने का आदेश दिया। हालांकि शाऊल के पहरुओं ने याजक को मारना नहीं चाहा। दोएग ने अहीमेलेक और 84 अन्य याजकों को उनके परिवारों और जानवरों के साथ घात किया (1 शमू 22:9–19)। केवल एब्यातार, अहीमेलेक के पुत्र, बच निकले और सुरक्षा के लिए दाऊद के पास गए (1 शमू 22:20–23)। दाऊद ने भजनसंहिता 52 लिखा जो दोएग ने किया था।
2. एक हित्ती जो शाऊल से भागते समय दाऊद के योद्धाओं में शामिल हो गया था (1 शमू 26:6)।

3. एब्यातार का पुत्र और उसके पिता अहीमेलेक का पोता। उन्होंने राजा दाऊद के अधीन अपने पिता की याजक के पद में सहायता की (2 शमू 8:17; 1 इति 24:3, 5, 31; तुलना करें 1 इति 18:16 से, जहाँ कुछ अनुवाद उन्हें अबीमेलेक कहते हैं)।

अहीमोत

एल्काना का पुत्र, कहात के परिवार का एक लेवी (1 इति 6:25)।

अहीरा

एनान का बेटा। वह नप्ताली गौत्र का नेता था जब इस्राएली मिस्र से निकलने के बाद जंगल में भटक रहे थे। एक अगुवे के रूप में, उन्होंने अपने गोत्र की भेंट प्रस्तुत की जब तंबू को पवित्र उपयोग के लिए अलग किया गया (गिन 1:15; 2:29; 7:78, 83; 10:27)।

अहीराम, अहीरामवंशी

बिन्यामीन के तीसरे पुत्र। वे अहिरामी वंश के पूर्वज थे (गिन 26:38; 1 इति 8:1, यहाँ "अह्ह" कहा गया है)। पूर्वजों की सूचियों में "अहीराम" के दो संक्षिप्त रूप संभवतः एही (उत 46:21) और अहेर (1 इति 7:12) हो सकते हैं।

अहीलूद

अहीलूद इतिहास का लिखनेवाला और यहोशापात का पिता था। यहोशापात ने दाऊद और सुलैमान दोनों के अधीन सेवा की थी (2 शमू 8:16; 20:24; 1 रा 4:3; 1 इति 18:15)। अहीलूद सम्भवतः बाना का भी पिता था, जो सुलैमान के कर अधिकारियों में से एक था (1 रा 4:12)।

अहीशहर

बिल्हान का पुत्र। वह राजा दाऊद के समय में बिन्यामीन के गोत्र से यदीएल के उपकुल का प्रधान था (1 इति 7:10)।

अहीशार

सुलैमान के राजपरिवार के ऊपर अधिकारी था (1 रा 4:6)।

अहीसामाक

दान के गोत्र से कारीगर ओहोलीआब का पिता। ओहोलीआब ने तंबू और उसके अंदर की सभी वस्तुओं के निर्माण में सहायता की (निर्ग 31:6; 35:34; 38:23)।

अहीहूद

1. शलोमी के पुत्र, आशेर के गोत्र के एक अगुवा अहीहूद ने एलीआजर और यहोशू की सहायता की ताकि वे कनान की भूमि को इस्राएलियों के बीच विभाजित कर सकें (गिन 34:17, 27).
2. कुछ अंग्रेजी बाइबल संस्करण (किंग जेम्स संस्करण, रिवाइज़्ड स्टेंडर्ड संस्करण) कहते हैं कि अहीहूद बिन्यामीन के गोत्र में एक अगुवा थे। वे कहते हैं कि उनके पिता गेरा थे, जिन्हें हेग्लम भी कहा जाता था, जिन्हें मानहत में रहने के लिए भेजा गया था (1 इति 8:7)।

   लेकिन इब्री पाठ (जिसे मसोरैटिक पाठ कहा जाता है) कहता है कि अहीहूद के पिता एहूद थे। इस संस्करण में, यह गेरा थे जिन्होंने अहीहूद और उनकी माँ को उनके घर से जाने और मानहत में रहने के लिए मजबूर किया था (1 इति 8:6)।

अहुज्जत

अहुज्जत

गरार के अबीमेलेक का एक शाही सलाहकार। अहुज्जत अबीमेलेक के साथ बेर्शेबा गया ताकि इसहाक के साथ एक समझौता कर सके (उत 26:26)।

अहुज्जाम

अशूर और नारा का पुत्र और यहूदा के गोत्र का सदस्य (1 इति 4:6)।

अहूमै

अहूमै

यहत का वंशज जो यहूदा के गोत्र का था (1 इति 4:2)।

अह्ह

1 इतिहास 8:1 में दिया गया अहीराम का एक अन्य नाम, जो बिन्यामीन का तीसरा पुत्र था। *देखें*अहीराम, अहीरामी।

अहेर

अहेर

बिन्यामीन के तीसरे पुत्र अहीराम का एक वैकल्पिक नाम, जो 1 इतिहास 7:12 में उल्लेखित है। *देखें*अहीराम, अहीरामी।

अहोला

ओहोला का केजेवी रूप। ओहोला सामरिया के लिए प्रतीकात्मक नाम था, जो इस्राएल के उत्तरी राज्य की राजधानी थी (यहे 23)।

*देखिए*ओहोला और ओहोलीबा।

अहोलीबा

यहेजकेल 23 में यरूशलेम के प्रतीकात्मक नाम ओहोलीबा का केजेवी रूप।

*देखिए*ओहोला और ओहोलीबा।

अहोह, अहोही, अहोह वंशी

बेला के नौ पुत्रों में से एक जो बिन्यामीन के गोत्र का सदस्य था (1 इति 8:4)।

अहोह के वंशजों को अहोही कहा जाता था और उनमें से दो, राजा दाऊद के सबसे प्रभावशाली योद्धाओं में से थे:

- दोदै ("जो एक अहोही था" 2 शमू 23:9; 1 इति 27:4
- अहोही सल्मोन (2 शमू 23:28; उसे 1 इति 11:29 में "ईलै" कहा गया है)

अह्यो

अह्यो

1. अबीनादाब का पुत्र। अह्यो और उसके भाई उज्जा ने बैलगाड़ी हांकी, जो वाचा के सन्दूक को उसके नए निवास स्थान, यरूशलेम, ले जा रही थी (2 शमू 6:3–4; 1 इति 13:7)।
2. एल्पाल का पुत्र जो बिन्यामीन के गोत्र से था (1 इति 8:14)।
3. यीएल और उसकी पत्नी माका का पुत्र। अह्यो शाऊल के पिता कीश का भाई या चाचा था (1 इति 8:31; 9:36–37)।